हाललखं ना ॥ यहकछुअचरजजनिजियजानो । संतनकीमहिमाउरआनो
जासुअंशमेंहोतहैजगउतपतिथितिनाश । सोजिनकेवसअससदासमरथसब
चौपाई ॥ रामनामकीधाराधारी । नाभाकीआभाअतिभारी ॥ श्रीरामाष्टयाम
प्रानसमानसन्तसबराखे ॥ हेरतरामरसिकहियहर्षत । प्रभुसनमुखसबकोप्र
यहीसहीसुठिसत्यसिखावन । हरिहरिजनसेवनमनलावन ॥ किरीटछन्द ॥
नाथपुरानप्रमानसुजानसबैअनुमानसेतौलत । देहलिदीपकसेदिशिदोउमेंदेखिये
दुतिदौलत ॥ आखिरमेंपरलोकबिशोकमजौहैभजौरघुवीरतजौलत । मोदमहान
मेंजानकोजानकिनाहकेनेहबदौलत ॥ मोदकछंद ॥ रामउपासकअग्रअलीअति ।
चढ्योचितभावभलीगति ॥ मूकनस्वादसराहिसकैजिमि । योंवहवानिवखानि
किमि ॥ घनाक्षरीछंद ॥ रुकुमिणिसत्यभामाराधानामातीनितेईश्रीभूलीलाशक्ति
तामक्तिभीनीहैं । रामबामओरीओईजनककिशोरीगोरीहावभावकोरीवोरीप्रीतिकी
नीहैं ॥ आसपासदासीरासीकरतखवासीखासीकोशलानिवासीरामरसकीरसीनी
छाईछविसिद्धिनाथजैसीहैजुन्हैंहाईजूहपाईमनभाईसांईसन्तनसोदीनीहैं ॥ मदिराछ
कोटिमनोभसेसुन्दरश्यामसरूपसरोजसेनैनवने । बाहुविजायठकुण्डलकानकिरीट
शिरकेशबने ॥ मण्डितमोतिनमालगरेपटपीतधरेतनतेजतने । श्रीरघुनन्दनचन्दअ
हँसेसोबसेसिधिनाथमने ॥ तोटकछन्द ॥ प्रभुपूजनभावभलेभरने । शिरसोनकि
गेधरने ॥ वनियायकबूड़तसागरसो । दियअग्रदुहाइगुनागरसो ॥ तपसिद्धिस
स्वामिलियो । मनकैबरबोहितपारकियो ॥ तहँताखनपङ्कडुराइरहे । चितचैनगि
नाभकहे ॥ प्रभुबोहितपारभयोतबतो । अरिभावकिरीटधरोअबतो ॥ मनकीगति
जानिभली । दियआयसुयोंइतअग्रअली ॥ रोलाछन्द ॥ श्रीयुतनाभास्वामिभक्त
निरमान्यो । दिव्यदृष्टिबलसकलहाथअमलकइवआन्यो ॥ शांतदास्यवात्सल्यरू
गारपञ्चरस । भनेभक्तिकेभेदउपासकलोगलखैअस ॥ भक्तरत्नकीमालकण्ठकीनेजन
ई । जगमेंजगमगजोतिसन्तगनआदरदेई ॥ कहतसुनतफललहतमहतज्योंचहतक्षम
त ॥ रसिकशिरोमणिरामश्यामश्यामाकोभावत ॥ चौपाई ॥ जयजयभक्तमालसुखदाय
क । लोकललितपरलोकसहायक ॥ जयजयभक्तमालसुठिसोहर । महामोहतमतरणि
मनोहर ॥ जयजयभक्तमालबहुरङ्गा । पापपरावनकोगुनिगङ्गा ॥ जयजयभक्तमालरस
रूरी । माधवमिलनसजीवनमूरी ॥ जयजयभक्तमालपरिपूरन । भवभयरोगसोगहि
चूरन ॥ जयजयभक्तमालजनतारन । रामअनूपरूपरुचिधारन ॥ जयजयभक्तमालसु
ठिशोभे । सरससुगन्धअलीगनलोभे ॥ जयजयभक्तमालसुरधेनू । सबजगकोअभिमत
फलदेनू ॥ जयजयभक्तमालधनसरिसा । भगवतभजनवारिवरबरिसा ॥ जयजयभक्त
मालशशिपावन । स्रवतसुधासुठितापनशावन ॥ जयजयभक्तमालभगवाना । सबज
पोषनकोमनमाना ॥ जयजयभक्तमालबरबोहित । भवसागरतारनसबकोहित ॥ दोह
भक्तमालमहिमामहतकहतरहतजनजौन । लहतचहतचितसोसुलभत्यहिदुर्लभकहिकौ
चौपाई ॥ सोनसींगखुररूपमढ़ाई । बरतनवत्सबसनयुतगाई ॥ दिहदक्षिणाद्रव्य
वै । विधिवतवरविप्रनकहँदेवै ॥ तातेशतगुनसबदिनगावै । श्रीयुतभक्तमालसेपा
काशीकुरुक्षेत्रमेंजाई । शशिरविग्रहनसमयमेंन्हाई ॥ त्यहिदशगुनफलहेरुहियेते ।
मालकेदरशकियेते ॥ बहुतकविप्रबोलिकैदपति । पायँपखारिदानदैसपति ॥ भो
लभाँतिकरवावै । जोफलकबहुँकष्टकरिपावै ॥ तातेशतगुनसबदिनसोई । पर

क्तमालकेजोई ॥ तीरथराजमकरबहुवासी । प्रातनहायकलेशउदासी ॥ जोफल लहैंलाखगुनताते । भक्तमालकेपूजकपाते ॥ पृथिवीदानद्विजनकोदीन्हे । ब्याह कुमारिनकेबहुकीने ॥ विविधव्रतबहुतकव्रतकिनकरई । नितपितुमातुवचनअनुसरई ॥ वापीकूपतड़ागखनावै । गाछिबहुतबरबागबनावै ॥ कोटिगुनाफलहोतहालके । नमस्कारकरिभक्तमालके ॥ ग्रीषमऋतुपंचागिनितापै । जाड़ेमेंजलमेंतनुथापै ॥ बरषावैठिसहैजलधारा । धराप्रदक्षिणकेबहुबारा ॥ शय्यादानमकानदियेते । जोफलपावहिंकबहुँकियेते ॥ तातेकोटिकोटिगुनतच्छिन । भक्तमालकेभरतप्रदच्छिन ॥ कोटिनवाजिमेधमखकरई । शंखनराजसूयसिधिसरई ॥ जातिरयज्ञवाज पेयादिक । सयमनियमपुनीतप्रसादिक ॥ सोसबफलअनगंतगुनेते । भक्तमाल भरिभावसुनेते ॥ एकादशीउपासअनेका । गंगान्हानसमेतविवेका ॥ जागतप तीरथपानिपियेते । पोथीपुंजनिपाठकियेते ॥ भगवतकथाभावभरिगावत । भल फलभक्तमालसेपावत ॥ भक्तमालजेकहैंअनूपा । उनकोअनुमानोहरिरूपा ॥ भ क्तमालकेबांचनहारे । तिनकोजेजननितसतकारे ॥ असनबसनधनआदरअर्चा । उनकीयमपुरहोतनचर्चा ॥ सबसुखभोगभलेभुविपावैं । बैठिविमानवैकुंठसिधावैं ॥ तिनकीपदपंकजरजरूरी । अभिलापैंसुरगोइनरूरी ॥ दोहा ॥ धन्यधन्यधनि धनिधरणि भक्तमालभगवन्त । सकलसुयशसककौनकहि जोमुखहोहिंअनन्त ॥ घनाक्षरीछन्द ॥ भनतभकारभूरिभवभयदूरिहोतगुणगणपूरिहोतगनतगकारके । तरणितमामतेजतनततकारतनमदैमनमहामोदमनतमकारके ॥ ललकिलकारकेल पेतेलाललोकलाभ सिद्धिनाथप्रेप्यारे राम सरकारके । भक्तमालभाखा ताकेलरबरि राखा सो न काणीहोनअभिलाखा कौशिलाकुमारके ॥ दरसत भक्तमाल भूरिभाग भालहालडारसतरोगसोगकामकोह कायाके । परसतपापपुंजपरमपरातजाततापदा पदूरिसुखसरसतसायाके ॥ पूजतपुनीतपुन्यकहैकविकौनगुन्यरंकताकेअंकशून्यसो विसोसिनायाके । सिद्धिनाथ सिद्धिसुनेलोक परलोकवृद्धिगायामनभायादायानि द्धिगदरायाके ॥ सुनतसुहातसुटिसौंचसुखदेरिहोतआचतननाचफेरितप्योतीनिता पसे । यमलोकजाँचनाहितनकनआँचताहिवाँचतसुचितचाहिचारोओरआपसे ॥ सिद्धिनाथमाहिमाप्रसिद्धिवृद्धिऋहिमाहैमहिमाहिशुद्धिलहलैतेयाप्रतापसे । भक्तमा लभक्तमालभक्तमालभक्तमालभक्तमालभक्तमालभक्तमालजापसे ॥ वेदऔपुरा नोभेदभीरक्षीरनीरनिधि नाभामतिधीरमानोमन्दरपहारहै । वारवारबाँचिबाँचि साँ चिसाँचिसारसारखाँचिकैनिकारलियोकियोउपकारहै ॥ भक्तमालकल्पवृक्षजगम गजोतिहोतिऔरसवस्वल्पजक्तटौरटौरखारहै । आवैयाकेतलतसपावैमनभावैफल गावैकससिद्धिनाथभलहियेहारहै ॥ जहाँजहाँगनेग्रन्थऔरशुभपन्थवनेकियेकलिसंग टनेवेशुमारसो । तहाँतहाँअसरसहाँगहालहाविनछिनछिनछविछाकिकौशिला कुमारसो ॥ ऊखरूखर्कामिठाईपाईकिमिसमताईनूखतपियूखकीनआईअनुहार सो । सिद्धिनाथकैसिहालहालहैरसालएकभक्तमालजक्तजनजीवनअधारसो ॥ चौपाई ॥ भक्तमालभावैभगवानैं । सुनैंजहाँजनकोउवखानैं ॥ भगवतभक्तमालके नेमी । सुटिसुखसमुझिसुनैंप्रभुप्रेमी ॥ जैसेसन्तभजैंभगवन्तहि । त्योंभगवन्तहिभा वतसन्तहि ॥ भक्तमालकोबाँचिसुनावै । श्रीपतिसन्मुखभलफलपावै ॥ परमप्र सन्नहोतहरिहेती । तबसबपूरपरैचितचेती ॥ यहसुनिजनिअचरजउरआना ! भ

अनुरागेभक्तमालभरिभावभलो । सुनिवेजनआवैंसुठिसुखपावैंगुरुधनकेवचाविगतम लो ॥ घनाक्षरीछन्द ॥ जैसेअन्धअन्दरमकानकेग्जानहेतटेकिटेकिभीतिआवैद्वारओर हेरिकै । छूटिकैलँगोटीलगिचोटीसबजुआनतप अटकेसेइहथपावैभीतिछोरफेरिकै ॥ मायाअन्धजीवजोहैभीतिचवरासीसोहैनरदेहद्वारओहीआगाआवघेरिकै । तृसना लँगोटीचोटीप्रीतिरीतिछोटीकरिकहैसिधिनाथधामधसोरामटेरिकै ॥ चौपाई ॥ भ क्तमालपूरेनहिंभयऊ । गुरुधनदासस्वहूँचलिगयऊ ॥ सोसतसङ्गविछोहविचारी । सुजनसमाजदुखारीभारी ॥ सुरपुरनरपुरमुक्तिहुमाहीं । लवसतसङ्गसरिसुख नाही । ठाकुरद्वारेमेंसुभसूरति । श्रीगोविन्ददेवकीमूरति ॥ भक्तमालकीकथासुने बिन । श्रीपतिबहेविकलछतिछिनछिन ॥ गुरुधनदासदासकोप्रेरे । आपबुलाइ लियेनिजनेरे ॥ बोलेसन्तकथाअबदाँचो । सकलसमाजसुधासुखसाँचो ॥ प्रेम प्रबन्धकहांसेछूटे । लागिविसूरनआवनटूटे ॥ वेरावचारिविकलभगदाना । सब केसुनतहिवचनवखाना ॥ लागिकथारैदासकथासो । भावतभक्तमालस्वर्गिपासो ॥ भक्तमालकीकथापियारी । मोकोलागतिहैभलभारी ॥ जोकोउकबाँचनतज्य हिठाऊँ । नितचितचोपसुनैतहँजाऊँ ॥ बाँचनहारेपरमपियारे । उनकोदेऊँलो कसुखसारे ॥ मुक्तिचारिविधदेउँजहूँपर । तिनकेसिनियाँरहौंतहँपर ॥ बाँचीभ क्तमालजहँजाई । तीरथशतसमभूमिमुहाई ॥ केवलपोथीधरीजहाँहीं ॥ यमगण जायसकैनतहाँहीं ॥ भक्तमालभलबाँचनवारा । ताकेमानेसुखसंसारा ॥ अन्तिस मनस्वैठिविमाना । मरेसरिससुरूपसुहाना ॥ जाहिरजगमगजगमगहोती । कोटि सुतकैसमजोती ॥ यदपिप्रकाशपुंजफविफैला । लोगलखैंनलग्योमनमैला ॥ छन्दनिकरैंसुठिसेवा । गुणगणगाइरहेहिहदेवा ॥ खानपानसाआनसमीपहि ॥ ठौर ॥ननमहामहीपहि ॥ दोहा ॥ ऐरे वेआवैंअवशि मेरेलोकअशोक । भक्त सोइ ॥ पुनहिंजेतेसवमुखओक ॥ सोरठ ॥ भक्तमालकीआपपूजितपोथीजहँ लामहोतनहींसन्ताप रोगसोगताऊनतहँ ॥ ऊनपरैताउनभक्तमालकेनामसे । सुने मालहून वाचकदशतपरसतहु ॥ चौपाई ॥ श्रीगोविन्दचन्दकेमुखसे । भक्त मालमहिमामृतसुखरो ॥ सुनिसबसाधुसभासुखपाया । प्रकटप्रभावप्रभूदरशाया ॥ पनिप्रतिमाबोलवताबत । लोगनलगिअचरजअतिआवत ॥ विदितवातसंसा हीसो । सरहतसन्तोतसन्तसहीसो ॥ येदलवेदविषलखिलीजे । सन्तगहन्तअनन्त भनीजे ॥ संशयसोउतजोउरमेरो । सन्तनकेपगमेंहरिहेरो ॥ श्रीपतिकोअभिलाष लहेजब । भक्तमालकीकथाकहेतब ॥ दरशनतनअतिआनन्दा । गोसुनिभेसुठि श्यामसुनन्दा ॥ जहँतहँकेश्रोताजेआये । तेजनमनआयेफ्लपाये ॥ तनतजिअन्तअ नन्तलोकमहि । वैठिविमानजशोकओकवहि ॥ तबसबलोगअधिकअभिलाखे ॥ यकयकपोथीकीप्रतिराखे ॥ लाखनपोथीराखनचहही । शारीभयेभागसेलहहीं ॥ दोहा ॥ भक्तमालभाषाभली श्रुतिशास्त्रसमशुद्ध । श्रीपतिश्रीमुखजासुको बहु चरनेअविरुद्ध ॥ रूपसवैयाछन्द ॥ भक्तमालपेश्रीनेपावनभूमिप्रतापपुनीतप्रमानो । यकनर्मदानिकटवडनेकोवासीविप्रविनीतवखानो ॥ नाममुमारदवजगजाहिरसोगल तागादीकैआयो । कैसंतसङ्गतिरामरंगरखिभक्तमालउलखिलखिलिखायो ॥ सो लैचल्योदेशअपनेको अतिअटपटमगमेंठगघेरे । सबअसबाबकिताबछीनिछलिमारि डारिपुनिगड्मेंगेरे ॥ ताहीरातिजातिअपनेको सपनेकोसबकोदरश यो ... भक्तमाल

कहैंयमराजजीअवाजकैदराज आजआजवै विचारि शिरताजताबिसारिदे । एरेमेरे चित्रगुप्ततोसों कहौंखेरेबेरेफरदको फारिफेरेगरदमेंगारिदे ॥ सहीकीनसहीरही वही फिरैवहीवही खोजुरोजुनामचाको भूजीभारेभारिदे । सिद्धिनाथजक्तजेपै भक्तमाल ओरसालताको अक्षालफक्तनाम पापीतारिदे ॥ वरजतबारबार दूतनकोयमराज गरजतभक्तमाल जहांजनिजायोरे । श्रोताअरुवक्ता जेतेभगवतभक्ता तेते तिन्हेजस जक्ताजोरिहाथ माथनायोरे ॥ पापनकोथापनपै आपननिबैहैंराम सिद्धिनाथ तापनको शोखिसुखदायोरे । रोकेरह्योमेरेलोक आवैनाहिपावै ओईनातोखोई नरकनफरकप रायोरे ॥ दोधकछन्द ॥ सुनिस्वामि सिखावनसोइसबैते । करतेनितनेम निबाहतवैते॥ यमदूतशकानि शकानिरहैंजू । हरिभक्तकथा नहिजाहितहैंजू ॥ इसपुस्तकप्रीति प्रती तिकियेते । मनभावतसोफल लोगलियेते ॥ परकासकरौं इतिहासतथा । सिगरेसु निलेहु सुजानयथा ॥ विष्णुपदछन्द ॥ नाउँगुमानीलाल ठाउँटपिरथकगाउँबसे । प्रीतिप्रतीतिसन्तभगवन्तहि इन्द्रियआनिकसे ॥ रामनामकीरटनिपटनिसे रचिगुखिसो इसदै । गुरुगुरमहिसुरपूजत प्रतिदिनानन्दतविष्णुपदै ॥ भक्तमालभाषान्तर कीन्ह्योपो थीप्रबटअहै । ताहिप्रल्हादजो भयउसोसवकोउकहै ॥ वहतबरसकीवयस बीति कैएकहिपुत्रभयो । यहीतेअधिकीउसऊपर छिनछिनछोहन्यो ॥ ताकोतहांबिमारी आगीरोगमृगीकिसही । सोईभईभवनकेभीतर भागिनिरोइरही ॥ प्रीतिपुनीतपरी पोथीपर लालालिखितरह्यो । बड़ीबेरमेंगयोबालाढिग तयतियकटुककह्यो ॥ पोथीनिन्दा वैनसकेसहिबोले वैनतहां । पेखुप्रतापअरीअब याकोरैहैरोगकहां ॥ भक्तमालधत सुतकेउरपर धरतहिमृगीगई । विदितबातसंसार रायौकोबहुरिकबौनभई ॥ मल्लिका छन्द ॥ भक्तमालकोप्रताप । जक्तमेंअहैअनाप ॥ ऐसहीअनेकऔर । भे, विचित्रठौर ठौर ॥ भाषियेसुकौनकौन । चारुहैंचरित्रजौन ॥ प्रीतिकैमनोर्थजोइ । पूरिहोतसोइ सोइ ॥ चौपाई ॥ सुनहुसुजान औरअबभाखौं । संक्षेपहिकहि गोइनराखौं ॥ डा लामऊ गंगकेतीरा । तहँश्रीहरीदासमतिधीरा ॥ रामनामजपि जक्तजियेसो । भक्त मालपरप्रीति कियेसो ॥ ममप्रपितामहहूंके व्यवहारी । उनकेअमित चरितभलभारी ॥ तुलसीदलदीन्हे काहूको । अन्नकमी परयोताहूको ॥ सोब्राह्मणहित बनीसुहारी । सोनेलागी पायँपखारी ॥ साधुपांचसौ आनपरेजू । ताहीसमय उतरिउतरेजू ॥ उत नेहीभोजनमें सबको । पूरोपरोकरै यहअबको ॥ सोप्रतापभव भक्तमालको । हरी दासकी चारुचालको ॥ रायबरेली जिलाजनाऊं । डिघवरनाउँ गाउँयकठाऊं ॥ गुणगणमाण्डतपण्डिततामहँ । लालाराममोरप्रपितामहँ ॥ रहवांकेराजा जिनमुखसे । श्रीभागवतसुने सुठिसुखसे ॥ गनिअध्याय तीनिसैपैंतिस । तैबिगहाभुवदेन चह्योति स ॥ बाबाकह्यो भूपसुनिलीजे । केवलबारह बिगहादीजे ॥ सोसन्तोष कहांकोपाई । भक्तमालपर प्रीतिदृढाई ॥ श्रीशिवदीनराम लघुभाई । तिनसेकोऊ कियोलराई ॥ बन्धुहिबरजिबवा कियक्षमसो । गारीदेत लेतकाहमसो ॥ नामहुलास प्रगोसीसोई । पेटपिरानजान सबकोई ॥ भलेभयो पुनिपायँपरेसे । भक्तमालअस सुयशभरेसे ॥ शालग्राम पितामहमेरे । श्रीभागवत कण्ठजिनकेरे ॥ तालुकदार शिष्यपदपरहीं । सोनितनेम नीकनिरवरहीं ॥ बारहपाठ सहस्रनामकी । साठिसहस्र जपरामनामकी ॥ श्रीभागवत पाठपुनिकरते । दशअध्याय सबहिसुखभरते ॥ उनकेमुखसे मैंसुनिपाई । भक्तमालकी करतबड़ाई ॥ छीतदासभक्त भलप्रेमी । भक्तमाल बाँचनके नेमी ॥ अं

गोगोपसङ्घावृतं गोविन्दंकलवेणुवादनपरं दिव्याङ्गभूषंभजे ८ ॥
दोहा ॥ प्रेम चितेरे की कुमति कापै कही जाय ॥ मोहन मूरति
श्याम की हियपट लिखी बनाय ६ तीक्षण वहनी बाण सों बेध्यो
हिय दुसार ॥ जालरंध्र कीन्हों मनों पेखीवट अँधियार १० लिखि
स्वरूप चितको दियो लियो हिये सो लाय ॥ चित्रकार पर वारि
तन रह्यो पाइलपटाय ११ ॥ कवित्त ॥ श्यामता उज्यारी मन्द
मुरली अधरधारी रूपरूपवारी आँखें रूपताकि रहीं । केश खैंचि
बांध्यो जूरा बेरा मनभांभ चूरा प्रेमछांवे पूरा द्युति चन्द्रिका सुबही
है ॥ अलकें कपोलनिपै छुटिआई पुट मानों घटलेत हिये कछु
वैसि हीये यही है । श्रीगोविन्दचन्दजूको चित्रलिखि चित्र दियो
बड़ेई विचित्रनिकी मति अतिगही है १ ॥ पद ॥ नमो नमो
श्रीभक्ति कृपाल । जाके मनत महानम नाशन उर झलकत राधा
नँदलाल ॥ गद्गद सुर पुलकन अँग अंगन लोचन वरषत आनँदजल
जाल । उतरिजात अभिमान व्यालविष लेत जिवाइ सुरसनिधि
काल ॥ होत प्रीति हरिभक्त जननसों लेतसीतगाठि चरण प्रक्षाल ।
तजत कुसंग लेत सतसंगति भाग जगत कोउ अद्भुत भाल ॥
निशिवासर सोवत अरु जागत रोम रोम ह्वै करत निहाल ।
अग्रनारायन दास प्रिया प्रिय प्रकटी जीवनि रसिक रसाल ३
हरिको स्वरूप प्रेमरूपी चित्रकार सों लिख्योजाय और सों नहीं
महाप्रभु विशेष काहेते जीव हरिसों विमुख सम्मुख आवैजाय
प्रासहोइ १ ॥ गीतायाम् ॥ दैवीह्येषागुणमयीममामायादुरत्यया ॥
मामेवयेप्रपद्यन्तेमायामेतांतरन्तिते २॥ चैतन्यभागवते ॥ एतेचांश
कलाःपुंसःकृष्णस्तुभगवान्स्वयम् ॥ इन्द्रारिव्याकुलंलोकं मृडय
न्तियुगेयुगे ४ ॥ मनहु न अकूर सो कामधेनु है । राधाचरणदीपि
कायां॥ दृष्टःक्वापिचकेशवोव्रजवधूमोदायकाश्चिद्गतः सर्वाएवविमो
चिताःसखिवयं सोन्वेषणीयोपादि ॥ होद्धौगच्छनासित्यदीर्घमहसा
राधांगृहीत्वाकरे गोपीवेषधरोगिकुञ्जभवनं योहरिःपातुवः३ ॥
सखीको उदाहरण ॥ कवित्त ॥ आजु मनमोहनसोंमोसों ऐसी होइ

परी और इन आलिनसों कहाधों विशेखिये। दर्पण निहारिकहूँ कही मेरे बड़े नैन हांकही इन्हूं तो बोली हौंहूं तोखिये॥ दीरघ दरारे दृग मेरी राधा कोरिके है कैसो दरिजातो चलो दिखलाइ पेखिये। आये हैं हरावो इन्हें अहो पेहो थकिगई पहचानि आंखिन सों आँखें माहिं देखिये ४ जैसी नित रहति हैं तैसी आँखियेंहैं मेरी इनकी अनैसी अरुनई भये तेखिये। चित्त नें लहीं हैं प्यारी दीसत न उजियारी उसहीके बल अहो माहिं अवरेखिये॥ हौंहूं जानति हों दोऊ सम कैसे देहें देतें चारि किये प्रेम नैननो विशेखिये। जित घट देहें तित जोरहे सुजान कान्ह कैसे ऐसी आंखिन सों आंखे माहिं देखिये ५ मीनसम थथेरात उधर दुरत कच्छ वासन हैं मनहरियेतें निश्चै हेरे हैं। नेकु न निहारै हिद फारत वाराह सम अरियेते पर्शुराम फिरत न फेरे हैं॥ तीक्ष्ण नृसिंह तम्र बोधक अलोलिवेत तारियेतें राघव गुलाब चित्त नेरे हैं। मोहिबेतें मोहन यों कलकी हैं निष्कलंक दशौ अवतार किधौं प्यारीके न तेरे हैं १॥ वृन्दावन मनहरणपै॥ श्लोक॥ कृष्णोन्योयदुसम्भूतो यस्तुगोपेन्द्रनन्दनः॥ वृन्दावनंपरित्यज्य पादमेकंनगच्छति १ बर्हापीडंनटवरवपुःकर्णयोःकर्णिकारं बिभ्रद्वासःकनककपिशंवैजयन्तीं चमालाम्॥ रन्ध्रान्वेणोरधरसुधयापूरयन्गोपवृन्दैर्वृन्दारण्यंस्वपादरमणंप्राविशद्गीतकीर्तिः २॥ व्रजवासी मनहरणपै॥ भागवते॥ अहोभाग्यमहोभाग्यं नन्दगोपव्रजौकसाम्॥ यन्मित्रंपरमानन्दं पूर्णब्रह्मसनातनम् ४ ।साधमनहरणपै॥भागवते॥ निरपेक्षंमुनिंशान्तं निर्वैरंसमदर्शनम्॥ अनुव्रजाम्यहंनित्यं पूयेयेत्यङ्घ्रिरेणुभिः ५॥

आज्ञानिरूपन कवित्त घनाक्षरी छन्द॥ महाप्रभुकृष्ण-चैतन्य मनहरणजूके चरण को ध्यान मेरे नाम मुख गाइये। ताहीसमै नाभाजी ने आज्ञादई लईधारि टीका विसतारि भक्तमालकी सुनाइये॥ कीजिये कवित्तछन्द छन्द अतिप्यारो लगै जगै जगमाहिं कहि वाणी विर-

माइये। जानों निजमति येपै सुनो भागवत शुक द्रुमन प्रवेश कियो ऐसेई कहाइये १॥

टीका को नाम स्वरूप वर्णन॥

भगवान् कह्यो मैं भक्तन को ऋणियांहौं याते इनकी चरण रेणु मैं शिरपर धारोंहौं क्योंकि मेरो अपराध मिटै ६॥ गीतायाम्॥ येयथामांप्रपद्यन्ते तांस्तथैवभजाम्यहम्॥ येदारागारपुत्राप्तान् ७ सो कही पै बनी नहीं क्योंकि इन्होंने घर बार पति पुत्रादि कुल धर्म सब छोड़े अरु मोते कछू न छूट्यो याते हौं इनको ऋणियां हौं याते विचारो इनहीं की चरण रेणु शिरपर धारों तब मेरो अपराध मिटैगो सो याते धारोहौं ८ ध्यान मेरे नाममुख गाइये ६ तहां दोउ कैसे बनें श्लोक॥ इन्द्रियाणांलयोध्यानम्॥ तापैदृष्टान्तसिद्धके द्वैरूप इन्द्रिनको १० ताही समय॥ दोहा॥ पायलपाय लगी रहैं लगे अमोलक लाल॥ भोडरहूकी भासिहैं वेंदी भासिनि भाल १॥ सुनाइये॥ सनत्कुमारवाक्ये॥ सर्वापराधकृदपि सुच्यतेहरिसंश्रयः॥ हरेरप्यपराधान्यः कुर्याद्द्विपदपांसनः २॥ आगमे॥ यानैर्वापादुकाभिर्वा गमनंभगवद्गृहे॥ देवोत्सवाद्यसेवाच अप्रणामस्तदग्रतः ३ उच्छिष्टोवाप्यशौचेवा भगवद्वन्दनादिकम्॥ एकहस्तप्रणामश्च तत्पुरश्चाप्रदक्षिणम् ४ पादप्रसारणंचाग्रेतथा पर्यङ्कबन्धनम्॥ शयनंभक्षणंचापि मिथ्याभाषणमेवच ५ उच्चैर्भाषामिथोजल्पो रोदनानिचविग्रहः॥ निग्रहानुग्रहौचैव नृपुचक्रूर भाषणम् ६ कम्बलावरणंचैव परनिन्दापरस्तुतिः॥ अश्लीलभाषणंचैव अधोवायोर्विमोक्षणम् ७ शक्तौगौणोपचारश्च अनिवेदित भक्षणं॥ तत्तत्कालोद्भवानांच फलादीनामनर्पणम् ८ विनियुक्तावशिष्टस्य प्रदानंव्यञ्जनादिकम्॥ पृष्ठीकृत्वासनंचैव परेषामभिवादनम् ६ गुरौमौनंनिजस्तोत्रं देवतानिन्दनंतथा॥ अपराधास्तथा विष्णोर्द्वात्रिंशत्परिकीर्त्तिताः १० नामाश्रयःकदाचित्स्यात्तरत्येवस नामतः॥ नाम्नोपिसर्वसुहृदोह्यपराधात्पतत्यधः ११ नाभाछप्पे॥

गुरु अवज्ञाकरै साधु निंदाविस्तारै। शिवकी निंदाकरै ब्रह्ममें भेद विचारै॥ नामहिं बल करि पाप नाम परताप न जानै। वेदनिशास्त्र उलंघि आप मनको मतठानै॥ बिन श्रद्धा उपदेश और ठगि- आयो पोषै। निज इन्द्रिनके हेत चेतधरि पिण्डह सोषै॥ ये दश अपराध तजि देहते साधु संगति सं मिलिरलै॥ तरत्रैतातीनिहुं लोकमें राम नाम ताको फलै १२॥ गीतायाम्॥ मूकंकरोतिवा चालं पङ्गुंलङ्घयतेगिरिम्॥ यत्कृपातमहंवन्दे परमानन्दमाधवम् १ कहाइयपै॥ दोहा॥ संत कृपा रवि उदयते मिटै तिमिरअज्ञान॥ हृदय सरोवर विमल ह्वै फूलेहित बुधज्ञान २ श्रीभागवतनहि की सुबुधि कही कीरकलगान॥ भक्तमाल अभिप्राय जो जानैं संत सुजान॥ ३॥

रचिकवितईसुखदाईलगैनिपटसुहाईऔसचाईपुनरुक्तिलैमिटाईहै। अक्षरमधुरताईअनुप्रासजमकाईअतिछविछाईमोदझरीसीलगाईहै॥ काव्यकीबड़ाईनिजमुखन भलाईहोति नाभाजूकहाईयातेप्रौढ़कैसुनाईहै। हियेसरसाईजोपैसुनियेसदाईयह भक्तिरसबोधिनीसोनामटीकागाई है २॥

रचिकविताईपै॥ श्लोक॥ यद्ब्रह्मातृवधपातकिमन्मथारी सत्रान्तकारिकरसक्तमपावभीत्या॥ ऐशंधनुर्निजपुरश्चरणायनूनंदेहंमुमोचरघुनन्दनपाणितीर्थे ४॥दोहा॥ पिपलाखिसियकीमाधुरी तृणतोरनकेचाइ॥ भोरैं धनुषउठाइकै तोरचो सहज सुभाइ ५॥ श्लोक॥ कमठपृष्ठकठोरमिदंधनुर्मधुरमूर्त्तिरसौरघुनन्दनः॥ कथमधिज्यमनेनविधीयतामहहतातपणस्तवदारुणः ६ रचियो नाम रंगको है कविताको कहा रँगियो चीज काढ़िलेवो यही कविता को रँगियो है ७ सुखदाई सुहाइ पुनरुक्ति भई नाहीं सो कविता तीनि प्रकार की शब्दचित्र अर्थचित्र शब्दार्थचित्र॥ सवैया॥ हटकै न रहैं भटकै पलओट भटू मेरे नैनानि मों बसकै। भटकै

उलही सटके मनलै नटकेसे वटा। टटकेरसके॥ लटके लटछोरनि सों लटके खटके न कटाक्षनके रुसके। मटके न छटा छवि के झलकें न लगे इन चाहन के चसके ८ पीसौं झुकी रसना विन काज लखे गुणनाम समान तिहारे। नैन चले अतिरूखेरहे तुम ताही ते नैन ये नाम धरारे॥ संत विरुद्ध वृथा अतिही जिय ते दुख नेकु टरे नहिं टारे। पाइ सुलक्षण राग अरे करकाहे को नंदलला झिझकारे १ दृगहौ तुम दाई अदाई बड़े अरु घूंघट माहिं रहे फँसिकें। रसना रस जानति तू न कछू मुखबैन कहैनहिं तें हँसिकै भुजहौ तुम भूलकरी इतनी प्रिय प्यारे सों क्यों न मिले गँसिकै। मन तू न मिल्यो मनमोहन सों सबहीके सयान गये नँसिकै २॥ दोहा॥ चप उपमा कमलासनै आसन निज तन कीन॥ विमलज हृदया अमल को धूरि कमल मुखदीन ३ वारो वलि तो दृगनि पर अलि खञ्जन मृगमीन॥ आधी दृष्टि चितौन जिमि किये लाल आधीन ४॥ कवित्त॥ कारे झपकारे रतनारे अनियारे सोहैं सहज ढरारे मनमथ सतवारे है। लाज भरि भारे जो चपल अनियारे तारे सांचेके से ढारे प्यारे रूपके उज्यारे है॥ आधी चितवनिही में आधीन कियेते हरि टोने से वशीकरके लोने पनियारे हैं। कमल कुरंग मीन खञ्जन भँवर वृषभानु की कुंवरि तेरे दृगनिपै वारे हैं ५॥ सचाई श्लोक॥ हरोहिमालये शेते हरिश्शेतेचवारिधौ॥ आकाशेभ्रजतेसूर्यो जानेसत्कुगशक्य॥ वायसाःकिन्नभक्षन्तिकेवयोनवदन्तिकिम्॥ सद्मपाःकिन्नजल्पन्ति किन्नकुर्वन्तियोपितः ६ मृषागिरस्ताह्यसतीरसत्कथानकथ्यतेयद्ध गवानधोक्षजः॥ तदेवसत्यंतदुहैवमंगलंतदेवपुण्यंभगवद्गुणोदयं ७॥ पुनरुक्ति दोहा॥ दोष नहीं पुनरुक्तिको एक कहत कवि राज॥ अर्थ गहै पुनि अर्थ को ये कविगण के साज॥ वारणको तारण अहो वार न लागी तोहिं॥ वार न कीजे हे प्रभो! वा रण

१ चरण के अंत में लघुके विकल्प करके गुरुसंज्ञा होती है इससे नकार में दो मात्रा गिनने से तेरह मात्रा के दोहा का चरण होताहै॥

भटकन मोहिं ८ मनकी सचाई पाइके उठिआये प्रभुपास॥ मन वांछित फलपाइके हियमें अधिकहुलास ६ शुद्धघटमें तो हरि सदा वासकरेंहें ताको चिंता कौन शत्रुकोहै मधुरताईपै॥ कवित्त॥ करत कवित्त मुक दौरैमनदौरैजहां औरैऔरैऔरैजहां रसकोठसांकरैं। सौनेकीसी सांकरै ये मिश्रीकीसी कांकरैं ये आकरस आकरें सुहाकरैं निसाकरें॥ सौंठिकीसी गांठें तुकगांठें तेऊगांठिकीन सांठसों लैआनी काहू आकनिकेराकरें। दोऊते समान ये जहानको जमानोदेख्यो भोरभये जीत्यो पटपद पदमाकरें १ अंग अंग औवटन घाट है मनावेकोउ लालको तृपाहै या अधररसपानकी। मोह की मरोरनिमें भौरसे परतजात त्योरी की तरंगनि में निठुर निदान की॥ जगन गहर मौन उत्तर न थाहकिहूं ऐसी गरबीली है हठीली वृषभानकी। रिसके प्रवाह रसकूलन विदारेंजात नदी सी उमड़ि चली मानिनीके मानकी २॥ अनुप्रास॥ मदनतुकासी किधौं राजेंकुंदकासी मानौं कंजकलिकासी कुच जोरीहू विकासीहै। गांसीभरी हांसी सुखभासी मोहफांसी मदयोवन उजासी नेहदियेकी शिखासीहै॥ जाकी रतिदासी रमारासी है रमासी को कहै तिलोत्तमासी रूपसरन प्रकासी है। काम की कलासी चपलासी कविनाथ किधौं चपलतिकासी चारुचंद्र चंद्रिकासीहै ३ सोई मेरो बीर जोलआवै बलबीर ताहि देहौं दोऊचीर मेरो विरह बँटाइ ले। भंजन छपाके पीर छपै न छपाये पीर छपाकरि छपै तो छपाकर छपाइले॥ मदनलग्यो है धाइधाइसो कहौरी धाइ येरी मेरी धाइ नेक मोहूंतन धाइले। देहरी थरथराइ देहरी चढ़यो न जाइ देहरी तनकहाथ देहरी लँघाइले ४॥ काव्यकी बड़ाई॥ कवित्त॥ यहै कविताई जामें भरी सरसाई मृदुपद सुखदाई अरु रचना सुहाई है। जाके ढूंढ़िबे को वडे रसिक प्रवीन मन लीन भये रसमांझ जबै जाइपाई है॥ जैसे तीरगरउर निपट एकाग्र करि आधीआंखि मूंदि लखै तीरकुटिलाई है॥ ऐसे वह कविताई प्रकटदिखाई देति ताकी न बड़ाई वा बनाई की बड़ाईहै १॥

भक्तिस्वरूप॥ श्रद्धाईफुलेलऔउबटनोंश्रवणकथामे लअभिमानअंगअंगनिलुटाइये। मननसुनीरअन्हवाय अँगुआयदयानवनवसनपनसौंधौलैलगाइये॥ आभरण नामहरिसाधुसेवाकर्णफूलमानसीसुनथसं अंजनवनाइ ये। भक्तिमहारानीकोशिंगारचारुवीरीचाह रहैजोनिहा लहैलालप्यारीगाइये ३॥

श्रद्धाई फुलेल भक्ति महारानी को शृंगार आगमे॥ हरेर्भ क्तिर्महादिव्या सर्वामुक्त्यादिसिद्धयः॥ भुक्तयश्चाद्भुतास्तस्याश्चे टिकावदनुव्रताः २॥ भागवते॥ तत्सर्वंभक्तियोगेन मद्भक्तो लभतेऽञ्जसा॥ स्वर्गापवर्गोमद्धाम कथञ्चिद्यदिवाञ्छति ३ ता पैदृष्टांतराँकाबाँकाको॥ आगमे॥ आदौश्रद्धाततः साधुसंगोथ भजनक्रिया॥ततोनर्थनिवृत्तिश्च ततोनिष्ठारुचिस्ततः ३ कथाशक्ति स्तथाभावस्ततः प्रेमाभ्युदञ्चति॥ साधकानामिदंप्रेम प्रादुर्भा वोभवेत्क्रमात् ४॥ मैलअभिमान॥ जातिर्विद्यामहत्त्वंचरूपंयौवन मेवच॥ यत्नेनपरितस्त्याज्यः पञ्चैतेभक्तिकण्टकाः ५॥ पांचकांटे सोई पांचोंमैल॥ भागवते॥ नालंद्विजत्वंदेवत्वमृषित्वंवासुरा त्मजाः॥ प्रीणनायमुकुन्दस्य नवृत्तनवहुज्ञता ६ नदानंनतपोने ज्या नशौचंनव्रतानिच॥ प्रीयतेमलयाभक्त्याहरिरन्यद्विडम्बनम् ७ मननसुनीरन्हायवेमें आनंद जैसेही मननमेंअंगौछादयामेंतीन गुण तेलछुटावे उवटनो अरु मैल श्रद्धाकथामनन॥ नारद पंच रात्रे॥ वैष्णवानांत्रयंकर्मदयाजीवेषुनारद॥ श्रीगोविन्देपराभक्ति स्तदीयानांसमर्चनम्॥ कर्णफूल पांचजातिके जड़ाऊ सोनेके रूपे के रांगके काठके पै सुहाग पांचोंही में रहैं याते करै तौ दोऊकरै साधुसेवा न वनिआवे तो प्रभुकी भी उठाइ धरै॥ पाद्मे॥ अर्च यित्वातुगोविन्द तदीयान्नार्चयन्तिये॥ नतेविष्णुप्रसादस्य भाज नंदाम्भिकाजनाः २ सतसंगपैभागवते॥ नरोधयतिमांयोगो न साङ्ख्यंधर्मएवच॥ नस्वाध्यायस्तपस्त्यागो नेष्टापूर्त्तनदक्षिणा ३

व्रतानियज्ञछन्दांसितीर्थानिनियमायमाः ॥ यथावरुन्धेत्सत्सङ्गःसर्व सङ्गापहोहिमाम् ४ अथवा भक्तिके अंग भक्तमालही में हैं श्रद्धा सेवामें गंदाधरभट्टकथामेंपरीक्षित मननसुचोर चतुरभुज दासकी कथा सुनी ५ दया केवलराम साँटी पीठिमें उपज्या ६ नवन गोपालदास जोवनेरी पन राजाआशकरन नाप आभरणअन्तर्निष्ठ७ हरिसेवा रत्नावती रानी ८ साधुसेवा सदावती मानसी रघुनाथ गोसाई सत्संग ग्वालभक्तः ६ चाहवारी मधुगोसाई १० ॥

भक्तिपंचरस ॥ शान्तदास्यसख्यवात्सल्यऔश्रृंगा रुचारुपांचौ रसपार बिस्तारनीके गाये हैं । टीकाको चमतकारजानौगे बिचारिमन इनके स्वरूप में अनूपले दिखाये हैं ॥ जिनकेन अश्रुपातपुलकितगातकहूंतिनहूं कोभावसिन्धुबोरेसोछकाये हैं । जौलौरहैदूरिरहै बिमुखता पूरि हियौहोयचूरिचूरिनेकुश्रवणलगायेहैं ४ पंचरससोई पंचरंगफूलथाकिनीके पीकेपहराइबेकोरचिकैबनाईहै । बै जयंतीदामभाववतीअलिनामानाम जाईअभिरामश्याम मतिललचाईहै ॥ धारीउरप्यारीकिहूंकरतनन्यारीअहो देखौगतिन्यारीढरिपायँनिकोआई है । भक्तिछबिभारतातें नमितश्रृंगारहोतहोतनग्रालखैजोईयानैंजानिपाईहै ५ ॥

भक्तिपंचरसमें ॥ सोभक्तिको स्वरूप क्रियात्मकहै सो क्रिया हीते जानी जाइहै ॥ भागवते ॥ देवानांगुणलिङ्गानामानुश्रवि कककर्मणाम् ॥ सत्वएवैकमनसो वृत्तिःस्वाभाविकीतुया १ अनि मित्ताभागवती भक्तिःसिद्धेर्गरीयसी ॥ जरयत्याशुयाकोशं निगी र्णमनलोयथा २ जैसे रसन में इन्द्रिय स्वाभाविकीही चलै है ऐसे ही समस्त इन्द्रिय भक्तिमें स्वाभाविकी लगैं या क्रियाते भक्ति जानीजाइ है सो भक्ति पञ्चप्रकारकी वर्णन की है जैसे ईखको रस खाँड़ बुरा मिश्री कन्द ओला स्वाद न्यारे न्यारे तत्त्व एक ३

शान्तरस ॥ दोहा ॥ यसकरि सुहनर हटिपरयो यह धरिहरि चि-
नलाइ ॥ विषय तृषा परिहरि अजों नरहरिके गुणगाइ ४ दास्य
रस ॥ दासनदास निहारो आगी प्रभुमोते नहीं कछुवे वनिआई ।
नेनुखटावनि मोदकदावनि सोहित भागकी नीरद्विवाई ॥ आपुही
में विरुझ्यो तिनमें पगितातें तहां तुम्हरीको चलाई । पै अपनो
जन जानि गहो नहिं जातिअहो तुम्हरी ये बड़ाई ५ ॥ कवित्त॥
गुणनगहेहों मन व्यारमें वहेहों तेरी ढीलनदेहहों पंचरंगको पतं-
गमें । जितहीकन्यावतहो तितहीमें आवतहों येंचेझुकि धावतहों
पवनके संगम ॥ गयोभरिवाय हरि उपरन रह्यो आइ तात थिन
थांभधँभ्यो थिरकनिके रंगमें । हरेहरे खेंचिनाथ कीजिये जु अपनी
घातातक अनाथ जात अनंग नगरमें ६ सख्यरस करुणाभरना-
टके ॥ एककहे असयलहिं कीजे । कृष्ण द्वारका जान न दीजे ॥
एककहें हों लेहोंदांव । कहा भयो है आयोराव ७ एककहें आवन
तो देहु । तव तुम दांव आपनो लेहु ॥ वात्सल्य पद ॥ जोपें रा-
खतहो पहिचानि । तौ वे वालक मोहन मूरति मोहिं सिलावो
आनि ॥ भली करी कंसादिक मारे सुरमुनि काजकिया । अब इन
गाइन कौन चरावे भरिभरि लेत हिया ॥ तुजरानी वसुदेव गेहनी
हम अहीर व्रजवासी । पठेदेहु मेरे लाल लड़ते जागें येमीहांसी॥
ल्यानपान परधान विविधसुख जो कोउ लाललड़ावे । तदपि सूर
मेरो कुंवर कन्हैया गोरसही सुखपावे १ शृंगाररस कवित्त ॥
सीखे रसरीति सीखे प्रीतिके प्रकार सब सीखे केशोराइ मन
मनको मिलाइबो । सीखे सोहे स्यान नटिजान मुसकान सीखे
सीखे सैनवेननि सें हँसिनो हँसाइबो ॥ सीखेचाह चाहसों जु-
चाह उपजाइबोकि जैसी कोऊ चाहे चाह तैसी चाह चाहिबो ।
जहा जहा सीखे ऐसी बातेंघातें तातें तब तहां क्यों न सीखे नेकु
नेहको निबाहिबो २ ऊधौ कहा कहिये जियकी तिय कौनसी
जो न सँभारति हैं । परतासु भलो नहीं या जगमें हमतो अपने
दिनै टालति हैं ॥ मुखमीठो महाहिरदे कपटी वतियां छतियां

नित जालति हैं। अहो दासनिदास तिहारो ऋणी येई बोल गोपालके शालति हैं ३ गहिवो अकाश पुनि लहिवो अथाह थाह अति विकराल काल व्यालहि खिलाइबो। शैल शमशेरधार सहिवो प्रहारवान गज मृगराज लै हथेरिनि लगाइबो॥गिरते गिरनपन्थ अगिनि में जरनि काशी में करवट तन वर्फमें गराइबो। पीवो विष विषम कबूल करि नागरजू कठिन कराल एक नेहको निवाहिवो ४॥ दोहा॥ नैनमूंदि मुखमूंदिके धरोत्रिकुटी मधिध्यान॥ तब आपहिंमें देखिहौ पूरणआतमराम ५॥ कवित्त। ओढ़िवे को कन्था औ रमाइबे को भस्म अंग कानमें मुद्रा शिर टोपियां धरावैंगी। करमें कमण्डलके खप्पर अराइबे को आदेश आदेश करि शृंगीहू बजावैंगी॥ कुबिजाको ऋद्धिदई गोपिनको सिद्धिदई फिरेंगी मशाननिं में गोरखे जगावैंगी। एक बार ऊधवजू फेरि समझाइकहो एती ब्रजबाला मृगछाला कहा पावैंगी १ योगीजग तजें हमयोगजग दोऊ तजे योगीभये पौन हम पौनहूँते हटि हैं। योगीकर सींगी हम सींगी भई श्यामबिन योगी लावैधूरि हम धूरिहूते लटि हैं॥ योगीछेदें कान हम छेदहियो वेधे प्राण योगीहूँढ़े दण्ड हम हरिदण्ड टटिहै। आवनकी आश सुधि बीतिगई ऊधो जोतो योगीकी जुगतिते वियोगी कहा घटि हैं २ सुखाई शरीर अधीनकरे दृग नीरकी बूँदसों माल फिरावै। नेहकी सेली वियोग जटा लिये आहकी सींगी सपूर बजावै॥ प्रेमकी आंचमें टाढ़िजरें सुधि आपने आपनी देह भिरावै। सुजानकहें कलाकोटि करो पै वियोगीके भेदको योगी न पावै ३ श्यामतन श्याममन श्यामही हमारो धन आठोयाम ऊधो हमैं श्यामही सों कामहै। श्यामहिय श्यामजिय श्यामबिन नाहिं तिय आंधरेकी लाकरी अधार नामश्याम है॥ श्यामगति श्याम मति श्यामही प्रतापपति श्याम सुखदायी सोभुलाये घरधाम है। तुमभये बौरे यहां पाती लाये आये दौरे याग कहां राखें हम रोम रोम श्यामहै ४ रुसिरहौ हमसों तौ हमें नितही परि पाइँनि

पाइमनाइयो। बोलो न बोलो हमैं नित बोलिबो चाहकगो नकगो हमें चाहिगो॥ देखो न देखो दयाकरिप्यारे हमैं नितनैननि तें दरशाइवो। मानो न मानो हमैं यह नेम नयो नित नेहको नाम्नो निवाहिबो ५ विचार सन॥ तापै दृष्टान्त चित्रकी पुतरी को अरु खानखानाको १ होइ चूरचूर॥ कवित्त॥ बेलेत विछुरि परिपान पर पाटिल है कसन कसाइ अंग हाथनि नचतु है। बेशुमार दागिल है परम कतरनी में पाइके मरोरी बहुविकनि विकतु है॥ सरस मसाले अनुमानके लै दियेबीच धरिके चितौनी रस सचि के पचतु है। एते पै सखी लुखरसिक हाथआये कहा चूरचूर भये बिना रंग क्यों रचतु है १॥

सतसंगप्रभाव॥ भक्तितरुपौधाताहिविघ्नडरछेरीहू कोवारदैदैविधारवारिसींचोसतसंगसों। लाग्योईबढ़नगोदाचहुंदिशिकढ़नसोचढ़नअकाशयशफैल्योबहुरंगसों॥ संतउरआलवालशोभितविशालछाया जियेजीवजालतापगयेयोंप्रसंगसों। देखौबढ़वारिजाहिअजहूकोशंकाहुतीताहीपैंइबांधेझूलैंहाथीजीतेजंगसों ६॥

सतसंग॥ भागवते॥ सतांप्रसङ्गान्ममवीर्यसंविदो भवन्ति हृत्कर्णरसायनाःकथाः॥ तज्जोषणादाश्वपवर्गवर्त्मनि श्रद्धारतिर्भक्तिरनुक्रमिष्यति १ दोहा॥ इष्टमिलै अरु मनमिलै मिलै भजनरसरीति॥ मिलिये तहां निशंक ह्वै कीजे तिनसों प्रीति १ एक कहै जागे लोचन घूम घुमारे॥ दूसरो कहै एक निरंजन है अविनाशी॥ दोहा॥ बहता पानी निर्मला बँधा गँधीला होइ॥ साधू जन रमता भला दाग न लागै कोइ २॥ वृन्दावनशतके॥ मिलन्तुचिन्तामणिकोटिकोटयः स्वयंवहिर्दृष्टितुपैतु वा हरिः॥ तथापिवृन्दावनधूलिधूसरं न देहमन्यत्रकदापियातुमे ३॥ कवित्त॥ वचन बिलास में मिठास आइ वासकरै हरै हृदै रोग भोग मानै जे ज़ियारीके। नयेई जे जात जाति दातन लुहात नेकु गुलकत

णात दृग धाराजल न्यारीके ॥ रूप गुणमाते देह नाते जिते हातें होत सो तज्यों सलिल मन मिलत जियारीके । और सब संग हम संगकेसमान किये तोई सतसंग रंग वारैलाल प्यारीके ४ सबहीतें बड़ीक्षिति क्षितिहूते बड़ोसिंधु सिंधुहूते बड़े मुनि वारिधि अचैरहे । तिनहूंते बड़ो नभ तामें मुनिसे अनक तारा अरु दारा येन सबन अछैरहे ॥ तिनहूंते बड़े पग पावन बढ़ाये जब ताही की उँचाई देखि तीनोंलोक नैरहे । तिनहूंमें बड़े संत साहिब अगम्यगम ऐसे हरिबड़े ताके हृदे घर कैरहे ५ ॥

नाभाजूकोवर्णन॥जाकोजोस्वरूपसोअनूपलैदिखाइ दियोकियोयोंकवित्तपटमिहींमध्यलालहै।गुणपैअपारसा धुकहैंआंकचारिहीमेंअर्थविसतारिकविराजटकसालहै ॥ सुनिसंतसभाभूमिरहीअलिश्रेणीमानौं घूमिरहीकहैं यह कहाधौंरसालहै । सुनहेअगरअबजानेमैंअगरसही चोबाभयेनाभासोसुगंधभक्तमालहै ७ ॥

चारही में ॥ छप्पै ॥ कहा न सजन वचन कहा मनि गोपी मोहित । कहा दासको नाम कवित में कहियत कोहित ॥ को प्यारो जगमाहिं कहाक्षिति लागि आवै । को बासरही करै कहा संसारहि भावै ॥ कहि काहिदेखि कायर कँपत आदि अंत को है शरन । यह उत्तर केशवदास दिय सबै जगत शोभाधरन १ ॥ कवित्त ॥ चतुर विहारीजूपै मिलिआई बाला सात मांगति हैं आजु कछु हमको दिवाइये । गोदलेहो फूल देहो नाक पहिराइ मोती पाननकी पातरि हुतासनहूं लाइये॥ ऊंचेसे अवासके झरोखा बयठाइयेजू मेरीसेज श्याम आजु रतिपति ध्याइये । ग्वाल समुझाइये को उक्त सब दीन्हों एक उत्तर विशेष भांति बारी नहीं आइये २ ॥ श्लोक ॥ कोदुराप्रस्यमोहाय काप्रियामुरविद्विषः । पदंप्रश्नचितकेंकिं कोदन्तच्छदभूषणम् ॥ काप्युपोप्येह हे विद्वन्॥ सर्वेषामर्थनारामानुरागइन्दिरालोकमाता । मानुप्रश्नेचवितकेंच

जसवंतसिंहकीरानीनैसिंगारफकोमालिख्यो ॥ तामें लालसा वांच्यो जैसे व्रजसुंदरीने पाती लिखी ॥ दोहा ॥ तर भुरसी ऊपरगरी कज्जल जल छिरकाइ । पिय पाती तिनही लिखी वांची विरह बलाइ ३ दृष्टान्त गुलाब को औ गुलाला को ४ ॥

भक्तमालस्वरूप ॥ बड़ेभक्तवाननिशिदिन गुणगान करैं हरैंजगपाप जाप हियो परिपूरहै । जानिसुखमानि हरिसंतसनमानसचैं वचेऊजगतरीतिप्रीतिजानीपूरहै ॥ तऊदुराराध्य कोऊकैसेकै अराध्यसकैसमझो नजातमन कंपभयोचूरहै । शोभिततिलकभालमालउरराजैऐपैबिनो भक्तमालभक्तिरूपअतिदूरहै ॥ मूलमंगलाचरण ॥ दोहा ॥ भक्तभक्तिभगवंतगुरु चतुरनामवपुएक ॥ इनकेपदवंदन करैनाशैविघ्नअनेक १ ॥

भक्तिरूप अतिदूरहै ॥ भागवते ॥ तरत्यवतांमहाभाग यदिकृष्णकथाश्रयः ॥ अथवास्यपदाम्भोजमकरन्दलिहांसताम् १ भक्त भक्ति मंगलाचरण तीनि प्रकार वस्तु निर्देशात्मक गीतगोविन्दे ॥ मेघैर्मेदुरमम्बरंवनभुवः श्यामास्तमालद्रुमैर्नक्तंभीरुरयंत्वमेवतदिमं राधेगृहंप्रापय ॥ इत्थंनन्दनिदेशतश्चलितयोः प्रत्यध्वकुञ्जद्रुमं राधामाधवयोर्जयन्तियमुनाकूलेरहः केलयः ॥ नमस्कारात्मकम् ॥ किरातहूणान्ध्रपुलिन्दपुल्कशा आभीरकङ्कायमनाःखसादयः । येऽन्येचपापायदुपाश्रयाश्रयाःशुद्ध्यन्तितस्मैप्रभविष्णवेनमः २ आशीर्वादात्मकम् ॥ नृसिंहपुराणे ॥ यस्तंभाद्गर्जमानो गगडगडगडड् भालचंद्रार्द्धदंष्ट्रोद्योमोद्भ्रुत्र्यधिपमानो जजडजडजडरसाध्यमानःसटाभिः॥ दृष्टाभिःखाद्यमानं कटकटकटत्तर्जमानोसुरेन्द्रं निष्क्रांतोदारवगुन्को गगहगहगहस्त्रातुवःश्रीनृसिंहः ३ वपुएक श्लोक ॥ वैष्णवोममदेहस्तु तस्मात्पूज्योमहामुने ॥ अन्ययत्नंपरित्यज्यवैष्णवान्भजसुव्रत ४ भक्तिरूसे तैसे फूलमें सुगन्ध ॥

टीकाविशेषलक्षण॥हरिगुरुदासनिसोंसांचोसोईभक्त सहीगहीएकटेकफेरिउरतेनटरीहै। भक्तिरसरूपकोस्व रूपयहैछविसारचारुहरिनामलेतअँशुवनझरीहै॥वही भगवंतसंतप्रीतिकोविचारकरै धरैदूरिईशताहू पांडवन करीहै। गुरुगुरुताईकीसचाईलैदिखाईजहां गाईश्री पैहारीजूकीरीतिरंगभरीहै २ मूल॥ मंगलआदिविचारसो वस्तुनऔरअनूप।हरिजनकोयशगाइयेहरिजनमंगलरू प २ सबसंतन्हनिर्णयकियोमथिपुराणइतिहास। भजिवे कोदोऊसुघरकैहरिकैहरिदास॥ अग्रदेवआज्ञादईभक्तनि कोयशगाइ। भवसागरकेतरनकोनाहिंनऔरउपाइ ४॥

हरिगुरु दासनिसों सांचो। पटनाकी बाई सेरगढ़की आमिल लाहौर को सुदर्शन खत्री को दृष्टांत॥ कवित्त॥ शोचरूप- सागरमें सने रघुराई कहैं लंक यह देन को न लगे कछुवात है। कौन या विभीषणको राखै रोकि रावण मों जीवजाल मांछरी लों परयो पछितात है॥ लक्ष्मणपास मैं हूंमरन परन लीनों जस राम चुरेव्योंत बूड़ी बुधिजात है। जीवको न लालच वचनको विशेष डर जीव गये वचन बचै तो बड़ीबात है १ भक्त रसरूपको एकादशे॥ वाग्गद्गदा द्रवते यस्य चित्तं हसत्यभीक्ष्णं रुदति कचि च॥ विलज्ज उद्गायति नृत्यते च मद्भक्तियुक्तो भुवनं पुनाति २॥ भवसागर॥ निमज्ज्योन्मज्जतांघोरे भवाब्धौ परमायणम्॥ सन्तोब्रह्मविदःशान्तानौर्दृढेवाप्सुमज्जताम् ६॥

टीकाआज्ञासमयकी॥मानसीस्वरूपमेंलगेहैंअग्रदास जवैकरतबयारनाभामधुरसँभारसों। चढ़्योहैजहाजपैजु शिष्यएकआपदामैं कस्योध्यानखिच्योमनछुट्योरूपसार सों॥ कहतसमर्थगयोवोहितवहुतदूरि आवो छविपूरि

फिरि ढरोताहीढारसों ॥ लोचनउघारिकै निहारिकह्यो वोल्यौकौनवही जौनगाल्योल्लीतदैदैमुकुमारसों १० ॥

मानसी स्वरूप में ॥ तापै भूतको दृष्टांत ॥ दोहा॥यह मन भूत समान है दौरैदांत पसारि ॥ बांसगांठि उतरै चढ़ै ऐसं बलं जावै हारि १ चलदल पत्र पताक पट दामिनि कच्छप माथ ॥ भूत दीप दीपकशिखा यों मनवृत्य अनाथ १ ॥ सवैया ॥ चंचल जो मनकी गतिहै अलिरूप सुवै बनमें फिरियै । कुण्डल लोल कपोलन में अलकें झलकें चितमें धरियै ॥ वरषैदिहि भाल रसाल दिये अधरानि में मोती थहराइये । अलवेली औ लालविहारिनिको दिन रैन निहारनिही करियै २ मन है तौ भली थिरकै रहितू हरिके पदपंकज में गिरितू । कवि सुन्दर जौन सुभाव तजे फिरिवोई करै तौ इहां फिरितू ॥ मुरलीपर मोरपखा परह्वै लकुटी परह्वै भृकुटी भिरितू । इन कुण्डल लोल कपोलनि में घनसे तनमें रहिये घिरितू ३ करत वयारि नाभा जूनै विचारी यह सुख कैसे मिलै ॥ टहलते मिलै दृष्टांत मरजिया को ४ ॥ सभार सौ क्योंकि मानसी ऐसी कोमल है सो वयारि की चोट लगै ५ सारसो ॥ कवित्त ॥ कंचन जटित भूमि सुरतरु रह्यो भूमि तापर सिंहासन सुखासन विछायो है । अष्टदल कमल अमल रघुनाथ तहां अंग अंग मानो कोऊ रंग झरलायो है ॥ कुण्डल करणकर कंकण मुकुट कटि किंकिणी कि धुनि मुनि मन भरमायो है । चंपेके चमेली के अरु कुंद मंदार के सुहारनि में हारिके विचारि विसरायो है ६ ॥

अचरजदयोनयोयहांलौंप्रवेशभयो मनसुखछयोजान्योसंतनप्रभावको । आज्ञातवदईयहभईतोपैसाधुकृपा उनहींकोरूपगुणकह्योहियेभावको ॥ वोल्योकरजोरियाकोपावतनओरछोरगाऊंरामकृष्णनहींपाऊंभक्तिदावको । कहीसमझाइवोई हृदैआइकहै सव जिनलैदिखाइदई

सागरमेंनावको ११ श्रीनाभाजीकीआदिअवस्था ॥ हनू मानवंशहीमें जनमप्रसिद्धजाको भयो दृगहीनसोनवी नवातधारिये। उमरिबरषपांचमानिकैअकालआंवमाता वनछोड़िगई विपतिविचारिये ॥ कील्हऔअगरताहीड गरदरशदियोलियेयोंअनाथजानिपूंछीसोउचारिये। ब ड़ेसिद्धजललैकमण्डलसों सींचेनैनचैनभयोखुलेचखजो रीकोनिहारिये १२॥

रूप गुण ॥ श्लोक ॥ येकण्ठलग्नतुलसीनलिनाक्षमाला ये बाहुदण्डपरिचिह्नितशङ्खचक्राः ॥ तृतीये ॥ तितिक्षवःकारुणिकाः सुहृदःसर्वदेहिनाम्॥ अजातशत्रवःशान्ताःसाधवःसाधुभूषणाः १ माता ॥ सवैया ॥ वारिध तातहुते विधिसे सुत आदित सोम सहोदर दोऊ। रम्भा रमा तिनकी भगिनी मघवा मधुसूदन ले वहनोऊ ॥ तुच्छ तुसार इतौ परिवार भयो शरसय्य सहाय न कोऊ। सूखिसरोज रह्यो जलमें सुख सम्पति में सबको सब कोऊ २ पिता कोऊ कहै अरु कोऊ कहै सुत कोऊ कहै नाना धावा तन तीनि तापतयो है। प्रभु कोऊ कहै जन कोऊ कहै मोल लयो तुम अब कहो ये जू काहि काहि दयो है ॥ ब्रह्मने जित तित चलि चलि होइ रही सुख नहीं कहूं वहु हाथ गेंद भयो है। कियो हूँ तिहारो अरु पाल्यो हूँ तिहारो ही हों इन बीच के लोगन ने बांटो बांट लयो है ॥ सींचे नैन ॥ एकादशे ॥ सन्तोदिशन्तिचक्षूंपि बहिरर्कःसमुत्थितः ॥ देवतावान्धवाःसन्तः सन्तआत्माहमेवच १ ॥

पाइँपरिआंशुआयेकृपाकरिसंगलाये कील्हआज्ञापाइ मंत्रअगरसुनायोहै। गलतेप्रकटसाधुसेवासोंविराजमा न जानिउनमानताहीटहललगायोहै ॥ चरणप्रछालिसं तशीतसोंअनंतप्रीतिजानीरसरीतिताातेहदै रंगछायोहै।

मईबढ़वारिताकोपावैकौनपारावारजैसोभक्तिरूपसो अनूपगिरागायोहै १३॥

मन्त्र अगर आगमे॥ तापःपौण्ड्रंतथानाम मन्त्रोयागश्चपञ्चमः॥ एतेचपञ्चसंस्काराः परमैकान्त्यहेतवः २ जन्मनाजायते शूद्रः संस्काराद्द्विजउच्यते॥ वेदाभ्यासीभवेद्विप्रः ब्रह्मजानाति ब्राह्मणः ३ सन्तशीत नारदवाक्यम्॥ उच्छिष्टलेपाननुमोदितो द्विजैः ४ ल्यायो है॥ कवित्त॥ कोऊ यह कहे संसकारहीसों भक्त होत विना संसकार भक्ति कैसे करि पाइये। जान्यो हम सार सब ग्रन्थ अनुसार पुनि एऐहे विचार गूढ़ कहिकै सुनाइये॥ महिमा अगाध साधु रसिक प्रवीननि की नेकु चितवत काम वन्धु उलटाइये। अंगअंग रंग सतसंगको प्रभाव अहो जैसे दत्ताश्रेय वारमुखीहित छाइये ५ भई बढ़वारि॥ दोहा॥ मृतक चीर जूंठनि वचन काग विप्रजन मित्र॥ शिव निरमायल आदिदै ये सब वस्तु पवित्र ६ शुकवाक्यम्॥ किरातहूणान्ध्रपुलिन्दपुल्कशा आभीरकंकायवनाःखशादयः॥ येन्येचपापायदुपाश्रयाश्रयाः शुध्यन्तितस्मैप्रभविष्णवेनमः ७॥

षट्पदछंदमूल॥ जयजयमीनबराहकमठनरहरिबलिबावन। परशुरामरघुबीरकृष्णकीरतिजगपावन॥ बुद्धकल्कीव्यासपृथूहरिहंसमन्वंतर। यज्ञऋषभहयग्रीवध्रुववरदैनधन्वंतर॥ बद्रीपतिदत्तकपिलदेवसनकादिककरुणाकरो। चौबीसरूपलीलारुचिर अग्रदासपदउरधरो ५

टीका॥ जितेअवतारसुखसागरनपारावारकरैविसतारलीलाजीवनउधारको। जाहीरूपमांझमनलागैजाकोपागै तहीं जागैहियेभाववहीपावैकौनपारको॥ सबहीहैनित्यं ध्यानकरतप्रकाशैचित्त जैसेरंकपावैवित्त जोपैजानैसार

१मन्वन्तरआदिक पदोंमें गुरुउच्चारण यहां नहीं होत इससे पदमें चौबीस मात्रा हैं॥

को। केशनकुटिलताईऐसेमीनसुखदाई अगरसुरीतिभाई बसौउरहारको १४ ॥ मूल ॥ येचरणचिह्नरघुवीरके संत निसदासहायका ॥ अंकुशअम्बरकुलिश कमलयवधुजा धेनुपद । शङ्खचक्रस्वस्तीकजम्बुफल कलशसुधाहृद ॥ अर्द्धचन्द्रषटकोनमीनबिंदुऊरधरेखा॥ अष्टकोनत्रैकोनइंद्र धनुपुरुषविशेखा ॥ श्रीसीतापतिपदनितबसतसकलसु मंगलदायका । येचरणचिह्न रघुवीरके संतनिसदासहा यका ६ ॥

जेजे मीन बराह ॥ मीनबाराह क्यों गाये राम कृष्ण छोड़िके सब जाति के साधु गाये जाहिंगे कोऊ नीक चढ़ावे याते पहिले हरिहीकी जातिकही हौं क्योंकि कोऊनाकचढ़ावे सो अबहीं चढ़ावो कृष्ण कीरति को बिषयिहि सुने १ तिते अवतार कोऊ कहे गुरुनने आज्ञादई संतनिकीइन्हों ने प्रथमअवतार क्यों धरे। बटुआ पहिले आवे साधुपाछे आवे २ जाहीरूप जापे फकीर को औ लरिका को दृष्टान्त कोऊ कहे मीन बाराह कैसे सुखदाई सुंदर के संग ते सुन्दर होइ केशन के संग ते कुटिलता ३ ॥

टीका ॥ संतनिसदाइकाजधारेनृपराजरामचरणसरोजनिमें चिह्नसुखदाइये । मनहींमतंगमतवारोहाथआवे नाहीं ताकेलियेअंकुशलेधारेहियेध्याइये ॥ ऐसेहीकुलिश पापपर्वतकेफोरिबेको भक्तिनिधिजोरिबेकोकञ्जमनलाइये । जोपैबुधिवन्तरसवन्तरूपसम्पतिमें करिलेबिचारसब निशिदिनगाइये १५ ॥

मनमतंग चतुर्थे ॥ अयं त्वत्कथामृष्टपीयूषनद्यां मनोवारणःक्लेशदावाग्निदग्धः ॥ तृषार्तोवगाढंनसस्मारदावंनानिष्क्रामातिब्रह्मसम्पन्नवन्नः १ छप्पै ॥ सो सदा रहत नवरंगमेंमनमतंग बिचरयोबुरो ॥ धरना धर्म उखारि सरम सांकरगुहि तोरत । तरुणि करावल

लखत शील सालहिंगांहि मोरत॥ विनय पाण नहिं बदत ज्ञान अंकुश नहिं मानत।गुरू महावत ताहि चाहि डारन उर आनत॥ लखिलेइओ व वारुण विषय कुन्दन मद यौवनजुरो। सो सदा रहत नवरंग में मनमतंग विचरयो बुरो २ कवित्त॥ जनम जनम तोहिं जहां तहांघेरे फिरयो मन मुट मरद गनीमतेरी पागी है। कलह प्रसंगी पञ्चरङ्गी जङ्गी जोरावर अलख अनङ्गी सुउपाधि अनुरागी है॥ कैदकरि पायो मनी राम नरकाया वीच अबके जो चूके यो तो वड़ो तू अभागी है। सुमिर को सारपांच भूतनि को सरदार मारि ऐसी मार तेरी भलीपात लागी है ३ यव को हेलुनो सदा दाता सब विद्या की सुमति को सम्पति को सुख को निवास है। क्षण में सभीतहोत कलिकी कुचालि देखि ध्वजा सो विशेषजानों अक्षय विश्वास है॥ गोपद सुद्दै है भवसागर सु नागर न जोपै नेकु हिये को लगावै मिटै त्रास है। कपट कु-चालि मायाजाल सव जीतिवे को अम्बर को दर्श कियो जो पै अनायास है १ कामहू निशाचर के मारिवे को चक्र धरयो मंगल कल्याण हेत स्वास्ति कहूमानिये।मङ्गलीकजम्बूफल फलचारहूको फल मनकामनाअनेक पूरणहोध्यानिये॥ कलश औसुधाकोलरस हीरेभक्ति भरयो नैनपुट पानकीजै जीजै मन आनिये। भक्तिको बढ़ावैऔघटाबैतीनितापनिकोअर्द्धचन्द्रधारणयेकारणहूं जानिये२ दिव्यगुणंगवलमोकतनमाहिं वसे दास कोनडसे तातै यत्नअनुस-रयोहे। मीनविन्दुरामचन्द्रकीनोंवसीकरणप्रायताहीते निकायजन मनजातहरयो हे॥ अष्टकोन त्रयकोनयन्त्र किये जीतिवेको जिये जोईजानो जाके ध्यानउरभरयोहे। सनसारसागरकोपारावारपावै नाहिऊर्ध्वरेखादासनिको सेतवंधकरयोहे ३ धनुपदमाहिंधरयोह-रयोशोकध्यानिनको मानिनकोमारयोमानरावणादि शाखिये। पुरुप विशेपपद कमलवसायोराम हेतअभिरामसुनोश्याम अभि-लाखिये॥ सुधेमनसूधेवैनसूधीकरतूतिसव ऐसो जनहोइ मेरो याहीतेजुराखिये। जोपैवुधिवंतरसवंतरूपसंप्रति में करिलै विचार

सब निशिदिन भाखिये ४ ॥ दोहा ॥ दुख में तो सबकोउ भजै सुख में भजै न कोइ ॥ जो सुखमें हरिकोभजै तो दुख काहेको होइ ५ कबहुँ न सुख में हरिभजे दुखमें कीने यादि ॥ कहि कबीर वा जीवकी कैसे लगै फिरादि ६ जो साहिबसों तू मिलै साहिब मिलै तो तोहिं ॥ बिना भजन मिलतो नहीं सुख काहे के होहिं ७ बसति हृदय जाके दया रामहिं जानत सोइ ॥ दया राम पावै तबै दया राम की होइ ८ ॥

हरिपदछंद मूल ॥ विधिनारदशंकरसनकादिंककपिलदेवमनुभूप । नरहरिदासजनकभीषमबलि शुकमुनि धर्मस्वरूप॥अंतरंगअनुचरहरिजूके जोइनकोयशगाव । आदिअंतलौंमंगलतिनकोश्रोतावक्तापाव ॥ अजामील प्रसंगयहनिर्णयपरमधर्मकेजान। इनकीकृपाश्रौरुपुनिस मझैद्वादशभक्तप्रधान ॥ टीका ॥ द्वादशप्रसिद्धभक्तराजक थाभागवतअतिसुखदाईनानाविधिकरिगायेहैं।शिवजूको बातएकबहुध्यानजानैकोऊसुनिरससानैहियो भावउरभा येहैं॥सीताकेवियोगरामबिकलबिपिनिदेखिशंकरनिपुण सतीवचनसुनायेहैं । कैसेयेप्रबीणईशकौतुकनवीनदेखो मनैहूंकरतअंगवैसेहूबनाये हैं १६ सीताहीसोरूपवेषले शहूनफेरफाररामजूनिहारिनेकमनमेंनआईहै । तबफिरि आइकैसुनाइदईशंकरको अतिदुखपाइबहुविधिसमुझा ईहै॥ इष्टकोस्वरूपधस्योतातेतनपरिहस्यो पस्योबड़ोशो चमतिअतिभरमाईहै । ऐसेप्रभुभावपगेपोथिनमेंजगम गेलगेमोकोप्यारेयहबातरीझिगाई है १७॥

अन्तरग ॥ बाणासुर के युद्धमें महादेव कृष्णसों लरे ॥ भागवते ॥ स्वयंभूर्नारदः शंभुःकुमारःकपिलोमनुः ॥प्रह्लादो जनकोभी

ष्मोबलिर्वैयासकिर्वयम् २ निपुणपरमेश्वरका प्रेमको स्वाद नहीं जैसे पादशाहको फकीरी को नहीं ॥ नाटके॥ केयूयंवदनाथनाथ किमिदं दासोऽस्मितेलक्ष्मणः कोहंवत्सनुआर्यएवभगवानार्य्यश्च कोराघवः ॥ किंकुर्मोविजनेवने तत इतो देवीभू वीक्ष्यते कादेवीजनकाधिराजतनया हाहाप्रिये जानकि ४ ॥ मनेहूँकरत ॥ दोहा ॥ ज्यों जगके राजानिको भेद न जानैकोइ ॥ तासुअन्त क्यों पाइये सबको करता सोइ ५ ॥

चलेजातमगउभैखेरेशिवदीठिपरे करेपरनामहियेभक्तिलागीप्यारिये। पारवतीपूछैंकियेकौनकौजूकहौसोसों दीसतनजनकोऊतबसोउचारिये॥ बरषहजारदशबीतेतहाभक्तभयो नयोऔरुह्वैहैदूजीठौरबीतेधारिये। सुनिकै प्रभावहरिदासनिसोंभावबढ़्यो रढ़्योकैसेजातचढ़्योरंग अतिभारिये २८ टीका अजामीलकी ॥ धस्योपितुमातु नामअजामीलसाचभयोअजामलरह्योछुटी तियाशुभजातकी। कियोमदपानसोसमानगहिदूरडार्यो गार्यो तनवाहीसोंजोकीन्होलैकैपातकी ॥ करिपरिहासकाहूदुषनैपठायेसाधु आयेघरदेखिबुद्धिआइगईसातकी। सेवाकरिसावधानसंतनिरिझाइलियो नारायणनामधस्यो गर्भबालबातकी १९॥

वरष हजार बाबा नानक अरु मरदाने चेलाको दृष्टान्त भागवते ॥ मुक्तानामपिसिद्धाना नारायणपरायणः ॥ सुदुर्लभःप्रशांतात्मा कोटिष्वपिमहामुने १ नीतौ ॥ गिरौगिरौनमाणिक्यं मौक्तिकंनगजेगजे ॥ साधवोनहिसर्वत्र चन्दनंनवनेवने २ रंगचढयोभागवते ॥ वरमेकंवृणेथापि पूर्णात्कामाभिवर्षणात् ॥ भगवत्युत्तमां भक्तिं तत्परेषुतथात्वयि ३ ॥ सयान दोहा ॥ तनक न रहै विरक्तिता लगै दृगनिकी थाप। कहुँ पूजा मालाकहूँ कहुँ बटुवा कहुँ

आप ४ करिपरिहास तापै शिवजीको दृष्टान्त ५ सातकी भागवते॥ नह्यम्मयानितीर्थानिनदेवामृच्छिलामयाः ॥ तेपुनंत्युरुकालेनदर्शनादेवसाधवः ६स वधान नीतौ ॥ आत्मनोमुखदोषेणबध्यन्तेशुकसारिकाः ॥ बकास्तत्रनबध्यन्ते मौनंसर्वार्थसाधकम् ७ मोहजाल॥ श्लोक ॥ अङ्गंगलितंपलितंमुण्डंजातंदशनविहीनंतुण्डं वृद्धोयातिगृहीत्वादण्डंतदपिनमुञ्चत्याशापिण्डम् १ ॥

आयगयोकालमोहजालमेंलपटिरह्योमहा बिकरालयमदूतदीदिखाइये । वहीसुतनारायणनामजोकृपाकैदियोलियोंसोपुकारिसुरआरतसुनाइये ॥ सुनतहीपारषदआयेताहीठौरदौरितोरिडारेपाशकह्योधर्मसमुझाइये। हारेलैबिडारेजोइपतिपैपुकारेकहीसुनोंबजमारे मतिजावोहरिगाइये २० मूल ॥ मोचितवृतिनिततहँरहौं जहँनारायणपदपारषद ॥ विष्वक्सेनजयबिजयप्रबलबलमङ्गलकारी । नन्दसुनन्दसुभद्रभद्रजगआमयहारी ॥ चण्डप्रचण्डबिनीतकुमुदकुमुदाक्षकृपालय । शीलसुशीलसुसेनभावभक्तनप्रतिपालय ॥ लक्ष्मीपतिप्रीतिप्रबीनमतिभजनानन्दसुभक्तहद । मोचितवृत्तिनिततहँरहौजहँनारायणपदपारषद ८ ॥

आरत भागवते॥ साकेत्यंपारिहास्यंवा स्तेभंहेलनमेवच ॥ वैकुण्ठनामग्रहणमशेषाघहरंविदुः १ धर्मसमुझाइपै ॥ एतेनैवह्यघोनोस्यकृतस्यादघनिष्कृतम् ॥ यदानारायणायेतिजगादच्चतुरक्षरम् २स्तेनःसुरापोमित्रध्रुग्ब्रह्महागुरुतल्पगः ॥ स्त्रीराजपितृगोहंतायेचपातकिनोपरे ३सर्वेषामप्यघवतामिदमेवसुनिष्कृतम् ॥ नामव्याहरणाद्विष्णोर्यतस्तद्विषयामतिः ४ अहोवतश्वपचोतोगरीयान्यज्जिह्वाग्रेवर्ततेनामतुभ्यम् । तेपुस्तपस्तेजुहुवुःसस्नुरार्याब्रह्मानूचुर्नामगृह्णन्तियेते ५ स०॥ कहाव्रतनेमगजेन्द्र कियो कहा वेदपराण

पढ़ीगनिका। अजमील ने कौन अचार कियो निशिचातर संगसु-रापनिका। कथहीं कहजाप बधिककियो सोहुतो घनजीवन को हनिका। तुलसी अघ पर्वत कोटिजरे हरिनाम हुताशनको कनिका ६ हरिगाइपे दूतनि प्रति। नामोच्चारणमाहात्म्यं हरेः पश्यत पुत्रकाः॥ अजामिलोपि येनैव मृत्युपाशादमुच्यत ७॥

टीका ॥पारषदमुख्यकहेसोरहसुभावसिद्धिसेवाहीकी ऋद्धिहियेराखीवहुजोरिकै। श्रीपतिनरायणकेप्रीतमप्रवीणमहाध्यानकरैजनपालैभावदृगकोरिकै ॥ सनकादिदियोशापप्रेरिकैदिवायोआपप्रकटह्वैकह्यो पियौसुधाजिमिघोरिकै। गहीप्रतिकूलताईजोपैयहैमनभाई यातेरीतिहृदगाईधरीरंगबोरिकै २१ मूल● ॥ हरिवल्लभसबप्रारथौं जिनचरणरेणुआशाधरी॥ कमलागरुड़सुनंदआदिषोड़शप्रभुपदरति। हनुमतजाम्बवान्सुग्रिवविभीषणशबरी खगपति ध्रुवउद्धवअँबरीषविदुर अक्रूरसुदामा। चन्द्रहासचित्रकेतुग्राहगजपांडवनामा॥ कौषारवकुंतीवधूपटऐंचतलज्जानहिंहरी। हरिवल्लभसबप्रारथौंजिनचरणरेणुआशाधरी ९ ॥

प्रेरिकै दिवायो॥ नीतौ॥ लक्ष्मीवन्तो न जानन्ति प्रायेणपरवेदनाम्॥ शेषेधराभराक्रान्ते शेतेलक्ष्मी पतिस्स्वयम् १ पियो सुधा जिमि॥दोहा॥ तुम मति भूल्यो भूलनो सुनि मनमोहन मित्त। भूलेपर भूलौं नहीं तोही सुमिरो नित्त २ कवित्त॥ प्रतिकूलताई॥ नरक जो देहि तौन निदरि विमुखह्जे स्वरग जो तेहि तौन हरष सराहिये। रद्दकरिडारैतौन कीजियेकलेश जिथकरे जो कबूल

● मूलकाव्य छप्पै के सुग्रिव और चित्रकेतु इन दोनों पदों में गुरूच्चारणन करना जिसमें सु और चि इन दोनों में एकही एक मात्रा के गिनने से चौबिस मात्रा का प्रमाण बनारहे॥

तीन फूलिके उमाहिये ॥ जिहीअंग रंगहोइ तिही अंग रंग हूजे ये दिल सनेही नेही नीके के निवाहिये। चित्त क्यों न चाहमरो आप चाह चूल्हे परो प्रीतम जो चाहे चाह सोई चाह चाहिये ३ दोहा॥ दियो सुशीश चढ़ाइले अच्छी भांति अपेर ॥ जासों सुख चाहत लयो ताके दुखहि न फेर ४ चरणरेणु॥ श्लोक॥ रहूगणैतत्तपसा न याति न चेज्यया निर्वपणाद्गृहाद्वा॥ नच्छन्दसानैवजलाग्निसूर्यैर्विनामहत्पादरजोऽभिषेकम् ५ लज्जाहरी ॥ दोहा ॥ पटऐंचत नटकी नहीं भुजबल भई अनाथ ॥ तुलसी कीन्हों ग्यारहों बसन रूप रघुनाथ ६ ॥

टीका ॥ हरिकेजेवल्लभहैंदुर्लभभवनमांझ तिनहींकी पदरेणुआशाजियकरी है। योगीयतीतपीतासोंमेरोकछुकाजनाहिं प्रीतिपरतीतिरीतिमेरीमतिहरी है ॥ कमलागरुडजामवानऔसुग्रीवआदि सबैस्वादरूपकथापोथिनमें धरी है। प्रभुसोसचाईजगकीरतिचलाईअतिमेरेमनभाई सुखदाईरसभरी है २२ टीका हनूमानजूकी ॥ रतनअपारक्षीरसागरउधारकिये लियेहितचायकैबनाइमालाकरीहै। रावसुखसाजरघुनाथमहराजजूके भक्तसोविभीषणजूआनिभेंटधरीहै ॥ सभाहीकीचाहअवगाहहनूमानगरेडारिदईसुधिभईमतिअरबरीहै। रामबिनकामकौनफोरिमणिदीनोडारिखोलितुचानामहीदिखायोबुधिहरीहै२३॥

डारिदई ॥ रामायणे ॥ कंकणेनैवजानामि नैवजानामिकुण्डले ॥ नूपुरावैवजानामिसदापादाभिवन्दनात् १ छप्पै ॥ श्रीराम चरण तजि आन रति गजतजि मनु गदहै चढ़ो ॥ वहै नीच वहै पोच वहै आतम बड़पापी। वहै अविद्या मूल वहै गुरुद्रोहि सुरापी ॥ वहै दीन मतिहीन वहै नरकनि में नामी । वहै कृतघ्नी कुटिल वहै,बड़ लोन हरामी ॥ कहैं अग्रदास ताहि गति नहीं ताने

तापसो हियदढ़ो ।श्रीरामचरण तजि० २ ॥ फेरि मणि दीनी । कि कंठभूषणम् ३ खोलित्वचा ॥ कवित्त ॥ न्यारी न्यारी दीसैं जैसे का· गदकी चीरीपर मसी की डँडीरी ऐसी मजनूकी पांसुरी । गरि गयो गात येरी पात सो पुरानो हैके पान पान रहे परयो लेत है उसांसुरी ॥ तेरी ये तलब तेरे तालवदिवानोको है देखत हवाल वाको आवत है आंसुरी । लेगी अब लैले उरलाइ लेरी अपनी सों फेरि पछितैहै जब माटी मिले सांसुरी ४ ॥

टीकाविभीषणजूकी ॥ भक्तिसोंविभीषणकीकहैऐसोकौ नजनऐपैकछुकहीजातिसुनोचितलाइकै । चलतजहाजप रअटकिविचारिक्रियोकोऊअंगहीननरदियोलैवहाइकै ॥ जाइलग्यो टापूताहिराक्षसिनिगोदलियो मोदभरिराजा पासगयेकिलकाइकै । देखतसिंहासनतेकूदिपरेनैनभरे याहीकेअकाररामदेखेभागपाइकै २४ रचिसोसिंहासनपै लैबैठाये ताहीक्षण रावसनरीझिदेतमानो शुभघरीहै । चाहतमुखारविंदअतिहीअनंदभरि ढरकतनैन नीरटेकि ठाढ़ो करीहै ॥तऊनप्रसन्नहोतक्षणक्षणज्योतिहूजिये कृपालमतिमेरीअतिहरीहै । करौंसिंधुपारमेरेयहीसुखसार दियेरतनअपारलायेवाहीठौरफरीहै २५ रामनामलिखि शीशमध्यधरि दियोयाको यहीजलपारकरैभावसांचोपा योहै । ताहीठौरवढ़योमानोनयोऔरूपभयेगयोजोज हाजसोईफेरिकरिआयोहै ॥ लियोपहिंचानिपूंछेसबसोंब खानकियोहियोहुलशायोसुनिविनैकैचढ़ायो है । परयो नीरकूदिनेकुमायानेप्रवेशकियो हरयोमनदेखिरघुनाथना मभायो है २६ ॥

दियो लैबहाइ ॥ नीतौ ॥ वनानिदहतोवह्नेः सखाभवति मारु

तः ॥ सएवदीपनाशायकृशेकस्यास्तिसौहृदम् १ अश्वंनैव गजंनैवसिंहंनैवचनैवच ॥ अजापुत्रंबलिंदद्याद्दैवंदुर्बलघातकम् २. जाइ लग्यो ॥ दोहा ॥ कबिरातेरेनामपदकियो सुराई लोन ॥ जिन्हेंचलाओ पंथतुम तिन्हें भुलावैकोन ३ राम नाम श्लोक ॥ शास्त्रतोधिकंनाम इतिमेनिश्चितामतिः ॥ त्वयातुतारितायोध्यानाम्ना चभुवनत्रयम् ४ रामनामकेलिखेतरेपाषानरे। दुष्टअजामिलतरयो नामते जानरे॥ सबतजि भजि हरि नाम सुनो सब जंतरे। नाम बिना है नरक समुझि सुठि संतरे ५ ॥

शबरीजीकीटीका ॥ बनमेंरहतिनामसेबरीकहतसब हतटहलसाधुतनन्यूनताईहै। रजनीकेशेषऋषिआश्रम प्रवेशकियेलकरीनबोझधरिआवै मनभाईहै॥ झाड़वेको मगझारिकांकरनिबीनिडारि बेगिउठिजाइकोऊजातन लखाईहै। उठतसबारेंकहैंकौनधोंबहारिगयोभयोहियेशोचकोऊबड़ोसुखदाईहै २७ बड़ेईअसंगवेमातंगरसरंगभरेधरेदेखिबोझकह्योकौनचोरआयोहै। करैनितचोरीअहोगहोवाहिएकदिनबिनापाये प्रीतिवाकीमनभरमायोहै॥ बैठेनिशिचौकीदेत शिष्यसबसावधान आइगईगहिलई कांपै तननायोहै। देखतहीऋषिजलधारावहीनैननितेबैननिलोंकह्योजातकहाकछुपायोहै २८ ॥

बन में रहत दोहा ॥ लाल पनन सांजे भरे उघरे डांक लगाइ ॥ करणफूलभूलतरहें काननहीं में आइ १ कवित्त ॥ जाइये न तहां जहांसंगतिकुसंगतिहै कायरकेसंगशूरभागिहैपै भागिहै। फूलनिके पास बस फूलनि की बासहोति कामिनीके संग काम जागिहै पै जागिहै ॥ घरबसेघरबसेघरमें बैरागकहा मायामोहममतामें पागिहै पै पागिहै। काजर की कोठरीमें कैसोहू सयानो बैठे काजर की एक रेख लागिहै पै लागिहै २ निशिबासरबस्तु बिचारि करै सुख-

साचेहिये करुणाधनहै। अघनिग्रहसे ग्रहधर्म कथा सुपरिग्रहसाधन को मन है॥ कहिकेशवभीनरयोगजगे अतिऊपरभोगनिमें तनहै। मन हाथ सदा जिनके तिनको घनही घरहै घरही बनहै३ रसरंगभरे॥ रसोवैसःरसंह्येवायंलब्ध्वानंदीभवति इतिश्रुतेः। कोई कहै विरक्त हैके रसरंगमें कैसेभरे जैसे शुकदेवजी चीरहरण की लीला दुलराइके गाई है ४॥

डीविट्ठलसौंहींहोतिमानितनगोतछोत परी जायशोचसोतकैसेके निकारिये। भक्तिकोप्रतापऋषिजानतनिपटनीकेकैकुकोटिविप्रताईयापैवारिडारिये॥दियोवासआश्रममेंश्रवणसैनामदियो कियोसुनिरोषसबैकीनीपांतिन्यारिये। सवरीसोंकह्योतुमरामदरशनकरोमैंतोपरलोकजातआज्ञाप्रभुपारिये २९ गुरुकोवियोगहियेदारुणलैशोक दियोजियोनहींजाततऊरामआशलागीहै। न्हाइबेकोघाट निशिजातिहीवहारिसब भईयोंअबारऋषिदेखिव्यथापागीहै॥ छुयोगयोनेककहूंखीजतअनेकभांतिकरिकैविवेक गयोन्हांनयहभागीहै। जलसोंरुधिरभयोनानाकृमिभरिगयोनयोपायोशोचतौहूजानैनअभागीहै ३० लावेबनबेर लागीरामकीओसेरमल चाखैधरिराखैफिरमीठेउनयोग हैं। मारगमेंरहैजाइलोचनबिछाइकभूंआवैंरघुराइदृगपावैंनिजभोगहैं॥ ऐसेहीबहुतादिनबीतेमगजोवतहीआइगयेऔचकासुमिटेसबलोगहैं। नूनताईआई सुधिछिपी जाइपूछैआप सेबरीकीकूटी कहांठाढेसबलोग हैं ३१॥

भक्तिको प्रताप इतिहास॥ शिवलिंगसहस्राणिशालग्रामशतानि च॥ कोटिद्वादशकाविप्राएकःश्वपचवैष्णवः १ हरिभक्तिलतिकायाम्॥ व्याधस्याचरणंध्रुवस्यचवयोविद्यागजेंद्रस्यकाकुब्जायाः

किमुनामरूपमधिकं किंतत्सुदाम्नोधनम् ॥ वंशःकोविदुरस्यबाद वएतेरुग्रस्यकिंपौरुषम्भक्त्यातुष्यतिकेवलं नतुगुणैर्भक्तिप्रियोमाधवः २ नामदियो ॥ पंचरात्रे ॥ यावद्गुरुर्नक्रियते सिद्धिस्तावन्न लभ्यते ॥ तस्माद्गुरुर्हिकर्त्तव्यो नैवसिद्धिर्गुरुंविना ३ अभागी है॥ छप्पै ॥ मत्सर क्रोध मिलि रह्यो गर्व गिरिपर्‌यो जु गाजे । क्रोध गोद हिय मध्य वृन्द मद मदन विराजे ॥ लोभ भँवर हृदकमल कोश भीतर तिहि आसन । कपट झूंठ झिलि मिले शिष न मानत विश्वासन ॥ मन मोह कोह कन्दर पर्‌यो अपरस है भी-टनडरै । भनि लाल बाल हरिवंशहित बिन प्रसाद तम को हरै ४॥

पूंछिपूंछिआयेतहांसवरीअस्थानजहां कहां वहभागवतीदेखौं दृगप्यासेहैं । आगईआश्रममेंजानिकैंपधारेआपदूरहीतेसासटांगकरेचषभासेहैं॥रवकिउठाइलईव्यथातनदूरगईनई नैननीरझरीपरे प्रेमपासेहैं । बैठेसुखपाइफलखाइकैसराहेवेइकह्यो कहांकहैं मेरे मगदुख नाशे हैं ३२ करतहैंशोचसबबैठेऋषिआश्रममें जलकोविगारसोसुधारिकैसेकीजिये । आवतसुनेहैंवनपथरघुनाथकहूंआवैंजबकहैंयाकोभेदकहिदीजिये॥ इतनेहींमांझसुनिसवरीकेराजेआनि गयो अभिमानचलोपगगहिलीजिये । आयेखुनसाइकहीनीरकोउपाइकहौ गहौपगभीलिनीकेह्वैहै स्वच्छभीजिये ३३ ॥

इतनेही ॥ नीतौ ॥ राज्यहीनानराःसर्वे बुद्धिहीनाभवन्तिहि ॥ बुद्धिहीनानराःसर्वे राज्यहीनाभवन्तिहि १ खाइकै ॥ पद मीठे मीठे चाखि चाखि बेर लाई भीलनी । कौनसी अचारवती नहीं रूप रंग रती जातिहूमें कुलहीन घड़ी है कुचीलनी ॥ जूठे फल खाये राम सकुचे न भावजानि तुमतो प्रभु ऐसी कीनी रसकी शीलनी । कौनसी तपस्या कीनी वैकुण्ठ पदवी दीनी बिमानमें

चढ़ीजात ऐसी है सुशीलनी ॥ सांची प्रीतिकरै कोई अमरदास तरै सोई प्रीतिहीसों तरिगई गोकुल अहीरनी २ कही नीर नीर॥ नीरौ ॥ शठंप्रतिशठंकुर्यादादरंप्रतिचादरम् ॥ त्वयाखलुत्वितेपक्षे मयातेमुण्डितंशिरः ३ तापै तोता को अरु वेश्या को दृष्टान्त ४ स्वच्छ कीजियै ॥ दोहा ॥ अधिक बढ़ावत आपते जन महिमा रघुवीर ॥ सवरी पद रज परशते शुध भयो सरिता नीर ५ हरिभगतनि को मिलत हैं भगवतके यश थाप ॥ हृदय बीच को फलत है समुझो आपहि आप ६ अभिमानी ऋषि छोड़ि सवरी के गये ॥

जटायुकीटीका॥जानकीहरणकियोरावणमरणकाजगुनिसीतावाणीखगराजदौर्योआयोहै । बड़ीपैलड़ाईलीनी देहवारिफेरिदीनीराखेप्राणराममुखदेखिबोसुहायोहै॥ आयेआपगोदशीशधारिदृगधारसींच्यो दईसुधिलईगतितनहूंजरायोहै । दशरथवतरामकियोजलदानयहअतिसनमाननिजरूपधामपायोहै ३४ अंबरीषजूकीटीका॥अंबरीषभक्तकीजुरीषकोउकरै और बड़ोमतिबौरकिहूंजातनहिंभाखिये।दुरवासाऋषिशिवसुनीनहींकहूंसाधुमानिअपराधशिरजटाखैंचिनाखिये ॥ लईउपजाइकालकृत्याबिकरालरूपभूपमहाधीररह्योठाढ़ोअभिलाखिये । चक्रदुखमानिलैकृशानु तेजराखकरी परीभीरब्राह्मणकोभागवतसाखिये ३५ ॥

गोद शीश ॥ सवैया ॥ श्रीरघुनाथजू लै खग हाथ निहारैं औ नैननि ते जलडारैं । टूक ह्वैजात हैं सीता बिथाके सो याकी सनेह कथाके बिचारैं ॥ तजि मोहिं चले लगि नीको तुम्हैं हमैं सोंह तिहारी है संग तिहारैं । योंकहि राम गरो भरिफेरि जटायु की धूरि जटानसों भारैं १ लई गति दोहा ॥ मुये मरत मरिहैं सकल

घरी पहर के बीच ॥ लही न काहू आजुलों गीधराजकी मीच २ दई सुधि ॥ रघुवर विकल विहंग लखि सो बिलोकि दोउ वीर ॥ सियसुधि कहि सिय राम कहि देह तजी मतिधीर ३ घरी जनावतहीरहैं घरी भजे नहिं राम ॥ घरीभई सब पुण्यकी खरी सुमति बेकाम ४ ॥ रीखकोऊ ॥ नवमे ॥ सवै मनःकृष्णपदारविन्दयोर्व चांसिवैकुण्ठगुणानुवर्णने ॥ करौहरेर्मदिरमार्जनादिषुश्रुतिचकारा च्युतसत्कथोदये ५ मुकुन्दलिङ्गालयदर्शनेदृशौ तद्भृत्यगात्रस्पर्शेग संगमम् ॥ घ्राणंचतत्पादसरोजसौरभे श्रीमत्तुलस्यारसनातदर्पि ते ६ पादौहरेःक्षेत्रपदानुसर्प्पणे शिरोहृषीकेशपदाभिवन्दने ॥ कामञ्चदास्येनतुकामकाम्यया यथोत्तमश्लोकगुणाश्रयारतिः ७ ॥

भाज्योदिशादिशासबलोकलोकपालपासगयोनधोतेज चक्रचूनकियेडारेहैं । ब्रह्माशिवकहीयहगहीतुमटेवबुरी दासनिकोभेदनहींजान्योवेदधारेहैं ॥पहुँचेवैकुंठजाइकह्यो दुखअकुलाइ हायहायराखोप्रभुखरोतनजारेहैं । मैंतो हौं अधीनतीनिगुणकोनमानमेरेभक्तवातसल्यगुणसबहीको ढारे हैं ३६ मोकोअतिप्यारेसाधुउनकी अगाधमतिकरौ अपराधतुमसह्योकैसेजातहै । धामधनवामसुतप्राणतन त्याग करैं ढरैं मेरीओरनिशिभोरमोसोंवातहै ॥ मेरेउनसंत बिनुऔरु कछुसांचीकहौंजाओवाहीठौर यातेमिटैउत पातहै । बड़ेईदयालसदादीनप्रतिपालकरैं न्यूनता न धरैं कहूंभक्तिगातगातहै ३७ ॥

ब्रह्मवाक्य ॥ लक्ष्मीःप्राणाधिकाशश्वन्नास्तिकोपिततोधिकः ॥ भक्तान्द्वेष्टिस्वयंसाचेत् तृणत्यजतितांविभुः १ ॥ शिववाक्य ॥ म हतिप्रलयेब्रह्मन् ब्रह्माण्डोपिजलप्लुतः ॥ नतत्रनाशोभक्तानां सर्वे षांचनिशिष्यते २ ॥ हाय हाय ॥ पद ॥ हरि भक्तनिसों गर्व न

करिबो । यह अपराध परम पदहूते टतरि नरक में परिबो ॥ गज सिंहासन अश्व ऊंट चढ़ि भवसागर नहिं तरिबो । हम कुलवन्त धनी ये भिक्षुक नीच न मनमें धरिबो ॥ यह मत भली नहीं आपुन वड़ नर कूकर अनुसरिबो । हरिसेवीदशभाइ के को लघु कादर नेकु न डरिबो ॥ अपने दोष निपट आधेरर दोष कुतर्कनि जरिबो । वृथा चातुरीवाद जनमते भले गर्भमें गरिबो ॥ खानपान पैड़ान भले जो बदन पसारि न मरिबो । श्रीकृष्णदास हित धरि वि-वेक चित साधन रांग उबरिबो ३ ॥ आधीन नवमे ॥ अहं भक्त पराधीनो ह्यस्वतन्त्रइवद्विजः ॥ साधुभिर्ग्रस्तहृदयो भक्तैर्भक्तज नप्रियः ४ चालधन भागवते ॥ येदारागारपुत्राप्तान् प्राणान्वित्त मिमंपरम् ॥ हित्वामांशरणंयाताः कथंतांस्त्यक्तुमुत्सहे ५ नाहमा त्मानमाशासे मद्भक्तैःसाधुभिर्विना ॥ श्रियंचात्यन्तिकींब्रह्मन् येषां गतिरहंपरा ६ दीनदयाल शरणागतपालक आरतनाशन ब्रह्मण्य-देव ॥ भलोगर्भ में गरिबो ७ ॥

हैकरि निशालकृपि आयो नृपपास चल्यो गर्वसों उदास पग गहेदीनभाख्योहै । राजाताजभानिसुकुकहिसनमान कह्योढस्योचक्रऔर करजोरिअभिलाख्योहै । भक्तनि शिरामकहूँलाननाल चाहतहैं चाहतहैं विप्रदूरिकरो दुख चाख्योहै । देखिकैविकलताईसदासंतसुखदाईआई मन मांझसवैतेजढांपिराख्योहै ३८ एकनृपसुतासुनिअंवरी षभक्तिभावभस्योहियभावऐसोवरकरिलीजिये । पितासों निशंकह्वैकेकहीपतिकियोमैंहीं बिनै मानिमेरी वेगिचिट्ठी लिखदीजिये ॥ पातीलैकैचल्योविप्रक्षिप्रवहिपुरीगयो नयोचावजान्यो ऐपैकैसेतियाधीजिये । कहो तुमजाइरा नीवैठीसत आइ मोको बोल्यो न छुहाइप्रभुसेवामांझभी जिये ३९ ॥

गर्भसोंउदास ॥ पद ॥ हमभक्तनसों भक्तिविगारी। जान्यां नहीं इतोवल इनको ये हरिके अधिकारी॥ कमलपरागभँवरभल जानैं वहे वासना विहारी। निपट नालके निकट लेडुका भयो कीचकोचारी॥ काम क्रोध मद अतिशय जड़मीत तप वल बढ़्यो विकारी। अंगीकार किये हरि इनको यह कछु हम न विचारी॥ दुर्वासा अम्वरीषहि आगे करी दीनताभारी। अग्रदास अभिमान पोटरी ऋषिशिरते तबडारी १॥ निशंक ह्वै कै॥ सवैया॥ चन्दन पंक गुलावको नीर सरोजकी सेज उठाइधरौरी। तूलभयो तन जात जगे यह वैरी दुकूल उतारि हरौरी॥ शम्भुजू भूंठे सबै उपचारयो माह तुसारके भारपरौरी। लाजके ऊपर गाजपरै व्रजराज मिलैं सोइ लाजकरौरी २ जरिजाहु जो लाज सो काज विगारे ३ तिया धीजिय तिया धीजेवके सरानी की लौंड़ी पंडित कोदृष्टान्त॥ चोरसाहूकारको दृष्टान्त ॥ दो व्याहाकान्याय॥ नखिनांचनदीनांच शृङ्गिणांशस्त्रपाणिनाम्॥ विश्वासोनैवकर्त्तव्यः स्त्रीपुराजकुलेषुच ४ दृष्टान्तनानकशाहको ४॥

कहीनृपसुतासोंजोकीजियेयतनकौनपौनजिमिगयो आयोकामनाहींवियाको। फेरिकैपठायोसुखपायोसुंतोजा न्योवहवड़ोवरमडवाकेलोभनहींतियाको॥ वोलीअकुला इमनभक्तिहीरिभाइलियो कियोपति मुखनहींदेखो और पियाको। जाइकैनिशंकयहवात तुमेरीकहौचेरीजोनक रौतौपैलेवौपापजियाको ४० कहीविप्रजाइसुनि आइभ हराइगयोदयौलैखड़गयासोफेरिफेरिलीजिये। भयोजूवि वाहउतसाहकहूंमातनाहीआईपुर अंवरीष देखिछविभी जिये ॥ कह्योनवमंदिरषंभारिकैवसेरादेवोदेहुरादभोग विभौनानासुखकीजिये । पूरवजनमकोउमेरेभक्तिगन्ध हूतियानेसनवंधपायो यहैमानधीजिये ४१ रजनीकेशे

षपतिभौनमेंप्रवेश कियो लियोप्रेमसाथढिगमंदिरके आइये। वाहरीटहलपात्रचौकाकरिरीभिरही गही कौन जाइजामेंहोतनलखाइये ॥ आवतहीराजादेखिलगैननि मेषकहूंकौनचोरआयोमेरीसेवालैचुराइये । देखीदिन तीनिफिरचीन्हिकै प्रवीनकही ऐलोमनजोपैप्रभुमाथेप धराइये ४३ ॥

बोली अकुलाइ ॥ ऋषभदेववाक्यम् ॥ गुरुर्नसस्यात् स्वजनो नसस्यात् पितानसस्याज्जननी न सा स्यात् ॥ दैवं न तत्स्यान्न पतिश्चसस्यान्नमोचयेद्यः समुपेतमृत्युम् १ पतिभवनमें॥ लक्ष्मी वाक्यम् ॥ सवैपतिःस्यादकुतोभयःस्वयं समंततः पाति भयातुरं जनम्॥ सएकएवेतरथामिथोभयं नैवात्मलाभादधिमन्यतेपरम् २ विना टहलतो भक्ति प्राप्ति नहीं होइहै अनेक उपाइ करो विना हरिकी कृपाकहो कहाते आवे जैसे रसयनीकी रसायनि विना टहल नहीं पावे जब टहल करिके प्रसन्न करे तब मिले ३ ॥

लईवातमानमानोमंत्रलैसुनायोकान होतहीविहान सेवानीकीपधराईहै। करतिशिंगारफिरआपहीनिहारिरहै लहैनहींपारदृगझरीसीलगाईहै॥ भईवढ़वारिरागभोगसों अपारभावभक्तिविसताररीतिपुरीसवछाईहै। नृपहूसुनत आवलागीचोपदेखिवेकी आयोततकालमतिअतिअकुला ईहै ४३ हरैहरै पाँवधरैपौरियानमनेकरैंखरैंअरवरैं कव देखोंभागभरीको। गयेचलिमंदिरलौंसुंदरनसुधिअंगरंग भीजिरहीदृगलाइरहेभरीको ॥ वीणलैवजावैगावैलालन रिझावै त्योंत्योंअतिसनीभावैकहैधन्ययहघरीको। द्वारपै नरहोजाइगयेललचाइढिग भईउठिठाढ़ीदेखिराजागुरु हरीको ४४ वैसही वजाओगीनतानानिनवीनलेकेभीन

सुरकानपरैजातमतिखोइये । जैसेरंगभीजिरहीकहीसो नजातिमोपै ऐयैमननैनचैनकैसेकरिगोइये ॥ करिकैअ लापचारोफेरिकैसँभारीतानआइगयो ध्यानरूपनाहीमां झभोइये । प्रीतिरसरूपभई रातिसवबीतिगईनईकछू रीतिअहोजामेंनहीं सोइये ४५ ॥

लईबातमानि ॥ गीतायां ॥ जन्मान्तरसहस्रेषुतपोध्यानसमा धिभिः ॥ नराणांक्षीणपापानांकृष्णेभक्तिःप्रजायते ॥ रीझिये ॥ पं- चरात्रे ॥ नाहंवसामिवैकुण्ठे योगिनां हृदयेनच ॥ मद्भक्तायत्रगाय न्ति तत्र तिष्ठामिनारद १ ॥ भई उठिठाढ़ी न्याये ॥ नराणांचनराधि पः २ ॥ एक उपदेशकर्त्ता गुरु ॥ एक पति परमेश्वर सो तीन नाते जानिकै उठी नहीं सोइये ॥ रोगी भोगी योगिया वपु जेही पर काज ॥ शामन इनके दृगन में नींदै आवै लाज ॥ नासकेत ॥ एका क्षरप्रदातारं योगुरुंनैव मन्यते ॥ श्वानजन्मशतंगत्वाचांडालेष्वपि जायते ४ ॥

वातसुनोरानी औरराजागयेनईठौर भईशिरमौरअव कौनवाकीसरहै । हमहूंलैसेवाकैपतिमतिवशकैरंधरैनि तध्यानविषैवुद्धिराखीधरहै ॥ सुनिकैप्रसन्नभये अतिअँ वरीपईशलागीचोपफैलगईभक्तिघरघरहै । वढ़ैदिनदि नचावऐसोईप्रभावकोईपलटैसुभावहोतआनँदकोभरहै ॥ ४६ ॥ टीकाविदुरजीकी ॥ न्हातिहीविदुरनारिअंगनिप खारिकरिआइगयेद्वारकृष्णबोलिकै सुनायोहै । सुनतहीं सुरसुधिडारीलैनिदरिमानो राख्योमदभरिदौरिआनिकै चितायोहै॥डारि दियोपीतपटकटिलपटाइलियोहियोसकु चायो वेसवेगिहीं वनायोहै । वैठीढिगआयकेराकेलाछी लिकाखवायआयोपतिलीज्योदुखकोटिगुनोंपायोहै ४७॥

पलटे ॥ तापै दृष्टांत राजाकी वेटीको अरु फकीर को १ धील इहु रसिकहेंगेहैं॥ पालपरैं ज्यों आव मिटैहैं १ आइगये ॥ श्लोक॥ इंद्रप्रस्थंयसप्रस्थमवन्तींवारणावतम् ॥ देहिमांचतुरोग्रामानूप ञ्चमंहस्तिनापुरम् २ विनायुद्धंनदातव्यंसूच्यग्रमपिकेशव ३ यद्भाज यंसंत्रक्रुद्धोभगवानखिलेश्वरः ॥ पौरवेन्द्रगृहंहित्वाप्रविवेशात्मसा त्कृतम्४॥ कवित्त ॥ नाहीं नाहीं करैं थोरो मांगैं सब देनकहैं मंगन को देखिपटदेत वारवार हैं। जिनके मिलेते भली प्रापतिकी घरी होति ऐसेकरनार किये ऐसे निरधारहैं ॥ भोगी ह्वैरहत विलसत अवनी के मध्य कनकन जोरे दान पाठ परिवार हैं । सेनापति समाझि विचारिदेखो चारदाता अरु सूम दोनों किये एकुसारहैं५ दुर्योधनघर त्यागतभये ॥ अपनोमानि विदुरकेगये ६ बोलिके ॥ दोहा ॥ सुधि तुरनाल औ तान की रह्यो न सुरठहराइ ॥ येरी राग बिसारिगयो वेरीबोल सुनाइ ७ रही दहेड़ी ढिगधरी भरी मथनियां वारि ॥ फेरतकर उलटी रई नई विलोवनहारि ८॥ कवित्त ॥ सोवतसमाधिते जगाइ दिये मुनिगणपशुहू चकितचित्त करैनाचरनको । गाइनते वछरा छुटायेजे पिवतक्षीर अद्भुतकथा तेरी कहांलौं वरनको ॥ आन हथकरी गोपी सबै हे डरानि डरी तेऊ तहांपरीते गई धरा धरनको। बांसुरी में तोहिपूछौं वारवार तूहै लागी लालके अधर में अधरमें करनको ९ ॥ फूली सांझके सिंगार सूही सारी जुहीहार सोने सों लपेटी गोरी गोने कीसी आई है। आलन न फेरफंद जाने कछू चंदमुखी दीपक वरावन कोनंदभौन लाई है ॥ ज्योतिके जुरतही में जुरेनैनादुरेजाइचा-तुरी अचेतभई चितयो कन्हा हे। वाती रही हाती छवि छाती रतसानी पूर पांगुरी भईहै मति आंगुरीलगाईहै १ गीतायां ॥पत्रं पुष्पंफलंतोयंयोमेभक्त्याप्रयच्छति ॥ तदहंभक्त्युपहृतमश्नामिप्र यतात्मनः ॥ सवैया ॥ सूहीसीसारीसुहाईहैसांझमेंनैननमांझमि जाजमईहै। कोहै कहांकीहै कौनकीहै घर कोनकेआई नवेलीनई है ॥ टौरठगे उमँगेसे ममारप रीझिरहे अलिभेंटभई है। कोवकि

पागलियामेंगई सुदियालेगई सो जियालेगईहै ३ प्रेम को विचार॥ ततसुखस्यमुख ॥ दोहा ॥ पूजिभवानी भाइसों मांगत यह वर देहु ॥ व्रजमें सुन्दरसांवरो हमसों करैसनेहु ४ ॥ सवैया ॥ हमकूं तुम एक अनेक तुम्हें उनहींके विवेक वनाइवहो। इतचाहतिहारी तिहारी उतै घरबाहर प्रेम सदा निबहो॥ मनभावै समारप सोई करो अनुराग लता जिन वोयदहो। घनश्यामसुखी रहो आनँदमें रहो नीकेरहो उनहींकेरहो ५ नाकचढ़े सीवींकरै जितछवीलो छैल ॥ फिरि फिरि भूलवहै गहै पियककरीली गैल ६ ततवेत्ता निहुलोकमें भोजन किये अपार ॥ केशवरी कैविदुरघर रुक्मिनी है वार १ ॥

प्रेमकोविचारिआपलागे फलसारदैन चैनपायोहियै नारिवड़ीदुखदाईहै। बोलेरीझिश्यामतुमकीनोवड़ोकाम ऐपै स्वादअभिरामवैसीवस्तु में नपाईहै॥ तियासकुचाइ करकाटिडारौंहाइप्राण प्यारेकोखवाय बीलिवीलकान भाई है। हितहीकीवात दोऊकोऊपारपावैनाहिं नीकेलै लड़ावैसोइ जानैंयहगाई है ४८ टीका ॥ सुदामाजूकी ॥ वड़ोनिशिकामसेरचूनहूंनधामढिगआई निजवामप्रीति हरिसोंजनाई है। सुनिशोचपर्योहियोखर्योअरवर्योमन गाढ़ोलैकैकर्यो बोल्योहांजुसरसाईहै॥ जावोएकवारवहं बदननिहारिआवो जोपैकछुपावोलावोमोकोसुखदाई है। कहीभलीवात सवलोकमेंकलंकह्वैहै जानीपतियाहीलिये कीनो मित्रताई है ४९ ॥

मित्रताई ॥ कवित्त ॥ बोल्यो मुसुकाइ नारिवावरी कहांधों आई मोतनपै मांगेसोकपूतानिकोरावहै। गिरिहूंतेभारे ऐसे दारिद हमारे भाग दई फिटकारे तिन्हैं कहो कहांठामहै॥ खेवेको नरोटी ऐसी आपदाहै मोटीसाथ धेगरीकछोटी सो सुदामा मेरो

नामहै । जौलोंगावें श्यामघनमांगे पावेंभीखकन तौलोंमानिलीजे शिरछत्रनकी छामहै २ आवतिहै लाज भारी जात व्रजराजजूपै यसनसमाज देखिखरोमारिजाइये । एकहीपिछौरीसोतोठौरठौर फाटिरही ओढ़िये निशाको जासों प्रातउठि ..इये ॥ भेटऐसी नाहिं जोलैजाई भगवंतजूपै अंतकभईहै नारिकोलैसमुझाइये । देह परमांस जौलों नासिकामें श्वास तौलों बड़ोउपहासमांगि मीतन सताइये ३ ॥

तियासुनिकहैकृष्णरूपक्योंनचहै जाहिदहैदुखआप हीसों वचनसुनाये हैं । आईसुधिप्यारेकीविचारैमतिटारै तबधारिपगमगभूमिद्वारावतीआयेहैं ॥ देखिकैविभूतिसुख उपज्योअभूतकोऊ चल्योमुखमाधुरीकेलोचनतिसायेहैं । डरपति हियो ड्योढ़ीलांघि मनगाढ़ोकियो लियोकरचाह तवतहांपहुंचाये हैं ५० देख्योश्यामआयो मित्रचित्रवत रहेनेकुहितको चरित्रदौरिरोयगरेलागे हैं । मानोएकतन भयोलयोऐसेलाइछाती नयो यहप्रेमछूटैनाहिं अंगपागे हैं ॥ आईदुचराईसुधिमिलनिछुटाई तातें आने जलरानी पगधोयेभागजागे हैं । सेजपधराइगुरुचरचाचलाइसुख सागरबढ़ाइआइअंतिअनुरागे हैं ५१ ॥

आईसुधि ॥ सवैया ॥ के करतारहों तोसोंकहों कबहूं जनिदीजियै काहूकेटोटो । और लिखो जिनिकाहूके भागमें मालकेठाजें महीपानिपोटो ॥ तूहूंतो जानतहै अपनोजिय मांगिवेतें कछु औरन खोटो । जोगयोमांगन तूबलिद्वार तोयाहीतें ह्वैगयोबावन छोटो १ मांतिमांगि मांतिमांगि जाको नाम मांगना २ मनगाढ़ो कियो ॥ दोहा ॥ मोंमरनें को नेमहै मरोंतो हरिकेद्वार ॥ कबहूंतो हरिबूझिहैं कौन मरयोदरबार ३ ॥ सवैया ॥ केसे विहाल बिवाइन सों पग कंटक जालगड़े पुनिजोपे । हायमहादुख पायोसखा तुम

आयेइतै न कितै दिनखोये ॥ देखिसुदामाकी दीनदशा करुणा करिकै करुणानिधिरोये। पानीपरातको हाथ छुयो नहीं नैननके जल सों पगधोये ३ ॥

चिरवाछिपायेकांखपूछैंकहालायेमोको अतिसकुचाये भूमितकैंदृगभीजेहैं । खैंचिलईगांठिमुठीएकमुखमांझदई दूसरीहूलेतस्वादपायोआपरीझेहैं।गह्योकररानीसुख सानीप्यारीवस्तुयहै खावोबांटिमानौ श्रीसुदामाप्रेमभीजे हैं। श्यामजूविचारिदीनीसंपतिअपारविदाभयेपैनजानी सारविछुरनभीजेहैं ५२ ॥

दियोमुखमांझ॥ कवित्त ॥ हूलहियरामें काम कामीन परी है रोरभेंटतसुदामेंश्यामेंघनैना अघातहीं। शिरोमणि ऋद्धिन में सिद्धिनमें शोरपस्यो काहिधौं बकसिठाढ़ी कांपैकमलातहीं॥ नरलोक नागलोक नगलोक नाकलोक थोकथोक कांपहरि देखिमुसकात हीं॥ हालो परयो हालनमें लालों लोकपालनमें चालो परयो चक्रनि में चिरवा चबातही १ रमाकर पकरो हो याहीते सुदामा कहे कहां तुच्छतंदुल कहँ जगत गुसाईं हैं । यहहून जाने दीनक्षीन तीन पैसा दैके सुखतीनिलोक विभौ मिलि करिपाई है ॥ हरि सकुचाइकछु द्विजको मैं दियो नाहिं ताते यासों कहै मेरी बड़ी हीनताई है। दीनोहों जुदानताको ब्राह्मणी बिना न जान जाके धन यौवन पुलोमजा लजाई है २ विदाभये॥कवित्त ॥ घदाकरि दीनो द्विजप्रकटनकीनो कछु भेंटि भुज चल्यो मनमें विषाद भायो है। याहीते उदास प्रभुपास न रहनपायो याहीते सुखीहौं मोहिं कछु न दिवायो है॥ एक दुखभारी मेरी ब्राह्मणी है खूटसारी ताहू को तो उत्तर मैं सरस बनायो है। मैं जुनिविपाईही सोराह में छिनाई काहू गोविन्द हमारो सब कुटुँब बुलायो है ४ ॥

आयनिजग्रामचहैंअतिअभिरामभयो नयोपुरद्वारका

सोदेखिमतिगईहै । तियारंगभीनीसंगतरुनसहेलीली नी कीनीमनहारियोंप्रतीतिउरभईहै ॥ करैहरिध्यानरूप माधुरीको पान वहै राखे निजप्रानजाकेप्रीतिनितनईहै । भोगकीनचाह ऐसेतननिरबाहकरैढरैसोई लालसुखजाल रसमईहै ५३ ॥

मतिगई है ॥ कवित्त ॥ याहीते जनमभरिगयो नहीं श्यामजूपे मेरोकह्यो वचन पँड़ाइनि नमाने हो । जाहुजाहु लै रहो न मानति अनाजखाइ ऐंड़ी मेंड़ी बातें में तो गोविंद की जाने हो ॥ द्रौपदी को चीर दये गोपिनके हीनिलये ग्राहते बचायो गजरंग-भूमि भानेहो । ब्राह्मणी समेति कहूं खेततें उखास्यो घर यातहूं बचायो वाको कह्यो मैं न मानें हो १ चौतरा उजारि काहू चा-मीकर धामकीन्हों छानितो छवाय डारी छाई चित्रसारीजू । जोहूं होतो घर तोपे काहेको बननदेतो होनहार ऐसीखोटी दशाही ह-मारीजू ॥ होतो होतो काहल हलाहल दिखाय करि जाहल उठा-इ देता देइ मुखगारीजू । लोभकी सवारी दुखभूखकी दलनहारी भैयावनवारी काहू सोऊ मारि डारीजू २ तियारंगभीनी॥ आलिन के यूथ ज्यों ज्यों आदरसों बोलैं आइ त्यों त्यों डरपाइ पग आगे को न देतहै । पंडित न ज्योतिषी न वैदवा न कौतुकी हों रानी जू बुलावति है कहो कौन हेतहै ॥ द्वारकाके राजाते मिलते घर छीनों गयो रानी कहा छीनैगी फल्यो न मेरो खेतहै । मोसो कहा नातो तुम जाइ कहो वाते मोहिं भूलि न सुहातो कोऊ ऐसे पर लेत है ३ नईहै ॥ दोहा ॥ जे गरीव सों हितकरें धनि रहीम वे लोग ॥ कहा सुदामा बापुरो कृष्ण मित्रता योग ४ भोग की न चाह ॥ गीतायां ॥ युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्यकर्मसु ॥ युक्तस्वप्नावबो धस्य योगोभवतिदुःखहा ५ ॥

टीका चन्द्रहासकी ॥ हुतोनृपएकताकोसुत चन्द्रहा

सभयोपरीयोंविपतिधाइलाईऔरपुरहै । राजाकोदिवान ताके रहीघरआनिबाल आपनोसमानसंगखेलेरसटुरहै॥ भयोव्रह्मभोजकोई ऐसोईसंयोगवन्यो आयेवैकुमारजहां विप्रनिकोसुरहै। वोलिउठेसवै तेरीसुताकोजुपतियहैहुवो चाहैजानीसुनिगयोलाजघुरहै ५४ पस्योशोचभारीकहा करोयोंविचारीअहोसुताजोहमारीताकोपतिऐसोचाहिये। डारोंयाहिमारियाकोयहैहै विचारतववोलेनीचजनकह्यो मारोहियेदाहिये॥लैकैगयेदूरिदेखिवाल्छविपूरिहमजौन परोधूरिदुखऐसोअवगाहिये । वोलेअकुलाइतोहिंमारेंगे सहाइकौनमांगोएकवातजवकहौंतवचाहिये ५५ ॥

श्लोक आदिपुराणे ॥ यस्यतुष्टोह्यहंपार्थवित्तंतस्यहराम्यहम् ॥ करोमिवन्धुविच्छेदंसर्वकष्टेनर्जावितम् १ येनतस्यापिसंतुष्टोददामि त्वव्ययंपदम् २ दोहा ॥ तुलसी जो होतव्यता प्रकटै तैसी तोन ॥ करआयलके सींग को कहो उमेठैकौन ३ वाहिपै आदिपुराणे ॥ यदिवातादिदोषेण मद्भक्तोमां च विस्मरेत् ॥ तर्हिस्मराम्यहंभक्तंस यातिपरमांगतिम् ४ गीतायां ॥ ओमित्येकाक्षरंब्रह्मव्याहरन्मामनु स्मरन् ॥ यःप्रयातित्यजन्देहंसयातिपरमांगतिम् ५ अंतकालेचमा मेवस्मरन्मुक्त्वाकलेवरम्॥ यःप्रयातिसमद्भावं यातिनास्त्यत्रसंश यः ६ यंयंचापिस्मरन्भावंत्यजत्यन्तेकलेवरम् ॥ तंतमेवेतिकौंते यसदातद्भावभावितः ७ सहाय ॥ जिन राखो ऋपियज्ञ जनक नृप को पनराखो । जिनराखो पितवोल काक केवट जिनराखो ॥ जि-नराखो ऋषि सकल विकल दंडक वन वासी । जिनराखो सुग्रीव वसत गिरि त्रसत उदासी ॥ रिपु अनुज विभीषणपगपरत लंकदई सनमानिके । सुप्रेमसखा पति राखिहैं दीनवंधु जन जानिकै ॥

मानिलीन्होवोलिसो कपोलमध्यगोलएकगांडकीकोसु तकादिसेवानीकीकीन्हीहै । भयोतदाकारयोनिहारिसुख

भारभरिनैननिकोकोरहीसों अज्ञावधदीन्हीहै ॥ गिरेमुरझाइदयाआइकछूभाइभरेढरेप्रभुओरमतिआनँदसों भीन्हीहै। हुतीञ्छीआँगुरीसुकाटिलईदूषणही भूषणहीभयोजाइकहीसांचचीन्हीहै ५६ वहैदेशभूमिमें रहतलघुभूपऔरऔरसुखसबैएकसुतचाहभारीहै । निकस्योविपिनआनिदेखियाहिमोदमानिकीनीखगछांहघिरी मृगीपांतिसारीहै ॥दौरिकैनिशंकलियोपाइनिधिरंकजियो कियोमनभायोसोबधायोधनवारीहै । कोऊदिनवीतेभयेनृपचितचीतेदियोराजकोतिलकभावभक्तिविसतारीहै ५७ रहेजाकेदेशसोनरेशकछुपावैनाहिं वांहबलजोरिदियोसचिवपठाइकै। आयोघरजानिकियो अतिसनमानसोंपिछानि लियोवहैबालमार्योछलछाइकै ॥ दईलिखिचिट्ठीजाहुमेरेपुतहाथदीजैकीजैवही बातजाके आयोलैलिखाइकै। गयेपुरपासबागसेवामतिपगकरी भरीदृगनींदनेकुसोयोसुखपाइकै ५८ ॥

अज्ञावध ॥ दोहा ॥ तुलसीतेरहसैत्ररष यद्यपिलगीसमाधि ॥ तदपिभांड़की नागई दुष्टवासनाव्याधि १ वाहुवल ॥ नीतौ ॥ उत्खातान् प्रतिरोपयन्कुसुमितांश्चिन्वन् लघून्वर्द्धयन्नुत्तुंगान्नमयन्नतान्समुन्नयन् विश्लेपयन् संहतान् ॥ क्षुद्रान्कंटकिनोबहिर्निरसयन्म्लानान्समुत्सेचयन्मालाकारइवप्रयोगनिपुणो राजाचिरंनन्दति २ ॥ कवित्त ॥ छोटेछोटेगुलनि को शूरनिकी वारिकरो पातरेसे पौधातिन्हें पानीदैदैपालिवो । नीचेगिरिगये तिन्हें दे दे टेक ऊंचेकरो ऊंचेबढ़िजाइँ ते जरूरकाटिडारिवो ॥ फूलेफूलेफूल चयीनिइकठौरेकरो घनेघनेरूख एक ठौरते उखारिवो । राजनिको मालिनिको नितप्रतिदेखीदास चारियरीरातिरहे इतनोंतिः

चारिषो ३ तापेराजाको अरु गांड़ेको दृष्टांत ४ माथोकाटिवते अगु-
ळीकटी ५ ॥ चिट्ठी ॥ श्लोक ॥ विप्रिसस्मैप्रदातव्यं त्वयामदनश
स्त्रे ॥ कार्याकार्यनकर्त्तव्यं कर्त्तव्यं किल मे प्रियम् १ ॥

खेलतिसहेलिनिमेंआइगईंबागमांभ करिअनुराग भईन्यारीदेखिरीभिये। पागमतिपातीछविमातीभूकिखें चलईबांचीखोलिलिख्यो विषदैनपिताखीभिये ॥ विषया सुनामअभिरामदृगअंजनसो विषयाकनाइ मनभाइरस भीजिये। आइमिलीअलिनमेंलालनकोध्यानहिये खिये मदमानोंगृहआइतवधीजिये ५६ ॥

नामअभिराम ॥ मैंजानोंमेरोनाम सबतेवुरोहै क्योंकि काहूको कनकमंजरी काहूको रूपलतादरिसे अवजानीविषयाही अभिराम है याते यहवात वनीवरी एक ॥ कुण्डलिया ॥ अगर मुकुर प्रति-विम्वमें अपनो आनन जोइ। हरिसन्मुखसख पाइये विमुख भये दुख होइ ॥ विमुख भयेदुखहोइ देखिदशग्रीवविभीषन। देखिसु-रुचिसुनीति देखिप्रह्लादपितानन ॥ देखिदक्षको यज्ञ देखिपृथुवेणु विनीता। कंसजनकसुनअंब देखिपांडवजगगीता १ ॥ श्लोक ॥ यस्यास्तिभक्तिर्भगवत्यकिञ्चनासर्वैगुणास्तत्रसमासतेसुराः ॥ हरा वभक्तस्यकुतो महद्गुणा मनोरथेनासतिधावतोवहिः २तापैदृष्टांत हवसीके दरपणको ३ ॥

उज्योचन्द्रहासजिहिपास लिख्योलाजोजायो देखिम नभायोगाढ़ेगेरसोंलगायोहै। दईकरपातीमानलिखीमों सुहातीवोलिविप्र घरीएकमांभव्याहउघरायोहै ॥ करी ऐसीरीतिडारेवड़ेनृपजीति श्रियदेतगईवीतिचावपारपैन पायोहै। आयोपितानीचहुनिघूमिआईसीचमानोंवानो लखिदूलहकोशूलसरसायोहै ६० वैज्योलैइकांतसुतक रीकहाभ्रांतयहकह्योभो नितांतकरपातीलैदिखाईहै। वां

चिआंचलागमैंतोवड़ोईअभागीऐये मारोमतिपागीवे टीरांड़हूसुहाईहै ॥ वोलिनीचजातिवातकहीतुमजावोमठ आवैतहांकोऊमारिडारोमोहिंभाइहै । चंद्रहासजूसेंभा ख्योदेवीपूजिआवोआजु मेरीकुलपूजिसदारीतिचलिआ ईहै ६१ चलेईकरनपूजादेशपतिराजाकहीमेरेसुतनाहिं राजवाहीकोलैदीजिये । सचिवसुवनसोंजुकह्योतुमला वोजावोपावोनहींफेरिसमैअवकामकीजिये ॥ दौरयोसुख पाइचाइसगहीमेंलियोजाइदियोसोपठाइनृप रंगमाहिंभी जिये । देवीअपमानेनडरोसनमानकरोजातमारिडाल्यो यालोंमाप्योभूपलीजिये ६२ ॥

मूलरसायो ॥ कवित्त ॥ भावनि वनाये जे वधाये ते लुनाये सुनि अनिकी रिसाये दुख सागर वुड़ायो है । नगर नगारेनगनते तूंने भारेसुनि याके शिर मानों काहू आरासो फिरायो है ॥ आं-गननें ज्ञातिहि सुअंगनि में आगि लागी अंगना के करसों सुकं-कना लखायो है । पाती लेत हाथही सुमारीशिर माथही सुविप याके वांचे विप याके लपटायो है १ ॥

काहूआनिकही सुतमारेतेरोनीचनिने सींचनशरीर जलहगझरीलागीहै । चल्योनतकालदेखिगिर्योह्वैविहा लजीशपाथरसोंफोरिमर्योऐसोहीअभागीहै ॥ सुनिचंद्र हासचलिवेगिमठपासआयोध्यायेपगदेवताकेकाटेअंगरा गीहै । कह्योतेरोदोपीयाहिक्रोधकरिमार्योमैंहींउठैदोऊ दीजैदानजियेवड़भागीहै ६३ कर्योऐसोराजसवदेशभ क्तराजकर्यो ढिगकोसमाजताकीवातकहाभाखिये । हरि हरिनामअभिरामधामधामसुनै औरकामनाहिंसेवाअति अभिलाखिये ॥ कामक्रोधलोभमदआदिदैकैदूरिकरैजि

यैनृपपाइऐसोनैननिमेंराखिये । कहींजितीबातआदिअंतलौंसुहातिहियेपढ़ैउठिप्रातफलजैमिनिमेंसाखिये ६४

टीकासमुदाइकी ॥ चौपारवनामसोबखानकियोनाभाजूनेमैत्रैअभिरामऋषिजानिलीजैबातमें। आज्ञाप्रभुदईजाहुबिदुरहैभक्तमेरोकरौउपदेशरूपगुणज्ञातगातमें॥ चित्रकेतुप्रेमकेतुभागवतख्यातजाते पलटयोजनमप्रतिकूलफूलघातमें । ऐसेअक्रूरादिधुवभयेसबभक्तभूपटद्वबसप्यारेनकीख्यातपातपातमें ६५ ॥

बेटीरांडहूसुहाइ ॥ दोहा ॥ अगर दुष्टता जीवकी शिर तजि अपयशलेइ ॥ सनतन खाल कढ़ाइके परतनं बंधन देइ २ ॥ बड़भागी है ॥ दोहा ॥ दुष्ट न छांड़े दुष्टता सज्जन तजे न हेत ॥ कज्जल तजै न श्यामता मोती तजै न श्वेत १ सज्जन ऐसो कीजिये जैसो आको दुद्ध ॥ औगुण ऊपर गुणकरै तो जानै कुल शुद्ध २ ॥ भक्तराज ॥ राजनीतौ ॥ अप्रतापोजायतेवरसो मिथ्यात्वदतिभूपतिः ॥ वस्त्रंजलाग्निनादग्धंयथाराजातथाप्रजा ३ पलटचोजन्म ॥ दोहा ॥ जामरने सों जग डरे सो मेरे आनंद ॥ कब मरिहों कब भेंटिहोंपूरणपरमानंद ४ वृत्रासुरबधोपेतंतद्भागवतमिष्यते ५

कुन्तीकरतूतिऐसीकरैकौनभूतप्राणी मांगतबिपति जासोंभाजैंसबजनहैं । देख्योमुखचाहौंलालदेखेबिनहियेशालहूजियेकृपालनहींदीजैबासबनहैं॥ देखिबिकलाईप्रभुआंखिभरिआई फेरिघरहीकोलाई कृष्णप्राणतनधनहैं । श्रवणबियोगसुनितनकनरह्योगयो भयोबपुन्यारोअहोयहीसांचो पन हैं ६६ ॥

मांगतबिपति ॥ भागवते ॥ विपदःसन्तुनःशश्वत्तत्रतत्रजगद्गु

१ जैमिनिपुराणमें यह कथा है ॥

रो॥ भवतोदर्शनंयत्स्यादपुनर्भवदर्शनम्१ जन्मैश्वर्यश्रुतश्रीभिरेध मानमदःपुनान॥नैवार्हत्यभिधातुंवै त्वामकिञ्चनगोचरम्२दोहा॥ प्रीतम नहीं बजार में सोइ बजारउजार॥ प्रीतम मिलै उजार में सोइ उजारबजार ३ कहाकरौंवैकुंठलै कल्पवृक्षकी छांह॥ अ-हमदढाकसुहावने जो प्रीतमगलबांह ४॥ घरहीकोलाइये॥ गम-नसमयअंचलगह्यो छांड़नकह्यो सुजान॥ प्राणपियारे प्रथमहीं अंचलतजौं कि प्रान ५ वपुन्यारा॥ जासों मिलि सुख झिलिरहे दोनों दुख विसराइ॥ फिरि जो जाके बिछुरते फट्यो न उरकाहि हाइ ६ मन बँदूक तन जामगी हियरंजक जियसाज॥ प्रेमपलीता दगिगई निकसी आहि अवाज ७॥

द्रौपदीसतीकीबातकहैऐसोकौनपटुखैंचतहीपटपटको टिगुनेभयेहैं। द्वारकाकेनाथजबबोलीतबसाथहुतेद्वारका सोंफिरिआयेभक्तबाणीनयेहैं॥ गयेदुरवासाऋषिवनमेंप ठायेनीचधर्मपुत्रबोलेबिनैआवैपनलयेहैं। भोजननिवारि त्रियाआइकहीशोचपस्यो चाहैंतनत्यागयोकह्योकृष्णक हूंगयेहैं ६७ सुन्योभागवतीकोवचनभक्तिभावभस्योक स्योमनआयेश्यामपूजेहियेकामहैं। आवतहीकहीमोहिंभू खलागीदेवोकछूमहासकुचायेमांगैंप्यारोनहींधामहैं॥ वि श्वकेभरणहारधरेहैंअहारअजू हमसोंदुरावोकहीवाणीअ भिरामहैं। लग्योशाकपत्रपत्र जलसंगपाइगयेपूरणत्रि लोकीविप्रगनेकौननामहैं ६८॥

पटकोटिगुनें॥ ऋतुवसंतयाचकभई रीझिदियेद्रुमपात॥ याते नवपल्लवभये दियोदूरनहिंजात ८॥ कवित्त॥ दुश्शासनदु-श्मनदुकूलगह्यो दीनबन्धु दीनहैकै द्रुपददुलारीयोंपुकारी है। छां-डेपुरुषारथओठाढ़े पियपारथसे भीममहाभीमग्रीवानीचेकोनिहारी है॥अम्बर जो अम्बरअसरकिये वंशीधरभीपमकरण द्रोणशोभा

यो निहोरी हैं। सारीमध्यनारी है कि नारीमध्यसारीहै कि सारीहै किनारी है किसारिहीकी नारीहै ६ नये हैं॥ भारते॥ यद्गोविन्देति चुक्रोशकृष्णेमाद्दूरवासिनम्॥ ऋणमेतत्प्रवृद्धंमे हृदयान्नापसर्पति १ अथिश्याम॥ पद॥ तोहूंपावनविरदलजाऊं॥ जोजन के संकट में राजा सुमिरण समय न आऊं। सुनो अजातशत्रु करुणामय करुणासिंधु कहाऊं॥ अनघअनाथनि दीन जानिकै गरुड़ासन त्रिसराऊं। शीघ्रसुकाज भक्त अपने के जहां तहां उठि धाऊं॥ लघुभगवान प्रतिज्ञा मेरे यश त्रैलोकवढ़ाऊं १ कौननाम है॥ पद्ये॥ यथाहिस्कन्धशाखानां तरोर्मूलनिषेचनम्॥ एवमाराधनंविष्णोः सर्वेषामात्मनश्च हि ३ यथातरोर्मूलनिषेचनेन तृप्यन्तितत्स्कन्धभुजोपशाखाः॥ प्राणोपहाराच्चयथेन्द्रियाणांतथैवसर्वार्हणमच्युतेज्या ४ कोउ अगस्तको मंत्रउचारे। कोउचरणकोहाथपसारे॥ कोउअमलवेतकोयांचै। कोउपेटपीटिकैनांचै ५ एक भगवत्नाम औषधविना रोग नहीं कटै कोटि यतन करौ ६॥

मूल॥ पदपङ्कजरजवंदौंसदाजिनकेहरिनितउरवसैं॥ श्रुति[१]देव अँगमुचुकुंदभूपप्रीयव्रतजेता। पृथूपरीक्षितशेषसूतशौनकपरचेता॥ शतरूपात्रयसुतासुनीतीसतीमंदालश। यज्ञपत्निव्रजनारिकियेकेशवअपनेवश॥ इतऐसेनरनारीजितेतिनहींकेगाऊंयसैं। पदपंकजरजवंदौंसदा जिनकेहरिनितउरवसैं ११॥ टीकासमुदायकी॥ जिनहींके हरिउरनितवसैं तिनहींकेपदरेणुचैनदैनआभरणकीजिये। योगेश्वरआदिरसस्वादमेंप्रवीणमहाविप्रश्रुतिदेवताकीवातकहिदीजिये॥ आयेहरिघरदेखिगयोप्रेमभरिहियो ऊंचोकरकरिपटफेरिमतभीजिये। जितेसाधुसंगतिन्हैंविनैनप्रसंगकियो कियोउपदेशमोसोंवादिपांवलीजिये ७०

१ श्रुतिदेवके नाममें द, फो लघुकरके वांचनेसे गाथायें अधिक न होंगी॥

मूल ॥ इनअंघ्रीअंवुजपांशुको जनमजनमहोंयाचिहों। प्राचिनवर्हिसत्यव्रतरघुगणसगरभागीरथ। वाल्मीकि मिथिलेशगयेजेजेगोविंदपथ॥ रुकमांगदहरिचंदभरत दधीचिउदारा। सुरथसुधन्वाशिवीसुमतिअतिवलिकीदारा॥ नृपनीलमोरध्वजताम्रध्वजअलरककीरतिराचिहों। इनअंघ्रीअंवुजपांशुकोजन्मजन्महोंयाचिहों १२॥

प्रेमभरि दशमे॥ धन्योहंकृतकृत्योहं पुण्योहंपुरुषोत्तम॥ अद्य मे सफलंजन्म जीवितंसफलंचमे १ अपि संगअपी श्लोक॥ दारापुत्रोनराणांस्वजनपरिकरो वन्धुवर्गःप्रियोवा माताभ्रातापिता वा श्वशुरवुधजनो ज्ञातिरैश्वर्य्यवित्तम्॥ विद्यानीतिर्विपुलसुहृदो यौवनंमानगर्वं मिथ्याभूतंमरणसमये धर्मएकः सहायः १ कुंडलिया॥ अगर कामहरि नामसंकट होन सहाइ। कोऊकाहूको नहीं देखो टोंकि वजाइ॥ देखो टोंकि वजाइ न रिपट भूषणचाहे। सुतसोपे नित प्राण सुता प्रत्यक्ष अवगाहै॥ तान मातकरे घेरुवधूनितचित्तविगारी। स्वारथताके सजन दास दासी देगारी॥

टीका उभयवालमीकिकी॥ जन्मपुनिजन्मको न मेरे कछुशोचअहोसंतपदकंजरेणुशीशपरधारिये। प्राचीनवर्हिआदिकथाप्रसिद्धिजगउभै वालमीकिऋषिवातजियते नटारिये॥ भयेभील संगभीलऋषिसंगऋषिभयेभयेराम दरशनलीलाविसतारिये। जिन्हैंजगगाइकहूंसकैनअघाइचाइभाइभरिहियेभरिनैनभरिढारिये ७१॥ टीकासुपच वालमीकिकी॥ हुतोवालमीकिएकसुपचसुनामताकोइयामलैप्रकटकियेभारतमेंगाइये। पाण्डवनिमध्यमुख्यधर्मपुत्रराजाआपकीनोयज्ञभारीऋषिआयेभूमिछाइये॥ ता

१ स, इस अक्षर को गुरुउच्चारण न करना और रय, को गुरुकरिके वांचना॥

कोअनुभावशुभगङ्गसोप्रभावकहैजोपैनहींवाजैतौ अपूर णताआइये । सोईबातभईबहुधाज्योनाहिंशोचपरयोपूछैं प्रभुपासयाकीन्यूनता बताइये ७२ ॥

तिन्हें जगगाइ ॥ छप्पै ॥ मुक्तिसुवनिताश्रवणआभरणअक्षयद्वै कहि । मुनिमनपक्षिपिविदास जैरामतासगहि ॥ जगतसमुद्र अ-पारतीरभुवनेन वेदभल । कलिपातकतमप्रवलहरणको रविशशि मंडल ॥ विपरीति नाम उच्चार किय वालमीक ऋषि भये तदा । जिहितिहि प्रकार सब काम तजि रामनाम सुमिरैं सदा १ रा-मायणे॥चरितंरघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरम्॥एकैकमक्षरंपुंसां महापातकनाशनम् २ वाल्मीक वुधिवंतसदा सीतापतिगावैं। रा-मायणशतकोटि रामराघव मन भावैं ॥ तेंतिसकोटि तेंतीसलाख तेंतीस हजारा । त्रिशत वहुरि अश्लोक थोक तेंतीस विचारा ॥ दश दश अक्षर और भक्ति भजिवे को कीना। रामनाम दोउअंक मांगि शंकर तब लीना ॥ ततवेत्ता तीनिहुंलोक में रामचरित विस्तरि रह्यो । यक एक नाम सुमिरतसदा महा पाप परलै गह्यो ३ दोहा ॥ तुलसी रघुवर नामको रीझि भजो कै खीज। उलटा सुलटा जामिहै परे खेत में बीज ॥

बोलेकृष्णदेवयाकोसुनोसबभेव ऐपै नीकेमानिलेवो बातदुरीसमझाइये । भागवतसंतरसवंतकोऊजेंयेनाहिं ऋषिनसमूहभूमिचहूंदिशिछाइये ॥ जोपैकहौंभक्तिनाहीं नाहींकैसेकहौंगहैं गासएकऔरकुलजातिसोवहाइये । दासनिकोदासअभिमानकीनवामकहूं पूरणकीआसतोपै ऐसोलैजिमाइये ७३ ऐसोहरिदासपुरआसपासदीखे नाहिं वाल्मिनकोऊलोकलोकनिमेपाइये । तेरेईनगर मांझनिशिदिनभोरसांझ आवैजाइऐपैकाहूवातनलखा इये ॥ सुनिसवशोचपरेभावअचरजभरे हरेमनैनअजू

वेगिहीजताइये । कहानामकहांठामजहांहमजाइदेखें लेखैंकरिभागधाइपाइलपटाइये ७४ जितमेरेसाधुकभू चहूँनप्रकाशभयो करौंजोप्रकाशमानैंमहादुखदाइये । मो कोपरयोशोचयज्ञपूरणकीन्होचहिये लियेवांकोनामजिनि ग्रामतजिजाइये ॥ ऐसेतुमकहौजामेंरहौन्यारेप्यारेसदा हमहींलिवाइलावैंनीकेकैजिमाइये । जातोबालमीकिवरव ड़ोअवलीकसाधुकियोअपराधहमदियोजोवताइये ७५ ॥

बातबिन ॥ सवैया ॥ नखबिन कटादेखे योगी कनफटा देखे शीश भारीजटादेखे छारलायेतनमें । मौनी अनबोल देखे जैनी शिरछोल देखे करत कलोल देखे घनखंडी वन में ॥ गुणी अरु क्रूरदेखे कायर औ शूरदेखे माया के अपूरदेखे पूरिरहे धनमें । आदि अंत सुखी देखे जनमके दुखी देखे ऐसे नहींदेखे जिन्हें लोभ नाहिं मनमें १ जातो बालमीकि घर ॥ भागवते ॥ नमेप्रियश्चतुर्वे दीमद्भक्तःश्वपचःप्रियः ॥तस्मैदेयंततोग्राह्यसचपूज्योयथाह्यहम् २ अवलीक ॥ दोहा ॥ पेट कपट जिह्वा कपट नैना कपट निराट ॥ तुलसी हरि कैसे मिलैं घटमें औघट घाट ३ अहमद या मन सदन में हरि आवें किहि वाट ॥ विकट जुरें जौलौं निपट खुलैन कपट कपाट ४ भक्त्याहमेकयाग्राह्यः श्रद्धयात्माप्रियःसताम् ॥ भ क्तिःपुनातिमन्निष्ठाश्वपाकानपिसम्भवात् ५ ॥

अर्जुनऔभीमसेनचलेईनिमंत्रणको अंतरउघारिकै हीभक्तिभावदूरि है । पहुँचेभवनजाइचहुँदिशिफिरिआइ परेभूमिभूमिघरदेख्योछविपूरिहै ॥ आयेनृपराजनिकोदे खितेअंकाजानिकोलाजनिसोंकांपिकांपिभयोमनचूरिहै । पावनकोधारियेजूजूंठनिकोडारियेजू पापग्रहटारियेजूकी जेभागभूरिहै ७६ जूंठनिलैडारौंसदाद्वारकोबुहारौंनहीं

औरकोनिहारौंअजूयहीसांचोपनहै। कहौकहाजैवोकृपा
करैजिमाओहमजानिगयेरीतिभक्तिभावतुमतनहैं॥ तब
तोलजानोहियकृष्णपैरिसानोनृप चाहौंसोईठानोगेरेसंग
कोऊजनहै। भोगहीपधारौअबयहीउरधारौऔरभूलिजनवि
चारौकहीभलोजोपैमनहै ७७ कहीनवरीतिसुनिधर्मपुत्र
प्रीतिभईकरीलैरसोईकृष्णद्रौपदीसिखाईहै। जेतिकप्रका
रसवव्यंजनसुधारिकरो आजुतेरेहाथनिकीहोतिसफलाई
है॥ लायेजालियाइकहैनाहिरजिमाइदेवोकहीप्रभुआप
लावोअंकभरिभाईहै। आनिकेबैठायेपाकशालामेंरसा
लग्रासलेतबाज्योशंखहरिदंडकीलगाईहै ७८॥

पादग्रहटारिये॥प्रथमे॥ येषांसंस्मरणात्पुंसांसद्यःशुद्ध्यन्तिवै
गृहाः॥किंपुनर्दर्शनस्पर्शपादशौचासनादिभिः १ साधुजगमें तीरथ
हैं जा घरमें आवैं सब तीर्थहि आवैं २सफलाईहै॥ एकादशेमद्भक्त
पूजाभ्यधिका ३ कृष्णद्रौपदीसिखाई॥ नैवेद्यंपुरतोन्यस्तंचक्षुषा
गृह्यतेमया॥ रसंचदासजिह्वायामश्नामिकमलोद्भव ४ नहप्रापे
च्चभक्तुनित्यंभगवतोइया॥ भगवत्युत्तमश्लोके भक्तिर्भवतिनैष्ठि
की ५ अंकभरि भक्तिसोनातो दुनिया कोमिलाप छोटोतुच्छजानि
ये व्याधि उत्पत्ति करै याते पारहरिये ६॥

सीतभीतप्रतिबच्योंनबाज्योकछुलाज्योबड़ाभक्तिकोप्र
भावनहिंजानतयोंजानिये। बोल्योअकुलाइजाइपूंछोआ
जूद्रौपदीको मेरोदोपनाहींयहआपमनआनिये॥ मानि
सांचिबातजातिबुद्धिआईदेखि याहितबहीमिलाइमेरीचा
तुरीविहानिये। पूंछेतेकहीहैबाल्मीकमेंमिलायेपातेआ
दिप्रभुपावोपाऊंस्वादउनमानिये ७९॥

सीतभीतमानि॥ श्लोक॥ मासेमासेकृते नादे कृष्णनाडिन

पृष्ठके ॥ प्रोक्तोभक्तिप्रतापःकिंसिक्थे सिक्थे न नादितः १ जाति बुद्धि आई ॥ पाद्मे ॥ अर्चावतारोपादानेवैष्णवोत्पत्त्यचिन्तने ॥ मातृयोनिपरीक्षायां तुल्यमाहुर्मनीषिणः ॥ २ ॥ उनमानिये ॥ ऊंचनीचमानेनहिंकोइ । हरिकोभजैसोहरिकोहोइ ॥ ३ ॥आशंका इकउपजी मनमें । अर्जुनकहेउकृष्णसों क्षनमें ॥ कोटिनयज्ञब्राह्मणजेंये पूरेउनहीं सकानहेत।जैसे यज्ञहे इ प्रभुपूरण सोइकृपाकरि कांजेनेत ॥ ४ ॥ कहेंश्रीकृष्ण सुनोहोपाण्डव कोउनसंत तिहारे वारातांजैये जग पूरोहोतो वाजेघंटा देवद्वार ॥प्रभुहमऊंचऊंचकुल पूजे हमजान्यो यह निर्मल भाइ। इनहूंसों कोऊ निर्मलहैहै तौ हम भूले देहु बताइ॥ वालमीकहे जातिसरगरो जाके राजा आयेधाइ॥ याजैयेजग पूरोह्वैहै मनसापूरणकार्य सँवारि । अर्जुन भीम नकुल सहदेवा राजासहितसुपहुंचेजाइ । करिदंडवत चरणगहि लीन्हें वाल्मीक के लागेपाइ ॥ तुमतो ऊंचऊंचकुल जनमे हमतो नीच महाकुल माहिं । ऊंचनीचकी शंकाआवे तातेतिहरे आवे नाहिं७॥ तुमतौ या जग सकल शिरोमणि तुम सम तूल और नाहिं कोइ। कृपाकरो अरु भवन पधारो तुम्हें चले यज्ञ पूरण होइ ॥ ८ ॥ जब वाल्मीक राजाके आयो प्रेमप्रीति सों लियो अहार। जितनेग्रास जेंवतेलीने शंखजु वाज्योतितनीवार ॥ ६ ॥ भूधर कहं हाथसों भाजों खंडखंड करिहौं चकचूर। हमरो साधु जेंवतेग्रासजुकणिक णिकाहेनवाज्योकूर॥ १०॥देवदेव मोहिं दोष न दीजै दोषजुकोइं द्रौपदीमाहिं । ऊंच नीचकी शंकाआई याते कणिकणि वाज्यो नाहिं ॥ ११ ॥ परख्यासाधु पारखा आई जगमें न्योति जिमायो सोइ। जाजेयें जग पूरण हूवो नाम देव कहैं शिरोमणि सोइ ॥ १२

टीकारुक्मांगदराजाकी ॥ रुक्मांगदबागशुभगंधफलपागिरह्योकरिअनुरागदेववधूलेनआवहीं।रहिगईएक कांटाचुभ्योपगवैगनको सुनिनृपमालीपासआयोसुखपावहीं ॥ कहोकोउपाइस्वर्गलोककोपठाइदीजैकरैएकादशी

जलधारैकरजावहीं । व्रतकोतौनामयहग्रामकोऊजानेना। हिंकीनोहींअजानकालिहलावोगुनगावहीं ८० फेरीनृप डोंड़ीसुनिवनिककीलौंड़ीभूखीरहीहींकनौड़ी निशिजागी उतमारिये।राजाढिगआइकरिदियोव्रतदानभइतियायों उड़ानिनिजलोककोपधारिये ॥ महिमाअपारदेखिभूपने विचारियाकोकोऊअन्नखाइताकोबांधिमारिडारिये । या हीकेप्रभावभावभक्ति विसतारभयोनयोचोजासुनौ सबपु रीलैउधारिये ८१ एकादशीव्रतकीसचाईलैदिखाई राजा सुताकीनिकाईसुनौनीकेचितलायकै। पिताघरआयोपति भूखनैसतायोआति गांगैतियापासनहींदियोयहभाइकै ॥ आजहरिवासरसोत सरणपूजेकोऊ डरकहांमीचको यों मानीसुखपाइकै । तजेउनप्राणपायेवेगिभगवानवधूहिये सरसानभईकह्योपनगाइकै ८२ ॥

याहीके प्रभाव । ब्रह्मवैवर्ते ॥ सर्वपापप्रशमनं पुण्यमात्यन्तिकंयया ॥ गोविन्दस्मरणंनृणां यदेकादश्यपारणम् ॥ १ ॥ सबही को कर्त्तव्यहै ॥ नीतौ ॥ कष्टाधिकष्टंसततंप्रवासी ततोधिकष्टं परगेह वासी ॥ ततोधिकष्टंकृपणस्यसेवा ततोधिकष्टंधनहीनसेवा २ ॥ अपनकोसेवा ते भूखी रही एकादशीके माहात्म्य में इतिहासकी कथा है एक राजाकी स्त्री देखिकै मगनभये पूछी महाराज आप कैसे मगन भये तव कही एकादशी के प्रताप सों राज्य पायो याते मगनभये ॥ २ ॥ नृगराजा शिकार को गये देवलऋषि सों पूछी भद्रश्रवाखण्ड अगस्त्यजी गये हैं ३ ॥

टीका समुदायको ॥ सुनौहरिचंद्रकथाव्यथाविनद्रव्य दियो तथानहींराखीबेंचिसुततियातनहै । सुरथसुधन्वा जूसोंद्रोपकेकरतमरे शंखऔलिखित विप्रभयोमेलोमन

है ॥ इंद्रऔअगिनिगये शिविपैपरीक्षालैन काटिदियोमां सरीफिसांचोजान्योपनहै । भरतदधीच आदिभागवतवी चगायेमननिमुहाये जिनादियोतनधनहै ८३ टीका विंध्या वलीकी॥ विंध्यावलीतियासीन देखीकहूंतिआनैन बांध्यो प्रभुपियादेखिकियोमनचौगुनो । करिअभिमानदान देन वैठ्योतुमहींको कियोअपमानमैंतोमान्योसुखसौगुनो ॥ त्रिभुवनछीनिलियेदियेबैरीदेवतानि प्राणमात्ररहेहरिआ न्योनहिंऔगुनो । ऐसीभक्तिहोइजोपैजागोरहौसोइअहो रहेभवसांझऐपैलागेनहींभौगुनो ८४ टीकामोरध्वजरा जाजकी ॥ अर्जुनकेगर्वभयो कृष्णप्रभुजानिलयोदयो रसभारीयाहिलोगयोमिटाइये । मेरोएकभक्तआइतोकोलै दिखाऊंनाहिं भयेविप्रवृद्धसंगवालचलिजाइये ॥ पहुंच तभाष्योजाइमोरध्वजराजाकहां वेगिसुधि देवोकाहुवात योंजनाइये । सेवाप्रभुकरौनेकरहौपावधरौजाइकहौ तुम वैठोकहीआगिसीलगाइये ८५ ॥

दियो तनधन है ॥ भागवते ॥ जहौयुवैत्रमलत्रदुत्तमश्लोक लालसः १ करि अभिमान ॥ दोहा ॥ नारी काहू रंक की अपनी कहै न कोइ ॥ हरिनारी अपनी कहे क्यों न फजीहत होइ २ ॥ नहींभौगुनो ॥ साधूजन जगमें रहैं ज्यों कमला जलमाहिं । सदा सर्वदा सँग रहे जलको परसत नाहिं ॥ गर्वभयो ॥ भागवते ॥ तपो विद्याचविप्राणां निःश्रेयसकरेउभे ॥ तएवदुर्विनीतस्य कल्पेतेक र्तुरन्यथा ४ सेनयोरुभयोर्मध्ये रथं स्थापय मेऽच्युत ५ ॥ दोहा । तिमिरगयो रवि देखिकै कुमतिगई गुरुज्ञान ॥ सुमतिगई परलोभ ते भक्तिगई अभिमान ६ ॥

चलेअतुलाइपाइँगहिअटकाइजाइ नृपकोसुनाईतत

कालदौरेआये हैं । बड़ीकृपाकरीअ।जुफरीवेलिचाहमेरी निपटनवेलिफलपायोयातेपाये हैं॥ दीजैअज्ञामोहिसोइ कीजैसुखलीजैवहीपीजैं बानीरसमेरे नैनलैसिराये हैं। सुनिक्रोधगयोमोदभयो सोपरिक्षाहियेलिये चितचाव ऐसे वचनसुनाये हैं ८६ देवेकीप्रतिज्ञाकरौकरीजूप्रतिज्ञाहम जाहीभांतिसुखतुम्हैंसोईमोकोभाई है। मिल्योमगसिंहयह बालककोखायेजातकहीखावो मोहिं नहींयहीसुखदाईहै॥ काहूभांतिछांड़ौनृप आधोजोशरीरआवे तौहीयाहितजौ कहिबातमोजनाईहै । बोलीउठितियाअरधंगीमोहिंजाय देवोपुत्रकहैमोकोलेवो औरसुधिआईहै८७ सुनौ एकबात सुततियालैकरौतगात चीरैधीरैभीरैनाहिंपीछेउनभाखिये । कीनोंवाहीभांति अहोनासालगिआयोजब ढरेउदृग नीरभीरवाकरनचाखिये ॥ चलेअनखाइगहिपाइँसोसुनाये वैननैनजलआयोअंगकामकिहिनाखिये । सुनिभरि आयो हियोनिजतनश्यामकियो दियोसुखरूपठ्यथागई अभिलाखिये ८९ ॥

कीन्हों वाही भांति ॥ दोहा ॥ कांच कथीर अधीर नर करो न उपजे प्रेम ॥ ऽरमा कसनी साधु सहैं कै हीरा कै हेम १ ॥ कवित्त॥ अगिनि कनक जारे चन्दन खंडित आरे शिलाघसे शीतल तो बासना घटातहै। क्षीरमथे माखन वटारि आवे येदिलहै मुकुर मलिन माजें मूरति दिखात है ॥ तोरेहूं सरस अरु मोरेहू सरस रस छीलें छाटैं काटैं ओटैं अधिक मिठातहै। रचिवेकी कहा कहौं विरचैं सहस गुनो सजन सनेह कहूं बातनि सिटात है १ सुनाये बैन ॥ नाटके ॥ शृङ्गाल्येपापोःशिरःप्रतिपदं शृङ्गालयसौवाजिनं नीत्वाचर्मधनुश्चयानिपुरतःसंग्रामभूमावपि ॥ सूतंचौर्य्यपराक्रि

यश्चशपथंजानातिनायंकरो दानानुद्यमतांनिरीक्ष्यविधिनाशोचाधिकारीकृतः १ ॥

मोपैतौनदियोजाइनिपटरिझाइलियो तऊरीझिदिये विना मेरेहियेशालहै । मांगौवरकोटिचोट व्‌लोनहूकत है सूकतहैमुखसुधिआयेवहांहालहै ॥ वोल्योभक्तराजतुम वड़ेमहाराजकोऊथोरोईकरतकाजमानोंकृतजालहै । एक मोकोदीजैदावदीयोजुवखानोवेगि साधुपैपरिवाजिनिक रौकलिकालहै ६० ॥

कलिकालहै ॥ दोहा ॥ चारिसवेरी चारि अघेरी इतनी दे गोपाला ॥ इतनी मेंते एकघटै तौ यद्दले अपनी माला २ जब अर्जुन को गर्वगयो तबवोले ॥ पद ॥ कहौं कहांलौं कृपा तिहारी । कुलकलंक सबमेटि हमारे किये जगत यशपावनकारी ॥ द्विजकानीन हमारो आजा गोलक पिता वंशकोगारी । हम तौ कुंड सबै जग जानैं ताहूमें औरैगतिन्यारी ॥ महाकष्टकरि व्याहजुकीनों ह्वै गइ तियापंचभर्तारी । बड़े व्यसन दूषण युत राजा हमते अधिक जु अघजुवारी ॥ याकुकर्मकी अवधि कहांलौं जोतियराज सभामें हारी । हते पितामह बंधु विप्र गुरुलोभी नीचस्वारथीभारी ॥ समझत नहीं कौनविधिरीझे हम तौ ऐसे अधम विकारी । अति आतुरह्वैरक्षाकीनी असन वसनकी सबै सँभारी ॥ यह तौ साधन को फलनाहीं वारवार हम यहै विचारी । वीरभद्रकेवल कृपाते सुयिगरतिगई सो सबै सुधारी ३ ॥

टीका अलरककी ॥ अलरककीरतिमैंराच्योनितसांचोहिये कियेउपदेशहूनछूटैविषैवासना । मातामंदालसाकीवड़ीयेप्रतिज्ञासुनौ आवैजोउदरमांझ फेरिगर्भआसना ॥ पतिकोनिहोरोताते रह्योछोटैकोरोताकोलैगयेनिकासिमिलि काशीनृपशासना । मुद्रिकाउघारिऔनिहारि

दत्तात्रेयजूको भयेभवभारकरीप्रभुकीउपासना ९१ मूल॥ तिनचरणधूरिमोभूरि शिरजेजेहरिमायातरे ॥ रिभुइक्ष्वाकुअरुऐलगाधिरयगयशतधन्वा। आमूरतिरँतिदेवउतंकभुरिदेवलमन्वा॥ नहुषययातिदिलीपपूरुयदुगुहमांधाता। पिप्पलनिमिभरद्वाजदक्षशरभंगसंघाता॥ संजयसमीकउत्तानपदयाज्ञवल्क्ययशजगभरे। तिनचरणधूरिमोभूरिशिरजेजेहरिमायातरे१२टीकारंतिदेवकी॥ अहोरंतिदेवनृपसंतदुसकंतवंशअतिही प्रशंससोअकाशवृत्तिलई है। भूखेकोनदेखिसकैआमैसोउठाइदेत नेतनहींकरैभूखे देहक्षीणभईहै॥ चालीसऔआठदिनपाछैंजलअन्नआयो दियोविप्रशूद्रनीचश्वानयहनईहै। हरिहीनिहारेउनमांझतबआयेप्रभुभायेजगदुखजितेभोगोंभक्तिलईहै ९२ ॥

मुद्रिकानि०॥मंदालसावाक्यम्॥संगः सर्वात्मनात्याज्यो यदित्यक्तुंनशक्यते॥ सद्भिरेवप्रकर्त्तव्यःसत्सङ्गोभवभेषजम्१ हरिहीनिहारे॥ गीतायां॥ विद्याविनयसम्पन्नेब्राह्मणेगविहस्तिनि॥ शुनिचैवश्वपाकेच पण्डिताःसमदर्शिनः॥ सवैया॥ अहोसोरहहजार में लाखकरोरमें एकघटै टिकैनौहीसही। इहां ऐसेही दृश्यप्रपंचकेमांहिं गहैअविवेकरहै सुवही ॥ पुनिनोनमें एकमिलाइलिखे होइऔरकीओरमुजाइचही। यहीब्रह्मसवैसुअबोधाहिपाइ भयो भवसोधकबोध यही ३ दुर्लभोवैष्णवोनारीदुर्लभोविप्रवैष्णवः॥ दुर्लभोवैष्णवोराजाअतिदुर्लभदुर्लभः ४ ॥

राजागुहकीटीका॥ भिल्लनिकोराजागुहरामअभिरामप्रीति भयोवनवासमिल्योमारगमेंआइकै। करौयहराजजूविराजिगुखदीजेमोको बोलेचैनसाजितज्योआज्ञापितु

---

१ भूरिषेण नामक भक्त॥

पाइके ॥ दारुणवियोगअकुलाइदृगअश्रुपात पातेलोहू जाततवसकेकौनगाइकै । रहेनैनमूंदिरघुनाथविनदेखैकहाअइ। प्रेमरीतिमेरेहियेरहीछाइकै ९३ ॥

भयो वनवास ॥ रामचन्द्रिका॥ पढ़ेविरंचि ५दमौनजीवसोंन छंडिरे । कुवेर वेरके कही न यक्षभीर मंडिरे ॥ दिनेश दूरिजाइ वैठि नारदादि संगहीं । न वोलचंदमंदवुद्धि इंद्रकी सभानहीं १ ॥ दोहा ॥ नाममंथरा मंद मति चेरि केकयीकेरि ॥ अयशपिटारी ताहिकरि गईगिरा मतिफेरि ॥ २ ॥ इन्द्रके गुरूके देवर ॥ कुंडलिया ॥ पुत्रप्राण सवते वड़े चारोंयुग परमान । तेराजा दोऊ तजे वचन न दीनेजान ॥ वचन न दीनेजान वड़ेकी यहै वड़ाई। वचन रहेतो कार्य और सर्वसकिनजाई ॥ कहि गिरिधर कविराय भये दशरथ नृप ऐसे । प्राणपुत्र परिहरे वचन परिहरे न तैसे३ ॥ रही न रानी केकयी अमर भई यहवात । काहू पूरव योगते वन पठये जगतात ॥ वनपठये जगतात पिता परलोक सिधारे । जिहि हित सुतके कार्य फेरि नहिं वदन निहारे ॥ कहि गिरिधर कविराय लोकमें चली कहानी । अपकीरति रहिगई केकयी रही न रानी ३॥ सवैया ॥ अहोपून कहां चलिहौ अवहीं तुमसांची कहौ किन मो सोलला । सुनिनैननये जलसों भरिकै जस वोझपरे नइजात पला ॥ सियके मुखकीछवि यों न घटै मनोद्वैजसोंलै द्विजराज कला । सुधिराखनहेत सियावरची पलट्यो कनकी अँगुरी कोछला ॥ ४ ॥ जानकी तिहारे संग जानत न एकौ दुख पाके लाडिवेटा तुमवनहू में सहियो । पायँनको चलिवो है जौलों पांय चलो जाइ आगे जनिचलौ याहि संगले निवहियो ॥ लक्ष्मणको मनरूखो भूखो जनिदेखि सको आवै कोऊ उतते संदेशोताहि कहियो । उतरत जाहु काहू ग्रामन के वीच पूत मेरे वनवासी मेरी सुधिलेत रहियो ५ ॥ हनुमन्नाटके ॥ सद्यःपुरःपरिसरे शिरीषमृद्वी सीताजवात्त्रिचतुराणिपदानिगत्वा ॥ गन्तव्यम

स्तिकियदित्यसकृद्ब्रुवाणा रामःश्रुणःकृतवतीप्रथमाऽ तारम्॥ १॥ पुरते निकसी रघुवीरवधू करिसाहस धीर दं डगद्वै। भरिभाल कनी निकसीश्रमकी पटसूकि ये अधरामृतद्वै॥ पुनि पूछत यों चलनों व कितो कहे पर्णकुटी करिहौं कितवै। तुलसी सियकी लखि आतुरता पियके युगनैनचले जलच्वै॥ २॥ भोरहीके भूखे हैंहैं प्यासमुख सूखे हैंहैं चलैंपग दूखे हैंहैं फिरैं मगरातके। रवि की किरणिलागे लालकुम्हिलाने हैंहैं झार लपटाने झँगा फाटहैहैं गात के॥ अब तो भई है सांझ वैहैं बनमाझ हा रही क्यों न बांझ हिये फटे क्यों न मात के। मेरेरी वेछौना गये तजिके घरौना होंगे तरुके तरौना सो घिछौना किये पातक॥ ३॥ मग में परतपग सुंदर भर डग कोमल विमलभूमि छोड़तहैं धनको॥ जिहिठौर कांटेकाठ कांकर परत आइ तिहिठौर धरत आपने चरनको॥ जिते छांह सीरी तिते कीजत हैं प्यारी नीरी जितेघाम तिते कीजे नीरद से तन को। गहे रघुनाथ निजहाथ सों हाथ ऐसे जानकी को लियेसाथ चलेजात धनको॥ ४॥ मुख सूखि गये रसनाधर मंजुल जसे लोचन चारुचिते। करुणानिधि कंत तुरंत कह्यो कि दुरंत महा बन भूरिअवे॥ सरसीरुह लोचन नीर चिते रघुनाथकही सिरसोंजुतवे। अबहीं बनभामिनि पूंछतिहो तजि कोशलराजपुरी दिनद्वै॥ ॥ जासुके नाम अजामिल से खल कोटि नदी भव छंडतकाढ़े। जो सुमिरे गिरिमेरु शिला कन होत अजाखुर वारिध वाढ़े॥ तुलसी जिहिके पद पंकजसों प्रकटी तटनी जुहरैअगगाढ़े। ते प्रभुहैं सरिता तरिबेकहँ मांगत नाव करारिपैठाढ़े २ इहिघाटते थोरिक दूरि अहो कटिलों जलथाह बताइहौजू। दरशेरगधरि तरे तरणी घरणी घर क्यों समुझाइहौं जू॥ परमारिये मोहिं विनापगधोये हौंनाथ न नावचढ़ाइहौंजू। तुलसी अवलम्ब न और कछू लरिका किहिभांति जिवाइहौजू ४ रावरेदोपानै पायनि को पगधूरि को भूरि प्रभावमहा है। पाहनते वलवान न काठकी कोमल है जलखाइरहाहै॥ तुलसी सुनिकेव-

टके बरबैन हँसि प्रभुजानकी ओर हहाहैं। पावन पांव पखारिकै नाव चढ़ाइहौं आयसु होत कहाहैं ५ प्रभु रुखपाइकै बुलाइबाल घरणिकं बंदिकै चरण चहुं दिशिबैठे घेरिघेरि। छोटोसो कठौता भरिआन्यो पानी गंगाजूको धोइपाइँ पीवतपुनीतबारि फेरिफेरि॥ तुलसी सराहैं ताको भागसानुराग सुर बरपैं सुमनजयजय कहैं टेरिटेरि। विबुधसनेहसानी बानी सुखदानी सुनि हँसेरामजानकी लषण तनहेरिहेरि ६ लक्ष्मणसों हमसों इकसाथ सिया पुनि साथहि छांड़ि न देहैं। बानरऋक्ष जितेकहि केशव ते सब कंदर खोह समैं हैं॥ छोड़िकै आनि मिल्यो हमसों तिन को यह संग कहा करि एहैं। और सबै घर के बन के कहुकौन के भौन विभीषण जैहैं ७॥

चौदहबरषपाछेआये रघुनाथनाथसाथकेजेभीलकहैं आयेप्रभुदेखिये। बोल्योंअबपाऊंकहांहोतनप्रतीतक्यों हूं प्रीतिकरिमिलेरामकहीमोकोपेखिये॥ परसनिछाने लपटानेसुखसागर समानेप्राणपायेमानो भालभागले खिये। प्रेमकीजुबातक्योंहूंबानीमेंसमातनाहिं अतिअकुलातकहोकैसेकैविशेखिये ९४ मूल॥ निमिनृपतिनवोयोगेश्वरा पादत्राणकीहौंशरण॥ कविहरिकरिभाजनहु भक्तरत्नाकरभारी। अंतरिक्षअरुचमस अनन्यतापधति उधारी॥ प्रबुद्धप्रेमकीराशि भूरिदाआविरहोता। पिप्पलद्रुमलप्रसिद्धभवाम्बुधिपारकेपोता॥ श्रीजयँतीनंदन जगतिके त्रिबिधितापआमैहरण। निमिनृपतिनवे योगेश्वरापादत्राणकीहौंशरण १३ पदपरागकरुणाकरौ जेनिथँतानवधाभगतिके॥ श्रवणपरीक्षितसुमति व्यास सायककहिकीर्तन। सुठिसुमिरणप्रह्लादपृथुपजाकमल।

चेन । वंदनसुफलकसुवन दासदीपत्तिकपीश्वर । सख्य त्वेपारत्थसमर्पनआत्माबलिधर ॥ उपजीवीइनकेनामके एतेत्राताअगतिके । पदपरागकरुणाकरौ जेनिर्थतानव धामगतिके १४ ॥

दोहा ॥ यानपुष्पमय एकलिय चढ़े लषण सिय श्याम ॥ रतस्तुति सब देवमुनि चले अवधपुर राम १ रघुबर आगमसुनि अवध घरघरघुरत निशान ॥ मिले भरतपरिजनप्रजा प्रथमहि गुरु सनमान १ पादत्राणन्हीं शरण ॥ वेदाचार्य्यवाक्यम् ॥ कर्मावलं बकाःकेचित् केचिज्ज्ञानावलम्बकाः ॥ वयन्तु हरिदासाना पादत्रा णावलम्बकाः २ भक्तिके भागवते ॥ श्रीविष्णोःश्रवणेपरीक्षिदभ वद्वैयासकिःकीर्तने प्रह्लादःस्मरणेतदंघ्रिभजने लक्ष्मीःपृथुःपूजने ॥ अक्रूरस्त्वभिवन्दने कपिपतिर्दास्येचसख्येर्जुनः सर्वस्वात्मनिवे दने लिरभूत्कृष्णाप्तिपारपरा ५ ॥

श्रवणरसिककहूंसुनेनपरीक्षितसे पानहूंकरत लागै कोटिगुनीप्यासहै। मुनिमनमाझक्योंहूं आवतनध्यावतहू वहीगर्भमध्य देखिआयोरूपरासहै ॥ कहीशुकदेवजूसोंटे वनेरीलीजैजानिप्राणलागै कथानहींतक्षककात्रासहै । की जियेपरीक्षाउरआनीमतिसानीअहो बानीविरमानीजहां जीवननिरासहै ९५ ॥ शुकदेवकीशंका ॥ गर्भतेनिकसि चलेवनहीं में कीनोंवास व्याससे पिताको नहीं उत्तरहू दियोहै । दशमश्लोकसुनिगुणमतिहरिगई नईभईरीति पढ़िभागवतलियोहै ॥ रूपगुणभरसह्योजातकैसेकरिआ ये सभानृपढरिभीज्योप्रेमरसहियोहै । पूर्वेभक्तभूपठौर ठौरमैंभौरजाइ गाइउठैंजबैमानोंरंगभरिकियोहै ९६ ॥

प्यासहे ॥ पारनो ॥ प्रवराश्चातकोहंसः शुकोमीनादयस्तथा ॥

अत्रराकृभूरण्डवृषोद्गाद्याःप्रकीर्त्तिताः १॥ छप्पै ॥ अन्य मनाद-गलोलपदछेदकअसमंजस। स्थित अधीर श्रुति मंद पलकभपके निद्रावस ॥ प्रश्न प्रसंगति मिले मधुर अनुमोदन अक्रिय। वाद रसिकअनभिज्ञ अलापत जौन प्रियाप्रिय ॥ रसरासेक अनन्य विशालमति वातकहत अनुभौसुकृत। दश दोषरहित श्रोतामिलै उज्ज्वल रसवरषै अमृत २ दशमश्लोक ॥ दशमे ॥ अहोवकीयं स्तनकालकूटं जिघांसयापाययदप्यसाध्वी ॥ लेभेगतिंधात्र्युचितां ततोऽन्यंकंवादयालुंशरणंव्रजेम ३ परिनिष्ठितोपिनैर्गुण्येउत्तमश्लोकलीलया ॥ गृहीतचेताराजर्षे आख्यानंयदधीतवान् ४ परैभवर जाइ ॥ कवित्त ॥ सूझत न वारापार लिख्यो प्रेमहै अपार मिलन अथाह देखि धीरज हिरात है। पातीको अधारपाइ पैरत सनेह सिंधु विरह लहरि मांझ हियरा हिरातहै ॥ नोल गुनबंधी बूढ़ि ढूँढ़त रतन ओंधी मूरति मरजियाकी नेक न थिरात है। एक वरबांचि पुनि फेरि खोलि फेरि वांचि वांचि वांचि प्राणप्यारी बूड़ि बूड़ि जात है. ५ ॥

प्रहलादकीटीका॥सुमिरणसांचोकियोलियोदेखिसव हीमें एकभगवानकैसेकाटैतरवारहै। काटिवोखड्गजल वोरिवोसकतिजाकी ताहीकोनिहारैचहुंओरसोअपारहै॥ पूछतेवतायोखंभतहांहींदिखायोरूप प्रकटअनूपभक्तवा णीहींसोप्यारहै। दुष्टडाख्योमारिगेरेआंतैंलईडारितऊको धको न पारकहाकियोयोंविचारहै ९७॥

पूँछेत ॥ श्लोक ॥ तत्साधुमन्येसुरवर्य्यदेहिनां सदासमुद्विग्नधियामसद्ग्रहात् ॥ हित्वात्मपातंगृहमन्धकूपं वनंगतोयद्धरिमाश्रयेत १ श्रवणकीर्त्तनंविष्णोःस्मरणंपादसेवनम् ॥ अर्चनंवन्दनंदास्यं सख्यमात्मनिवेदनम् २॥ कवित्त ॥ पाशनिसों बांधिकै अगाध जल वोरिराखे तीर तरवारनिसों मारि मारि हारे हैं। गिरिते गिराय दिये डरपे न नेकु तव मतवारे पर्वत से हाथीतर डारे हैं ॥ फेरे

शिर आराले अगिनि मांझ जारे पुनि पूँछि मीडिगातनु लगाये नाग कारे हैं। भावते के ेम में मगन कछु जाने नाहिं ऐसे प्रह- लाद पूरे प्रेम मतवारे हैं ३ व्याल कराल महा विषपावक मत्त गयन्दनिके रदतोरे। ताते निशंक चले डरपे नहीं किंकरते करनी मुख मे रे॥ नेक विषाद नहीं प्रहलादहि कारण के हरि केवल होरे। कौनकीत्रास सहै तुलसी जोपै राखिहै रामतौ मारिहैकोरे४॥ छप्पै॥ गगन गूंज गुंजरत शोर दशहूंदिशि पूरण। हरत धरति कलमलत शेष शंकर विषचूरण॥ उसरसंक सकपकत धीर धक पकत धमक सुनि। भगत भीर भहराइ खंभ फहर फटतपुनि॥ अति विकट दन्त कट कट करत चट पटाइ नख करत तपु।लफ लफतजीभ दुर्ज्जन दलन जय जय श्रीनरसिंह वपु ५ अति भ- क्तिके काज सुधारनको अद्भुत अवतार मुरारिधरे ६॥

डरेशिवआदिकहुंदेख्योनहींक्रोधऐसो आवत न ढिग कोऊलक्ष्मीहूंत्रासहै। तबतौपठायोप्रहलाद अहलाद महा अहाभक्तिभावपग्योआयोप्रभुपासहै॥ गोदमेंउठा इलियोशीशपरहाथदियो हियोहुलशायोकहीबाणीविनै राशहै। आईजगदयालगिपरयोश्रीनृसिंहजूकोअस्यो योंछुटावोकरोमायाज्ञाननाशहै ९८॥

वाणी विनैराशिहै॥ पाद्मे॥ कुलंपवित्रंजननीकृतार्थावसुंध रासावसतीचधन्या॥ स्वर्गेस्थितास्तत्पितरोपिधन्या येषांकुले वै- ष्णवनामधेयम् १॥ छप्पय॥ मनोरथ मनके भावअसत कहते अ- धिकारी। सो हम निपटअसत्य न आतहिदेखि सुखारी॥ सोऊ झूठ जो होय तऊ नहिं काम सतावै। जो मनके अनुभाव जासु तिहि जगन डरावै॥ सुपनोहू है नहिं साँच पुन जगतमिटे पहि- चानिये। इतयोंहीं विषय निवेशता गये साँचसो जानिये २॥ श्लोक॥ विषयान् ध्यायतश्चित्तं विषयेषुविषज्जते॥ मामनुस्मर तश्चित्तं मय्येवप्रविलीयते ३ कवित्त॥ उघारि अन्हाइ लालधोती

झमकाय पट पीताम्बर छोरन झुराई झमकाइके। मेलिके अतर वह चतुर किशोर वर बांध्यो केश जूरा कर चूरा चमकाइ के॥ पहिरि खराऊं मणि रचित खचित तान थानमुलतान पान खात उठ्यो गाइके। ठाढ़ोसिंह पौरिकर चन्दनकी खौरि चितै कर्यो मनकोर तन गिरयो भौंरखाइके ४॥

अक्रूरकीटीका॥ चलेअक्रूरमधुपुरीतेविशूरनयनचलीजलधारा कबदेखौंछविपूरिकी। सगुनमनावै एकोखिरोईभावै देहसुधिविसरावै लोट्योलखिपगधूरिको॥ वंदनप्रवीनचाह निपटनवीनभईदईशुकदेव कहिजीवनकीमूरिको। मिलेरामकृष्णझिलेपाइकैमनोरथको हिलेदृगरूपकिये चूरिचूरिचूरिको ९९॥ टीकाबलिजूकी॥ दियोसरवसुकरि अतिअनुरागबलि पागिगयोहियो प्रहलादसुधिआईहै। गुरुभरमावैं नीतिकहिसमुझावैंबोलउरभेंनआवैंकितीभीतउपजाईहै॥ कह्योजोईकियोसांचोभावपनालियोअहो दियोडरहरिहूनेमातिनचलाईहै। रीझेप्रभुरहेद्वारभयेवशहारिमानी श्रीशुकवखानी प्रीतिरीतिसोईगाई है १०० मूल॥ श्रीहरिप्रसादरसस्वादकेभक्तइतेपरमानहैं॥ शङ्करशुकसनकादि कपिलनारदहनुमाना। विष्वक्सेनप्रहलाद बलिरुभीष्मजगजाना॥ अर्जुनध्रुवअँबरीषविभीषणमहिमाभारी। अनुरागीअक्रूरसदाउद्धवअधिकारी॥ भगवन्तभक्तअवशिष्टकी कीरति कहतसुजानहैं। श्रीहरिप्रसादरसस्वादके भक्तइतेपरमानहैं १५॥

चूरिचूरि चूरिको॥ कवित्त॥ बांधिके सुकेसी चीरा कलँगी जटित हीरा तुर्राढिग गोचपेंच ललितही सँवारयो है। झुंगा एक

लमकास कञ्चन नङ्गग होन एक छोर पटकासो छेल तासों ढा-रयोहै ॥ भुजभुजी कञ्जमध्य हीरानग मोतीजरे शोभित गल माल आनु लाल मे निवारयो है। पहुँचनिमें पहुँची सुन्दर रतन जरी अमैटारे नैन अंमिटि सनडारयो है १ कह्यो जोई ॥ इलोक॥ अनन्तुष्टाद्विजानष्टाः सन्तुष्टाश्चमहीपतिः । सलज्जागणिकानष्टा निर्लज्जाचकुलाङ्गना २ ॥ हरिद्वसाद ॥ पाद्मे ॥ वलिर्विभीषणो भीष्मः कपिलोनारदोऽर्जुनः। प्रह्लादोजनकोव्यासो ह्यम्बरीषःपृथुस्तथा ३ विष्वक्सेनोध्रुवोक्रूरस्सनकाद्याःशुकादयः ॥ वासुदेवप्र-सादाश्चसर्वेग्रहन्तुवैष्णवाः ४ ॥

जिनध्यानचतुर्भुजचितधस्यो तिन्हैंशरणहौंअनुसरौ ॥ पुलहपुलस्त्यअगस्त्यच्यमनवशिष्ठसौभरऋषि । कर्द्दम अत्रिऋचीकगर्गगौतमहुव्यासशिषि ॥ लोमशभृगुदाल भ्यअंगिराश्टङ्गिप्रकाशी। मांडव्यविश्वामित्र दुर्वासासहस अठाशी॥याज्ञवल्कियजमदग्नीमाण्डरशककश्यपप्रवतपाराशरौ॥ जिनध्यानचतुर्भुजचितधस्यो तिन्हैंशरणहौंअनुसरौ ६८

चतुर्भुज ॥ छप्पै ॥ कीट मुकुट अरु तिलक भाल राजत छवि छाजत। पीतवसन तनश्याम कामकोटिक लखि लाजत ॥ कंठ त्रिवलि श्रीवत्सलुभग शोभित मनमोहत। वैजंती वनमाल कौन उपमा कवि टोहत ॥ कर शंख चक्र गदापद्मधर रूप अमित गुण गरुड़धुज। गोविंद चरण वंदत सदा जय जय जय श्रीच-तुर्भुज १ ॥

साधनसाधिसत्रहपुराणफलरूपीश्रीभागवत ॥ ब्रह्म विष्णुशिवलिंगपद्मस्कंदविस्तारा। वामनमीनवराहअ ग्निअरुकूर्मउदारा ॥ गरुड़नारदीभविष्य ब्रह्मवैवर्तश्र वणशचि। मार्कंडेब्रह्मांडकथानानाउपजैरुचि ॥ इतप र्मधर्मश्रीमुखकथितचतुरश्लोकीनिगमसत। साधनसाधि

सग्रहपुराणफलरूपीश्रीभागवत १७ दशआठस्मृतिजिन उच्चरीतिनपदसरसिजभालमो॥मनुअस्मृतिआत्रेयविष्णु हारीतकयामी । याज्ञवल्क्यअंगिराशनीसंवर्तकनामी ॥ कात्यायनिशंखलिखितगौतमीवाशिष्ठीदाखी । सुरगुरु शातातप पराशरकृतमुनिसाखी ॥ आसापासउदारधीप रलोकलोकसाधननमो ।दशआठस्मृतिजिनउच्चरीतिनप दसरसिजभालमो १८ मूल ॥पावैंभक्तिअनपायनीजेराम सचिवसुमिरणकरैं ॥विजयीसृष्टिजयंत नीतिपरशुचिरवि नीता । राष्ट्रविवर्द्धननिपुणसुराष्ट्रहुपरमपुनीता ॥ सदा अनन्दअशोकधर्मपालकततवेता । मंत्रीवर्य्यसुमंतचतु र्थंगमंत्रीजेता ॥ अतिअनायासरघुपतिप्रसनभवसागरदु स्तरतरैं । पावैंभक्तिअनपायनीजेरामसचिवसुमिरण करैं १९ ॥

फलरूपी श्रीभागवत ॥ मंगल रूप अनूप निगम कल्पद्रुम को फल । श्रीजवकुलनें रहित मधुररस सहित विमल कल ॥ कहत सुनत सुख देत अधिक हरि भक्ति बढ़ावत । सब सारनि को सार व्याससुत शुक सुख गावत ॥ त्यों तिमिर हरणको सूरसम श्रीगुविंद जगजगमगत । पूरण पुराणपति प्रकट नित जय जय जय श्रीभागवत १ प्रथमे ॥ निगमकल्पतरोर्गलितंफलं शुक मुखादमृतद्रवसंयुतम् ॥ पिवतभागवतंरसमालयं मुहुरहोरसिका भुविभावुकाः २ ॥ छप्पै ॥ एकवेद के चारि सहसशाखा विस्ता- री । साठि लाख इतिहास महाभारत कियो भारी ॥ चारिलाख अरु अर्द्ध व्यास वेदांत वखान्यो । अठदश किये पुराण हृदयहरि नाम न जान्यो ॥ बहुकहत पढ़त सीखत सुनत दाह न हिरदय को गयो । ततवेत्ता नारद मिले तब व्यास हृदय शीतल भयो ३ दशहजार ब्रह्मपुराण तेइस हजार विष्णुपुराण चौबीस हजार

शिवपुराण ग्यारह हजार लिङ्गपुराण पचपन हजार पद्मपुराण एकसौ इक्यासी हजार स्कंदपुराण दश हजार वामनपुराण चौदह मीनपुराण चौबीस वाराहपुराण पंद्रह अग्निपुराण सत्रह कूर्म्मपुराण उनईस गरुड़पुराण पचीस नारदपुराण चौदह भविष्यपुराण अठारह ब्रह्मवैवर्त नव मार्कण्डेयपुराण बारह ब्रह्मांडपुराण अठारह हजार श्रीभागवत ॥श्लोक॥ एवंपुराणसंदोहश्चतुर्लक्षमुदाहृतः४ कृष्णतन ॥ छप्पै ॥ प्रथम द्वितिय दोउचरण तृतिय चतुर्थ दोउ ऊरू। पंचम नाभि गंभीर हृदय षष्ठम सुखपूरू ॥ सप्तम अष्टम भुजा नवम कंठवर विराजै। दशम वदन सुखसदन भाल एकादशराजै ॥ द्वादश शिर शोभित सदा मंगलरूपी सुमिरमन। तत वेत्ता तीनहुँलोकमें कीरतिरूपी कृष्ण तन ५ ॥ नवमे ॥ मात्रास्वस्रादुहित्रावा नविविक्तासनोभवेत् ॥बलवानिन्द्रियग्रामोविद्वांसमपिकर्षति ६ तापै संन्यासीको दृष्टांत ॥

तेशुभदृष्टिवृष्टिमोपरकरौ जेसहचररघुवीरके ॥ दिनकरसुतहरिराजबालिवक्रकेशरिऔरस । दधिमुखद्विविदमयंदऋक्षपतिसमकोपौरस ॥ उल्कासुभटसुसेनदरीमुखकुमुदनीलनल। सरभोगवैगवाक्षपनसगँधमादनऋतिवल ॥ पुनिपद्मअठारहयूथपति रामकाजभटभीरके। तेशुभदृष्टिवृष्टिमोपरकरौ जेसहचररघुवीरके २० मूल ॥ ब्रजबड़ेगोपपरजन्यकेसुतनीकेनवनंदहैं ॥ धरानंद ध्रुवनंद तृतिय उपनंद सुनागर। चतुरथ तहँ अभिनंदनंद सुखसिंधुउजागर ॥ सुठिसुनंदपशुपालनिमलनिश्चय अभिनंदन। करमाधरमानंद विदितवल्लभजगवंदन ॥ जहँआसपास वा वगरके विहरतपशुपशुछंदहैं। ब्रजबड़े गोपपरजन्यकेसुतनीकेनवनंदहैं २१ ॥

बालबच्छ ॥ कवित्त ॥ हरागिरि हाल हद मेरुगिरि हाल पुनि

उदयगिरि हाल और रुद्रगिरि हालबी। सपतपतान हाल दशों दिगपाल हाल जलहाल थलहाल उपर उफालबी॥ केशोदास लंकको बिपुल दल बलहाल दशशीश हाल उफ्यो भुजबीश हा-लबी। भुवलोक हाल और ध्रुवलोक हाल एक बालि बलवंत हुत पग नहीं हालबी १ पादरज भागवते॥ तद्भूरिभाग्यमिहजन्मकिमप्यटव्यांयद्गोकुलेपिकतमांघ्रिरजोभिषेकम्॥ यज्जीवितंतुनिखिलंभगवान्मुकुन्दस्त्वद्यापियत्पदरजःश्रुतिमृग्यमेव २ अहोभाग्यमहोभाग्यं नन्दगोपव्रजौकसाम्॥ यन्मित्रंपरमानन्दंपूर्णब्रह्मसनातनम् ३ आसामहोचरणरेणुजुषामहंस्यां वृन्दावनेकिमपिगुल्मलतौषधीनाम्॥ यादुस्त्यजंस्वजनमार्यपथंचहित्वाभेजुर्मुकुंदपदवींश्रुतिभिर्विमृग्याम् ४ यादोहनेवहननेमथनोपलेपप्रेंखेंखनार्भरुदितेक्षणमार्जनादौ॥गायन्तिचैनमनुरक्तधियोश्रुकण्ठ्योधन्याव्रजस्त्रियउरुक्रमचित्तयानाः ५ षष्टिवर्षसहस्राणि मयातप्तंतपःपुरा॥ नन्दगोपव्रजस्त्रीणांपादरेणूपलब्धये ६॥

जेवालवृद्धनरनारिगोपे हौंअरथीउनपादरज॥ नंदगोपउपनंद धराध्रुवमहरयशोदा। कीरतदावृषभानुकुँवरिसहचरिमनमोदा॥ मंगलसुबलसुबाहुभोजअर्जुनश्रीदामा। मंडलग्वालअनेकश्यामसंगीबहुनामा॥ घनघोषनिवासनकीकृपा सुरनरवांछितआदिअज। जेवालवृद्धनरनारिगोप हौंअरथीउनपादरज २२ मूल॥ ब्रजराजसुवनसंगसदनवनअनुगसदातत्परस्हैं॥ रक्तकपत्रक औरपत्रिसबहीमनभावैं। मधुकंठीमधुव्रतरसालबिशालसुहावैं॥ प्रेमकंदमकरंदसदाआनंदचंद्रहासा। यादवकुल रसदानसारदाबुद्धिप्रकासा॥ शुचिसेवा समयबिचारिकै चारुचतुरचितकीलहैं। ब्रजराजसुवनसं

१ गोको उबुकरके पढ़नेमें पद बनता है॥

गसदनवनअनुगसदातत्पररहैं२३मूल ॥ सत्वसतद्वीपमें दासजेतेमेरेशिरताजसम ॥ जंबूऔरपलक्षिशालमलि वहुतराजऋषि । कुशपवित्र पुनिक्रौंचकौनमहिमाजानै लिखि ॥ शाकविपुलविस्तार प्रसिधनामीअतिपुहकर । परवतलोकालोक ओकटापूकंचनधर ॥ हरिभृत्यवसतजे जेजहां तिनसों नितप्रतिकाजमम । सत्वसतद्वीपमेंदास जेतेमेरेशिरताजसम २४ ॥

मनसोदा ॥ कवित्त ॥ कहाइतरानजान अहो आवो कहैं वात सुनेननकंठ सुभगात न समाइगो । थोरे वेरा भोरे भाइ चोरे लेत लकचित्त कुंडल भलकहरि हियराहिराइगो ॥ तुम कान्ह सांवरे पधारि देखो एकवार मेरो गोराकान्ह लखे मनललचाइ गो । ग्रीवकी लटक मुरि भौंहकी मटकवीच वीरावी चटकसें अ- टकि मन जाइगो १ ॥ दोहा ॥ राधा हरिहरि राधिका वनिआये संकेत । दंपति रति विपरीति रस महज लगति सुखलेत २ ॥

महिमध्यद्वीपनवखण्डमें भक्तजितेममभूपभू ॥ इला वर्त्तआधीशसंकर्षणअनुगसदाशिव । रमनकमत्स्यननुदा सहिरण्यकूरमअर्यमइव ॥ कुरुवराहभूभृत्यवरषहरिसिं हप्रह्लादा । किंपुरुषरामकपि भरतनारायनवीनानादा ॥ भद्रासुश्रीवहयभद्रश्रवकेतुकामकमलाअनूप । महिमध्य द्वीपनवखंडमेंभक्तजितेममभूपभूप २५ मूल ॥ श्रीश्वेत द्वीपमेंदासजेश्रवणसुनोतिनकीकथा ॥ श्रीनारायण वदन निरंतरताहीदेखें । पलकपरैंजोवीचकोटियमजातनलेखें ॥ तिनकेदरशनकाजगये जहँवीणाधारी ॥ श्यामदईतहँसैन उलटिअवनहिं अधिकारी ॥ नारायणीमनहास्यानदृढतहँ प्रसंगनाहिंनतथा । श्रीश्वेतद्वीपमेंदासजे श्रवणसुनो

तिनकीकथा २६ ॥ टीका ॥ श्वेतद्वीपवासीसदारूपके उपासी गये नारदविलासी उपदेशआशलागी है। दई प्रभुसैन जिनिआवोइहिऐनदृग देखे सदाचैनमतिगति अनुरागी है ॥ फिरिदुखपाइजाइकहीश्रीवैकुण्ठनाथसाथ लियेचलेलखौं भक्तिअंगपागीहै। देख्योएकसरखगरह्यो ध्यानधरिऋषि पूछैंहरिकह्योकह्योबड़ो वड़भागी है १०१

पलक परै जो वीच ॥ कवित्त ॥ मंजु मोर मुकुट लटकि घुँघु-वारी लटैं झूमिझूमि कुण्डल कपोलनिमें झलकैं। वारिज वदन रस रूपको सदन लखि दमकै रदन भरि भरि छवि छलकैं॥ कानन छुवतकोपे ऐन सैन कोटि मोहे शोभा सर लखिलखि मन मीन ललकैं। देखिवेको श्याम शोभा देतो दृग रोम रोम सो न करो विधि औ अविधि करी पलकैं १ ॥ दोहा॥ बड़ो मन्द अर-विंदसुत जिहि न प्रेम पहिचानि ॥ पियमुख निरखनि दृगनिको पलकरची विच आनि २ ॥

वरषहजारबीतेनहींचितचीते प्यासोईरहत ऐपैपानी नहींपीजिये। पावैजोप्रसादजबजीभसोंसवादलेतलेत न हींऔरयाकीमतिरसभीजिये॥ लीजैबातमानिजलपानक रिडारिदियो चोंचभरिदृगभरबुधिमतिधीजिये । अचरज देखिचषलगैनानिमेषकहूं चहूंदिशिफिरयोअवसेवायाकी कीजिये १०२ चलोआगेदेखोकोऊरहैनपरेखोभावभक्त करिलेखोगयेदीपहरिगाइये। आयो एकजनधायआरती समैबिहायखैंचिलियेप्राणफेरि वधूयाकीआइये ॥ वही इनकहीपतिदेखोनहींमहीपरयोचरयोयाकोजीवतनगिरयो मनभाइये। ऐसेपुत्रआदिआयेसाचेहितमें दिखायेफेरिके जिवायेऋषिगायेचितलाइये १०३ ॥ मूल ॥ येउरगअष्ट

कुलद्वारपतिसावधानहरि धामथति ॥ इलापत्रमुखअनँत अनँत कीरतिविस्तारत । पद्मसंकुपनप्रकटध्यानउरते नहिं टारत ॥ अशुकमलवासुकी अजितअज्ञाअनुवरती । करकोटकतक्षकसुभटसेवाशिरधरती ॥ आगमोउक्तशिव संहिताअगरएकरसभजनरति । येउरगअष्टकुलद्वारपति सावधानहरिधामथति २७ ॥

उरग अष्ट ॥ दोहा ॥ दोइ जीभ तन श्याम हैं वाकचलन विष खानि ॥ तुलसी गुरुके मंत्रपै शीश समर्पत आनि १ अनंत कीरति ॥ कवित्त ॥ दीननिको है दयाल दासनिको रक्षपाल सबको शिरोमणि है सदा अविकार है । धन धनहीन को है गुननि गुनीनको है रूपहै विरूप को अनूप है उदार है ॥ आनंद को कंद भवसिंधु को पगार दुख द्वंदको हरणहार महिमा अपारहै । श्रीगुविंद हरिजूके नामको उचार चारु सारन को सार निरधारको अधार है २ ॥ दोहा ॥ में कालन सों चित्तते मन दीनो इहि भाव ॥ आवा जावा नित्त में तृतो नजरि न आव ३ ॥

चौबीसप्रथमहरिवपुधरे चतुर्व्यूहकलियुगप्रकट ॥ रामाअनुजउदारसुधानिधि अवनिकलपतरु । विष्णुस्वामिवोहित्थसिंधुसंसारपारकरु ॥ मध्वाचारजमेघभक्तिसरऊसरभरिया । निंबादित्यअदित्यकुहरअज्ञानजुहरिया ॥ जगजनमकरमभगवतधरमसंप्रदायथापीअघट । चौबीसप्रथमहरिवपुधरेचतुर्व्यूहकलियुगप्रकट २८ ॥

चौबीस ॥ एकादशे ॥ कृतादिषुप्रजाराजन्कलाविच्छन्तिसंभवम्॥कलौखलुभविष्यन्तिनारायणपरायणाः१॥ गीतायाम्॥ परित्राणायसाधूनांविनाशायचदुष्कृताम्॥ धर्मसंस्थापनार्थायसंभवामियुगेयुगे २ ननुभागवतालोके लोकतत्त्वविचक्षणाः॥ व्रजन्तिसर्वेसंदिष्टाद्वारस्थितेनमहात्मना ३ भगवानेवभूतानांसर्वत्रकृपयाहरिः ॥

रक्षणाय चरेल्लोकान्भक्तरूपेण नारद ४॥ आदिपुराणे॥ भक्तानेव सेवन्तामिरस्ये वचनात्प्रियतम्॥ नाभौ च शंकरो देवः पदे गंधर्वकिन्नराः ५॥दोहा॥ दम्भसहित कलिधर्म लखि छलहित तिति व्योहार॥स्वारथ सहित सनेह सब रुचिरानुचित आचार ६॥ श्लोकः॥ घोरेकलियुगे प्राप्ते सर्वधर्मविवर्जिते। वासुदेवपराभक्तास्ते कृतार्था न संशयः ७ कलियुगप्रकट॥ छप्पै॥ दयास्वर्गउठि गई धर्म धँसिगयो धरणि में। पुण्य गयो पाताल पाप भयो वरण वरणमें॥प्रीति रीति सब गई वैर भयो घर घर भारी। आप आपनी परी जिते जगमें नर नारी॥कविराज कहत सांचो सबै निपट पलटि समयो गयो॥रे नर निरख सुनि कान दे अब प्रकट कलियुग भयो ८॥ दोहा॥ कलियुग काल कराल की वरणि न जाइ अनीति॥ वैर बढ्यो चारयो वरन आपसमय सबप्रीति ६॥

निम्बादित्यनामजासोभयो अभिरामकथाआयोएकदंड ग्रामन्योतोकरिआयेहैं। पाककोअवारभईसंध्यामानिलई यतीरतीहुनपाऊंमेंपुनसुनायेहैं॥ आंगनमेंनीमताप आदित्यदिखायोवाहिभोजनकरायो पाछेनिशिदिन्हपाये हैं। प्रकटप्रभावदेखिजान्योभक्तिभावजग दावयावनाम परयोहरयोसनगायेहैं १०५ दोहा॥ रमापद्धतिरामाअनुज विष्णुस्वामित्रिपुरारि॥ निम्बादित्यसनकादिका मधुकरगुरुमुखचारि २६॥ मूल॥ संप्रदाशिरोमणिसिंधुजारच्योभक्तिवित्तानइमि॥ विष्वक्सेनमुनिवर्य्यपूर्णशठकोपपुनीता। वोपदेवभागौतलुप्तउद्धरयोनवनीता॥मंगलमुनि श्रीनाथपुंडरीकाक्षपरमयश। राममिश्ररसराशिप्रकटपरतापपरांकुश॥ यामुनिमुनिरामानुजतिमिरहरणउदयभेसालुजिमि। संप्रदाशिरोमणिसिन्धुजारच्योभक्तविंतानइमि ३०॥ मूल॥ जिनसहस्रआस्यउपदेशकरि

जगतउधारणयत्नकिय । गोपुरह्वैआरूढ़उच्चसुरमंत्रउ
चार्‌यो । सूतेनरपरेजागिबहत्तरश्रवणनिधार्‌यो ॥ तितने
ईगुरुदेवपधतिभईन्यारीन्यारी । कुरुतारकशिष्यप्रथम
भक्तिवपुमंगलकारी ॥ कहुँकृपणपालकरुणासमुद्ररामा
नुजसमनाहिंबिय । जिनसहस्रआस्यउपदेशकरिजक्तउ
धारणयत्नकिय ॥

वेदवचन ॥ भागवते ॥ सन्ध्याकालेचसंप्राप्ते कर्मचत्वारिवर्जे
येत् ॥ आहारंमैथुनंनिद्रांस्वाध्यायंचविशेषतः १ आहारेजायते
व्याधिर्गर्भदौष्ट्यंचमैथुने ॥ निद्रायांह्रियतेलक्ष्मीः स्वाध्यायेमरणं
ध्रुवम् २ आदित्यदिखायो॥ समये॥यस्यास्तिभक्तिर्भगवत्यकिंचिना
सर्वे गुणास्तत्र समासतेसुराः ॥ हरावभक्तस्यकुतोमहद्गुणा म-
नोरथेनासतिधावतोवहिः ३ ॥ रमापद्धति ॥ पाद्मे ॥ कलौखलु
भविष्यन्तिचत्वारःसम्प्रदायकाः॥श्रीब्रह्मरुद्रसनकावैष्णवाःक्षिति
पावनाः ४ ॥

टीका॥आस्यसोवदननामसहसहजारमुखशेषअवता
रजानोवहीसुधिआईहै । गुरुउपदेशमंत्रकह्योनीकेराखो
अंत्रजपतहीश्यामजूनेमूरतिदिखाईहै ॥ करुणानिधानके
हीसबभगवानपावैं चढ़िदरवाजेसोपुकार्‌योधुनिछाईहै ।
सुनिसीखिलियोयोंबहत्तरिहीसिद्धभये नयेभक्तिचौजयह
रीतिलैहौंगाईहै १०६॥ गयेनीलाचलजगन्नाथजूकेदेखि
वेको देख्योअनाचारसबपंडादूरिकियेहैं । संगलैहजार
शिष्यरंगभरिसेवाकरैं धरैंहियेभावगूढ़मतदरशायेहैं ॥
बोलेप्रभुवेईआवैं करैंअंगीकारमैंतो प्यारहीकोलेतकभूं
औगुणनलियेहैं । तउदृढ़कीनीफिरकहीनहींकानकीनी
लीनीवेदवाणीविधिकैसेजातकियेहैं १०७॥ जोरावरभक्त

सोंत्रसाइनहींकहीकितीरतीहूनलावैमनचोजदरशायोहै। गरुड़कोअज्ञादईसोईमानिलईउन शिष्यनिसमेतनिज देशछोड़िआयोहै ॥ जागकैनिहारैठौरऔरहीमिगनभये ह्वैरोंप्रकटकरगूढ़भावपायोहै । वेईसवसेवाकरैंश्याम मनहरैंसदाधरैंसांचोप्रेमहियेप्रभुजूदिखायोहै १०८ ॥

मूरति दिखाई है। यह तो बड़ो आश्चर्य्य है ततकाल मूर्ति कैसे देखी तीन वस्तु शुद्धहोहिं तौ खेत में वीजऊगै ॥ वीज घुनों भूंजो न होइ खेतकर बंजर न होइ किसान को भाग होइ चेला निर्वासिक होइ यह खेत शुद्ध गुरु निर्वासिक यह वीजशुद्ध गुरु के भाग ॥ दोहा ॥ गुरुलोभी शिष्य लालची दोउखेलैं दाव ॥ दोउबूड़े वापुरे चढ़ि पाथरकी नाव १ पारथकी नावपै मल्लाहू बूड़े चढ़नहाराहू बूड़े सव भगवान् पावै तापै कठारीजू वाको दृष्टांत ॥ श्लोक ॥ अपिचेत्सुदुराचारो भजतेमामनन्यभाक् ॥ साधुरेवसमंतव्यःसम्यग्व्यवसितोहिसः २ ॥

मूल ॥ चतुरमहंदिग्गजचतुरभक्तिभूमिदाबेरहैं । श्रुतिप्राज्ञश्रुतिदेवऋषभपुहकरइभऐसे। श्रुतिधामाश्रुतिउदधिपराजितवामनजैसे ॥ रामानुजगुरुबंधुविदितजग मंगलकारी। शिवसंहिताप्रणीतज्ञानसनकादिकसारी ॥ इंदिरापद्धतिउदारधौसभासापिसारंगकहैं । चतुरमहंत दिग्गजचतुरभक्तिभूमिदाबेरहैं ३२॥ आचारजकेजामात कीकथासुनतहरिहोइरति॥कोउमालाधरमृतकबह्योसरि तामेंआयो। दाहकृत्यज्योंबंधुन्योतिसवकुटुंबबुलायो॥नाकसकोचैंविप्रनबहिंहरिपुरजनआये। जेंवतदेखसबनिजा

१ पादांतमें इन रकार को गुरुजानने से पंद्रह मात्रा ठीक हैं ॥ पादांत में लघु की विकल्प कर के गुरुसंज्ञा होतीहै अथवा चतुरोमहंत, यह पाठ है ॥

तकोहूनहिँपाये॥श्रीलालाचारजलक्षुधाप्रपुरभईमहिमा जगति।आचारजकेजामातकीकथासुनतहरिहोइरति ३३
टीका ॥ आचारजोजामातबाततानकी सुनौंनीकेपायो उपदेशसंतबंधुकरमानिये। कीजैकोटगुणीप्रीति ऐपैनं बनतरीतितातइतिकरौंयातेघटतीनआनिये ॥ मालाधा रीतनसाधुसरितामेंबह्योआयोलायोघरफेरके विमानस बजानिये। गावतबजावतलैनीरतीरदाहकियो हियेदु खपायोसुखपायोसमाधानिये १०९ ॥

चतुरमहंत ॥ श्लोकः ॥ अद्यापिनोज्झतिहरःकिलकालकूट कूर्म्मोबिभर्तिधरणींखलुपृष्ठभागे ॥ अम्भोनिधिर्वहतिदुःसहवाड़ वाग्निमङ्गीकृतंसुकृतिनःपरिपालयन्ति १ लालाचार्य्ये पैस्कान्दे॥ तुलसीकाष्ठजांमालांकण्ठस्थांवहतेतुयः॥अशौचश्चाप्यनाचारोमा मेवैतिनसंशयः २ केशरि कश्मीरमोंहोइ है सो राजा अंसिंहल- वाई ने अमेर में लगाई सो नहीं भई तब पूछी काहेते न भई महाराज जल आवै तो होइ जहां जलहू मँगायो तऊ न भई म- हाराज माटी आवै तौ होइ माटीहू आई तऊ न भई महाराज हवाआवै तौ होइ जैसेही प्रेम हृदय ते उपजै खैंचेते न आवै ३॥

कियोसोमहोत्सौज्ञातिविप्रनिकोन्योतोदियो लियो आयेनाहिंआनीशंकादुखदाहिये। भयेहकठौरेमायाकीने सबबोरेकछू कहैबातऔरैमरोदेहवहींआहिये॥ यातेनहीं खातवाकीजानतनजातिपांति बड़ोउतपातघरलाइजाइ दाहिये। मगअवलोकउतपल्योमुनशोचहिये जिन्हैआइ पूछैगुरुकैसेकैनिबाहिये ११० चलेश्रीआचार्यजूबैबारि जवदनदेखि करीसासटांगबातकहीसोजनाइये। जावोजू निशंकवेप्रसादकोनजानैंरंक जानैंजेप्रभावआवैवेगिसुख

दाइये ॥ देखेनभभूमिद्वारऐहैंनिरधारजन वैकुंठनिवासी पांतिढिगह्वैकेआइये । इन्हेंअवजानदेवोंजिनकछूकहौ अहौ करौहांसिजवैघरजाइनिजपाइये १११ ॥

आयेनाहिं ॥ आगमे ॥ मालाधारकमात्रोपि वैष्णवोभक्तिवर्जितः ॥ पूजनीयःप्रयत्नेन ब्रह्मणाऽिं तुमानुषैः १ प्रसाद को न जानैं रंक ॥ स्कांदे ॥ महाप्रसादेगोविन्दे नाम्निब्राह्मणवैष्णवे॥स्वल्पपुण्यवतांराजन् विश्वासोनैवजायते २ घरजाइ खाइये ॥ प्रतिमामंत्रतीर्थेषु भेषजेवैष्णवेगुरौ ॥ यादृशीभावना यस्य सिद्धिर्भवतितादृशी ३ कवित्त ॥ मल्लजानैं कुलिश नरेशनरजानैं पुनि नारीजानैं मीनकेतुमूरतिरसालहै।गोपजानैंस्वजन महीपजानैं दंडदेनयादवयों जानैं इष्टदेवता कृपालहै ॥ अज्ञानीविराट जानैंयोगी परतत्व जानैं रंगभूमिराम कृष्णगये ऐसेहालहै । नंदजानैं बालक गुविंद प्रतिपालजानैं शाल शत्रुवंशजानैं कंसजानैंकालहै ४ ॥

आयेदेखिपारपदगयोगिरिभूमिसद हृदकरीकृपायह जानिनिजजनको।पायोलैप्रसादस्वादकहिअहलाददयो नयोलयोमोदजान्योसांचोसंतपनको ॥ बिदाह्वैपधारेनभ मगमेंसिधारेविप्र देखतविचारेद्वारव्यथाभईमनको । गयोअभिमानआनमंदिरमगनभये नयेदगलाजवीनवीनि लेतकनको ११२ ॥ पाइलपटाइअंगधूरिमेंलुटायेकहैं कसौंमनभायोऔरदीनवहुभाष्योहै । कहीभक्तराजतुमकृपा मेसमाजपायो गायोजोपुराणनमेंरूपनैनचाष्योहै॥छांड़ो उपहासअबकरौनिजदासहमैं पूजीजियआसमनअतिअभिलाष्योहै । कियेयेप्रशंसमानौहंसयेपरमकोऊऐसे जस लाखभांतिघरघरराष्योहै ११३ मूल ॥ श्रीमारगमेंउपदेशकृतिश्रवणसुनौ आख्यानशुचि ॥ गुरुगमनेपरदेश

शिष्यसुरधुनीदृढ़ाई। इकमंजनइकपानएकहदवंदनकराई॥गुरुगंगामेंप्रवेशशिष्यकोवेगिबुलायो। विष्णुपदीभयजानिकमलपत्रनपरधायो॥ परेपादपदमतादिनप्रगटसवप्रसन्नमनपरमरुचि। श्रीमारगमेंउपदेशकृतिश्रवणसुनौआख्यानशुचि ३५॥

गयोगिरि भूमि॥पद॥संतचरणपरशीशधरयो॥ राखिलियो बहुभांति कृपाकरि मनतेसंशयशूलहरयो। हमरेऔगुणमेटिदूरि घटमेंहरिरसअमृतभरयो॥कीटभृंग ज्योंमृतकजिवायो जीव कागते हंसकरयो। दूरिकियोअज्ञानअँधेरो ज्ञानरतनजबदीपवरयो॥ हरिहिदियाइकियोहरिहीसो इहिसुखमायादूरिततरयो। प्रभुवश भयेसाधुकीसेवा साधुसंगतेकाजसरयो॥ रामराइकेहितभगवानें साधुसंगको अमलपरयो १॥

टीका॥देवधुनीतीरसोकुटीरबहुसाधुरहैं रहैगुरुभक्त एकन्यारोनहिंह्वैसकै। चलेप्रभुगांवजिनितजोवलिजांव कही करौदाससेवागंगामेंहींकैसेह्वैसकै॥ कियासबकूपकरैविष्णुपदीध्यानधरै रोषभरेसंतश्रेणीभावनहिंभैसकै। आयेईशजानिदुखमानिसोवखानिकियो आनिमनजानि बातअंगकैसेधवैसकै ११४ चलेलैकेन्हानसंगगंगमेंप्रवेश कियोरंगभरिबोलेसोअँगोछावेगिलाइये। करताबिचार शोचसागरनवारापार गंगाजूप्रकटकह्योकंजनपैआइये॥ चलेइअधरपगधरैसोमधुरजाइ प्रभुहाथदियोलियोतीर भीरछाइये। निकसतधाइचाइपाइलपटाइगये बड़ोपर तापयहनिशिदिनगाइये ११५॥

देवधुनी कैसी है॥ प्रथमे॥ याबेलसच्छ्रीतुलसीविमिश्र कृष्णांघ्रिरेणवभ्यधिकाम्बुनेत्री॥ पुनातिलोकानुभयत्रसेशान्क

स्तान्नसेवेतमरिष्यमाणः १ आदिपुराणे ॥ दृष्टाजन्मशतंपापंदृष्ट्वाजन्मशतद्वयम् ॥ स्नात्वापीत्वासहस्राणि हन्तिगंगाकलौयुगे २ तापैदृष्टांत भूतको अरु सिद्धको ॥ भोदरिद्रेनमस्तुभ्यं सिद्धोहंतवदर्शनात् ॥ पश्याम्यहंजगत्सर्वंनमांपश्यतिकश्चन ३ ॥ कवित्त ॥ कारोकुलकंटक डरारो बोलभारो जाको तीरथके तीर पग कबहूं न लेगयो । कहेंकविगंगकारेकागहूते सर्सआप आनियमप्रेरयो तत्रखाटमें कुपैगयो ॥ गंगाजीको धोयोपट धकुचामें धरी करी ताके अंग लागतही तारागणलेगयो । चाहचौरठौरेसबदेवता निहोरे बहिगंगाजीकी चादरि सों चारिभुजहैगयो ४ ॥ ऐसो गंगा को प्रताप ताको क्योंन उठिधाइये ५ ॥

मूल॥श्रीरामानुजपद्धतिप्रतापअवनिअमृतह्वैअनुसरयो॥देवाचारजद्वितियमहामहिमाहरियानँद। तस्यराघवानँदभयेभक्तनकोमानँद॥पत्रालँबपृथिवीनैआपुकाशीअस्थाई। चारिवरणआश्रमहुसबहिकोभक्तिदृढाई॥त्योंतिनकेरामानँदप्रकटविश्वमंगलजिहवपुधरयो। श्रीरामानुजपद्धतिप्रताप अवनिअमृतह्वैअनुसरयो ३६ श्रीरामानँदरघुनाथज्यों द्वितियसेतुजगतरनकिय। अनँतानंदकबीरसुखा पद्मावतनरहरि। पीपाभावानंदसेन सुरसुरकीधरहरि॥ औरौशिष्य प्रशिष्यएकतेंएकउजागर। विश्वमँगलआधारभक्तिदशधाकेआगर॥ वसिबहुतकालवपुधारिकैप्रणतजननिकोपारदिय। श्रीरामानँदरघुनाथज्यों द्वितियसेतुजगतरणकिय ३७ अनंतानंदपदपरशकैलोकपालसेते भये। योगानँदगयेशकरलबँदअल्हपैहारी। रामदासश्रीरंगअवधिगुणमहिमासारी॥ तिनकेनरहरि उदित मुदितमाहामंगलतन। रघुवरयदुवरगायविमल

कीरतिसंचयोधन ॥ हरिभक्तिसिंधुवेलारचेपानिपद्मजा शिरदये। अनंतानंदपदपरशकैलोकपालसेतेभये ३८॥

चारिवरण एकादशे॥मुखबाहूरुपादेभ्यःपुरुषस्याश्रमैःसह। चत्वारोयज्ञिरेवर्णागुणैर्विप्रादयःपृथक्॥ परेशंपुरुषंसाक्षादात्मप्रभवमीश्वरम्। नभजन्त्यवजानन्तिस्थानभ्रष्टाःपतन्त्यधः २॥ चारोंसिघयेचारोंहीसेतरूपीहोतभये॥ छप्पै॥ जगतसमुद्र अपार तासकैजेनमरनतट। काम क्रोध मद लोभतासमें लहरि महाभट॥ मोहग्राहतम प्रबलनिगलि जावे सौसारा। तामें गोताखातनाहिंकोउतनकअधारा॥ दुखपाये बूड़कलेत हैं सुखसे उछरत जानिजय। जन दीननाथ रघुनाथ बिन कौन छुटावै आनि अब॥

टीका॥ योसाएकगांवतहां श्रीरंगसुनामरहैवनिकसरावगीकीकथालैबखानिये। रहतोगुलामगयोधर्मराजधामवहां भयोबड़ोदूतकहींयेरेसुनिबानिये॥ आयेबानिजारेलैनदेखिनदिखावैचैन बैलशृङ्गमध्यपैठिमास्योपहिचानिये। बिनहरिभक्तिसबजगतकीयहीरीतिभयोहरिभक्तिश्री अनंतपदध्यानिये ११६सुतकोदिखाइदेतभूतनितसूक्ष्यो जातपूछैंकहीबाततनबाहीठौरस्वायो है। आयोनिशिमारवेकोधायोयहरोषभस्यो देखोगतिमोको उनबोलिकैसुनायो है॥ जातकोसुनारपरिनारलगप्रेतभयो लयोतेरोशरणमें ढूंढ़जगपायो है। दीनोंचरणामृतलैकियोदिव्यरूप वाकोअतिहीअनूपसुनो भक्तिभावगायो है ११७॥मूल॥ निर्वेदअवधिकलिकृष्णदासअनपरिहरिपयपान किय॥ जाकेशिरकरधस्योतासुकरतरनहिंओड़्यो। अर्प्योपदनिर्वाणशोचनिर्भयकरिछोड़्यो॥ तेजपुंजबलभजनमहामुनिऊरधरेता। सेवतचरणसरोजराइराणाभुविजेता॥ दाहि

नाथंशदिनकरउदयसंतकमलहियसुक्खदिय। निर्वेदअ
वधिकलिकृष्णदासअनपरिहरिपयपानकिय १९॥

धर्मराज धाम॥ सवैया॥ जागत के हम पाहरू हैं पुनि सो-
वतके गटिया सरकावैं। षटकोन करैं परकोधन चोरत दोरत
चोरके शोरसुनावैं॥ हमहीं शिर भूत चढ़ाइ सुजाइ के पाइधुवाइ
के प्याइछुड़ावैं। याहीते नाथ वरो धरिहौ कहुं धर्म अधर्म की बात
चलावैं १ चरणामृत॥ पाद्मे॥ गङ्गासिन्धुसहस्राणिद्वारकायां
शतैरपि॥ एवंतीर्थाधिकंपुण्यंसतांपादोदकंपिबेत् २ शिरकर
धस्यो॥ स्कान्दे॥ गुकारोह्यन्धकारस्तुउकारोस्यविनाशकृत्॥ अ
न्धकारविनाशीचगुरुरित्यभिधीयते ३॥

टीका॥ जाकेशिरकरधस्योतातरनऔडयोहाथदीनोव
ड़ोवरराजाकुलहकोजुसाखिये। परवतकंदरामेंदरशनदी
न्योआनिदियोभावसाधुहरिसेवाअभिलाखिये॥ गिरीजो
जलेवीथारमांभतेउठाइबाल भयोहियेशालविन अरपि
तचाखिये। लैकरिखडगताहि मारणउपाइकियो जियोसं
तओटफिरमोलकरिराखिये ११८ नृपसुतभक्तबड़ोअवलौं
विराजमानसाधुसनमानमेंनदूसरोबखानिये। संतबधूग
र्भदेखिउभैपनवारेदियेकही गर्भइष्टमेरोऐसीउरआनिये॥
कोऊभेषधारीसोभयोहारी पगदासनकोकहीकृपाकरोकहा
जानेऔरप्रानिये। ऐपैतजिवोईक्रियादेखिजगवुरोहोतजो
तिवहुदईदामराममतिसानिये ११९॥ मूल॥ श्रीपैहारी
परसादतेशिष्यसबैभयोपारकर॥ कीलहअगरकेवल्लचरण
व्रतहठीनरायन। सूरजपुरुषापृथुतपूरहदिभक्तपरायन॥
पद्मनाभगोपालटेकटीलागदधारी। देवाहेमकल्याणगंग
गंगासमनारी॥बरविष्णुदासकन्हररँगाचांदनशबरीगोविं

दपर। श्रीपैहारीपरसादते शिष्यसबैभयेपारकर ४० ॥

विनअर्पित ॥ श्लोक ॥ विनार्पितंतुगोविन्दे भोजनंकुरुते यदि। शुनोविष्ठासमंचान्नंतोयंचसुरयासमम् १ भागवते ॥ येषांसंस्मरणात्पुंसांसद्यःशुद्ध्यन्तिवैगृहाः ॥ किंपुनर्दर्शनस्पर्शपादशौचासनादिभिः २ आगमे ॥ मालाधारकमात्रोपिवैष्णवोभक्तिवर्जितः ॥ पूजनीयःप्रयत्नेनब्रह्मणाकिंनुमानुषैः ३ मालातिलकसंचिह्नैःसंयुक्तोयःप्रदृश्यते ॥ चाण्डालोपिमहीपालपूजनीयोनसंशयः ४ साधुकेगुण अवगुण कछू न देखै भगवतूस्वरूप जानै ५ ॥

गांगेयमृत्युगंज्यो न त्योंकीलहकरणनहिंकालवश ॥ रामचरणचिंतवनरहतनिशिदिनलौलागी। सर्वभूतशिरनमितसूरभजनानंदभागी ॥ सांख्ययोगमतिसुदृढ़कियोअनुभवहस्तामल। ब्रह्मरंध्रकरिगौनभयेहरितनकरणीवल ॥ सुमेरुदेवसुतजगविदित भुविविस्तारयोनिमलयश। गांगेयमृत्युगंज्योनत्योंकीलहकरणनहिंकालवश ४१ टीका सुमेरुदेवकी ॥ श्रीसुमेरुदेवपितासूबेगुजरातहुतेभयेतनपातसोविमानचढ़िचलेहैं। बैठेमधुपुरीमाहिंमानसिंहराजाढिगदेखेनभतातउठिकहीभलेभलेहैं ॥ पूछैनृपबोलेकासोंकैसेकैप्रकाशोंकहोंकह्योहठपरे सुनअचरजरलेहैं। मानुपपठायेसुधिलायेसांचआंचलागी करोसासटांगबातमानीभागफलेहैं ११९ ऐसेप्रभुलीननहींकालकेअधीनबातसुनियेनवीनचाहैरामसेवाकीजिये। धरीहीपिटारेफूलमालहाथडारयो तहा व्यालकरकाटयो कह्योफेरिकाटिलीजिये ॥ ऐसेहीकटायोवारतीनिहुलसायोहियो कियोनप्रभावनेकसदारसपीजिये। करिकैसमाजसाधु मध्ययोविराजमानतजेदशैंद्वारयोगीथकेसुनिजीजिये १२० ॥

चिंतवन ॥ दशमे ॥ मर्त्योमृत्युव्यालभीतःपलायल्लँलोकान्स र्वान्निर्भयंनाध्यगच्छत्॥त्वत्पादाब्जंप्राप्ययदृच्छयाद्यस्वस्थःशेतेमृ त्युरस्मादपैति १ ॥सप्तमे॥ तस्माद्रजोरागविषादमन्युमानस्पृहाभ यदैन्याधिमूलम्॥ हित्वागृहंसंसृतिचक्रवालंनृसिंहपादंभजतांकुतो भयम् २ ज्ञानवैराग्ययुक्तेनभक्तियोगेनयोगिनः ॥ क्षेमायपादमूलंमे प्रविशन्त्यकुतोभयम् ३ दोहा ॥ मारीयमरिजाइयेछूटिपरैसंसार । अहमदमरनोकोवदैदिनमेंसौसौवार ४ तापै दृष्टांत राजाकेगुलाम ने विषकी गोली खाई सो मरेउ नहीं ॥

मूल ॥ श्रीअग्रदासहरिभजनबिन कालवृथानहिंवित्त यो ॥ सदाचारज्योंसंतप्रीतिजैसेकरिआये । सेवासुमिरण सावधानराघवचितलाये ॥ प्रसिधवागसोंप्रीतिसुहथकृत करतनिरंतर।रसनानिर्मलनाममनोवर्षतधाराधर ॥ किय कृष्णदासकिरपाभगतिमनवचक्रमअहलदयो । श्रीअग्र दासहरिभजनविनकालवृथानहिंवित्तयो ४२॥ टीकाअग्र दासजीकी ॥ दरशनकाजमहाराजमानसिंहआयोछायो बागमाहिंबैठेद्वारद्वारपालहैं । झारिकैपतौवागयेबाहिरलै डारिबेको देखीभीरभाररहेबैठियेरसालहैं ॥ आयेदेखिना भाजूनेउठिसासटांगकरी भरीजलआंखैंचलेअँसुवनिजा लहैं । राजमगचाहद्वारिआनिकै निहारेनैनजानीआपजा तीभयेदासनिदयालहैं १२१ ॥

काल वृथा नहिं वित्तयो ॥ कुण्डलिया ॥ अगरकहांलगिथेगरी दीजैफाटेआभ । आगिलगंतेझोपरा जो निकसै सो लाभ॥ जो नि- कसै सो लाभ देखिमानुपतनचोरी । जैलोपेकी श्वास जात आवत न बहोरी ॥ ज्यों कर अंजलि माहिं घटत जल थिर न रहाई । करि आरतहर भजन साखिकायावधगाई १ सो श्रीअग्रदास अष्टपहर भजनही में लगेरहैं सोतो काल दोनोंहीको गयो अभजनी हूं को

और भजनीहूंको गयो हाथ तौ काहूके न आयो एक ब्राह्मण ने रुपैया साधुन को खवायो एक के गैलमें लूटिलिये ऐसे एक को तो माल ठिकाने गयो एकको वृथाही गयो ऐसे अग्रदासजीको माल ठिकाने जाय जैसे नाव बहुतभरो तो बूड़िहीजाइ थोरी भरी होइ तो पार लगि जाइ ऐसेही ब्योहारी थोरो ब्योहार करे तो हरिको भजन करि पार उतारि जाइ बहुत करे तो संसार में बूड़िजाइ २॥

मूल॥ कलियुग्गधर्मपालकप्रकटआचारजशंकरसुभट॥ उतश्रृंखलअज्ञानजितेअनईश्वरबादी। बौध्रकुतर्कीजैनऔरपाखँडहैआदी॥ विमुखनिकोदियो दंडऐंचि सनमारगआनैं। सद्राचारकीसींवविश्वकीरतिहिंबखानैं॥ इतईश्वरांशअवतारमहिमर्य्यादामंडीअघट। कलियुग्गधर्मपालकप्रकटआचारजशंकरसुभट ४३॥ टीका शंकराचार्यकी॥ विमुखसमूहलैकैकियेसनमुखश्यामअतिअभिरामलीलाजगविसतारीहै। सेवराप्रबलवासेकेवराज्योंफैलिरहे गयेनहींजाहिबादीशुचिबातधारीहै॥ तजिकैशरीरकान्हनृपमेंप्रवेशकियो दियोकरिग्रन्थमोहमुद्गरसुभारीहै। शिष्यनिसोंकह्योकभूंदेहमेंअवेशजानों तबहींबखानोंआनिसुनिकीजैन्यारीहै १२२ जानिकैअवेशतनशिष्यनेप्रवेशकियो रावलेमैंदेखिसोंशलोकलैउचार्योहै। सुनतहीतज्योतननिजतनआयलियो कियोसोप्रणामदासप्रणपूरोपार्योहै॥ सेवराहरायेबादीआयेनृपपासऊंचीछातिपरबैठिएकमायाफन्दडार्योहै। जलचढ़िआयो नावभावलैदिखायो कहैंचढ़ोनहींबूड़ोआपकौतुकसंभार्योहै १२३॥

कलियुग धर्म ॥ एकादशे ॥ कृतेयद्धयायतोविष्णुंत्रेतायांयजतो मखैः ॥ द्वापरेपरिचर्य्यायांकलौतद्धरिकीर्त्तनात् १ हरेर्नामैवनामैवनामैवममजीवनम् ॥ कलौनास्त्येवनास्त्येवनास्त्येवगतिरन्यथा १ प्राप्तेसन्निहितेमरणे नहिनहिरक्षतिडुकृञ्करणे ॥ भजगोविंदंभजगोविंदंगोविंदंभजमूढमते ३ शृङ्गारःशुचिरुज्ज्वलइत्यमरः ४ नलिनीदलगतजलवत्तरलम् ॥ तद्वज्जीवनमतिशयचपलम् ॥ क्षणमपिसज्जनसंगतिरेका । भवतिभवार्णवतरणेनौका ५ ॥ कुण्डलिया ॥ अगर डरत जे मृत्युते तिनते अधिक डराउँ । मीयाघरासिकासिंहैतरकसकहांधराउँ ॥ तरकसकहांधराउँ प्रथमजीवन निर्णयकरि । पलकमांहिंप्रस्थानजीवपुनिचलिहेपरिहरि ॥ यावत नहरी नींव सदन नोहरावगीचा । अश्वगजरथपरवान कोऊ ऊंचाअरुनीचा ६ ॥

आचारजकहीयोंचढ़ावोइनसेवरानिराजानैचढ़ायेजव गिरिकूढ़िगयेहैं । तवतौप्रसन्ननृपपांइपर्योभावभर्योक ह्योजोइकह्योधर्मभागवतलयेहैं ॥ भक्तिहीप्रचारपाछेमायावादडारिदीनों कीनोंप्रभुकह्योकितैविमुखहूभयेहैं । ऐसेसोगम्भीरसंततीरवहरीतिजानैं प्रीतिहीमेंसानेहरिरूपगुणनयेहैं १२४ मूल ॥ नामदेवप्रतिज्ञानिर्वहीज्योंत्रेतानरहरिदासकी ॥ बालदशावीठलपानजाकेपयपीयो । मृतकगऊजीवाइपरचोअसुरनिकोदीयो ॥ सेजसलिलतेकाढ़िपहलेजैसीहीहोती । देवलउलटोदेखिसकुचिरहेसवहीसोती ॥ पंढरीनाथकृतिअनुगत्योंछानिछाइदइदासकी । नामदेवप्रतिज्ञानिर्वहीज्योंत्रेतानरहरिदासकी ४४ ॥

कीनों प्रभु कह्यो ॥ पद ॥ द्वापरादौयुगेभूत्वा कलयामानुषादिषु ॥ स्वागमैःकल्पितैस्त्वंहि जनान्मद्विमुखान्कुरु १ आससोगंभीर । नगाश्चक्रपाणेहरेवासुदेव प्रभोतेभवारेमुरारेमुकुन्द ॥ नम

स्तुभ्यमित्यालपन्तंसुदामांकुरुश्रीपतेत्वत्पदाम्भोजभृङ्गम् २ ॥ प्रतिज्ञापद ॥ आये मेरे अँधेरे घरके मदनराइ। चाकी चाटैं चूनखाइ ॥ तुरु गुरु गरुग प्रभुजूकी चालि। पूंछहलै ज्यों जोंकीवालि ॥ चूल्हे माहिं जु प्रभुजू की सेज। छीकेकीनो अधिकैतेज १ कातिकमैं जू प्रभुजी को भोग। लैलै लकुट खिजावैं लोग ॥ तीनि पाप प्रभु मेटन योग। नामदेवस्वामि वन्यो संयोग २ परजापतिके चितन्हीं चारे। मंजारी के पुत्र अवां में उवारे ॥ आंचलगै न तपै तन वासन। राखिलये हरिनैं विश्वासन ३ ॥

टीका नामदेवजूकी ॥ छीपावामदेवहरिदेवजूकोभक्तव ड़ोताकीएकवेटीपतिहीनभईजानिये। द्वादशवरषमांझ भयोतवकहीपितासेवासावधानमननीकेकरिआनिये॥ तेरे जेमनोरथहैंपूरणकरनयेई जोपैदत्तचित्तह्वैकैमेरीवातमानिये। करतटहलप्रभुवेगिहीप्रसन्नभये कीनीकामनामनासपोषीउनमानिये १२५ विधवाकोगर्भताकीवातठौरठौर चलीतुष्टशिरमौरनिकीभईमनभाइये। चलतचलतवामदेवजूकेकानपरीकरीनिरधारप्रभुआपअपनाइये॥ भयोजू प्रकटबालनामनामदेवधर्योकर्योमनभायो सवसंपति लुटाइये। दिनदिनवढ़योकछुऔरैरंगचढ़योभक्तिभावअंगमढ़योकढ़योरूपसुखदाइये १२६ खेलनखिलौनाप्रीतिरीतिसवसेवाहीकी पटकहरावैंपुनिभोगकोलगावहीं। घंटालैवजावैंनीकेध्यानमनलावैं त्योंत्यों अतिसुखपावैंनैननीरभरिआवहीं॥ वारवारकहैंनामदेववामदेवजूसोंदेवोमोहिंसेवामांझअतिहीसुहावहीं। जाऊँएकगांवफिरिआवोंदिनतीनमध्यदूधकोपिवावोमतिपीवोमोहिंभावहीं १२७ ॥

विपत्ति ॥ दोहा ॥ वड़ेवड़ेभोगैंविपति छोटेदुखतेदूर ॥ तारे

न्यारेह्वैरहे गहतचंदअरुसूर ॥१॥ कामवासना॥ द्वितीये ॥ अकामः सर्वकामोवा मोक्षकामउदारधीः ॥ तीव्रेणभक्तियोगेन भजेतपुरुषं परम् ॥ २ ॥ प्रीतिरीति ॥ छप्पै ॥ कठिन प्रीतिकी रीति कठिन तन मन वशकरिवो । कठिन है कर्मनिकंद कठिनभवसागर तरिवो ॥ कठिनसँकट में दान कठिन संभ्रमकोसमता । कठिनहै परउपकार कठिन मनमारनममता ॥ वरवचननिवाहन अतिकाठिन निधन नेहपालन हाठिन । मुनिईश्वर सिखवत चतुर नर ज्ञान युद्ध जीतन कठिन ॥ ३ ॥

कौनवहवेरजिहिवेरदिनफेरिहोइ फेरिफेरिकहैवहोवेर नहींआइये । आईवहवेरलैकराहीमांझहेरिदूधडारयोयुग सेरमननीकेकैवनाइये ॥ चौंपनिकेढेरलागीनिपटऔसेरह गआयोनीरघेरिजिनिगिरेघुंटिजाइये । माताकहैहेरकरी वड़ीतेअवेरअवकरौमतिभेर अजूचित्तदैऔटाइये १२८ चल्यौप्रभुपासलैकटोराछविराशितामें दूधसोसुवासमध्य मिश्रीलैमिलाइये । हियेमेंहुलासनिजअज्ञताकोत्रासऐसे करैजोपैदासमोहिंमहासुखदाइये ॥ देख्योमृदुहासकोटि चांदनीकोभासकियो भावकोप्रकाशमतिअतिसरसाइये । प्याइवेकीआशकरि ओटकछुभरयोश्वासदेखिकैनिराश कह्योपीवोजूअघाइये १२९ ॥

फेरिफेरि ॥ कवित्त॥ दिनतोनघटै और घटै प्राण पल पल लाल सुखचंदको विरोधी पल नाटरै । कबकी निहारिरही रविन तजत ठौर वीते युगकोटि तऊनेकहू नहींटरै ॥ तूतौरी कहतश्यामरजनी मिलाय देहौं मिलिवो न मेरवांट मारिवोहुलैधरै । जागि पाति वरनिवनाईहुती विधिनेजु फेरि मनआई मेरे रात्रिदिन को करै १ ॥ चौपाई ॥ कुंवरिकहै सखि या शशिराजै । राहुराड़ क्योंगिलिगिलिछाजै ॥ सखिकहै राहुअमृत जव पियो । तेरेकंतखंड द्विविकि-

यो ॥ उदरनहीं तौनै यहपचै। निकसि निकसि थिरही जनतचै॥ कुंवरिकहै दोउखंडनि माहीं। जरा आनि किनि लेहु जुराहीं २॥ दोहा ॥ कै अहरनि परधरि मुकर सुकर लोहघनलेहु ॥ जबहीं आनिपरै जहां तबहीं ता शिरदेहु ३ कौन दिवसआयो है सजनी। इंदु अनल बरषै है रजनी ॥ भलोकरै जो यादिन माहीं। प्राण पियारो आवैनाहीं ४ ॥

ऐसेदिनबीतदोइराखीहियेबातगोइ रह्योनिशिसोइये पैनींदनहींआवही । भयोजुसबारौफेरि वैसेहीसुधारिलि योहियोक्रियोगाढ़ौ जाइधस्योपीवौभावही॥बारबारपीयो कहुंअबतुमपीवोनाहिं आवैमोरनानागरैछुरीदैदिखावही। गहिलियोकरजिनिकरिऐसीपीवौमैंतोपीवेकोलगेईनेकरा खौसदापावही १३० आयेबामदेवपाछेपूछेनामदेवजूसों दूधकोप्रसंगअतिरंगभरिभाखिये । मोसोंनपिवोनितदिन दोइहानिभईतबमानिडरप्राणतज्यौंचाहौंअभिलाखिये॥ पियोसुखदियोजबनेकुराखिलियोमैंनौ जियोसुनिबातैंक हीप्यायोकौनसाखिये। धस्यौपैनपीवैअस्योप्यायोसुखपा योनाना यामेंलैदिखायोभक्तबशरसचाखिये १३१ ॥

सदापावही तव तौ भगवान् ने हँसिदियो ॥ भागवते ॥ न देवोविद्यतेकाष्ठेनपाषाणेनमृन्मये॥देवोहिविद्यतेभावे तस्माद्भावो हिकारणम् १ प्रतिमामन्त्रतीर्थेषु भेषजेवैष्णवेगुरौ ॥ यादृशीभाव ना यस्य सिद्धिर्भवतितादृशी २ जिवाइगाइ ॥ पद ॥ विनती सुनु जगदीश हमारी। तेरौदास आशमोहिं तेरी इतकरो कानमुरारी॥ दीनानाथ दीनहै टेरत गाइहि क्योंनहिं ज्यावो । आछे सबै अंग हैं याके मेरे यशहि बढ़ावो ॥ जो कहूं याके कर्मनमें नहिं जीवन लिख्यो विधाता । नामदेवकी आयुदा सों होहु तुमहिं प्रभुदाता ३ भक्तबछल भगवान् हैं दृष्टांत व्यासको ॥ शिशुफ़के जब ज्वा-

सजी लेगये तबमरयो ॥ वेदशास्त्रप्रमाणंतुनकरोत्यधमोनरः ॥ अज्ञानीचमसद्रोहीनरकंयातिनिश्चशः ४ ॥

नृपसोंमलेच्छबोलिकही मिलैंसाहिबको दीजियेमिलाइकरामातिदिखराइये। होइकरामातितोपैकाहेकोकसबकरैंभैंदिनऐसेबांटिमंतनसोंखाइये ॥ ताहीकेप्रतापआपइहांलोंबुलाई हमैंदीजियेजिवायगाइघरचलिजाइये। दईलैजिवाइगायसहजसुभावहीमें अतिसुखपाइपाइपरौमनभाइये १३२ लेवोदेशगांवयातेमेरोकछूनामहोइचाहियेनकछुदईसेजमणिमईहै। धरिलईशीशदेउसंगदशबीसनरनाहींकरआयेजलमाझडारिदईहै ॥ भूपसुनिचौंकिपरयोलावोफेरिआयेकही कहीनेकुआनिकेदिखावोकीजैनईहै। जलतेनिकासिबहुभांतिगहिडारीतट लीजियेपिछानिदेखिसुधिबुधिगईहै १३३ आनिपरयोपाईप्रभुपासतेबचाइलीजै कीजैएकबातकभूंसाधुनदुखाइये। लेइयहीमानिफेरिकीजियेनसुधिमेरी लीजियेगुणनिगाइमन्दिरलोंजाइये ॥ देखीद्वारभीरपगदासीकटिबांधीधीर करसोंउछीरकरिचाहैंपदगाइये। देखिलीनावेईकाहूदीनीपांचमातचोट कीनीधकाधुकीरिसमनमेंनआइये १३४ बैठेपिछवारेजाइकीनीजुउचितयह लीजियेलगाइचोटमेरेमनभाइये। कानदैकेसुनोअबचाहतनऔरकछू ठौरमोकोयहीनितनेमपदगाइये ॥ सुनतहीआनिकरिकरुणाविकलभजे फेरयोद्वारइतेगहिमन्दिरफिराइये। जेतिकवेसोतीमोतीआवसीउतरि गई भई हियेप्रीतिगह्योसबसुखदाइये १३५ ॥

साधु न दुखाइये ॥ दोहा ॥ साधुसताये हानित्रय अर्थ धर्म अरु वंस ॥ टीलानीके देखि ले कौरव रावण कंस ॥ १ ॥ सुधि मेरी ॥ अतिशीतलता कहकरे कालूकेडेंलागि ॥ मथतमथतही ऊपजे चंदनहूतेआगि ॥ २ ॥ घासवासना छियेवन ऊपरते जरिजाइ ॥ विपयीवरपाकेमिले ऊगेअंकुरपाइ ॥ ३ ॥ पदगाइये ॥ पद ॥ हीनहा जातिमेरी यादवराइ ॥ कलिमेंनामा इहांकाहेको पठाइ ॥ ४ ॥ ताल पखावजबाजे पातुरि नाचै । हमरीभक्ति वीठलकाहेकोराचै ॥ पढरप्रभुजूवचनसुनीजै । नामदेवस्वामी दरशनदीजै ॥ ५ ॥ मंदिरके पिछवारे वैठिकै यहपदगायो तब प्रभुने विचारे । भजन मेरेऊपर कहेउ प्रसन्न ह्वैके तुरत आइ मिले अवलूकहे ...री ॥ ५ ॥ मंदिर फिरायो ॥ पद ॥ उठिभाई नामदेवपरे ह्वै ... । यहांदुवे तिवारी वैठेआइ ॥ ब्राह्मणबनिया उत्तमलोग ... नहीं नामदेवतुम्हरो संयोग ॥ नामदेव कमरी लई उठाइ । मंदिर पाछे वैठे जाइ ॥ पायँनघुँघुरू हाथनि ताल । नामदेव गावै गुणगोपाल ॥ मंदिर ऊपर ध्वजा फरहरै । उलटि द्वारनामानन करै ॥ नामदेव नरहरि दर्शनपाये । वांहपकरि ढिग लै वैठाये ॥ दोऊ हिलिमिलि एकै भये । दासकबीर अचंभैरये ॥ १ ॥

औचकहीघरमांझसांझही अगिनिलागीवड़ीअनुरागी रहिगई सोऊडारिये । कहेआयोनाथसवकीजियेजूअंगीकार हँसेसुकुवारहरिमोहींकोनिहारिये ॥ तुम्हगेभवन औरुसकैकौनआइ यहां भयेयोंप्रसन्नछानिछाईआपसारिये । पूछैंआनिलोगकौनेछाईहोछवाइलीजेदीजैजोईभावैतनमनप्राणवारिये १३६ सुनौऔरपरचेजेआयेनकवित्तमांझवांझभईमाताक्योंनजौनमतिपागीहै । हुतौएक साहतुलादानकोउछाहभयो दयोपुरसबैरहौनामदेवरागीहै ॥ लेवौजूबुलाइएकदोइतौफिराइदियेतीसरेसोंआये

कहाकहौंबड़भागीहै । कीजियेजूक्रूअंगीकारमेरोभलो होइ भयोभलोतेरोदीजैजोपैआशलागीहै १३७ जाकेतुल सीहैऐसेतुलसीकेपत्रमांझ लिख्यो आधोरामनाम यासों तौलिदीजिये । कहापरिहासकरौढरौहैदयालदेखिहोत कैसोख्यालयाकोपूरोकरौरीझिये॥ लायोएककांटौलैचढ़ा योपातसोनासंग भयोबड़ोरंगसमहोतनाहिंरीझिये। लई तोलराजजासोंतुलैमनपांचसात जातिपांतिहूंकोधनधरे पै नधीजिये १३८ पर्योशोचभारीदुखपावैनरनारी नाम देवजूविचारीएककामऔर कीजिये । जितेव्रतदानऔअ स्नानकियेतीरथमें करियेसंकल्पयापैजलडारिदीजिये ॥ करेहूउपाइपातपलाभूमिगाड़ेपाइ रहेवेखिसाइक्योइत नोहीलीजिये । लैकैकहांधरेंसरवरहूनकरैंभक्तिभावसों लैभरेहियेमति अतिभीजिये १३९ ॥

कीजियेजू अंगीकार ॥ श्लोक ॥ जलेविष्णुस्स्थलेविष्णुर्वि- ष्णुःपर्वतमस्तके ॥ ज्वालामालाकुलेविष्णुः सर्वंविष्णुमयंजगत् २ पूछेंआनिलोग वैटिपादियोतजाइमाई । लोग परोसिनपूछैरे नामा किनि यह छानिछवाई । ताते अधिक मँजूरी देहौं वेगिहि देहु बताई । वैठिया प्रीति मँजूरी मांगे जो कोइ छानि छवावे । भाई बंधु सगेसों तोरे वैटिया आपहि आवै । जूठे फल शवरी के खाये ऋषिस्थान बिसरावे । दुर्योधन के मेवा त्यागे शाकविदुर घर खावै । कंचन छानि पन्नपटदीने प्रीति की गांठि जुराई । गोविंद के गुण भनै नामदेव जिन यह छानि छवाई ॥ जा के तुलसी हैं ॥ दशमे । कच्चित्तुलसिकल्याणि गोविन्दचरणप्रिये१ तापेस्कंदपुराण की कथा में है इंद्रलोकते पारिजात लाये नारदजी याते व्रत दान को बड़ो अभिमानहो ताके खोइवे को यतन कियो । जैसे ऊपर को ज्वर गयो भीतर को विषमज्वर खोयो चाहै व्रतदान

धरवाये सो पूरे न भये ॥ श्लोकः॥ गोकोटिदानंग्रहणेषुकाश्यां माघेप्रयागेयदिकल्पवासी ॥ यज्ञायुतंमेरुसुवर्णदानं गोविन्दनामानभवेत्तुतुल्यम् २॥ कवित्त ॥ मेरुसम हेमदान रतन अनेकदान गजदान भूमिदान अन्नदान करहीं। मोतिन के तुलादान मकर प्रयाग न्हान ग्रहण में काशीवास चित्तमाहिं धरहीं ॥ सेजदान कन्यादान कुरुक्षेत्र गऊदान येते माहिं पापहू तो नेकु नाहिं हरहीं। कृष्ण के शरीर को सुनाम एकबार लिया पापी तीनलोक के सो क्षण माहिं तरहीं ३ ॥ गऊ दान कैसो है जैसे च्यवन ऋषीश्वरको ४ ॥

कियोरूपब्राह्मणकोदूबरोनिपटअंगभर्योहियेरंगव्रत परवैकोलीजिये। भईएकादशीअन्नमांगतबहुतभूखो आजतौनदेहौंभोरचाहैजितौलीजिये ॥ कर्योहठभारी मिलिदोऊताकोशोरपर्यो समझावैनामदेवयाकोकहालीजिये। बीतेयामचारिमरिरहेयोंपसारिपाईं भावपैनजानेदईहत्या नहींत्रीजिये १४० रचिकैचिताकोविप्रगोदलैकेबैठेजाइ दियोमुसुकायमैंपरीक्षालीनीतेरीहै । देखीसोसचाईसुख दाईमनभाईमेरेभयेअन्तर्द्धानपरेपाँइप्रीतिहेरीहै ॥ जागरणमांझहरिभक्तनकोप्यासलागी गयेलेनजलप्रेतआनिकीनीफेरीहै । फेंटतेनिकासितालगायोपदततकालबड़ेई कृपालरूपधर्योछविहेरीहै १४१ ॥

गायोपद ततकाल ॥ पद ॥ ये आये मेरे लम्बक नाथ । धरणी पाइस्वर्गलों माथो योजन भरि भरि हाथ । शिव सनकादिक पार न पावें तेसइ सखा विराजत साथ । नामदेव के स्वामी अन्तर्यामी कीनों मोहिं सनाथ १ ॥ नवरस ॥ छप्पै ॥ श्रीवृषभानुकुमारि हेत शृंगाररूप भय । हास्य दास्यरस हरेमात बंधनकरुणामय । केशी प्रति आनिरुद्रवीर मारयो वत्सासुर । भय दावानल

पान कियो घभिस्सवकीउर। अतिअद्भुत वने विरंचिमति शांत सुसंतति शोच चित। कहिकेशव सुमिरों मैं सदा नवरस में व्रज राज नित २ ॥ कवित्त ॥ बीरही को काम याते समर मनाइवो को करुणा दिखाइ दूती विरह सुनाई है। उलटि विहारसोई अदभुत कोई लखि लवर घृणाते सीखी हास्यरीति पाई है ॥ गुरुजन आहट भयानक विभत्स अंत सतहू मनाइवो न आइवो रुदाई है। औरनि सदन मांहिं रसराज जान कैसे राजाके सदन माहिं सवकी समाई है ॥ ३ ॥ जयदेव कवि वड़ोभक्तराजहै ४। ५। ६ ॥

मूल ॥ जयदेवकविनृपचक्कवैखँडमँडलेश्वरआनकवि। प्रचुरभयोतिहुँलोकगीतगोविंदउजागर। कोककाव्यनवरस्ससरसशृंगारकोआगर ॥ अष्टपदीअभ्यासकरैतिहिवुद्धिवढावै। राधारमणप्रसन्नसुनेतहँनिश्चैआवै ॥ शुभसंतसरोरुहखंडकोपदमावतिसुखजनकरवि। जयदेवकविनृपचक्कवै खँडमँडलेश्वरआनकवि ४४ टीका जयदेवकी ॥ किंदुविलुग्रामतामेंभयेकविराजराजभरयोरसराजहिये मनमनचाखिये। दिनादिनप्रतिरूखरूखतरजाइरहे गहेएकगूदरीकमंडलकोराखिये ॥ कहीदेवैविप्रसुताजगन्नाथदेवजूको भयोयाकोसमैचल्योदेनप्रभुभाखिये। रसिकजैदेवनाममेरोईस्वरूपताहि देवौततकाल अहोमेरीकहौसाखिये १४२ ॥

सुखजन॥ दोहा॥ जलजमीत जलरविनदिन खुले निवारण धाम॥ निशिको अमृतपीव यह जानिमुंदे अभिराम १ रूखरूखतर॥ भागवते ॥ सत्यांक्षितौकिंकशिपोःप्रयासैर्वाहौस्वसिद्धेह्युपबर्हणैःकिम्॥सत्यञ्जलौकिंपुरुधान्यपात्र्यादिग्वल्कलादौसतिकिन्दुकूलैः२ चीराणिकिंपथिनसन्तिदिशन्तिभिक्षां नैवाङ्घ्रिपाःपरभृतःसरितोप्यशुष्यन्॥ रुद्धागुहाःकिमजितोवतिनोपपन्नान् कस्माद्

भजन्तिकवयो धनदुर्मदान्धान् ३ ॥ सवैया ॥ सीतजोशीतमताबे शरीर तो चीरिलेपंथके कंथाबनाइये । प्यास लगे बहतो जल पीजिये भूखलगे फल रूखके खाइये ॥ छांहचहै तो गुहागिरिको गहि कानसो आन न रक्षकपाइये। क्योंधनअंधपे जाइगुहाइये किने हित आपनपेको दिखाइये ४ जे कोई भक्तजनहैं तिनको यही शिक्षा कहे उपेक्षाहे जैसे जयदेव कविको सांचप्रभूको आयो हाथ पांव कटाये पै मनमें विषाद न आयो अपने शरीरहीको दोषलगावै ऐसो सांच विश्वास आवै अरु युगयुग के प्रमाण प्रतापी कहावै जयदेवकवि बड़ेभक्तहैं ५ ॥

चल्योद्विजतहांजहांबैठेकविराजराज अहोमहाराज मेरीसुतायहलीजिये । कीजियेविचारअधिकारविसतार जाकेताहीकोनिहारिसुकुमारियहदीजिये ॥ जगन्नाथदेव जूकी आज्ञाप्रतिपालकरौ टरौमति धरौहिये नातोदोष भीजिये । उनकोहजारसोहैं हमकोपहारएक तातेफिरि जावौतुंहंकहाकहिखीजिये १४२ सुतासोंकहततुमबैठी रहौयाहांठौर आज्ञाशिरमौरमेरेनहींजातटारिये । चल्यौ अनखाइसमझाइहारेबातनिसों मनतुमपुज्ञिकहाकीजै शोचभारिये ॥ बोलेद्विजबालकीसों आपनोविचारकरौ धरौहियेध्यानमोपैजातनसँभारिये । बोलीकरजोरिमेरो जोरनचलतकछूचाहोमोईहोहुयहवारिफेरिडारिये १४४ जानीजबभईतियाकियोप्रभुजोरमोपै तौपैएकझोपड़ीकी छायाकरिलीजिये । भईतबछायाश्यामसेवापधराइलई नईएकपोथीमेंबनाऊंमनकीजिये॥ भयोजूप्रगटगीतसरस गोविंदजूको मनमेंप्रसंगशीशमंडनकोदीजिये । यहीएक पदमुखनिकसतशोचपरयो धरयोकैसेजातलाललिख्योम तिरीझिये १४५ ॥

मनतूसमुझ॥ कुण्डलिया ॥ यह विचारचितचेतिये तनक न आवेकाज। बाप न मारी पोदनी बेटा तीरंदाज॥ बेटा तीरंदाज विषैत्यागी तनक न मन। कहा इन्द्रियनि सधे दुखनि में रधे वृथातन॥ नफा आपनेकु सब और तो मूल गँवावे। यों मन के अनुसार चलै तनहूं सुख पावे॥ बापनमारी पोदनी बेटातीरंदाज १ छायाकरिलीजिये॥ श्लोक॥ द्वाविमौपुरुषौलोकेशिरःशूलकरौ परौ। गृहस्थश्चानिरारम्भोयतिश्चसपरिग्रहः २॥ शीशमंडन॥ स्मरगरलखंडनं ममशिरसिमंडनं देहिपदपल्लवमुदारम् ३ लिख्यो मतिरांझिये जयतिपद्मावतीरमण जयदेवकविभारतीभणितमतिशातम् ४॥

नीलाचलधामतामेंपंडितनृपतिएक कर्योवहीनामधरिपोथीसुखदाइये। द्विजनिबुलाइकहीयहीहैप्रसिद्धकरौ लिखिलिखिपढ़ौदेशदेशनिचलाइये॥ बोलेमुसुकाइविप्रक्षिप्रगोंदिखाइदई नईयहकोईमतिभ्रतिभरमाइये। धरी दोउमंदिरमेंजगन्नाथदेवजूके दीनीयहडारिवहहारलपटाइये १४६ पर्योशोचभारीनृपनिपटखिसानोभयोगयो उठिसागरमेंबूड़ोयहबातहै। अतिअपमानकियोकियेमैं बखानसोई गोइजातिकैसेआंचलागीगातगातहै॥ आज्ञाप्रभुदईमतिबूडैतूसमद्रमांझ दूसरोनग्रन्थवैसोहथातनपातहै। द्वादशश्लोकलिखिदीजैसर्गद्वादशमें ताहीसंगचलैजाकीख्यातपातपातहै १४७ सुताएकमालीकाजु बैंगनकीबारीमांझ तोरैबनमालीगावैकथासर्गपांचकी। डोलैंजगन्नाथपाछेकाछेअङ्गमिहीझँगा आछेकहिघूमैसुधिआवैबिरहाचकी॥फट्योपटदेखिनृपपूछीअहोभयोकहा जानतनहमअवकहौंबातसांचकी। प्रभुहीजनाईमनभाईमेरेवहीगाथालायेवहबालकीकोपालकीमेंनांचकी १४८॥

बोले मुसिकाई ॥ दोहा ॥ अकथ कहानी प्रेमकी कही न मानै कोइ ॥ कोइकाजाने खलकमें जाशिर बीनी होइ ॥ १ ॥ जैसे लैलैने मजनूको बुलायो अग्निमें तापे पोस्तीको दृष्टांत अरु पतंग माखी को २ विरह आंचकी ॥ श्लोक ॥ धीरसमीरे यमुनातीरे वसतिवने वनमाली। गोपी पीनपयोधर मर्दन चंचल कर युगशाली। पीन-पयोधर भारभरेण हरिंपरिरभ्यसरागम्। गोपवधूरनुगायतिका चिदुदंचितपंचमरागम्। कापिविलास विलोलविलोचनि खेलत जनितमनोजम् ३ ॥

फेरोनृपडोंडीयहओंडीवातजानीमहा कहाराजारंक पढ़ैनीकठौरजानिकै। अचगमधुरऔरुमधुरसुरनिहीसों गावैजवलालप्यारीढिगहीलैमानिकै॥ सुनोयहरीति एकमुगलनेधारिलई पढ़ैचढ़ेघोरेआगेश्यामरूपठानि कै। पोथीकोप्रतापस्वर्गगावतहैंदेववधू आपुहीजोरीझै लिख्योनिजकरआनिकै १४९ पोथीकीतौवातसवकही मैंसुहातहिये सुनोऔरवातजामेंअतिअधिकाइये। गांठ मेंमुहरमगचलतमेंठगमिले कहौकहांजातजहांतुमचलि जाइये॥ जानिलईआपखोलिद्रव्यपकराइदियो लियोचा होजोईसोईसोईमोकोलाइये।दुष्टनिसमभिकहीकीनीइन विद्याअहो आवैजोनगरइन्हैंवेगिपकराइये १५० ॥

श्याम रूपठानिकै॥ मीरमाधव लाहौर के मुगल फ़क़ीरभये सो ॥ पद ॥ दिल जानप्यारे श्याम टूकगली असाड़ी आवरे ॥ सांवरे वदन ऊपर कोटि मदनवारे तेरी जुल्फैं दिलदी कुल्फैं दोऊ नैन हैं सितारे। तेरी खूबी के देखने को नैन तरसें हमारे ॥ जलजो कठोर होवै मीन क्यों जीवै विचारे। कृपा कीजै दर्शन दीजै मीरमाधो को नंद के दुलारे १ ॥ पोथी को प्रताप॥ राजा वीर विक्रमाजीत की सभामें देवता आये तब राजाने सभा में

गीतगोविंद गवायो देवताओंने कही याको तो हमारे सदा गावैहैं याको फल सुखकी उत्पत्ति करैहैं २ ॥ द्रव्यपकरायो ॥ श्लोक ॥ लोभमूलानिपापानि रसमूलानिव्याधयः ॥ स्नेहमूलानिदुःखानि तस्मादेतत्त्रयंत्यजेत् ३ ॥ समझि कही दुष्ट तीनि प्रकारके हैं। उत्तम मध्यम कनिष्ठ सज्जन तीनि प्रकार के हैं। आगे गुणिन वेद निगुणारविंदकरि बताये हैं ४ ॥

एककहैडारोमारिभलोहैविचारयही एककहैसारोमति धनहाथआयोहै । जोपैलेपिआनिकहूंकीजियेनिदानकहा हाथपांवकाटिवड़ेगाढ़पधरायोहै ॥ आयोतहांराजाएकदेखिकैविवेकभयो छयोउजियारोऔप्रसन्नदरशायोहै । बाहिरनिकासिमानौचन्द्रमाप्रकाशरासि पूछोइतिहासकह्योऐसोतनपायोहै १५१ बड़ोईप्रभावमानिसकैकोबखानि अहोमेरेकोऊभूरिभागदरशनकीजिये । पालकीबिठाय लियेकियेसबढूंढ़िनीके जीके भयेभायेकछुआज्ञामोहिंदीजिये ॥ करौहरिसाधुसेवानानापकवानमेवा आवैंजोई सन्ततिन्हेंदेखिदेखिभीजिये । आयेवेईठगमालातिलककिलककियेकिलकिकैकहीवड़ेबन्धुलखिलीजिये १५२ नृपतिबुलाइकहीहियेहरिभायभर ढरेतेरेभागअवसेवाफल लीजिये । गयोलेमहलमांझटहलल गायेलोग लागेहांन भोगजियशंकातनछीजिये ॥ मांगैवारवारविदाराजानहिंजानदेत अतिअकुलायकहीस्वामीधनदीजिये । देकै बहुभांतिसोपठायेसंगमानसहू आवोपहुंचाइतवतुमपर रीझिये १५३ ॥

हाथ पांवकाटे ॥ भगवान् में भलो सनेह कियो तहां टीकाकार ने लिख्यो है जयदेव मेरेही रूप है सो हाथ पांव कटाइ कै

आपसों कियो ॥ फेरि ख्यात करिवेको आछे करिदिये कहूं नाम कौनको लीजे कोऊ काल कोऊ ईश्वर कोऊ ग्रह ये न जान्यो साक्षात् धर्मही हैं ऐसे परीक्षित सों कहीही हिये हरिभाव भारेही हृञ्हरणे धातुहै ॥ हारिणी जो चोरी ताके अर्थ विषेप्रवर्त हैं। ताते समझौती में समभाये हैं ॥ श्रीदामोदर नारायण वृंदावन वासुदेव मधुसूदन मुरारी १ ॥

पूछैनृपनरकोऊतुम्हरीनसरवरि जितेआयेसाधुऐसी सेवानहिंभईहै ! स्वामीजूसोंनातोकहाकहोहमखाहिंहहा राखियेदुराइयहवातअतिनईहै ॥ हुतेइकठौरेनृपचाकरी में तहांइनाकियोईविंगारुमारिडारौंआज्ञादईहै । राखेहम हितजानिलेनिदानहाथपांव वाहीकेइंसानहमअवभरिल ईहै १५४ फाटिगईभूमिसिवठगवेममाइगये भयेयेचकित दौरस्वामीजूपैआये हैं । कहीजितीवातसुनिगातगातकां पिउठे हाथपांवगोडेभयेज्योंकेत्योंसुहायेहैं ॥ अचरजदो ऊनृपपासजाप्रकाशकिये जियेएकमुनिआयेवाहीठौरधा ये हैं। पूछैवारवारशीशपायँनमेंधारिरहे काहिपैउघारि सेमेरमनभायेहैं १५५ ॥

भरिलई ॥ दोहा ॥ सिंह खाल गाडर पहिरि भेष सिंह को धारि ॥ वोलनि वोली भेड़की कूजनिडारी फारि १ फाटिगई भूमि तौ दंड क्यों न दियो भेपजानि दण्ड न दियो भेष में वट्टे न लगे जैसे अपरस गुरू सपरस चेला ॥ कोउने ॥ वस्तर उठायके मारे अपरस वनोरे राजा के प्यादे ने जान्यो प्रह्लाद या बलि होहिंगे सो इच्छाचारी सिद्ध होइँगे वैकुंठलोक ते आये पाताल लोकको गये जैसे दण्डहू दियो उत्कर्ष न राख्यो २ ॥ दोहा ॥ घटि वढ़ि वातें भेपकी कीजे नाहिं वनाइ ॥ गुरुको वानो परशुराम लीजैकंठ लगाइ ३ साधनको घरदूरि है समझौ चित्तलगाइ ॥

परशुराम विन हरि कृपा कबहूं जानि न जाइ ४ प्रगट अवगुण दीसैं तौ जैसे नारद सनकादिकनमें भलोइ करैं चेला सो कही कोऊ कैसोई बुरो कहे ये तू मतिकहै ऐसे वृक्ष समय में फलहोइ ऐसे हाथ पांउ पुण्य पापको फल समप्राप्तिहोय ॥

राजाअतिअरगहीकहीसबबातखोल निपटअमोल यहसंतनकोभेशहै। कैसोअपकारकरौतऊउपकारकरैं ढरैं रीतिआपनीहीसरसुदेशहै ॥ साधुतानतजैंकभूजैसेदुष्ट दुष्टता न यहीजानिलीजैमिलैंरसिकनरेशहै। जान्योजब नामठामरहौइहांबलिजाव भयोमैंसनाथप्रेमभक्तिभईदे शहै १५६ गयोजालिवाइल्याइकविराजराजतिया किया लैमिलापआपरानीढिगआईहै। मर्योएकभाईवाकोभई योंमौजाईसती कोऊअंगकाटिकोऊकूदिपरीधाईहै॥ सुन तहीनृपवधूनिपटअचंभोभयो इनकौनभयोफेरिकहिसमु झाईहै। प्रीतिकोनरीतियहबड़ीविपरीतिअहो छूटैतन जयैंप्रियाप्राणछुटिजाईहै १५७ ॥

प्रीतिकी न रीति ॥ सोरठा ॥ सुख देखे की प्रीति सब कोऊ ऐसीकरै॥ वेतो न्यारे रीति जिये जियें मूये मरैं १ कवित्त ॥ सती कहैं येरी मेरी मतिहों सुमति कहौं प्रेमहैं लजावे मति यहै पीव-जोइये। साखिदै आगिनि जार हथलेवा हाथ जोरै जाके साथ दीजे ताके साथ जीव खोइये॥ कौन आगि को न आंचवैर ताहि लिये वरै ताको कहा वरै काहु कहे काज रोइये। जाके संग घने दिन सेज माहिं सोयखोये ताके संग एकदिन आगिहू में सोइये॥ कवित्त ॥ अंगराग अंगकरि सोती माल ग्रीव धरि बैठी वाल सोहै अति चांदनी विमल में। आंगी अंग पहरै अनुराग रंग गहरै औ वारम्बार वलकै यों योवन के वलमें॥ त्योंहीं काहूआली नंदनंदन आगम कह्यो सामुही निहारी मानों नारी है अनल में। सोतिन

के हार की न छार रहो उरपर अंगराग उड़िगो अबीर ह्वैके पल में २ ॥ दोहा ॥ सुफल फलै मनकामना तुलसी प्रेम प्रतीत ॥ त्रिया आपने करनसों लिखि पूजति है भीति ३ साधुता न तजै ॥ जैसे शिष्यपै वेगार गुरु कही गारी दै ऐसे ४ ॥

ऐसीएकआपकहिराजासोंसुनायोयहीं लैकेजाओबाग स्वामीनेकुदेखौंप्रीतिको । निपटविचारीकुरीदेतमेरेगरैछु री तियाहठमानकरीऐसेहीप्रतीतको ॥ आनिकहैआप पायेकहीयाहीभांतिआइ कैसौडिगरियादेखिलोढिगईरी तिको । बोलीभक्तवधूअजूएतौहैंबहुतनीके तुमकहाओ चकहीपावतहौमीतिको १५८ भईलाजभारीपुनिफेरिकै सँभारी दिनवीतिगयेकोऊतबतबवहीकीनीहै । जानिगई भक्तवधूचाहतपरिक्षालियो कहीअजूपायेसुनितजीदेह भीनीहै ॥ भयोमुखस्वेतरानीराजाआयेजानीयह रची चिताजरौमतिभईमेरीहीनीहै । भईसुधिआपुकोजुआयेवे गिदौरिइहां देखीमृत्युसाधनृपकहीभईहीनीहै १५९ बो ल्योनृपअजूमोहिंनरईबनतअब सबैउपदेशलैकेधूरिमें मिलायोहै । कह्योनहुभांतिऐपैआवतनशान्तिकिहूं गाई अष्टपदीसुरदियोतनज्यायोहै ॥ लाजनकोमारयोराजाचा हैअपघातकियो जियोनहींजातभक्तिलेशहूनआयोहै । क रिसमाधाननिजग्रामआयेकिंदुबिल्व जैसोकछूसुन्योयह परचौलैगायोहै १६० ॥

राजाको जयदेवजीके रंगको रंग क्यों न लग्यो १ हरिविलास काव्ये ॥ भवज्वरनिवृत्तये पतितपावन स्वत्पदम् ॥ प्रबलासिद्धौषधं हृदि सकृत् सुधीर्धारयेत् २ ॥ अपथ्यमिहवर्जयेद्विषयवामना संज्ञकम ॥ वसेतविजनवने फलदलाम्बुसुशीलयन् ३ ॥ गीतगोविंदे ॥

वहातिमलयसमीरेमदनमुपनिधाय।स्फुटतिकुसुमनिकरे विरहि हृदयदलनाय॥तत्रविरहे वनमाली सखि सीदति ४ करिसमाधान॥ दोहा॥ गई मित्रकी मित्रता रहेउ कथा को भाव॥ तोहिं न वेटा भूलही मोहिंपूछको घाव ५॥

देवधनीधाराहै अठाराकोशआश्रमते सदाअसनान करैंधरैंयोगताईको। भयोतनवृद्धतऊछांड़ैंनहींनित्यनेम प्रेमदेखिभारीनिशिकहीसुखदाईको॥ आवौजनिध्यान करौकरौजनिहठऐसो मानीनहींआऊँमैंहींजानौंकैसेआई को। फूलेदेखौकंजजबकीजियोप्रतीतिमेरी भईवाहीभांतिसेवैअबलौंसुहाईको १६१॥ मूल॥ श्रीश्रीधरश्रीभागवतमेंपरमधर्मनिर्णीतकिय॥ तीनिकांडएकत्वसानिकै अज्ञबखानत। करमठज्ञानीऐंचिअर्थकोअनरथमानत॥ परमहंससंहिताविदितटीकाविस्तारयो॥ षटशास्त्रनिअविरुद्धवेदसम्मतहिविचारयो। प्रभुपरमानन्दप्रसादते माधौसुकरसुधारिदिय। श्रीश्रीधरश्रीभागवतमेंपरमधर्म निर्णीतकिय ४५॥

छांड़ैंनहीं नित्यनेम॥ दोहा॥ उत्तम मध्यम अधमनर पाहन सिकतापानि॥ ज्योतिअनुक्रम जानिये वैर व्यतिक्रम मानि १ सांचौ पनके गंगाजी आपही पधारीं झूठेपन वारेनको मूठी चनाहू न मिलै जैसे कृपनभोगीको दृष्टांत घोड़ाके मलीदाको अरु देखन हारेको २ साईं शक्करखोरको शक्करहू पहुंचावै। वेविश्वासीजीवजे एकापर ज्यों धिवावैं॥ ३॥ श्रीधरगीतायां॥ सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणंव्रज॥ अहंत्वांसर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामिमाशुचः ४॥ षट्शास्त्रछप्पै॥ कर्ममिमांसाकहै देहवशकर्मैंभुपावै। कालाधीन वैशेषन्यायकरतार बतावै॥ नित्यानित्यविचार सांख्यमत ऐसोभावै। पातंजलि हठजोति योग अष्टांग दिखावै। सबमें व्यापक

ब्रह्म है वेदांतशास्त्र ऐसी कहे । षटशास्त्र सकल विरुद्ध ये हरि ज्ञानी द्रष्टा हैरहे ५ ॥ परम धर्म ॥ प्रथमे ॥ सवैपुंसांपरोधर्मोयतो भक्तिरधोक्षजे ॥ अहैतुक्यप्रतिहता ययात्मासम्प्रसीदति ६ ॥

टीकाश्रीधरस्वामीजीकी ॥ पंडितसमाजबड़ेबड़ेभक्त राजजिते भागवतटीकाकरिआपसमेंरीझिये । भयोजूवि चारकाशीपुरी अविनाशीमांझ सभाअनुसारजोईसोईलि खिदीजिये ॥ नाकोतौप्रमाणभगवानविंदुमाधवजूशोधो यहीवानधरिमन्दिरमेंलीजिये । धरेसवजाइप्रभुसुकरव नाइदियो कियोसर्वोपरिलैकेचल्योमतिधीजिये १६१ ॥ मूल ॥ श्रीकृष्णकृपाकोपरप्रगटविल्वमंगलमंगलस्वरु प ॥ करुणामृतसुकवित्तउक्तिअनुछिष्टउचारी । रसिक जनजिज्योंजीवहृदयहारावलिधारी ॥ हरिपकरायोहाथव हुरितहँलियोछुटाई । कहाभयोकरछुटैंबदौतौहियेतेजाई ॥ चिंतामणिसंगपाइकैब्रजवधूकेलिवरणीअनुप । श्रीकृष्ण कृपाकोपरप्रगटबिल्वमंगलमंगलस्वरुप ४६ ॥

कांडकरंडे कपूर कपास धरी दोऊ ॥ श्लोक ॥ वागीशा यस्य वदनेलक्ष्मीर्यस्यतुवक्षसि ॥ यस्यास्तेहृदयेसंवित्तंनृसिंहमहंभ जे १ ॥ दोहा ॥ श्रीधरस्वामी तो मनो श्रीधर प्रगटे आन ॥ तिलक भागवत को कियो सब तिलकन परमान २ ॥ अघनाशी॥ सोरठा ॥ मुक्ति जन्म महि जानि ज्ञान खानि अघहानिकर। जहँ वस शम्भु भवानि सो काशी सेइय कस न ३ कहाभयो ॥ श्लोक ॥ हस्तमुत्क्षिप्ययातोसिबलात्कृष्णकिमद्भुतम् ॥ हृदयाद्य दिनिर्यासिपौरुषंगणयामिते ४ ॥ चिंतामणि पाइके ॥ दोहा ॥ पण्डित पूजा पाकदिल ये दिमाक मतिलाव ॥ लगे जरव श्रखि- यान की सबै गरब उड़िजाव ५ ॥ मांझ बोलनि हसनि चलनि वानैतानि लै सहूर जुधाया । धीरज धरम शरम समझ कादरवर

गोल भगाया ॥ भर भर वासा कियो अकेला इस्के लिये ठहराया॥ वल्लभ रसिक इन इश्क हुजागी योगी मन पकराया ६ ॥ दोहा ॥ तानै तान तरंगकी वेधन तनमन प्रान ॥ कला कुसुम शर शरन की अति अयान तनत्रान ७ ॥

टीकाबिल्वमंगलकी ॥ कृष्णवेनातीरएकद्विजमतिधीररहै ह्वैगयोअधीरसंगचिंतामणिपाइकै। तजीलोकलाज हियेवाहीकोजुराजभयो निशिदिनकाजवहीरहैघरजाइकै ॥ पिताकोसराधनेकुरह्यो मनसाबिदिनसेसमै अबेश चल्योअतिअकुलाइकै। नदीचढ़िरहीभारीपैपैनअवारी नाव भावभर्योहियोजियोजाततंचिजाइकै १६२ करत विचारवारिधारमैंनरहै प्राणनातेभलीत्रागमित्रसन्मुखको जाइये। परेकूदिनीरकत्रुधिनाशरीरकीहै वहीएकपीरक वदरशनपाइये ॥ पावतनपारतनहारिभयोबूड़िवेको स्तन कनिहारिमानीनावमनभाइये। लगेईकिनारेजायचल्यो पगधाइचाइ आयेपटलागेआधीनिशिसोघिहाइये १६३ अजगरघूमिझूमिभूमिकोपरसकियो लियोईसहाइ चढ़ो छातपरजाइकै। ऊपरकेंवारलगेपरयोकूदिआंगनमें गि रयोयोंगरतगांजागीशोरपाइकै ॥ दीपकवराइजोपैदेखैं बिल्वमंगलहैं दड़ोईअमंगलतूकियोकहाआइकै। जल अन्हवायसूखेपटपहरायहाइ कैपेकरिआयोजजनारद्वार धाइकै १६४ ॥

हिये वाहीको जुराज्यभयो ॥ कवित्त ॥ सरकन के नन किधौं पन्नग के पूत किधौं राजन अभन नागराज फैले नार हैं। गन्ध तूल गुणग्राम शोभित सरस श्याम कामतृण कानन कुटे के पै कुठार हैं ॥ कोपकी किरण जलनील के जराके तन उपमा अनंत

चारु चमर शृंगार हैं। कारे सटकारे भीने सोंधेते सुगंधवास ऐसे वलभद्र नववाला तेरे वार हैं १ ॥ भूलना ॥ गुलों विचों गुलचन्यो सेपु ल्यानही पर झुलसी। जलों गुलकलंसतत्रासी वाहुहुसन तेरी तुलसी ॥ दाने देखि दिवाने थासी अकलतिनादा भुलसी। अवजी पाकन जरिके देखन वारे छत्रातिना शिरहुल्सी २ ॥ दोहा ॥ तनक न रहै विरक्तता लगे दृगन की थाप। कहुं गीता माला कहूं कहुं घटुआ कहुं आप ३ ॥

नौकापठवाइद्वाररज्जुलटकाईदेखि मेरेमनभाईमैंतौ तवैलईजानिकै। चलौदेखैंअहोयहकहाधौंप्रलापकरै दे-ख्योविपधरमहाखीजीअपमानिकै ॥ जैसोमनमेरेहाड़चा मसोंलगायोतैसो श्यामसोंलगावेतोपैजानियेसयानकै। मैंतोभयेभोरभजौंयुगलकिशोरअव तेरीतुहीजानेचाहौ करौमनमानिकै १६५ खुलिगईआंखैंअभिलाखैंरूप माधुरीको चाखैं रसरंगऔडमंगअंगन्यारिये। वीणलैव जाईगाईविपिननिकुंजक्रीड़ा भयोसुखपुंजजापैकोटिविषै वारिये। वीतिगईरातिप्रातचलेआपआपकोजु हियेवहीं जायदृगनीरभरिडारिये। सोमगिरिनामअभिरामगुरु कियोआनिसकैकोवखानिलालभुवननिहारिये १६६ ॥

प्रलापोनर्थकंवचइत्यनरः १ हाड़ चामसों ॥ कवित्त ॥ देह तौ मलीन मन वहुत विकार भरे ताहू मांझ जरा वात पित्त कफ खांसीहै। कवहुंक पेटपीर कवहुंक शिरवाहु कवहुंक आंखि कान मुख में विथासी है ॥ औरहू अनेक रोग मलमूत्र भरे सदा हरि तजि और भजे साधुकरे हांसी है। ऐसो जो शरीर ताहि अपनो के मानिरहै सुन्दर कहत यामें कौन सुखरासी है १ मांस की गरैंथीं कुच कंचन कलश कहै मुख कहै चंदजो शलेपमा को घरु है। दोऊ भुज कमल मृणालनाभ रूपकहै हाड़हीके खंभा तासों

कहै रंभातरु है ॥ हाड़ही के दंत आहिं हीरामोती कहै तासों चामको अधर तासों कहै बिम्बाफरु है। ऐसी झूठी युगति बनावें वे कहावें कवि तापर कहत हमें शारदा को वरुहै २ ओस कैसो मोती और पानी को बबूला जिमि ताचोकरि मान्यो सोई बूड़्यो मंझधार है। एक स्त्री का पुत्रगुरु पायसो साधुपै छुटायो ऐसे चिन्तामणि कही भोर मैंतो जाहुंगी तेरी तूजानै॥

रहेमोदरमरससागरमगनभये नयेनयेचोजकेशलोकपादिलीजिये। चलेवृन्दावनमनकहैकबदेखौंजाइ आयेमगमांझएकठौरमतिभीजिये॥ पखोबड़ोशोरदृगकोरकैनचाहैकाहू तहांसरतियान्हातदेखिआंखैंरीझिये। लगेवाकेपाछेवाछकाछेकीनसुधिकछू गईघरआछेरहैद्वारतनछीजिये १६७ आयोवाकोपतिद्वारदेखेभागवतठाढेबड़ोभागवतअतिपूछीसोजनाइये। कहीजूपधारौपांवधारौगृहपावनकोपावनिपखारौंजलधारौंशीशभाइये॥ चले मौनमांझमनआरतमिटाइबेको गाइबेकोजोईरीतिसोईकोबताइये। नारिसोंकह्योहोतूशृंगारकरिसेवाकीजेलीजैयोंसुहागजामेंवेगिप्रभुपाइये १६८चलीहैशृंगारकरिथारमेंप्रसादलैकेऊंचीचित्रसारीजहांबैठेअनुरागी हैं। ज्ञानकमनकजाइजोरिकरठाढ़ीरही गहीमतिदेखिदेखिनूनवृत्यभागीहैं॥ कहीयुगसुईल्याबोलाइदईगहीहाथफोरिडारीआंखेंअहोबड़ीयेअभागीहैं। गईपतिपासश्वासभरतनबोलिआवैबोलीदुखपाइआयेपांयपरेरागीहैं १६९॥

लागे वाके पाछे॥ भागवते॥पठकाःपाठकाश्चैव ये चान्ये शास्त्रचिन्तकाः॥ सर्वेव्यसनिनोमूढा यः क्रियावान्सपण्डितः १ कुंडलिया॥ अग्रदास को वसकहा परे कूपतन धाइ॥ कूकरचोक चढ़ाइये

चाकी चाटन जाइ ॥ चाकी चाटन जाइ आदि अभ्यास न छाड़ै। बरजत वेदपुराण विषै पकरत हाि हाड़ै ॥ बच्छ पयोधर पान कहौ तेहि कौन सिखावै। अनभोजनम अनेकअविद्याहीको धावै ॥ नूनवृत्यभागीहैं ॥नारीस्तनभरजवननिवेशं दृष्ट्वा मायामोहावेशम् एतन्मांसवसादिविकारं मनसि विचारय वारंवारम् ॥ भज गोविन्दं भजगोविन्दं गोविन्दं भज मूढमते ॥

किये अपराधहमसाधुको दुखायोअहो बड़ेतुमसाधु हम साधुनामधस्योहै । रहौअजूसेवाकरैकरौतुमसेवा ऐसी तैसीनहींकाहूमांभमेरोउग्रह्योहै ॥ चलेसुखपाइहृ गभूतसेलुटाइदिये हियेईकी आंखिनसों अनेकामपस्यो है। बैठेवनमध्यजाइभूखेजानिआपआपे भोजनकराइ चलोआयादिनढस्योहै १७० चलेलैगहाइकरछायाघन तरुतर चाहतछुटायोहाथछोडिकैमैनीकोहै। ज्यांज्यांवल करैत्योंत्योनजतनयेउअरे लियोछुड़ाइगह्योगाढ़ोरू पहीकोहै॥ ऐसेहीकरतवृन्दावनघनआइलिये पियोचाहै रससवजगलाग्योफीकोहै। भह्उतकंठाभारीआयेश्रीवि हारीलाल मुरलीवजाइकैसुखिभायोजीकोहै १७१ ॥

हसनाम साधु ॥ दोहा॥ गलियनि में हर्षनफिरैं साधुकहैं सब कोइ ॥ श्वान नाग वाघा धस्यो खोजी बाघ न होइ १ रूपहीको है ॥हाथ छुड़ाये जातहो निवल जानिकै मोहिं ॥ हियमेंते जब जाहुगे सवल बदौंगो तोहिं २ ॥ कवित्त ॥ प्रीतम सुजान मेरे हित के निधान कहौ कैसे रहैं प्रान जोपै अनखि रिसाइहौ। तुम तौ उदार दीनहीन आइ पस्यो द्वार सुनिये पुकार याहि कौलौं तरसाइहौ ॥ चातक हौं रावरो अनोखो मोहि आवरो सुजान रूप वावरो वदन दरशाइहौ। विरह नशाइ दया हिय में वसाइ आइ हाइ कब आनँदको घन वरसाइहौ ३ तापै सूरदासजी अरु साहू

कार की स्त्रीको दृष्टांत ४ ऐसे जब कही तब करुणानिधान हँसे प्रीति के वशभये ५॥

खुलिगयेनैनज्योंकमलरविउदैभये देखिरूपराशिवा ढ़ीकोटिगुणीप्यासहै । मुरलीमधुरसुररारूयोंमदभरि आनौ ढरिआयोकाननमेंआननमेंभामहै॥ मानियेप्रताप चिंतामणिमनमांझभई चिंतामणिजैतिआदिबोलेरसरा सहै। कर्णामृतग्रंथहदैग्रंथिकोविदारिडारै बांचेरसग्रंथपंथ युगलप्रकासहै १७२ चिंतामणिसुनीबनमांझरूपदेख्यो लालहैंगईनिहालआईदेहनातोजानिकै। उठिबहुमानकि योदियोदूधभातदोनादैपठावैनितहरिहितूजनमानिकै॥ लियोकैसेजायतुम्हैंभाइसोंदियोजोप्रभु लैहौनाथहाथसों जोदेहैंसनमानिकै। बैठेदोऊजनकोऊपावैनहींएककनरी कस्यामघनदीनोदूसरोहूआनिकै १७३॥

चिन्तामणि जयतिआदि॥ श्लोक॥ चिन्तामणिर्जयतिसोम गिरिर्गुरुर्मेशिक्षागुरुश्चभगवाञ्छिखिपिच्छमौलिः॥ यत्पादकल्प तरुपल्लवशेखरेषु लीलास्वयंवररसंलभतेस्वयंश्रीः १॥ कर्णामृत ग्रंथ॥ अद्वैतवीथीपथिकैरुपास्याःस्वानन्दसिंहासनलब्धदीक्षाः॥ शठेनकेनापिवयंहठेनदासीकृतागोपवधूविटेन २ कोऊपावै॥दोहा॥ निकट न देख्यो पारधी लग्यो न देख्यो बाण॥ मैं तोहिं पूछौं हे सखी केहि विधि निकसे प्राण ३ जलथोरो नेहाघनो लगे प्रीति के बाण। तूपी तूपी करिमरे इहिविधि छांड़ेप्राण॥ पुमन आव मांगे ४ आन न देखा ज्ञान कर्म नाम सों शुद्धहोइ अरु गीता में भक्तियोग चित्त शुकने लिख्यो ज्ञान कर्म आशापाश शुद्ध होई बीच में भक्तियोग भाष्यमें लिख्यो है भक्तिरत्न के दोऊ ढकनाहैं चक्रवर्ती ने लिख्यो है दोऊ लरेंगे नहीं बीच में भक्तियोग रोके है दोउनको ५॥

मूल ॥ कलिजीवजँजालीकारणे विष्णुपुरीवड़निधिसची ॥ भगवतधर्मउतंगआनधर्महिनहिंदेखा। पीतरपटितरविगतनिषकज्योंकुंदनरेखा ॥ कृष्णकृपाकरिबेलफलतफलतसंगदिखायो । कोटिग्रन्थकोअर्थतेरहविरँचनमेंगायो ॥ मथिमहासमुद्रभागवततेभक्तिरतनराजीरची। कलिजीवजँजालीकारणे विष्णुपुरी बड़निधिसची ४७

टीका ॥ जगन्नाथक्षेत्रमांझबैठेमहाप्रभूजबै चहूँओरभक्तभूपभीरअतिछाईहै। बोलेविष्णुपुरीपुरीकाशीमध्यरहैंयाते जानियतमोक्षचाहनीकीमनआईहै ॥ लिखोप्रभुचीठीआपमणिगुणमालएक दीजियेपठाइमोहिंलागतसुहाई है। जानिलईबातनिधिभागवतरतनदाम दईपठैआदिमुक्तिखोदिकैवहाई है १७४ मूल ॥ विष्णुस्वामिसंप्रदायदृढ़ ज्ञानदेवगंभीरमति ॥ नामतिलोचनशिष्यसूरशशिसदृशउजागर । गिरागंगउनहारिकाव्यरचनाप्रेमाकर ॥ आचारजहरिदासअतुलबलआनँददाइन। तिहिमगवल्लभविदितपृथूपद्धतिपाराइन ॥ नवधाप्रधानसेवासुदृढ़ नवचक्रमहरिचरणरति । विष्णुस्वामिसंप्रदायदृढ़ज्ञानदेवगंभीरमति ४८ ॥

खोदिके वहांइ हनुमन्नाटके ॥ भवबंधच्छिदेतस्मैनस्पृहयामिमुक्तये ॥ भवान्प्रभुरहंदास इतियत्रविलुप्यते ? सालोक्यसार्ष्टिसामीप्यसारूप्यैकत्वमप्युत ॥ दीयमानंनगृह्णंति विनामत्सेवनं

---

१ गु, के आगे स्पा, है इससे गु, को गुरु उच्चारण करने से अथवा टकार के आगे सानपद होनेसे टकार को गुरु कर कहने से या पाठान्त मे टकार को गुरु मानने से पंद्रह मात्रा मिलते ॥

जनाः २ विष्णुपुरीवाक्यम्॥ येमुक्तावपिनिःस्पृहाःप्रतिपदं प्रोन्मीलदानंददां यामास्थायसमस्तमस्तकमणिं कुर्वन्तियंस्वेवशे॥ तान् भक्तानपितांचभक्तिमपितंभक्तिप्रियं श्रीहरिंवंदेसंततमर्थयेनुदिवसं नित्यंशरण्यंभजे २ मुक्तिनिःस्पृहाकथा एकपुराणकीएक समय श्री नारदजी श्रीवृन्दावन में आये श्रीलालजीकी लीलादेखिकै वहुत प्रसन्न भये पीछेते रोवनलगे यह बड़ो आश्चर्य है ४॥

ज्ञानदेवजूकीटीका॥ विष्णुस्वामिसंप्रदायवड़ेईगँभीरमतिज्ञानदेवनामताकीवातमुनिलीजिये। पिताग्रहत्यागिआइग्रहणसंन्यासकियोदियोवोलिफिरठतिया नहींगुरु कीजिये॥ आईमुनिदेखिपाछेकह्योजान्योमिथ्यावादभुजनपकरिफेरेरंगकरेलीजिये। आईसोलिवाइजातिअतिही मिलाइदियो पातिलैडारिरहेदूरिनहिंछीजिये १७५ भयेतीनिपुत्रतामेंमुख्यवड़ेज्ञानदेव ताकीकृष्णदेवजूसोंहियेकीसचाईहै। वेदनपढ़ावैकोईकहैसवजातिगईलईकरिसभाअहोकहाभलआईहै॥ उनसोंब्रह्मत्वकहीश्रुतिअधिकारनाहिं वोल्योयोंनिहारिपढ़ैभैंसालैदिखाइये। देखिभक्तिभावचावभयोआनिगहेपाव कियोईशभाववही गहीदीनताईहै १७६॥

काव्यरचनापद॥ माई आजुहो निशान वाजे दशरथ राइके। रामजन्म सुनि रानी गावति आनंद वधाइके॥ उमँगे ऋषिविश्वामित्र पढ़त वशिष्ठतंत्र चैत्रमासनौमी शुक्लपक्ष पाइके। उमँगे दलह किधों जल उमँगे मत्तगज उमँगे महल सव कंचन जराइके॥ उमँगे पौरी पगार उमँगे वीथी वजार उमँगी अयोध्यापुरी रह्योसुख छाइके। उमँगे सूरज कुल धरम असुरकुल लंकके कंगूरा ढये अगम जनाइके॥ उमँगे वृक्ष रावसूखे हरेभये अवै उमँग्यो वनदंडक अधिक जिवाइके। उमँगे वृद्ध वाल सुर मुनि जेते

ईश उमँगे गौतम जानि तृया सोक्षदाइके ॥ उमँगे वानर रीक्ष हनूमान पूजाईश सुग्रीव रिपको नाशकरि हानिये नगाइके। उमँग्यो सरयूको नीर मज्जन करि हैं रघुवीर उमँगे सब जीव जन्तु कोउ न सके सताइके ॥ उमँगी सभा विराजै अपने समाजै उमँगे तिलक जब मस्तक चढ़ाइके। उमँगे उघन्त संगीत उमँगे तृवट गीत मृदंगी मन मृदंग बजाइके ॥ उमँगे मुनि समाज बहुविधि बाजे बाजैं महाराज दान दीजै सजिके तुलाइके। उमँगे ढाढ़िया गावैं ठाढ़ेबजावैं उमँगि अशीश देत नृपमाथा नाइके ॥ उमँगेनाचै लागदाट तालरांचे रीझि वस्तुदेत जो जाही लाइके। उमँगी कौशल्या रानी सुत जायो शारंगपानी उमँग जन ज्ञान देव सीताराम गाइके १ भ्रताख्या ब्रह्मणकला सोपान देव महान देव ज्ञानदेव ऐसे तीनि जैसे धायपुत्र परोसी साखी ऐसे मखन में ब्राह्मण साखी यह जानि लीजै सो भैगा पढ़्यो प्रमाणकौन ॥

टीकातिलोचनजूकी ॥ भयेउभैशिष्यनामदेवश्रीतिलोचनजूसूरशशिनाहीकियोजगमेंप्रकाशहै। नामाकीतौबातसुनिआयेसुनोदूसरेकी सुनेईबनतभक्तकथारसराशहै॥ उपजेवणिककुलसेपैकुलअच्युतको ऐपैनहींबनैएकतियारहैपासहै । टहलुवानकोऊसाधुमननिकोजानिलई यहीअभिलाषसदादासनिकोदासहै १७७ आयेप्रभुटहलुवारूपधरिद्वारपर फटीएककामरीपन्हैयांटूटीपाइहै । निकसतपूछैंअहोकहांतेपधारेआप बापमहतारीऔरुदेखियेनगाइहै ॥बापमहतारीमेरे कोऊनाहिंसांचीकहौंगहौ जोटहलतौपैमिलतसुभाइहै । अनमिलबातकौनदृ्जिये जनायबहुखाऊंपांचसातसेरउटतरिसाइहै १७८ चारिहीवरनकीजुरीतिसबमेरेहाथ साधहूनचहौंकरौं नीकेमन लाइकै । भक्तनकीसेवासोतौकरतहीजन्मगयोनयोकछ

नाहिं डारेबरषबिताइकै ॥ अंतर्यामीनाममेरोचेरोभयो तेरोहौंतोबोल्योभक्तभावखावोनिशंकअघाइकै। कामरी पन्हैंयांमवनईकरिदई औरुमीडिकैन्हवायो तनमैलको छुड़ाइकै १७९॥

अनमिलपै ॥ सवैया॥ अरसात जम्हात लगे नखगान किती तुतरात सुबोलतहूं। कवि सुन्दर ऊलटि और लुनौ इतनें पर सौंहकरै अजहूं ॥ तिनसों व कहा कहिये जिनके सुपनेहुं न लाज भई कबहूं। जग में सबी औषध है सबकी पै स्वभावकी औषध नाहिं कहूं १ मनलायकै ॥ दोहा ॥ चारि बरणकी चातुरी सेरे न मेरो काम॥ भक्त सेव जो जानिहौं रहो हमारे धाम २ भक्तन की सेवा ॥ गीतायाम् ॥ यद्यदाऽऽचरति मद्भक्तस्तत्तत्कुर्य्यामतन्द्रितः ३ दाप महतारी नहीं ॥ जयति जननिवासो देवकीजन्मवादो। शास्त्र जन्मगावैं अजन्मगावैं दोऊ सत्तः भक्ति बेटा नित्र सखा ऐसे जानिये ॥

बोल्योघरदासीसोंतूरहैयाकीदासीहोइ देखियोउदासींदेतऐसोनहींपावनो। खाइमोखवावोसुखपावोनितनित्तहिये जियेजगमाहिंजौलौंमिलिगुनगावनो॥ आवतअनेकसाधुभावतटहलुहिये लियेचावदावैपांवमवनिलड़ावनो। ऐसेहीकरतमासतेरहव्यतीतभये गयेउठिआपनेकुचातकोचलावनो १८० एकदिनगईहीपरोसिनिकेभक्तबधूपूछिलईबातअहोकाहेकोमलीनहै। बोलीमुनिकाईवेटहलुबालिवाइलाये कहूंनअघाइखोटिपीसितनछीनहै॥ काहूसोंनकहौयहगहौमनमांझयेरीतेरीसोंपुनेंगोजोपैजातरहैभीनहै। सुनिलईयहांनेकुगयेउठिहूतीटेक दुखहू अनेकजैसेजलबिनमीनहै १८१ बीतेदिनतीनिअन्नजल

करिहीनभयेऐसोसोप्रवीनअहोफेरिकहांपाइये। वड़ी तू अभागीबातकाहेको कहनलागी रागीसाधुसेवामेंलुचैसे करिलाइये॥ भईनभवानीतुमखावोअन्नपानीयहमैंहींसनि ठानीमोकोप्रीतिरीतिभाइये। मैंतोहौंअधीनतेरेघरहीमें रहौंलीन जोपैकहौसदासेवाकरिवेकोआइये १८२ कीने हरिदासमैंतो दासहूनभयोनेकु वड़ोउपहासमुख जगमें दिखाइये। कहैजनभक्तकहाभक्तिहमकरी कहो अहोअज्ञ ताई रीतिमनमेंनआइये॥ उनकीतौबातदनिआवै सबउ नहींमोगुनहींकोलेत मेरेऔगुणछिपाइये। आयेघरमांझ ताऊमूढ़मैंनजानिसक्यों आवैं अबकयोंहूंधाइ पाइ लप टाइये १८३॥

आवत अनेक साधु॥ गीतायाम्॥ अपिचेत्सदुराचारोभजतेमा मनन्यभाक्॥ साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः १ अन्न जल करि हीन॥ श्लोक॥ वैष्णवःपरमोधर्मोवैष्णवःपरमंत पः॥ वैष्णवःपरमोराध्यो वैष्णवःपरमोगुरुः, २ चारो वेद में अरु अठारह पुराण में अरु श्रीभागवत में यह सुनीहै वैष्णव स्वरूप सर्वोपरि श्रीभगवद्रूपी साक्षात् है ३॥

टीकावल्लभाचार्य्यजीकी॥ हियमें सरूपसेवाकरिअ नुरागभरेढरेओरजीवनिकीजीवनको दीजिये। सोईलै प्रकाशघरघरमेंविलासकियो अनिहीहुलासफलनैनन कोलीजिये॥ चातुरीअवधिनेकुआतुरीनहोतिक्योंहूं चहूँ दिशिनानारागभोगसुखकीजिये। वल्लभजूनामलियापृ थुअभिरामरीति गोकुलमेंधामजानिमुनिअतिरीझिये १८४ गोकुलकेदेखिवेकोगयोएकसाधुसूधो गोकुलमग

नभयोरीनिकछन्यारिये । छोकरकेरक्षपरवटुवाझुलाइ दियो कियोजाइदर्शनसोभयोसुखभारिये ॥ देखेआइना हिंप्रभुफेरिआपपासआयो चिंतासोंमलीनदेखिकहीजा निहारिये। वेसोईस्वरूपकैगईसुधिबोल्योआनि लीजि येपिछानिकरीसेवानितधारिये १८५ ॥

गोकुल के देखिवेको ॥ कवित्त ॥ जौलौं ब्रज बीथिन में विथ के न येरेमन तौलों कुटिलाई की सुकालिमा जनाइये । तौलों नवनीत चोर चित्तमें न आने नेकु जौलों और साधन में स्व-च्छता न पाइये॥स्मृति पुराण वेद पण्डित प्रवीणताई करि अ-भिलान शेप पंकलपटाइये। पैजकरि कहतु प्रवीणन सों कान खोलि सो कुल मलीन जहां गोकुल न गाइये १ वेरहे गोधूलिके सुनत तियागोरी गान दामिनी निकरसी निकर गृहतेंघिरें। गो-धनके पाछे आछे नट वेप काछे श्याम चलत कटाछे तियनैन नैनसों भिरें॥ जारिनि किवारिनि अटारिनि झरोखनिते जित तितफूल पानी गैल छैलपे परें। होनि जब सांझ इन गोकुल गलि-न मांझ कोटिकवैकुण्ठसुख सहज वहेफिरें २ नाहीं प्रभु ॥ दोहा॥ छयोनेह कागदहि पे लये लिखाइनटांक॥ आंचलगे उघर्यो अबै सेहुँड़कोसो आंक ३ स्नेह बिलुरानि में उघरिआवै वैसोई रूप॥ दोहा ॥ प्रेम एकएक चित्तसों एकै संग समाय॥ गंधीको सोंधो नहीं सुजनन हाथ विकाय ४ नैनको फल ॥ वहांयितेतेनयने नराणां लिंगानिविष्णोर्ननिरीक्षतो ये ५ ॥

खुलिगईआंखैंअभिलाखैंपहिचानिकीजै दीजैजुबता इमोहिंपावैनिजरूपहै । कहीजाइवाहीठौरदेखौप्रेमलेखौ हिये लियेभावसेवाकरोमारगअनूपहै ॥ देखिकैमगनभ योलयोउरधारिहरि नैनभरिआयेजान्योभक्तिकोस्वरूप है। निशिदिनलग्योपग्योजग्योभागपूरणहो पूरणचमत

कारकृपाअनुरूपहै १८६ मूल ॥ सुठिसंतसाखिजानैंसवै प्रकटप्रेमकलियुगप्रधान् ॥ भक्तदासइकभूपश्रवणसीताहरकीनो । मारिमारिकरिखड्गआजलागरनैंदीनो ॥ नरसिंहकोअनुकरनहोइहरणाकुशमास्यो । वहीभयोदशरत्थरामबिछुरेतनडास्यो ॥ श्रीकृष्णनामआधेसुनेरातिवन्तीतहूँदीनप्रान् । सुठिसंतसाखिजानैंसवैप्रकटप्रेमकलियुगप्रधान् ५७ टीका ॥ संतसाखिजानैंकलिकालमेंप्रकटप्रेम.वड़ोईअसंतजाकेभक्तसोंअभावहै । हुतोएकभूपरामरूपततपरमहा रामहीकीलीलागुणसुनेंकरिभावहै ॥ विप्रसोसुनावैसीताचोरीकोनगावैहियेंखरोभरिआवे वहजानतसुभावहै । पस्योद्विजदुखीनिजसुतनपठाइदियो जानैंनसुनायोभरमायोकियोचावहै १८७ ॥

कलियुग प्रधान ॥ प्रेमते दर्शन प्रेमते वाको स्वरूप प्रेमते वाके स्वरूपको वाप प्रेमते स्वरूपके वाप को शिक्षाकार याते प्रधान १ याकहै ॥ कुंडलिया ॥ अनरकहै निरफल गई रेजरि फूली पाक । धोबीबेटा चांदसा सीटी और पटाक ॥ सीटी और पटाक प्रेमहरि भक्ति न जानै । अनकनरहै न टांक छाजनी लों गनछानै ॥ श्वास धवनि ज्यों धवै अंग सूसा ज्यों दाढे । ऐसो मन अचेत धौस कूकर ज्यों काढे २ ॥ दोहा ॥ कबहुँ न सुकमें हरिभजे भक्तन मिले न दौरि ॥ तीनों पनयोंहींगये फिरत पराई पौरि ३ ॥

मारिमारिकरिकरखड्गनिकासिलियो दियोघोरलागरमेंसोअवेशआयोहै । मारौं याहीकालदुष्टरावणहिहाल करौंपावनकोदेखौंसीताभावदृढ़छायोहै ॥ जानकीरमणदोऊदरशनदीनोआनि बोलेजिनप्राणकियोनीकेफलपायोहै । सुनिसुखभयोगयोशोकसबदारुणजो रूपकोनिहा

शिनयेफेरिकैजिवायोहै १८८ नीलाचलभासतहांलीला अनुकर्णभयोश्रीनृसिंहरूपधारिसांचेमारिडारयोहै । को ऊकहैदोएकोऊकहतअवेशतोपै करौदृगारथकियोभावपूरोपारयोहै । हुतीएकवाईकृष्णरूपसोंलगाईमतिकथामेंन आईसुतसुनीकह्योधारयोहै । वांधेदशुमतिसुनिऔरभईगतिकरिदईसांचीरतितन तज्योमानोंत्रारयोहै १८९ ॥

सो ये समस्त भाव प्रेमसों होतभये जैसे श्री गोपिकानके प्रेम सों भाव होत भये १ तापै दृष्टांत एक प्रेम के द्वै स्त्री एकतो आनंदिता एक व्याकुलता तिनके एक एक पुत्र आनंदिता के तो सुनन्द व्याकुलताके विरह ता विरहकी स्त्री तदात्मकको स्वरूप २॥ सवैया ॥ ... दह्यो सुनह्यो अतिही अवके कहिको लरि कौनको सूझै । कैसी भई हरि के तही अबको हियके जियकी गतिबूझै ॥ बाहरहू घरहू में सखी अँखियां निबहे छवि आनि अरुझै । सांवरो रूप रम्यो उरमें सगरोजग सांवरो सांवरो सूझै ३ ॥ ब्रह्मवैवर्त्त पुराणे ॥ यास्यामितीर्थमद्यैवकण्ठेकृत्वातुबालकम् ॥ अथवात्वंगृहाद्गच्छत्वयामेकिंप्रयोजनम् ४ ऐसे नन्दजी में वैठिके सो वाईने कहो तदात्मककोपुत्रतद्वत् तद्वत्को स्वरूप सो कहैं ५ ॥

कवित्त ॥ श्याम को जपतिहुती श्यामाजू स्वरूपभरी पगी प्रेम पूरणते ह्वगई कन्हाईहै । सुरति लिखी जो चिट्ठी प्यारी पिय ततकाल भामिनी वियोगभयो अतिदुख दाईहै ॥ व्याकुल विहाल अति प्यारीके विरहतन राधे राधे रटि पुनिभई राधिकाईहै । चकित सचेत कहैं वेरवेर हेरिपाती पथिक न आयो यह पाती कैसे आई है १ ॥ पद ॥ दुहुं दिशिको अति विरह विरहनी कैसे कै जुसहै । सुनो सखी यह वात श्यामसों को समुझाइकहै ॥ जव राधा तवहीं मुख माधो माधो रटतिरहै । जव माधो ह्वजाति क्षणकमें राधा विरहदहै ॥ पहले जानि अगिनि चन्दनसी ततीहोन उमहै । समाचार ताते सीरेकै पाछे कौनकहै ॥ उभय दारुह्वै कीट

मध्यज्यों शीतलताहिचहै। सूरदास प्रभु व्याकुल विरहिनि क्योंहूं सुख न लहै २॥ दोहा॥ पियके ध्यान गही गही रही वही है नारि॥ आप आरही आरसी लखि रीझत रिझवारि ३॥ श्लोक॥ नटभुवितरलाक्षीलक्षतेयःसमंतादिहवसतिसधूर्त्तःशीघ्रमायातयूयम् ॥ असकृदितिवदन्तीकामिनीकापिबालं कचकिमपितमालं गाढमालिंगतिस्म ४ तापै एक दृष्टांत लंका में त्रिजटा अरु सीताजी के ५॥ रोलाछंदके दो पद॥ भृंगीभयते भृंगहोइ वह कीट महा जड़। कृष्ण प्रेमते कृष्णहोइ कछु अचरज नहिंबड़ ६ प्रेमहि पीवहि अंतरुपै तो। बीसी तीनि साठिहैं जेतो ७ एक सिद्ध अमली के नीचे बैठ्यो तप करतरह्यो तामग श्रीनारदजी आये सो पूछी हरि मिलैंगे सो परमेश्वर तें पूछी नारदजी कही अमली के पत्ता इतने युग तब नाच्यो मिल्यो तापै राजा की बेटी को अरु द्वै मित्रन को दृष्टांत ८॥

मूल॥ परसादअवज्ञा जानिकैपाणितज्योएकैनृपति॥ होंकहकहौंवनाइबातसबहीजगजानै। करतेयौंनाभयो श्यामसौरभरुचिमानै॥ छपनभोगतेपहिलखिचरकरसा कोभावै। शिलपिल्लेकेकहतकुंवरिपैहरिचलिआवै॥ हरिभक्तनिहिनसुतविषदियोभूपनारिप्रभुराखिपति। परसादअवज्ञा जानिकैपाणितज्योएकैनृपति ५१॥ पुरुषोत्तमपुरीकाराजा॥ प्रसादकीअवज्ञातेतज्योनृपकरएककरिकैविवेकसुनोजैसीभांतिभईहै। खेलैनृपचौपरिकोआयोप्रभुभक्तलेपटाहिनेमेंपासेवाओंकुपायोतिगईहै॥ लेगयेरिसाइकैफिराइमहादुःखपाइ उन्योनरहैगेनगयोसुनिनईहै। लिख्योअनलनहाथतज्योयहीहिनतब सांचोमेरोपनबोलिविप्रपूँछिलईहै १९० कहैंहाथकौनमेरोरहैगेगहि मौनयाने पैंछतसचिवकहाझोभयोनिकारिये। आयेएक

ऐतमोदिखाईनितदेतनिशि डारिकैंझरोखाकरशोरकरि भारिये॥ सोऊठिगआइरहोआपकोछिपाइतन डारैहाथ आनिलवताहिकाटिडारिये। कहीन्नृपभलेयौकीदेतमेंघुमा योनृप डाखोउठिआनिवेदन्यारोकियोवारिये १६१ दे खिकैंखज्ञानोकह्योकियेमैंअयानोनृप कहीप्रेतमानोनहीं प्रभुतोंलिगारिये। कहीजगन्नाथदेवजैप्रसादजावोवहां लायहाथगयोवागसोईडरधारिये॥ चलेतहांधाइभूपआ गेमिल्योआइहाथ निकस्योलगाइहियेभयोसुखभारिये। लायेफूलफूलताकेभयेफूलदेवताके नितहीचढ़तअंगगंध हरिप्यारिये १९२॥

प्रसादअवज्ञा॥ श्लोक॥ प्रसादं जगदीशस्यान्नपानादिकंच यत्॥ ब्रह्मवन्निर्विकारंहि यथाविष्णुस्तथैवतत् १ पूछि लई है॥ दोहा॥चाख चाहु फरकत मिले ज्यों प्रीतम रसपूरि॥ त्यों तोहीं सों भेटिहौं राखि दाहिनोदूरि २॥

करमाबाईकीटीका॥ हुतीएकबाईताकोकरमासुनाम जानि विनारीतिभांतिभोगखीचरीलगावही। जगन्नाथ देवआइभोजनकरतनीके जितेलागैंभोगतामेंयहअति भावही॥ गयोतहांसाधुमानिबड़ोअपराधकरै भरैबहुश्वा समद्दाचारलैसिखावही। भईयांअवारदेखेखोलिकैंकिवा रतोपैजूठनिलगीहैमुखधोयेबिनआवही १९३ पूछीप्रभु भयोकहाकहियेप्रकटखोलि बोलिहूनआवैहमैंदेखिनईरी तिहै। करमासुनाम एकलीचरीखवावैमोहिं मैंहूंनितपाऊं जायजानीसांचीप्रीतिहै॥ गयोमेरोसंतरीतिभांतिसोसि खाइआयो गतमोअनतबिनजानेगोअनीतिहै। कहीवा

हीसाधुसोंजुसाधिआयौवहीबात जाइकैसिखाईहियआई बड़ीभीतिहै १९४ ॥ शिलपिल्लेउभैबाईकीटीका ॥ शिलपिल्लेभक्तउभैबाईसोईकथासुनौ एकनृपसुताएकसुता जिमीदारकी। आयेगुरुघरदेखिसेवाढिगबैठीजाइ कही ललचाइपूजाकीजेसुकुवारकी ॥ दियोशिलटूकएकनाम कहिदियोवही कीजियेलगाइमनमतिभवपारकी। करत करतअनुरागबढ़िगयोभारी बड़ीयेविचित्ररीतियहीशोभासारकी १९५ ॥

वैष्णवप्रेमकोसमझै नहीं॥वेदसलझे याते करमाबाई को वेदही सिखायो ॥ दोहा ॥ लकरीभोवे भ्योंसनै करै छतीसौ पाक॥ जाको पट पटकरमहैं ताको भावैशाक १ सो प्रेमको समुझै॥नट गोशल कपट क्यों भावै कोटिक स्वांग वनावै २ वड़ी भीति है॥ साधुको फेरिआया देखिकै डरी। आप कहा सिखाइ गयो तव साधुवोले री तू डरे मतिरी॥ यह क्रिया ब्राह्मण की है तेरी नहीं तव पोथी देखी तव जानी तू वैसेही करयो करि तव साधु हँसे कही ललचाइ ३ ॥

पाछिलेकदित्तमांझदुहुनिकीएकैरीति अवसुनौन्यारी न्यारीनीकेमनदीजिये। जिमीदारसुताताकेभयेउभैभाईरहैं आपसमेंवैरग्राममाख्योसुवेकीजिये ॥ तामेंगईसेवाइन बड़ोईकलेशकियो जियोनहींजातखानपानकेसेकीजिये रहेसमुझाइयाहिकछुनसुहाइतव कहीजायलावौतेरेदोऊ समधीजिये१९६ गईवाहीगांवजहांदूसरोसुभाईरहैवैठ्यो हैअथाईमांझकहींवहीबातहै। लेहजूपिछानीतहांवैठ्यो इकठौरेप्रभुवोलिउठ्यो कोऊवोलिलीजेप्रीतिगातहै। भईआंखिराती लगीफाटिवेकोछातीरोपुकारीसुरआरतसो

मानोतनपातहै । हियेआइलागेसबदुखदूरिभागे कोऊ बड़ेभागजागेघरआईनसमात १९७ ॥

भई आंखिरानी ॥ कवित्त ॥ कंचनमें आंचदई चुनी चिनगारीभई दूषणभयेरी सब भूषणउतारिले । पियहै विदेश वाही देश क्यों न परै धाइ सखिसखि उठैमनहूं विचारिले ॥ परघर आगि आली मांगन क्योंजाति अब आगिमेरे अंग चिनगारी चारिझारिले । सांझसमैसांचसुन वाती क्यों न देति आली छाती सों छुवाइ दियावाती क्यों न बारिले १ वसन डसन भये हसन रसन होत त्रासनिसों जागिहै वियोग आगिआगरी । धामतो उजार से हैं छारसे हैं काम काज आलिनके यूथजाल ऐसे हाल नागरी ॥ भोजन हलाहल कुलाहल सोनादजानि वाद है विवाह ऐसे विसदनिकी सागरी । आगुनु मृगीके तूल कामदेव शारदूल बचि है न मूल शूल उठी है उजागरी २ ॥ दोहा ॥ धवल महल शय्या धवल धवल शरदकी रैन ॥ एक श्याम बिन विकल सब ज्यों पुतरी बिन नैन ३ ॥

टीकानृपसुताकी ॥ सुनोनृपसुताबातभक्तिगातगात पगीभजीसबनिपैरतशेबाअनुरागी है । ब्याहिहीविसुख घरआयोलेनवहेबरखरी अरबरीकोईचितचिंतालागीहै । करिदईसंगभरीआपनेहीरंगचली अलीहूनकोऊएकवही जासोंरागीहै । आयेढिगपतिबोलिकियोचाहैरतियाकी औरभईगतिमतिआवोविथापागीहै १९८ कौनवहाविथा ताकोकीजियेजतनवेगि बड़ोउदवेगनेकुबोलिसुखदीजिये । बोलिबोजोचाहोतोपैकरोहरिभक्तिहिये बिनहरिभक्ति मेरोअंगजिनिछीजिये ॥ आगोरोपभारीतबगनमेंबिचारी वापिटारीमंजुकलुसोईहैकैन्यारीकीजिये । करीवहीवात

मूर्तिजलमांझडारिदईनईभईज्वालाजियोजातनहिंखीजिये १९९ तज्योजलअन्नअवचाहतप्रसन्नकियो होतक्यों प्रसन्नताकोसरवसन्लियोहै। पहुंचेभवनआइदईसोजताइ बातगातअतिक्षीनदेखिकहाहठकियोहै॥ सासुसमझावै कछूहाथसों खवावैयाकोबोल्योहूनभावै तवधरकतहियो है। कहैसोईकरैंअवपरैंपाइँतेरेहमत्र्योलोजनवेईआवेंतोही जातजियोहै २००॥

तज्यो जल अन्न॥ दोहा॥ शठननेहसों डरपिये नंद और भय नाहिं॥ सांपिनि सुत हिन जानिकै गिलेपेट पचि जाहिं१॥ कवित्त॥ समरमें लरयो जाइ गिरिहूते गिरयो जाइ गगनमें फिरयो जाइ पावक को दहिवो। कानन में रह्यो जाइ व्यालकर गह्यो जाइ विरहहु सह्योजाइ और कहा कहिवो॥ हलाहल पियोजाइ सरवस दियोजाइ परवत लियो जाइ वारिधि को वहिवो। और दुख याहूते जु दुःह कठिन ऐसो जैसो है विमुख संग एक छिनरहिवो २ ऐसो सतसंग मन में जानिवो ३॥

आयेवाहीठौरभौंरआइतनभूमिगिरयो गिरयोजलनैन सुरआरतपुकारीहै। भक्तिवशश्यामजैमेकामवशकामी नरघायलागेछातीसोंजुसंगमोंपिटारीहै॥ देखिपतिसासु आदिजगतविषादमिट्यो वादिहीजनमगयोनेकुनसँभारी है। कियेसवभक्तहरिसाधुमेवामांझपगेजगेकोऊभागघर वधूयोंपधारीहै २०१॥ भक्तनकेहेतुसुतविषदियोउभय वाईकीटीका॥ भक्तनकेहेतसुतविषदियो उभैवाईकथा सरसाईवातखोलिकैजताइये। भयोएकभूपताकेभगत अनेकआवैं आयोभक्तभूपतासोंलगनलगाइये॥ नित हीचलतऐपैचलननदेतराजा बितयोवरषमांझकह्योगो

रजाइये। गईआशटूटितनछूटिदेकीरीतिभई लईद्वातपूं छिरानीसबैलैजनाइये २०२ ॥

आयोभक्त भूप ॥ श्लोक ॥ सदाश्रद्धाःकथाःहृष्टाःशृण्वन्तिकथयन्तिच ॥ तपन्तिविविधांस्तापानैनान्मद्गतचेतसः १ साधुसेवामें कहालाभ ॥ तुलयामलवेनापिनस्वर्गंनापुनर्भवम् ॥ भगवत्संगिसंगस्यमर्त्यानांकिमुताशिषः २ ॥ प्रथमे ॥ वासुदेवेभगवतिभक्तियोगःप्रयोजितः ॥ जनयत्याशुवैराग्यंज्ञानंचयदहैतुकम् ३ सप्तमे ॥ वासुदेवेभगवति भक्तिमुद्वहतांनृणाम् ॥ ज्ञानवैराग्यवीर्याणां नेहकश्चिद्व्यपाश्रयः ४ ॥

दियोसुतविषरानीजानीनृपजीवैनाहिं सन्तहैंस्वतंत्र सोतौइन्हैंकैसेराखिये। भयेविनभोरद्वयशोरकरिरोइउठी भोइगईरावलमेंसुनीसाधुभाखिये ॥ खोलिडारीकटिपट भौनमें प्रवेशकियो लियोदेखिबालककोनीलतनसाखिये। पूंछयोभूपतियासोंजुसांचकहिकियोकहा कहीतुमचल्यौचाहौनैनअभिलाखिये २०३ छातीखोलिरोयेसन्तबोलहूनआवैमुख सुखभयोभारीभक्तिरीतिकछुन्यारिये। जानीहूनजातिपांतिजाकोसोविचारकहा अहोरससागरसोसदाउरधारिये ॥ हरिगुणगाइसाखिसन्तनिवताइदियो बालकजिवाइलागीठौरवहप्यारिये। संगकेपठाइदियेरहेजेवेभीजेहियेबोलेआपजाउंजौनमारिकैविडारिये २०४ सुनौचित्तलाइकहींदूसरोसुहाइहिये जियेजगमाहिंजौलौं सन्तसंगकीजिये। भक्तनृपएकसुताव्याहीसोअभक्तमहा जाकेघरमांझजननामनहिंलीजिये ॥ पत्योसाधुप्रीतिसों शरीरदगरूपपले जीभ-रणामृतकेस्वादहीसोंभीजिये।

रह्योकैसेजाइअकुलाइनवस्याइकछु आयेपुरप्यारेतत्र वीर सुनदीजिये २०५ ॥

जानीहू न जानिपांति ॥ कुंडलिया ॥ अगर कहै ता नरपर तन मनदीजैवारि । सोईनारिसुतेवड़ीजाकीकोठीज्वारि ॥ जाकीकोठी ज्वारि जाहि यादवपति भावै । श्रवण सुनत हरिकथारलनगो दगुणगावै ॥ आरज विदुपउदारसुमति सुकुलीनीसोई । हृदय वसत हरि चरण जगत डारयो करि छोई १ ॥ दोहा ॥ यद्यपि सुन्दर सुघर पुनि सगुनो दीपक देह ॥ तऊ प्रकाश करै तितो भरिये जितो सनेह २ ॥ एकादशे ॥ मल्लिङ्गमद्भक्तजनदर्शनस्पर्शनार्चनम्॥परिचर्यास्तुतिप्रह्वगुणकर्मानुकीर्त्तनम् ३ हरि गुणगावै साखिसंतन ॥ आदिपुराणे ॥ मद्भक्तायत्रगच्छन्तितत्रगच्छामिपार्थिव ॥ भक्तानामनुगच्छन्तिमुक्तयोमुक्तिभिःसह ४ ॥

आयेपुरसंतआइदासीनेजनाइकही सहीकैसेजातिसुतविषलैकैदियोहै । गयेवाकेप्राणरोइउठीकिलकारिसव भूमिगिरेआनिटूकभयोजातहियोहै ॥ वोलीअकुलाइएक जीवेकोउपायजोपै कियोजायपितामेरेकोउदारकियोहै । कहैसोईकरैटगभरेखावोसंतनिको वैसेहोतसंतपूछौचेरी नामलियोहै २०६ चलीलैलियायचेरीवोलिवोसिखाइ दियो देखिकैधरणिपरीपांइगहिलीजिये । कीनीवहीरीति टगधारामानोंप्रीतिसत करीयोंप्रतीतिग्रहपावनकोकीजिये ॥ चलेसुखपाइदासीआगेहीजनाईजाहिआइठाढ़ीपौरि पांइगहेमतिभीजिये । कहीहरेवालमेरेजानौपितामात तौअंगमेंनम्हातआजुप्राणवारिदीजिये २०७ रीझिगये संतप्रीतिदेखिकैअनन्तकह्योहोइगीजुवहीसोप्रतिज्ञातैजु करी है । वालकनिहारिजानीविपनिरधारदियो दिगोचर

णामृत को पाणसंज्ञाधरी है ॥ देखतविमुखजाइपाइतत कालिये किथेतवशिष्यसाधुसेवामतिहरी है। ऐसेभूप नारिपतिराखी लक्षराखीजन रहै अभिलाषी तोपै देखो यहघरी है २०८ ॥

दियोचरणामृत॥श्लोक॥ अकालमृत्युहरणंसर्वव्याधिविनाश नम्॥ विष्णुपादोदकंपीत्वा शिरसाधारयाम्यहम्१ देवनानने कही शुकदेव जी सों श्रीभागवत हमैं देहु अमृत राजा परीक्षितको देहु सो इन भागवत न दयोहै याते हरिको वालकको चरणामृतदियो॥ दोहा॥धन्य सन्त जहँ जहँ फिरे तहँ तहँ करत निहाल॥चरणामृत मुखडारिके फेरिजियायो वाल २॥ श्लोक ॥ वरंहुतवहज्वालापिं जरांतर्व्यवस्थितिः॥ नासौश्रीविष्णुविमुखजनसंवासवैशसः ३ ॥

मूल ॥ आशयअगाधदोउभक्तको हरितोषनअतिशय कियो ॥ रंगनाथको सदनकरनबहुबुद्धिविचारी । कपट धर्मरचिजैनद्रव्यहितदेहविसारी॥हंसपकरनेकाजवधिक वानोंधरिआये । तिलकदामकीसकुचजानितिहिआपवँ धाये ॥ सुतवध्योहरिजनदेखिकैदैकन्याआदरदियो । आशयअगाधदोउभक्तको हरितोषनअतिशयकियो ५२

टीका॥ आशैसोअगाधदोउभक्तमामाभानजेकोदियोप्रभु पोषताकीवातचितधारिये। घरतेनिकसिचलेवनकोविवेक रूपमूरतिअनूपविनमंदिरनिहारिये ॥ दक्षिणमें रंगनाथ नामअभिरामजाको ताकोलैवनावैधामकामसवटारिये। धनकेयतनफिरैभूमिपैनपायोकहूं चहूंदिशिहेरिदेख्यो भयोसुखभारिये २०९ मंदिरसरावगीकोप्रतिमासोपार सकीआरसनकियोवेदनूनहूंदतायो है। पावैप्रभुसुखहम नरकगयेतौकहा धरकनआईजाइकानलैफुकायोहै॥ऐसी

करीसेवाजासोंहरीमतिकेवराज्यों सेवरासमाजतबनीके कैरिभायो है। दियोसौंपिभारतवलेवेकोविचारकरैहरैकौन राहभेदराजनपैपायोहै २१० ॥

घरते निकसिचले ॥ कवित्त ॥ चाहैधन धाम वाम सुत अभि- रामसुख कह्यो नाहीं नाहीं कछू सरत न काजहैं। चतुरन आगे कोटि चातुरी न काम आवै बातन बनाइ सुनिं उपजत लाज है ॥ जोपै कहौं सांच यामें झूंठ न मिलाव नेकु तोपै श्वान से क्यों कहूं रौंकरो गजराज है। वृन्दावन चाहै तौ न चाहै जीवतनहूंको मनहूंको दूरि ऐसे मिलत समाज है ॥वेदनहूं बतावै ॥ श्लोक ॥ गजैरापीड्यमानोपि न गच्छेज्जैनमंदिरम् ॥ यावनीनिववक्तव्या कण्ठैःप्राणगतैरपि १ रंगनाथ ॥ कावेरीविरजानोपं वैकुण्ठं रंगमं दिरम् ॥ प्रवासीदेवरंगेशःप्रत्यक्षंपरमंपदम् २ ॥

मामारह्योभीतरऔऊपरसोंभानजोहो कलशभँवर कलीहाथसोंफिरायोहै। जेवरलैफांसिदियोमूरतिसुखैंचि लईऔरवारबहुआपनीकैचढ़िआयोहै ॥ कियोहोजोद्वार तामेंफूलितगफँसिवैठ्योअति सुखपाइतवबोलिकैसुनायो है। काटिलेवोशीशईशावेषकीननिंदाकरैं भैरंअंकवारिम नकीजियोसवायोहै २११ काटिलियोशीशईशइच्छाको विचारकियोजियेनहींजाततऊचाहलतिपागीहै। जोपैत नत्यागकरौंकैसेआशसिंधुतरौवाहीओरआयो तहांनीम खुदीलागीहै ॥ भयोशोकभारीहमैंह्वैगईअवारीकाहूओर नेविचारीदेखैंवहीवड़भागीहै। भरिअंकवारि मिलेमंदिर सँवारिमिले खिलेसुखपाइनैनजानेसोईरागीहै २१२ कोढ़ीभयो राजाकियोयतनअनेकऐपै एकहूनलागैकह्यो हंसनिमँगाइये। वधिकबुलायकहीवेगिहीउपायकरौ जहां

तहांढूंढि अहो इहांलगिलाइये ॥ कैसेकरिलावैंवेतोरहैंमा नसरमांझलावौंगेलटौंगेतबजनेच।रि जाइये। देखतहि उड़ि जातजातिकोपिक्षीलेत साधुसोनडरैजानिवेषलै ल्याइये २१३॥

मासारखो भीतर ॥ दोहा ॥ साधु सती अरु शूरमा ज्ञानी अरु गजदंत ॥ येतेनिकसि न बाहुरें जो युगजाहिं अनंत १॥ श्लोक ॥ स्वर्गापवर्गनरकेष्वपितुल्यार्थदर्शिनः ॥ सर्वधर्मान्परित्यज्यमामे कंशरणंव्रजेति २ अयंबद्धिःपृष्ठेजानुः सायंचिबुकसमर्पितजानुः ॥ करतलभिक्षा तरुतलवासस्तदपिनमुंचत्याशापाशम् ३ ॥ दोहा ॥ जोन युगाति पिय मिलनकी धूरि मुक्ति मुख दीन ॥ जो लहिये संग सजन तो धरकनरकहू दीन ४ ईश इच्छा भली करी ॥ यद्यद्भाव्यतिसद्भक्तः ॥ इनकही मुँह कैसे दिखावेंगे सेवराके चेला भये याते कह्यो प्रथम पाप पुण्य भोगे ऐसे औषध क्षपीन व्यवहार कलि ये वेद पसारी ऐसे कोढ़ी गयो खर कुत्ता नहीं भले मनुष्य पै है ॥

गये जहांहंसपंतपानोमोप्रशंसदेखि जानिकेबँधायेरा जापासलैकेआये हैं। मानिमतिभारप्रभुवैद्यकोस्वरूपधा रिपूंछिकैबजारलोगभूपढिगलाये हैं॥ काहेकोमँगायेपक्षी आछीहमदेहुकों छांड़िदीजैइन्हैं कहीनीठिकरिपाये हैं। औषधीपिसाई अंगअंगनिमिलाइकियेनीकेमुखपाइकही उनकोछुड़ाये हैं २१४॥

जानिके बँधाये ॥ दोहा ॥ हंस कहै सुनि हंसिनी सुनो पुरा-नम साखि ॥ यतिकभेद जाने नहीं पतिवानैकीराखि १ वैद्यको ॥ कवित्त ॥ तपन हजूरहै हरौल औ चंडोल कफ मूलहूल हलकारा दाहली विचारिये। कोटकोतवालज्वर तो दादहै दिवानफो-श फोजदार पित्तीपदचारन हंकारिये ॥ तिजारी तापनिखी संग्रही

सेटमानिलेहु खईखाज खांसी राजपतनी निहारिये। शीतअती-
सार युग मंत्री द्विज बादशाहि भाजि वैदराज आयो सेना
लिये मारिये २ आई मनजूनकै जनून वडीनून संती सुनि डारें
रोग अरु आमल वैठायो है। अरक फरकसंतो प्यादिनके यूथ
वहु चूरण चतुर चोवदार मनभायोहै ॥ गोली किधौं गोला क्वाथ
कटक भुशुण्डी मानों उसन सलिल शीत बानको नशायो है।
अंजन सुगन्ध लेप मर्दन दगाइ पुनि सेन चतुरंग साजि वैदराज
आयोहै ३ ॥छप्पै॥नारद शुक सदवैद ग्रंथ भागवत बतावैं।करैसत-
सँग जब पथ्यकुपथ्य होने नहिंपावैं॥ औषधनवधाभक्ति यतनप्रभु
को आचारा। चरणामृत करिक्वाथ हरै सो सकल विकारा॥ संत
चरण रजधोइ तौइसारौ दारि दीजै। पथ्यहै महाप्रसाद अन्न रस-
ना नहिं लीजै॥ तव त्रिगुण दोष चौरासिही जनम मरणकोठहि
हरै। तत्ववेत्ता तीनहुँलोकमें फिरि न रोग तिहिं संचरै ४॥

सेवो भूमिगांवबालिजांवयादवालुताकी भागभालजा
केताकोदरशन दीजिये। पायोहमभक्तअक्करोहरिसाधु
सेवामानुषजनमजाकोसफलताकीजिये॥ करिकैनिदेश
देशभक्तिविस्तारभईइहंसहितसारजानिहियेधरिलीजिये।
वणिकजनज्ञानीजामोंखगनिप्रतीतिकोनी ऐसोवेपछाड़िये
नराख्योमतिभीजिये २१५ महाजनसदाव्रतीकीटीका॥
महाजनसुनोसदाव्रतीनाकोभक्तमान मनमें विचार सेवा
कीजैचितलाइकै। आवतअनेकसाधुनिपटअगाधमति
साधलेतजैसेअवसुबुधिनिलाइकै॥ संतसुखमानिरहिग
योघरमांझसदा सुनसोंसनेहनितखेलेसंगजाइकै। इ
च्छाभगवानपुरुषसोनलोभजानि मारिडारयो धूरिगाड़ि
गृहआयेपाछिताइकै २१६ देखैमहतारीमगबेटाकहांर
ह्योपागिबीतेचारिनाननउधानतेंनआनोहै।फेरीनृपद्वैड़ी

जाकेसंतसंगआयलौंड़ी कह्यो यौंपुकारिसुत कौने बिर मायो है ॥ बेगिदेवताइदीजेआभरणदियो लीजैकहीसो सँन्यासीयहमास्योमनलायो है। दईलैदिखाइदेहबोल्यो याकोगहिलेहुयाहीनेहमारोपुत्रमास्योनीकेपायोहै २१७॥

हिये ॥ श्लोक ॥ आराधनानांसर्वेषांविष्णोराराधनंपरम् ॥ तस्मात्परतरंदेवितदीयानांसमर्चनम् १ भक्तेतुष्टेहरिस्तुष्येद्धरौतुष्टे चदेवताः॥भवंतिसिक्ताःशाखाश्चतरोर्मूलनिषेचनात् २ आरंभगुर्वी क्षयिणीक्रमेणलघ्वीपुरावृद्धिमतीचपश्चात्॥दिनस्यपूर्वार्द्धपरार्द्ध भिन्नाछायेवमैत्रीखलसज्जनानाम् ३ मनमें विचार ॥ नवमे ॥ मन एवमनुष्याणांकारणंबंधमोक्षयोः४चितलाइकै॥कर नहीं तौ भक्ति डिगिजाइ जैसे पाथर चढ़ावने तौ बड़ी बेरचढ़े चित्तबिना नेक में गिरिपरे हैं ५ साधुजेते अनेक प्रकारके साधु आवे हैं ॥ जिन में न्यारी न्यारी क्रिया महादेवकीसी रीतिजानौ ६ ॥

बोल्योअकुलाइमैंतौदियोहैबताइ मोकोदेवोजुलुड़ाइ नहींझूंठकछुभाखिये।लेवौमतिनामसाधुजोउपाधिभेट्यो चाहौजाऔंडठिऔरकहूंमानिकेरिनाखिये॥आइकेविचार कियोजानीसकुचायोहियो बेलिउठीतियासुतदेकै नीके राखिये। पछ्योवधूपांइतेरोलीजियेबुलाइ पुत्रशोकको मिटाइऔरखरीअभिलाखिये २१८ बोलिलियोसंतसुना कीजियेजुअंगीकारदुखसो अपारकाहूविमुखकोदीजिये। बोल्योमुरझाइमैंतौ मास्यौसुतहाइमोपैजियेहूनजाइ मेरो नामनलीजिये ॥ देखौसाधुताईधरीशीशपैबुराईइनर तीहूनहोयक्रियेमेरुसमरीझिये। दईबेटीव्याहिकहिमेरो उरदाहमिटोकीजियेनिवाहजगमाहिं जौलौं जीजिये२१९ आयेगुरुघरसुनिदीजेकौनसरिवड़े संतसुखदाईसाधुसेवा

लेवताई है। कह्योसुतकहांअजूपायोसुनकैसीभांतिकहि को बखानेजगमीचुलपटाई है॥ प्रभुनेपरीक्षालईसोईहमैं आज्ञादई चलिये दिखावौजहांदेहकोजराईहै। गयोवाही ठौरशिरमौरहरिध्यानकियो जियोचल्योआयोदास कीर तिबड़ाई है २९० मूल॥ चारोंयुगचतुर्भुजसदाभक्त गिरासांचीकरन॥ दारुभईतरवारिसालमयरचीभुवनकी। देवाहितभितकेशप्रतिज्ञाराखीजनकी॥ कमध्वजकेकपि चारुचितापरकाष्ठ नाये। जैमलकेयुद्धमाहिंअश्वचढि आपहिधाये॥ घृतसहितभैंसभईचौगुणीश्रीधरसंगशाय कधरन। चारोंयुगचतुर्भुजसदाभक्तगिरासांचीकरन५३॥

लेवोमति नाम साधु॥ कुंडलिया॥ आन उपासक रामबिनु अगर सुऐसीरीति। भुस ऊपरको लीपनो अरु बारू की भीति॥ अरु बारूकीभीति भूनकी मनो मिठाई। बाजीगरको बाग स्वप्नमें नवनिधिपाई॥ अजअस्तन ज्यों कंठ तुच्छ बादरकी छाया। पूरब वस्तु बिसारि, पछिमदिशिढूंढनधाया॥ कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तुं समर्थः॥ ऐसेप्रीतिसें अवगुण दीखे जैसे मजनू की सहनकफोरी जब नाच्यो १॥

भुवनचौहानकीटीका॥ सुनोकलिकालबात औरहै पुराणख्यातभुवन चौहानजहांरानाकीदुहाई है। पट्टायु गलाखखातसेवाअभिलाषसाधुचल्योई शिकारनृपभीर सँगधाई है॥ मृगीपाछेपरेकेरटूकहतिज्ञानभये आइगई दयाकहीकाहेकोलगाई है। कहैंमोकोभक्तक्रियाकरौं मैं अभक्तनिकी दारुतरवारिधरौंयहैमनभाईहै २२१॥

सुनो कलिकालहैं तीन युगनमें तौ पुराणनमें विख्यातहैं

सतयुगमेंतो ध्रुव त्रेतामें प्रह्लाद हैं दूसरो दास राजा रामाश्वमेध में कथा है द्वापरमें भीष्मपितामह अरु द्रौपदी तीन युगनमें हरि प्रकट दर्शन देते कलियुगमें तो जीव लगोहैं याते कलियुग के जीव अधिकारी नहीं ग्रन्थ हूं सो नहीं और युगनमें वरदेके छुटि जाते दश दश हजार वर्ष तप करिके श्री भगवान मांगते तोहू छुटिते और ये कलियुग के जीव तनक दर्शन देहितो चिपटि जाहिं क्योंकि गोपिनने द्वापर में कृष्ण देखिकै घरछोड़िदै कलिके जीव कागज देखिके घर छोड़िदेहैं फिर घरको मुख न देखैं गोपीतो घरहूको आई १ ॥ कवित्त ॥ रसिकप्रवीणनिकी कविताई नाना भांति गाई रसस्वादही सों होति सफलाई है । यहै जानि मोहनजु भोग भोगना बनाये आगे चलेपुरिही सों सबनिजनाई है ॥ त्रियुग प्रकट रूपदेखे नित नैनन सों बैननै स्वरूप लखि होति अधिकाई है । काल कलिकालके लगेहैं ये रसाल जीव छोड़िहैं न क्योंहूं हरि सूरति छिपाईहै २ ये वाणीमें साक्षात् सूरतिही देखै है अधिकाई तो येईहै याते प्रकट दर्शन नहीं देहैंहरि ३ कृपा ॥ श्लोक ॥ वैष्णवानांत्रयंकर्मदयाजीवेषुनारद ॥ श्रीगोविन्दे पराभक्तिस्तदीयानांसमर्चनम् ४ ॥

औरएकभाईतानेदेखीतरवारिदारुमयचोनसँभारिजा इरानाकोजनाईहै । नृपनप्रतीतकरेकरैपरहसौंहनानाबानो प्रभुदेखितेजबातनचलाईहै ॥ ऐसेहीबरपएककहूतदव्यती तभयोकहैंमोहिंमारिडारोजेपैंभेषनाईहै । करीगोटकुंड जाइपाइकैप्रसादवैठे प्रथमनिकासिआपसबनदिखाईहै २२२ कमसोंनिहारिकहीभुवनविचारिकहाकह्योचाहैदा रुमुखनिकसतसारहै । काढ़िकेदिखाइसानोंबीजुरीचम चमाइआईमनमांभफ्बोलेवाकोमारोभारहै ॥ भक्तकरजो रिकैबचायोअजुमारि येवयों कहीज्ञानभ्रंठनहींदरीकरता

रहै। पट्टादूनादूनदाबोआवोदेतिसुजरायोमेंहींयरआंऊं होइमेरोनिसतारहै २२३॥

मारिडारिये॥ एतेसत्पुरुषाःपरार्थघटकाः स्वार्थं परित्यज्य ते सामान्यास्तुपरार्थमुद्यमभृतःस्वार्थाविरोधेनये॥ तेऽमीमानुषराक्षसाःपरहितं स्वार्थायनिघ्नन्तिये येनिघ्नंतिनिरर्थकंपरहितंतेकेन जानीमहे १॥ कवित्त॥ निज स्वारथहू परमारथको चितदैके सुधारत दैवतते। अरु स्वारथहू परमारथहू चितदैके सँवारत मानुष ते॥ परमारथ को तजि स्वारथको चितदैके सुधारत राक्षसते। निजस्वारथहू परमारथहू चितदैके बिगारत जानो न तरअरिहा॥ अहलता लागी ठजुरे जाहि चहुरे। परचोनी है आजु लाइद्ध लष्यवे॥ परमेश्वर पतिराखी बात नहिं कहनकी। बिजुली ज्यों तरवारि चमकी भुवनकी २॥

रूपचतुर्भुजकेपंडाकीटीका॥ दरशनआयेरानारूपचतुर्भुजजूकेरहेप्रभुपौढ़िहारशीशलपटायेहैं। वेगिदेउतारिकरिलैकेगरेडारिदियोदेखिवारकहैधौरोधौं रेयेई आयेहैं॥ कहततोकहिंगईसहीनहींजातिअब महीपति डारीमारिहरिपदध्यायेहैं। अहोहरीकेशकरौमेरेलियेसेतकेशलेशहू नभक्तिकहीकियेदेखौछायेहैं २२४ रानिराजात्रासकुलाशिरिंधुवड़ोहुतोसुनिकैसिंहासवाणीमानों फेरिजियाहै। देखिसेतवारजानीकृपामोअपारकरी भरीआंखिनीरसोचा लेशमैंनकियोहै॥ वड़ेईदयालसदाभक्तप्रतिपालकरेमैंनौ हौंअभक्तऐयेहियोसकुचियो है। कूंठेलनदेवकूतेनामली जैसेरोहीजूतातेसुखसाजैयहदरशादियोहै २२५ आयो भोररानासेतवारसोनिहारिरहे केशकालूँओरके लैपंडाले लगाये हैं। ऐंचिलियोएकतामेंखैंचिकैचढाईनाकरुधिर

कीधारानृपअंगछिरकायेहैं॥गिस्योभूमिमुर्च्छाह्वैकैतनकी नसुधिकछूजाग्योयामवीतेअपराधकोटिगाये हैं । यह अवदंडराजवैठेसोनआवैइहांअवयाहूं आनमानिकरै जे सिखाये हैं २२६ ॥

हरपदध्याइये ॥कुंडलिया॥ अगर आसरो और तजि रामनाम हदसींव । खटिया टूटेभ्यो सरन भुजा भगन भये ग्रींव ॥ भुजाभगनभये ग्रींव दंड यमराज धरैगो । तहां धराहर और रामबिन कौन करैगो ॥ मात तात सुत सुता प्रीय परिजन कहि चारो । सबसोंपरयो बिछोह सुदिन हरिनाम सँभारो १ अहो हृषीकेश॥ गीतायाम् ॥ यंत्रस्यगुणदोषत्वं क्षमस्वपुरुषोत्तम ॥ अहंयंत्रंभवान् यंत्री न मे दोषो न मे गुणः २ झूंठेसम्बन्ध ॥ दोहा ॥परसाझूठे भक्त को हरि राखत सनमान ॥ जैसे प्रोहित कुपढ़को देत दान यजमान ३ खरोखरो सब लेतहै परखि पारखी सार॥ खोटेदास अनन्य के गाहक नंदकुमार ४ मन बुद्धि चित्त अहंकार सो इनके प्रेरक नंदकुमार ५ ॥

भयेचारिभाईकरैंचाकरीवेरानाजूकी तामेंएकभक्तिक रैवनमेंबसेरो है । आइकैप्रसादखावैफेरिउठिजाइतहांकहे नेकुचलौतौ महीनालीजैतेरो है ॥ जाकेहमचाकरहैंरहत हजूरसदामरैतौजरावैकौनवहीजाकोचेरोहै । छूट्योतन बनरामआज्ञाहनुमानआयेकियो दागधूवांलागिप्रेतपार नेरोहै २२७ ॥

एकभक्ति ॥ श्लोक ॥ तुल्यंभूभृतिजन्मतुल्यमुभयोस्तुल्यंचमूल्यंवपुस्तुल्यंदार्ढ्यमुदग्रदंकखननंतुल्यंचपाषाणयोः ॥ एकंस्याखिलवंदनायविधिनादेवत्वमारोपितं तद्द्वारेविहितापरस्परपदाघातास्पदंदेहली १ ॥ दोहा ॥ ज्ञाति गोत सब परिहरे प्रभुसेवाकी आस ॥ रंक हरिहिको ह्वैरहै सो कहिये निजदास २ जाके हम

चाकर हैं ॥ सवैया ॥ जिनके चिरदे पतितें अतिपावनहै वचनै इमि छंदनके । सुवड़ेइ कृपाल बड़ेइ दयाल बड़े गुण दुःखनिकं· दनके ॥ कवि सूरति जे शरणागतपालहैं दायक सुक्ख अनंदन के । किरपालबड़े करुणाकरहैं हम चाकरहैं रघुनंदनके, ३ नरन की करै सेव बड़े अहमद भेव पाछे काम क्रोध लोभ मोह अधि· कात है । तासों जीव हिंसा झूंठ निंदा आदि कर्म है है ताहीके कुसंग नर दुःख दरशातहै ॥ मेरेजान बीज सब दोषनि को चा· करीहै सोई ताहि भाने मद अंध उतपातहै । पूजा परमेश्वरकी परिहरै पुण्य पाप जैसे पौन परसेते पात उड़िजातहै ४ नेक मुजरा करिआव॥गीतायाम् ॥ मन्मनाभवमद्भक्तो मद्याजीमांनमस्कुरु ॥ मामेवैष्यसिसत्यंते प्रतिजानेंप्रियोसिमे ५ ॥ सवैया ॥ होहुनिचिंत करैमतिचिंतत् चोंचेदईसांईचिंतकरैगो । पांइपसारिपस्योरहिसो इतूपेटादियोसोइपेटभरैगो ॥ जीवजितेजलकेथलकेपुनिपाहनमेंप· हुँचाइधरैगो । भूँखहिभूँखपुकारतुहैनरतू कहँसुन्दरभूँखमरैगो६॥ दोवैछंद ॥सोखालीक्योंरहिसीसंतौ गलोगुपालधनायो । पांचम· हीनापीछेजनम्यो दूधअगाऊआयो ॥ निरधनकेघरचाकीहोतीअन्न कहूंनहिंदीस । ताहूको हरि विमुख न राखें आनिपरोसिनिपीसे ॥ कृष्णायहव्वरजांतयतायो धिकमनमाहींवहिसी। यहतोगलोगुपाल धनायो सोखालीक्योंरहिसी७पद ॥ नारदजीमेरेसाधतेअन्तरना· हीं । जोमेरेसाधतेअंतरराखे तेउनरकमेंजाहीं ॥ जहँजनजैहैतहँमें जैथोजहँसोवेतहँसोऊं । जोकहुँमेरोभक्तदुखपावे कोटियतनकरि खोऊं ॥ पाईंदिये चलिवे फिरिवेकहँ हाथ दिये हरिकर्मकमायो । कान दिये सुनिये हरिको यश नैन दिये हरि दर्श दिखायो ॥ नासिका दीनी उतीरन सूंघन जीभदई हरिको यश गायो । ये सब साज दिये अतिसुन्दर पेटदियो किधों पाप लगायो ८ पांडव गीतायाम्॥भोजनेछादनेचिन्तां वृथाकुर्वंतिवैष्णवाः ॥ योसौविश्व म्भरोदेवः सकिंभक्तानुपेक्षत ९ हाथ हलाये विनतौ पंखाहू न पवन हाथतौ हलायाई चाहिये पवन ॥ करि खाऊं ॥ लक्ष्मी मेरी

अङ्ग शरीरी हरिदासनकी दासी। सब तीरथ दासनिके चरणन कोटि गंग अरु कासी॥ जहँ जहँ मेरो हरियश गावै तँही कियो मैं वासा। आगे साधु पाछे उठि धाऊं मोहिं भक्तकी आसा॥ मन वच क्रम करि हिरदे राखै सोइ परमपद पावै। कहत कबीर साधुकी महिमा हरि अपने मुखगावै १० हरि अरु हरिजन एक समाना। खोजिलेहु सब वेदपुराना॥ याते सबुहीं संसाररूपी मायाते छुटाके अरु हरिकी भक्तिको बढ़ावे हरिमारगु लगावे॥

मेरेतौप्रथमसवासजैमलनृपतिताको सेवाअनुरागनेकु खटकौनभावई। करेंघरीदशतामेंकोऊजोखबरिदेतलेत नाहिंकानऔरठौरमारभावई॥ हुतोएकभाईवैरीभेदयह पायलियोकियोआनिघेरोमाताजाइकेसुनादई। करैंहरि मलीप्रभुघोराअसवारभये मारीफौजसबैयहैलोगसचुपा दई १२८ देखैंजहांकेघोराअहोकौनअसवारभयोआगेजवे देखौ कहांखड़ीवैरीपरयोहै। बोल्योखुखदाइअजुमांवरोसि पाईकेहै अकेलोहीफौजमारीमेरोमनहरयोहै।तोहींकोदि खाइदईऔरनजततैन वैननिसोंजानी दईश्यामप्रभुट योहै। पुनि लेपदाइहिं ओदासे पनयहलियोकियोहनदुःख कौनभक्तीनुरोकियो है १२९॥

खटको न भावई॥ गीतायाम्॥ चंचलंहिमनःकृष्णप्रमाथिबल वद्दृढम्॥ तस्याहंनिग्रहंमन्ये वायोरिवसुदुष्करम्॥ १॥ कवित्त॥ छिनमें प्रवीन छिन मायामें मलीन पुनि छिनमें है दीन छिनमाहिं जैसो शक्रहै। लिये दौरि धूप छिन छिनमें अनन्तरूप कोलाहल ठानत मथानकैसो तक्रहै॥ नटकोसो थार किधौं हारहै रहटको सो धाराकोसो भँवर कुम्हार कोसो चक्रहै। ऐसो मन भ्रामक तो अब कैसे थिरहोत आदिहीको चंचल अनादिहीको वक्रहै२॥ श्लोक॥ यत्रयोगेश्वरःकृष्णो यत्रपार्थोधनुर्द्धरः॥ तत्रश्रीर्विजया

भूतिर्मुद्रानीतिर्मतिर्मरा ३ पूछिके पठाइ दियौ ॥ कवित्त ॥ काहे का कपूर चूरि चन्दनमें सानतही काहेको गुलाबनिको कीजत पतनुहे । कहें ऊधो राजरोग और लगा औरैठठै दोरे कहा होत यहां जारत अतनुहै ॥ वेई तरुणी वरुणी वेई सुई लालडोरे उनहीं के टांकेहोत दुखको हननुहै । छांड़ि देव पापिनिको दूरिकै चवाइनि को आंखिनके घाइनिको आंखेही यतनुहै ४ ॥

भयोएककाल साधुसेवासोंरसालकरै परैजोईहाथलै केसंतनखवावही । पायोपकवानवनमध्यगोखवाइवेको आइगेरु ढीलचोरनैंसिनोचुरावही ॥ जानिकैछिपाईवात मातासोंबनाइकही दईविप्रभूखेघृतसंगफिरिआवही । दिनहोदिवारीको सोउनदहरादोहास आईवरजासलिये राभिकेसुनावही २३० भागवतटीकाकरिश्रीधरसुजानि लेहु गृहमेंरहनकैंजगतव्योहारहै । चलेजातमगठगमि लेकहेकौनसंगसंगरघुनाथमेरोजीवनअधारहै ॥ जानिहन कोईनाहिं मारिवोउपायकैंधरेचापबाणआवैवहीसुकुवार है । आयेघरलायेपूछैश्यामसोंस्वरूपकहां जानिवेतौपार कियेआपडाल्योभारहै २३१ ॥ मूल ॥ नितभक्तनसंग भगवानज्योंगऊवच्छगोहनफिरे ॥ निष्किंचनइककदास तासुकेहरिजनआये । विदितबटोहीरूपभये हरिआपलु टाये ॥ साखिदेनकोश्यामखुदइहांप्रभुहिपधारे । रामदास केसदनराइरनछोरसिधारे ॥ आयुधछतननतनअनुगके बलिबंधनअपवपुधरे । नितभक्तनसंगभगवानज्योंगऊव च्छगोहनफिरे ५२ ॥

आईवर ॥ दोहा ॥ छल करि बल करि बुद्धि करि साधनके

मुख देहिं ॥ हुण्डीकेसे दामको हरिजू सों गनिलेहिं १ ॥ धरेचाप
बाण ॥ कोटि विघन शिरपररहे कोटि दुष्टको साथ॥तुलसी कछू
नै करिसकैं जो सहाय रघुनाथ २ गोहन फिरै ॥ ब्रह्मवैवर्ते ॥ भक्त
संगेभ्रमत्येव छायेवसततंहरिः ॥ चक्रेणरक्षतेभक्तान् भक्त्याभक्त
जनप्रियः ३ कृष्णकृष्णेतिकृष्णेति यत्रयातिजपन्नरः ॥ पश्चान्म
द्गमनंपार्थ सत्यंसत्यंवदाम्यहम् ४ ॥

टीका ॥ भक्तनकेसंगभगवानऐसेफिरयोकरैंजैसेवच्छ
संगफिरैनेहवतीगाई है। हरिपालनामविप्रधाममेंजनम
लियोकियोअनुरागसाधुदईश्रीलुटाईहै॥ केतिकहजारले
बजारकेकरजआये गरजनसरैकियोचोरीको उपाई है।
विमुखकोलेत हरिदासकोनदेतदुख आये घरसंततिया
संगवतराई है २३२ बैठेकृष्णरुक्मिणीमहलनतहांशोच
परयोहरयोमनसाधुसेवासाहरूपकियो है। पूछिचलैकहा
कहीभक्तहैहमारोएक मैंहूंआऊंआवोआयेजहांपूछिलियो
है ॥ अजूमगचल्योजातबड़ोउतपातमध्यकोऊ पहुँचाइ
देवोलैरुपइयादियोहै। करौममाभानसंतमैंलिवाइजाउ
इन्हेंजाइवनमांझदेखिबहुधनजियो है २३३ देखिजो
निहारिमालातिलकनसदाचारहोंहिगे भंडारघनजोपैइ
तौलायो है। लीजियेछिनाइयेहीवारकहेडारिदेवौदियो
सबडारिछलात्रिगुनामेंछायो है॥ अंगुरीमरोरिकहीबड़ात
कठोरअहोतोको कैसेछाडौंसंतजबैंमोकोभायो है। प्रकट
दिखायोरूपसुन्दरअनूपवह मेरोभक्तभूपलैकैछातीसोंल
गायो है २३४॥

चोरीको उपाव ॥ श्लोक ॥ वैष्णवोबंधुसत्कृत्ये । विजयरथ
कुटुम्बे॥बैठेकृष्णरुक्मिणीमहल॥ वर्जयित्वामहाराज श्रीमद्भगव

दालवम् १ हस्थोमनसाधुसेवा ॥ साधवोहृदयंमह्यं साधूनांहृदयं स्वहम् ॥ मदन्यंतेनजानंति नाहन्तेभ्योमनागपि २ कोउ पहुँचावे बिमुख को लेत बनिया ह्वैके चोरी करी वह वैष्णव निकस्यो पिछोरी लैके भज्यो दै रुपइया मेरे सारेको बिवाहहै आजु पहुँचाना देखे जो निहारि जानी के सरावगी बनिया है ३ ॥

गौड़देशबासीउभै विप्रताकी कथासुनोंएकवैसवृद्ध जातिवृद्धछोटोसंगहै।औरऔरठौरफिरिआयेफिरिवृन्दा वनतनभयोदुखीकीनीटहलअभंगहै ॥'रीभयोबड़ोद्विज निजसुतातोकोंदई अहोरहोनहींचाहोंमेरेलरैबिनैरंगहै। साखीदैगुपालअबबातप्रतिपालकरो ढरोकुलग्रामभाम पूछौंसोप्रसंगहै २३५ बोल्योछोटोविप्रक्षिप्रदीजियेकही जोबाततियासुतकहैंअहोसुतायाकेयोगहै । द्विजकहैंना हींकैसेकरौंमैंतोदेनकहीकहीकहींभूलिगयोबिथाको प्रयोगहै ॥ भईसभाभारीपंछेसाखीनरनारी श्रीगुपालबनवारी औरकौनतुच्छलोगहै।लावोजूलिवाइजोपैसाखीभरैंआइ तोपैब्याहिबेटीदीजैकरोसुखभोगहै २३६ ॥

फिरिआयेवन ॥ पद ॥ ब्रजभूमि मोहनी मैं जानी। मोहन कुंजमोहन वृन्दावन मोहन यमुनापानी ॥ मोहननारि सकल गोकुलकी बोलत अमृतबानी । जैश्रीभटकेप्रभु मोहन नागर मोहन राधारानी ॥ ब्रज १ ॥ वृन्दावनरजोवन्दे यत्रास्तेकोटिवैष्णवः २ ॥ कवित्त ॥ कालिंदी के तीर द्रुमडार झुकिनीरआई त्रिविध समीरबहे गहै मतिमनकी । कुंजकुंजकुंजनमें बोलत मधुप माते आवत सरसगन्ध माधुरी सुमनकी ॥ राधेकृष्ण नाम धुनि छाइरही जहां तहां कही न परत शोभा पुलिन अबनकी । देखि देखिरहे फूलि सुधिबुधि भूलि भूलि ठौरठौर राखे वृन्दावन वृन्दा

वनकी ३॥ वन्दौं श्रीवृन्दावन धाम। ब्रह्मादिक दुर्लभ निरहींको देत तुच्छ जीवन विश्राम॥ उज्ज्वसे हरि श्रीतम चाहत गुल्मलता लाग्यो अभिराम। श्रलिवलिजाइ कृपानिधि सोको लाड्लड़ा-वत आठौयाम॥ यही रीति रानी श्रीराधा नहीं विचार रूप गुण धाम। पाइनिजालश्रालवैंदीदई भोड़रायिक लम्बिारीस्फनश्याम ४॥ श्लोक॥ वाराणस्यांविशालाक्षीविमलापुरुषोत्तमे॥ रुक्मिणीद्वारकायांतुराधावृंदावनेवने ५ छप्पै॥ सघनकुंज अलिपुंजपवन जहँ त्रिविध सुहाई। रतनजटित अवनी अनूप यमुना वहिआई॥ छरितुकोक संगीन रागरागिनि मखि रतिपति। सब सुखराज समाज सहज सेवत अति नितप्रति॥शृंगारहास्य रसप्रेम हैं कालकर्लगुन कछु न डर। दंपति विहार गोविंद सरस जैजैवृंदाविपिन वरं ६॥ कवित्त॥ ब्रह्माके कमंडलते गिरिजा प्रचंडनते शिवजटा मंडनते धारा यों वहतिहै। तीनों लोक पावनको आपदा नशा-वनको जाके गुणगावनको वाणी यों चहतिहै॥ कहै कविराइ सुर असुरहू पूजैं जाहि सुरधुनी कहे दुःख पाप न रहत है। यमुनाजी की महिमा याते नहीं कही परै गंगापगरानी ताकी पटरानी कहत है ७॥ कवित्त॥ रसिबो वसिबो वृन्दावन को हँसिबो मिलि संतन में रहिये। पढ़िवो गुनिवो नित राम सदा सुख सों लहि जो जितनो चहिये॥ जहि योगी यती हिय ध्यान धरें जगजीवनि भाग वड़ो लहिये। यमुना मिटिजाइ सवै जियकी गगुना यमुना यमुना कहिये ८॥ कवित्त॥ यमुना सुभगतीर कुंजसुखपुंजभीर मोर पिक कीर धुनि भांति भांति हेरी है। फूलीं द्रुम डारें गुंज मधुप विहारें प्यारी प्रीतम निहारें आंखें चहुँदिशि हेरी है॥ पुलिन प्रकाश रास विविध विलास जहां यद्त हुलास वात वीते होति मेरी है। कैसो यहधाम अभिराम वृन्दावन नाम ऐसी छवि हेरीपरी रोमरोम वेरीहै ९॥ दोहा॥ उपमा वृन्दाविपिन की कहियों दीजै काहि॥ कोटि कोटि वैकुंठहू तिहि सम कहे न जाहि १०॥

आयोवृन्दावनवनवासीश्रीगुपालजूसों बोल्योचलो साखीदेवलईहै लिखाइकै। बीतेकैश्यामतनकह्योहयाल सुंदरजूप्रतिमानचलैतौपैबोल्योक्योंजुभाइकै॥ लागेजब संगयुगसेरभोगधस्योरंग आधेआधपावैंचल्योनूपुरबजाइकै। धुनितेरेकानपरैपाछेजनिडीठिकरें फेरहांवाही ठौरकहीमैंसुनायकै॥ गयेढिगग्रामकही नेकुतौंचितउर हैचितयेतेठाढ़ेदियोमृदुमुसुकाइकै। लावौजाबुलाइयहीं आइदेखौआयेआपसुनतहीं चौंकिसबग्रामआयोधाइकै॥ बोलिकैसुनाईसाखपूजीहियेअभिलाख लाखलाखभांति रंगभयोउरभाइकै। आयोनसरूपफेरिविनैताहिराख्यो घेरिभूपसुखढेरिदियो अबलौंबजाइकै २३७॥

सुखढेरिदियो॥कवित्त॥लागीजबआश तबउतरयो अकाशहूंते सिंधुजलयंत्र रसचीन्होपानकीन्होहै। देख्यो हितलार बाकोउदर विदारि कढ़यो चढ़यो मोलभारी वाससंपुटनिलीन्हो है॥ चाहत किशोरभ्रम्यो दशदिशिओर लग्यो व्रजचितचोर जियवारि फेरि दीन्हो है। उरके सुलाक मोती नासिका वुलाकभयेबड़ोई चलाक मोहिं लाकमन कीन्होहै १ वदनसुराही में छबीलो छविछातोमद अधरपियालाक्षणक्षणमें गहतुहै। अलसाइकै पौढ़त कपोलपर्य्यंक पर कबहूंगजकजानि भपनचहतुहै॥ प्रेमनगसाथी येतो सदाई अशंकभरि छकोईरहत कोउकछुन कहतुहै। झुकि परे वातके कहेते अनखातन्यारो वेसरिको मोती मतवारोई रहतुहै २ दृष्टांत सिद्धिको चौवेने तमाचोदियो ३॥

रामदासकीटीका॥ द्वारकाकेढिगहीडांकोरएकगांवर हैरहैरामदासभक्तभक्तिजाकोप्यारिये। जागरणएकादशी करैरणछोरजकेभयोतनवृद्धआज्ञादईनहींधारिये॥ बोले

भरमाइतेरोआइबोलह्योनजाइ चलोंघरधाइतेरे ल्यावो गाड़ीभारिये। खिरकीजुमंदिरकेपाछेतहांठाढ़ीकरौभरो अकवारमोकोवेगिहीपधारिये २३८ करीवाहीभांतिआ योजागरणगाड़ीचढ़ि जानीसबवृद्धभयोथकीपांवगतिहै। द्वादशीकीआधीरातलैकैचलेमोदगात भूषणउतारिधरे जाके सांचीरतिहै॥ मंदिरउघारिदेखेपर्योहैउजारितहां दौरेपाछेजानिदेखिकहीकोनमतिहै। वापीपधराइहांकिजा नेसुखपाइरह्योगह्योचलोजाति आनिमास्योघावअतिहै २३९ देखेचहुंदिशिगाड़ीकहूंपैनपायेहरिपछितावो करि रहैभक्तिकेलगाई है। बोलिउठ्यो एकयहिओरगहगयो तो देखेजाइवापरीकोलोहूलपटाईहै॥ दासकोजुडारी ोटओटलई अंगमेंहीनहींयेतोजाहुँविजेसूरतिअताईहै। रीसरसोनौलेहुकहीजनतोलिदेहु मेरेकहाबोल्योवारी याकेजताई है २४० लगेजबतोलिबेकोवारीपाछेडारि नईगतिभईपलाउठेनहींबारीको। तबतौखिसानेभये उठिघरगये कैलेसुखपावैंफिरौंमतिहीमुरारीको॥ घर विराजैंआप कहेभक्तिकोप्रतापजाइकरैजोपैकुरै रूप जप्यारीको। बलबंधनामप्रभुबांधेबलिभयेतब आ क्रोक्षतसुनिआयेचोटसारीको २४१॥

ारकासे दोसौ कोस काहू मंडलमें डांकोर गांव है खिरकी लवताई जैसे रुक्मिणी श्रीकृष्णने हरीही भगवान् अपनेगुण भक्तनको सिखावैं सांचीरति तापै दृष्टांत एकडोकरी ठा- सेवा महंतको देतिही सो उनकही दर्शन करि लेहिंगे ी ओटलई तुम अपराधी भक्तमारेउ मरेंगे महाप्रलय करौ हीं मेरी सर लोनों अब अपनोनहीं बलबंधन नाम इहां

घात्रप्रति छवौना है रहे या प्रकारको नमतिहै सहवृचा देश हर त्रिचिकोईआनि तमासा जो वैदीनक॥

मूल॥ वरवच्छहरणपीछेविदित सुनोंसंतअचरज भयो॥जसूस्वामिकेवृषभचोरिव्रजवासीलाये। तैसेईदिये श्यामवरषदिनखेतजुताये॥ नामाज्योंनँददासमुईइक वाछिजिवाई। अम्बअलहकौनयेप्रकटजगगाथागाई॥ श्रीवारमुखीकेमुकुटको रंगनाथकोशिरनयो। वरबच्छ हरणपीछेविदितसुनोंसंतअचरजभयो ५६ जसूस्वामी कीटीका॥ जसूनामस्वामीगंगायमुनाकेमध्यरहैं गहैं साधुसेवाताकोखेतीउपजावहीं। चोरीगयेवैलताकीइन कोनसुधिकछूतैसेदियेश्याम हलजुतमनभावहीं॥ आये व्रजवासीवई वृषभनिहारि कही इहैंकौनलाये घरजाइ देखिआवहीं। ऐसेवारदोइचारि फिरेऊनठीकहोत पूछी पुनिल्याये आयेइन्हेंपै नपावहीं २४२ वड़ोईप्रभावदेख्योंतैसेप्रभुवैलदिये भयोहियेभावआइ पाइनमेंपरे हैं। निपटअधीनदीन भापिअभिलाषजानि दयाकेनिधान स्वामीशिष्यलैकेकरे हैं॥ चोरीत्यागिदईअतिसुधिबुधि भईनईरीतिगहिलईसाधुपंथअनुसरेहैं। आपहुंचावैंदूध दहीदैलड़ावैंआवैंसंतगुणगावैंवेअनंतसुखभरेहैं२४३॥

साधुसेवारागी हैं हरिको सांचो सनेहतो तवहीं जानिये जब हरिके प्यारेन में सनेह होइ १ संतसे बाहिरि प्रताप मजनू को तो सलामकरी लैलै की गली में देखो करै छिन्न दोप साधुसेवा के प्रतापसों वड़ो वैभव भयो ताहि देखिके २॥ श्लोक॥ काक कुक्कुटकायस्थाः स्वजातिपरिपोपकाः॥ स्वजातिपरिहन्तारःश्वान सिंहगजाद्विजाः ३ नापेद्दशान्तराजामरुत्तको अरु उतथ्यको॥

नन्ददासकीटीका । निकटबरेलीगांवतामेंसोहबेली रहैनन्ददासविप्रभक्तसाधुसेवारागी है । करैंद्विजदोपता सोंमुईएकबछियाले डारिदईखेतमांझगारीजकलागीहै ॥ हत्याकोप्रसंगकरैसंतजनहूंसोंलरै हिन्दूसोंनमरैयहबड़ो अभागीहै । खेतपरजायवाहिलईहै जिवाइदेखिपगे कोपीपाईंभक्तिभावमतिपागी है २४४ अल्हकीटीका ॥ चलेजातअल्हमगलगे बागदीठिपर्यो करिअनुरागहरि सेवाविस्तारिये । पक्किरहेआंबमांगेमालीपास भोगलिये कहोलीजैकहीभुकिआई सबडारिये ॥ चल्योदौरिराजा जहांजाइकेसुनाईबातगातभईप्रीति अलुटतपांवधारि ये । आवतहीलौटिगयेमैंतोजूसनाथभयो दयोलैप्रसा दभक्तिभावईसँभारिये २४५ ॥ बारमुखीकीटीका ॥ वेश्या कोप्रसंगसुनों अतिरसरङ्गभर्यो भर्योघरधनअहो ऐपै कोनकामको । चलेमगयाचनकोठौरस्वच्छआईमन छाई सहिआसनसोंलोभनहींदामको ॥ निकसीझमकिद्वारहंस सेनिहारिसबकौनभागजागेभेदनहींमेरेनामको । मोहर निपात्रभरिलैमहंतआगेधर्यो ढर्योजलनैनकहीभोग करोश्यामको २४६ पूछीतुमकौनकाकेभौनमेंजनमलियो कियेसुनिमौनमहाचिंताजियधरी है । खोलिकैनिशंक कहोशंकाजिनिआनोमन कहीबारमुखीऐपैपाइआइपरी है ॥ भर्यो हैभंडारधनकरोअङ्गीकारअजू करियेविचारजो पैकैसेजगतरी है । एकहैउपाइहाथरंगनाथजूकेअहोकी जियेमुकुटजामजातिमतिहरी २४७ ॥

मोध्वजः ॥ दशध्वजसमावेश्यादशवेश्यासमोनृपः १ काकभुशुण्ड पैनबैठेहंस सतद्रव्यपैसेकोनभाग नारदपंचरात्रे ॥ स्रातृयत्स्याद्य मस्थानेस्वर्गिणामभयायतत् ॥ दानंभवातिगांगेयकोनसेवेतबुद्धि मान् २ ॥ छप्पै ॥ ज्ञानवंत हठकरें निबल परिवार घटावै। विधवा करें शृंगार धनीसेवाको धावैं ॥ निर्धन समझें धर्म नारि भरता नहिं मानैं। पंडित किरिया हीन राज दुर्लभ करिजानैं ॥ कुलवंत पुरुष कुलविधि तजैं बंधु न मानत बंधु हित। संन्यास धारिधन संग्रहें ये जगमें मूरुख विदित ३ भेदनहीं नामको॥ श्लोक ॥ नह्य म्मयानितीर्थानिनदेवामृच्छिलामयाः ॥ जोपै॥ दोहा ॥ सब सु-खपावै जासुते सो हरिजूको दास ॥ दुखपावै कोउ जासु ते सो न दासरे दास ॥ रंगनाथ को मुकुट ॥ तेजीयसांनदोषायवह्नेस्स र्वभुजोयथा ४ ॥

विप्रहूनकुवेजाकोरंगनाथकेसेलेतदेतहमहाथतोकोर हैइहां कीजिये। कियोईवनाईसबघरकोलगाईधनबनिठ निचलीथारमध्यधरिदीजिये॥सन्तआज्ञापाइकेनिशंकग ईमन्दिरमेंफिरीयोंसशङ्कप्रगतिआभर्मभीजिये। बोलेआइ याकोलाइआइपहराइजाइ दियोपहराइनयोशीशमति भीजिये २४८ ॥ मूल ॥ औरेयुगनतेकमलनयनकलियुग वहुतकृपाकरी ॥ बीचदियेरघुनाथभक्तसँगठगियालागे। निर्जनवनमेंजाइदुष्टकर्मकियेअभागे ॥ बीचदियेसोकहां रामकहिनारिपुकारी । आये शारँगपाणिशोकसागरते तारी ॥ द्रुतदुष्टकियेनिर्जीवसबदासप्राणसंज्ञाधरी । औरे युगनतेकमलनयनकलियुगवहुतकृपाकरी ५५ टीका ॥ विप्रहरिभक्तकरिगौनोचल्योतियासंग जाके दूनोंरंगता कीवातलैजनाइये। मगठगमिलेद्विजपूछेअहोकहांजात जहांतुमजातयामेंमननपत्याइये॥ पंथकोछुटायोचाहैवन

मैंलिवाइजाइ कहैअतिसूधोपैंड़ोउरमेंनआइये । वोलेवी चरामतऊहियेनेकुधकधकी कहीउहीभामश्यामनामक हांगाइये २४९ ॥

विप्रहू न छुवैं राजाने आपिन्यौते सो छोड़ि गयो वनमें कुत्ता को खायो यों सबको खवायो लिंग गाजर सोय वार अण्डकोश प्याजनख लहसन हाड़सूरी सूड़ तरबूजसो ऐसो मेरो धान्यनि-षिद्धहै १ नेकुधकधकी ॥ कुंडलिया ॥ वैरी वँधुवा वावरो ज्वारी चोरलवार । व्यभिचारी रोगी ऋणी नगर नारिको यार ॥ नगर नारिको यार भूलि परतीति न कीजे । सौंहैंसौसौ खाइ चित्त में एक न लीजे ॥ कह गिरिधर कविराइ न्याइमें भाषो ऐसे । सुख सों हितको कहें पेटमें वैरी जैसे २ कमलनयन वहुत सूझै तीन युग आयुर्दा वुद्धि वल धनरोग नहीं कर्म कर सोइवने कलियुग में कछु न नामवतायो कृपाकरि ३ ॥

चलेलागिसंगश्रवरंगकोकुरंगकस्यो तियापररीझेभ क्तिसांचीइनजानीहै । गयेवनमध्यठगलोभलगिमास्यो विप्र विप्रलैंकैचलेवधूअतिविलखानीहै ॥ देखैफिरिफि रिपाछेकहैकहादेखोमास्यो तवतोपुकास्योदेखोवाहीबीच प्रानीहै । आयेरामप्यारेसवदुष्टमारिडारे साधुप्राणदेउ वारेहितरीतेयोंवखानीहै २५० ॥ मूल ॥ यकभूपभलेभा गवतकीकथासुनतहरिहोइरति ॥ तिलकदामधरिकोइता हिगुरुगोविंदजाने । षटदरशनीअभावसर्वथाघटकरिमा ने ॥ भांड़भक्तकोभेषहासहितभँडकुललाये । नरपतिकेदृ ढ़नेमताहिपैपाइँधुवाये ॥ भरिभांड़भेपगाढ़ोकस्योदरशप रशउपजीभगति । यकभूपभलेभागवतकीकथासुनतहरि होइरति ५६ ॥

चलेलागि संग ॥ कवित्त विप्रसोईपढ़्यो चारोवेदहूको भेद

जाने स्मृति षट शास्त्रमतिन्याइसव रट्यौहै। सोई पढ्यो भारत पुराण पढ्यो पिंगलसो सबै कोश पढ्यो सोतौ काव्यकोषकढ्यो हैं॥पढ्योपूरे आगम सो अगम विचार चित्तसोई पढ्यो ज्योतिष सो ज्योतिरस मढ्यो है। सोईपढ्यो व्याकरण जानिलिये शब्द वर्ण सोई सब पढ्यो जोई रामनाम पढ्यो है॥ दोहा॥ जो है जाके आसरे ताहीको शिरभार॥ करुईहरुई तोमरी खेइलगावै पार २॥ सवैया॥ कामसे रूप प्रतापदिनेशसे सोमसे शील गणेशसेमाने। हरिचंदसे सांचे बड़ेविधिसे मघवासे महीपविषै सुखसाने॥ शुकसे मुनिशारद सेवकता चिरजीवन लोमशसे अधिकाने। जग ऐसे भयेतौ कहा तुलसी जोपै राजिवलोचन राम नजाने ३ तिलक दामधरि धारिआश्रम हरिके अंगतेसंतशरीर। वैष्णवो मनदेहस्तु॥ तुलसीमालिकाधारी वैष्णवो भक्तिवर्जितः॥ पूजनीयोमहीपाल॥ षट्दर्शनीषट्शास्त्रवक्ता दासनहीं संतदास कहावैं धनहरिको जैसे गुमास्ता दश रुपया महीना पावै ऐसे४॥

टीका॥ राजाभक्तराजडोमभांड़कोनकाजहोइ भोइ गईयाकेधनहरिकोनदीजिये। आयेभेषधारीलेपुजाइना चेदेकैताल नृपतिनिहारिकहीयोंनिहालकीजिये॥ भोज नकराइभरिमोहरनिथारलाये आगेधरिविनेकरीअजूयह लीजिये। भईभक्तिराशिबोलेआवैबासभावैनाहिं बांहग हेरहेकैसेचलेमतिभीजिये २५१॥ मूल॥ अतिअन्तर निष्ठनृपालइकपरमधरमनाहिंनधुजी॥ हरिसुमिरनहरि ध्यानआनिकाहूनजनावै। अलगनइहिविधिरहैअंगना मरमनपावै॥ निद्रावशसोभूपवदनतेनामउचार्यो। रानी पतिपररीझिबहुतवसुतापरवार्यो॥ ऋषिराजशोचिक ह्योनारिसोंआजभक्तिमेरीपुजी। अतिअंतरनिष्ठनृपालइ कपरमधरमनाहिंनधुजी ५७॥

राजाभक्तराज॥श्लोक॥ दृढतरनिबद्धमुष्टेःकोशनिषण्णस्यस हजमलिनस्य॥ कृपणस्यकृपाणस्यचकेवलमाकारतोभेदः १ भई भक्तराशि॥ कवित्त॥ जलके सनेही मीन बिछुरत तजेंप्राण मणि विन अहिजैसे जीवत न लहिये। स्वाति बूंदकेसनेही प्रकट जग- तमांझ एकसीपि दूजेपुनि चातकहूं कहिये॥ रवि के सनेही वसें कमल सरोवर में शशिके सनेही य चकोर जैसे रहिये। तैसेही सुखद एकप्रभुसों सनेह जोरि और कछुदेखि काहू ओर नाहिं च- हिये १ राजाने तव बांहगहो॥ सवैया॥ तजे पितुमात तिया सुत भ्रात कियेजगमात पितातवऔरे। नंदकुमार भजैनहिं मूढ़ भजै जेहिसो ठहरात न ठौरे॥ लेत न सीख सिखावत औरै सु दौरतभोग दिशाकर कोरै। भांड़भयो विषयी न भयो सुकछ्यो कछु और नच्यो कछु औरै २॥

टीका॥अंतरनिष्ठराजाकी॥ तियाहरिभक्तकहैपतिपै नभक्तपायोरहैमुरझायोमनशोचवढ़योभारी है। मरमन जान्योनिशिसोवतपिछान्योभाव विरहप्रभावनामनिक- स्योविहारी है॥ सुनतहीरानीप्रेमसागरसमानी भोरसं पतिलुटाई मानोंनृपतिजियारी है। देखिउतसाहभूपपूछो सुनिवाहिकह्योरह्योतनठौरनामजीवयों विचारीहै २५२ देखितनत्यागिपतिभईऔरगतियाकी ऐसीरतिवानमैंन भेदकछूपायोहै। भयोदुखभारीसुधिवुधिसवटारी तव नेक नविचारीभावराशिहियेछायो है॥ निशिदिनध्यानविरह प्रवलतजेप्रानभक्तरसखानरूपकापैजातगायो है। जाके यहहोइसोइजानेरसभोइयामें डारैमतिखोइसवप्रकटदि खायो है २५३॥

नाम निकस्यो विहारी है॥ कवित्त॥ कुटिल अक्रूर क्रूर वैरी काहूजनगकोहे चेटकरोगारि गिरलेके व्रज भूरिगो। व्याकुल

निहालनाल वंशीधरलाल बिन मीनज्यों तरफितन प्रेमरस भू-
रिगो॥ चरण उचाइ चितवत ऊंचेधाम चढ़ि चिंताके चकित
भईचैनसव चूरिगो। वारवारकहत विठूरिजलनैनपूरि भूरि न
उड़ाति आली अवरथदूरिगो १ भ्रमेंभौर ठौरठौर केतकी कुमुद
और तनक जो लाज करै पंकजके संगकी। चंचल चलाकचित
चोकरीकी भूलमति घायलज्यों घूम्योकरै लगनि कुरंगकी॥ और
नहींस्वाद है विवाद काहू वातनिको मनमें न मनसा है औरके
प्रसंगकी। जगमें सराहिये सनेहकी नवलरीति विठुरनिमीन की
औ मिलनि पतंगकी २॥

मूल॥ गुरुगदितवचनशिष्यसत्यअतिदृढ़प्रतीति
गाढ़ोगह्यो॥ अनुचरआज्ञामांगिकह्यो कारजकोजैहौं।
आचारजइकवाततोहिंआयेतेकैहौं॥ स्वामीरह्योसमाइ
दासदरशनकोआयो। गुरुकीगिराविश्वासफेरिसवघर
मेंलायो॥निजपनसांचोकरनकोविभुसवैलुनतसोईकह्यो।
गुरुगदितवचनशिष्यसत्य अतिदृढ़प्रतीतिगाढ़ोगह्यो
५८॥ टीकागुरुनिष्ठकी॥ बड़ोगुरुनिष्ठकहूघटिसाधु
इष्टमानेस्वामीसंतपूजोमानेकैसेसमुझाइये। नितहीवि
चारैपुनिटारैयेउचारैनाहिं चल्योजवरामतिकोकहीफिरि
आइये॥ शपथदिवाइनजराइवेकोदियोतन लायोयों
फिराइवहैवातजूजताइये। सांचोभावजानिप्राणआइसो
वखानकियो करैभक्तसेवाकरीवर्षलौंदिखाइये २५४॥

दृढ़प्रतीति करिके मानों गुरुकेवचन को पर यामें गुरुको शि-
ष्यको भलो होइ ऐसी दृढ़ प्रतीति न करै तापै घोराको दृष्टांत॥
वड़ोगुरुनिष्ठ नारदवाक्यम्॥ यस्यसाक्षाद्भगवति ज्ञानदीपप्रदे
गुरौ॥ मर्त्यबुद्धिःश्रुतं तस्य सर्वं कुंजरशौचवत् १ आचार्यं मां वि
जानीयात्॥ करीभक्तसेवा नाभाजूकही है भक्तभक्ति भगवंतगुरु

गहीन भक्तकामनहीं ॥ आदिपुराणे॥ अस्माकंगुरवोभक्ता भक्ता नांगुरवोवयम् । अस्माकंवान्धवाभक्ता भक्तानांवान्धवावयम्॥ वैष्णवके अपराधोंको गुरु अरु हरि न बचावैं २ दोउनके अपराधों को साधु बचावैं जैसे दुर्वासाको महादेव गुरु ब्रह्मा दादागुरु हरि परम गुरु न बचायसके अम्बरीषने बचायो साधुही सब अपराध नको बचावैं और की सामर्थ्य नहीं सो छोड़ावै याते साधु त्रैलो-की में बड़े हैं ५॥

मूल॥संदेहग्रन्थिखंडननिपुणवाणिविमलरैदासकी ॥ सदाचारश्रुतिशास्त्रवचनअविरुद्धउचारयो । नीरक्षीर विवरणपरमहंसनउरधारयो ॥ भगवतकृपाप्रसादपरमग तिइहितनपाई । राजसिंहासनबैठिज्ञातिपरतीतिदिखा ई ॥ वर्णाश्रमअभिमानतजि पदरजवंदहिजासकी । संदेहग्रन्थिखंडननिपुणवाणिविमलरैदासकी ५६ टीका रैदासजूकी ॥ रामानन्दजूकोशिष्यब्रह्मचारीरहैएक गहै ब्रह्मपुटकीकोतासोंकहैवानिये । करौअंगीकारसीधोकहो दशवीसवार वरषेप्रबलधारातामेंवापैआनिये ॥ भोगको लगावैंप्रभुध्याननाहिंआवैं अरेकैसेकरिलावैजाइपूछीनी चमानिये । दियोशापनारीबातसुनीनहमारी घटिकुलमें उतारीदेहसोईयाकोजानिये २५५ ॥

वाणि विमलरैदासकी केवल भक्तिही गाई ॥ पद ॥ धन्य हरिभक्ति अवलोक यश पावनी । करौ सतसंग इहि विमल यश गावनी ॥ वेदतेपुराण पुराण ते भागवत भागवत ते भक्ति प्रकट कीनी । भक्तिते प्रेम प्रेमते लक्षणा विना सतसंग नहिं जाति चीन्ही ॥ गंगा पापहरें शशि ताप अरु कल्पतरु दीनता दूरिखोवैं पाप अरु ताप सब कुमति दूरि करि अमी की दृष्टि जब संत जोवैं ॥ विष्णुभक्त जिन चिन पर धरति ने मन वच करम करि

विश्वासा। सन्त धरणी धरी कीर्त्ति जग विस्तरी प्रणत जन चरण रैदासदासा १ नीर क्षीर ॥ गीतायां ॥ निर्मानमोहाजित संगदोषा अध्यात्मनित्याविनिवृत्तकामा ॥ द्वन्द्वैर्विमुक्ताःसुखदुःख संज्ञैर्गच्छन्त्यमूढाःपदमव्ययंतत् २ राजसिंहासन पै कहूँ चमारहू बैठे हैं तब कही गुरुकी सन्तनकी कृपाते बैठि जातहैं कारनहीं स्वरूप मुख्य है ३ ॥

मातदूधप्यावैयाकोहुयोहूनमावै सुधिआवैसवपाछि लीसोसेवाकोप्रतापहै । भईनभवानीरामानन्दमनजानी बड़ो दण्डदियोमानीवेगिआयोचल्योआपहै ॥ दुखीपितु मातुदेखिधाइलपटायेपांइ कीजियेउपाइकियेशिष्यगयो पापहै । स्तनपानकियोजियोलियोउन्हेंईशजान निपट अजानफेरिभूलेपायोतापहै २५६ बड़ेईरैदासहरिदासनि सोंप्रीतिबड़ी पितानसुहाइदईठौरपिछवारही । हुतौधन मालकछुदियोहूनिहालनिया पतिसुखजालअहोकियेज बन्यारही ॥ गाँठैपगदासीकाहूमतलमकासीलावैखालकरै जूतीसाधुसंतकोसँभारही । डारिएकछानिकियोसेवाकोस थानरहैंचौड़ोअपजानिबांटिपावैअहैवारही २५७ ॥

पिता न सुहाई ॥ कवित्त ॥ पैसे बिन बापकहै पूतती कपूत भयो पैसेबिन भाई कहे जीको दुखदाई है। पैसे बिन यार कहै मेरो यह यार नाहीं पैसे बिन सासुकहै कौनको जमाईहै ॥ पैसे बिन बन्देकी प्रतीति नहीं पंचन में पैसे बिन आइघर रोइ रोटी खाईहै । कहूं अलमस्त सजे रजेसहो आठोयाम आजुके जमाने माहिं पैसेकी बड़ाई है १ धर्मकर्म प्रीति रीति सजन सुहृदताई सकल भलाइनिको पुंजलो बिलाइगो। अन्तर मलीन हैके कलह प्रवेश भयो नरन कलेश निशि दिन सरसाइगो ॥ नहीं रागरंग नहीं चरचा चतुरताकी नहीं सुखसेज वन आनँद नशाइगो

देखिकै निराश जिय लहै न हुलासमन देखतही देखतही ऐसो समो आइगो ७ बड़ेई रैदास ॥ दोहा ॥ नंद नँदनकी भक्ति बिन बड़ो कहावै सोइ ॥ जैसे दीपक बुझन को बड़ो कहै सबकोइ ३ ॥

सहैअतिकष्टअंगहियेसुखशीलरंग आयेहरिप्यारेलि येभक्तिभेषधारिकै। कियोबहुमानखानपानसोंप्रसन्नह्वै कैदीनोकह्योपारसहैराखियेसँभारिकै ॥ मेरेधनरामकछू पाथरनसरैकाम दाममैंनचाहौंचाहौंडारौंतनवारिकै। राई एकसोनोंकियोदियोकरिकृपाराखो राख्योवहछानिमांझ लेहुगोनिकारिकै २५८ आयेफिरिश्याममासतेरहव्यती तभये प्रीतिकरिबोलेकहौपारसोकीरीतिको । वाहीठौर लीजैमेरोमननपतीजेअब चाहौंसोईकीजैमैंतौपावतहौंभी तिको ॥ लैकैउठिगयेनयेकौतुकसोसुनोपावैं सेवतमुहरपां चनितहीप्रतीतिको । सेवाहूकरतडरलाग्योनिशिकह्यो हरि छांडौअरुआपनीऔराखोमेरीजीतिको २५९ ॥

याते हरिभक्तिही बड़ी है कियें शिष्य ॥ श्लोक ॥ अन्त्यजा अपितद्राष्ट्रे शङ्खचक्राङ्कधारिणः ॥ सुधिआवै राजाइन्द्रद्युम्न अगस्त्यजीकेशापसे गजभये कियो बहुमान ॥ पद ॥ आजुके ये सन्ती जाहु बलिहार। मेरेगृह आया राजा रामजीका प्यार ॥ करौं दण्डवत चरणपखारों। तन मन धन सन्तनि पर वारों ॥ आंगन भवन भयो अति पावन। हरिजन बैठे हरियश गावन ॥ कहैं कथा अरु अर्थ विचारें। आप तरें औरनिको तारें ॥ कहै रैदास मिले हरिदासा। जनम जनमकी पूजी आसा १ पाथर न सरै काम पारसतो सोई जो पारउतारै सोतो एक रामनामहै २ डरलाग्यो ॥ श्लोक ॥ स्तेयंहिंसानृतंदम्भः कामःक्रोधःस्मयोमदः। भेदोवैरम विश्वासः संस्पर्द्धाव्यसनानिच ॥ एतेपञ्चदशानर्था ह्यर्थमूलाम तानृणाम्। तस्मादनर्थमर्थाख्यंश्रेयोर्थीदूरतस्त्यजेत् ५ ॥ चौपाई ॥

के माया के हरिगुण गाई। दोनों लेती दीनो जाई ६ ॥ श्लोक ॥ विपयाश्लिष्टचित्तानांविष्णवावेशःसुदूरतः॥ वारुणीदिग्गतंवस्तुव्रज न्नैन्द्रींकिमाप्नुयात् ७ ॥

मानिलईबातनईठौरलैबनाइचाइ संतनिबसाईहरि मन्दिरचिनायोहै । विविधवितानतानगनौंजोप्रमानहोई भोईभक्तिगईपुरीजगयशछायोहै ॥ दरशनआवैंलोगना नाविधिरागभोगं रोगभयोविप्रनकेतनसवछायोहै । बड़े ईखिलारीवेरहेहींछानिडारीकरी घरपैअटारीफेरिद्विजन सिखायोहै २६० प्रीतिरसराशिसोरैदासहरिसेवतहै घर मेंदुराइलोकरंजनादिटारीहै । प्रेरिदियेहदैजाइद्विजनपु कारकरी भरीसभानृपआगेकह्योमुखगारीहै ॥ जनकोबु लाइसमुझाइन्याइप्रभुसौंपि कीनोजगयशसाधुलीलाम नुहारीहै । जितेप्रतिकूलमैंतोमानेअनुकूलयाते सन्तनप्र भावमनमोठरीकीतारीहै २६१ ॥

लोकरंजनादि टारिये ८ ॥ सवैया ॥ हमसों मनमोहन सों हितहै चुगलीकरि कोउ कहा करिहै । अवतो वजिकै वदनामी भई गुरुलोगनिके जु कहा डरिहै ॥ कविधीर कहै अटकी छवि सों व्रजमेंभटकी विसरयो वरिहै । तुमको यह वातसों कामकहा अपने कोउजान कुँवा परिहै १ ॥ मुखगारी है ॥ पुष्करमाहात्म्ये॥ अपूज्यायत्रपूज्यन्ते पूज्यपूजाव्यतिक्रमः॥ त्रयस्तत्रप्रवर्त्तन्ते दारि द्र्यंमरणंभयम् २ न्याइ प्रभुसौंपि ॥ अनङ्गशेखर छन्द ॥ सदा कृपा- निधानहो कहाकहौ सुजानहो अमान हानमानहो समान काहि दीजिये । रसाल प्रीतिके भरे खरे प्रतीति के निकेत रीति नीति के समुद्र देखि देखि जीजिये ॥ टकी लगी तिहारिये सुआइयो नि- हारि लोक रञ्जनादि टारिये उमंग रंग भीजिये । पयोद मोद दाइये विनोद को वढ़ाइये विलम्व छाँड़ि आइये किधौं वुलाइ

लीजिये ३ ॥ तारी है ॥ दोहा ॥ ज्यों ज्यों आवे विघन डर त्योंत्यों प्रेम हुलास ॥ जैसे दीपक तम चहै सतगुन होतप्रकास ॥ मन कोठरीकी तारी है हिरण्यकशिपु दुख दिये तव प्रह्लाद गुण प्रकटे ऐसे ४ ॥

वसतचितौरमांझरानीएकझालीनाम नामविनकाम खालीशिष्यआनिभईहै।संगहुतेविप्रसुनिक्षिप्रतनआगि लागीभागीमतिनृपआगेभीरसवगईहै ॥ वैसेहीसिंहासन पैआइकैविराजेप्रभूपढ़ैवेदवाणीपैनआयेयहनईहै । पति तपावननामकीजियेप्रकटआज गायोपदगोदआइवैठे भक्तिलई है २८२ ॥

पद गायो ३ ॥ पद ॥ आयो आयो हौं देवाधिदेव तुम शरण आयो । सकल सुखकी मूल जाकी नाहिंसम तूल सो चरणमूल पायो ॥ लियो विविध योनि वास यम की अगमत्रास तुम्हरे भजन विन भ्रमत फिर्यो । माया मोह कोह काम विषय लंपट निकाम यह अतिदुस्तर दूर तर्यो ॥ तुम्हरे नाम विश्वास छांड़िये आन आश संसारी धर्म मेरो मन न धीजै । रैदास दास की सेवा मानहुं देवा पतितपावन नाम आज प्रकट कीजै १ ॥ सवैया ॥ मृतको ढोर ढोवन कुल जाको हरि मूरति लो इनमें अरकी । सेवन लग्यो जग्यो जग ऊपर निंदक नर भूसन कूकरकी ॥ हरि प्रसन्न शिर चढ़ो सिंहासन जैति जैति धुनि काशीनगर की । लाल कृपाल प्रेमरस बन्धन निर्भय भक्ति राधिकावरकी ॥ जैमिनिपुराणे ॥ सोरध्वजस्थाने॥ अंत्यजाअपितद्राष्ट्रेशङ्खचक्राङ्कधारिणः॥ संप्राप्य वैष्णवींदीक्षांदीक्षिताइवसंवभुः ३ ॥ सप्तमे ॥ विप्राद्विषड्गुण युतादरविन्दनाभपादारविन्दविमुखाच्छ्वपचंवरिष्ठम् ॥ मन्येतदर्पि तमनोवचनेहितार्थप्राणंपुनातिसकुलंनतुभूरिमानः ४ ॥

गईघरझालीपुनिवोलिकैपठायेअहो। जैसेप्रतिपाली

अबतैसेप्रतिपालिये। आपद्रूपधारेउनबहुधनपटवारेवि प्रसुनिपांवधारेसीधौदैनिकारिये॥ करिकैरसोईद्विजभोज नकरनबैठेद्वैद्वैसंग्निएकसोरैदासकोनिहारिये। देखिभई आंखैंदीनभाखैंशिष्यभयेलाखैं स्वर्णकोजनेऊकाढ़ेयोत्व चाकीनोन्यारिये २६२॥ मूल॥ कब्बीरकानिराखीनहींव र्णाश्रमषटदरशनी॥ भक्तिविमुखजोधर्मसोइअधरमकरि गायो। योगयज्ञव्रतदानभजनबिनतुच्छदिखायो॥ हिंदू तुरकप्रमानरमैंनीसब्ददीसाखी। पक्षपातनहिंबचनसबहि केहितकीभाखी॥ आरूढ़दशाह्वैजगतपरमुखदेखीनाहिं नभनी। कब्बीरकानिराखीनहींवर्णाश्रमषटदरशनी६०॥

पतितपावन नामकीजिये प्रकट आजुगायो पदआपुबैठे भक्ति मनभाई है निहारिये॥ भूतानंदिवचरितं॥ देखेतेज्ञान आयो॥ यस्यनास्तिस्वयंप्रज्ञा १ जानिगये॥ एकते अनेकभये परम भाग- वतही हैं भृंगीभयतेभृंगहोत॥शुकोहंशुकोहं॥वृक्षनिमें दिखायो ऐसे इनको जीत्यो तब सोनेको जनेऊ दिखायो भक्ति विमुखजो धर्म सो अधर्म करि गायो २॥ गुरु वैष्णव गोविप्र हरि अर्थ सबको पूजै पै ग्रह व्यतीपात देखै सोइ अधर्म स्वर्गनरक संसार कारण धरमबहै जगकूटै॥ सोहरिकी शरण जाय तब ऐसे ३ तुच्छदिखायो॥ दोहा॥ रामनाम तो अंक है अरु सब साधन शून्य॥ अक्षरके सम्मुख रहै शून्य शून्यदशगुन्य॥ पक्षपातनहीं छप्पै॥ पाँड़े भली कथा कहिजानै। औरनि परमारथ उपदेशै आपु स्वार्थ लपटानै॥ ज्यों दीपक घरु करै उजारो निज तन तम सन टानै। महिषी क्षीर स्रवै औरनिको आपु भुसहि रुचि मानै॥ श्रोता गोता क्यों न खाइ आचारज फिरै भुलानै। यह कलि छल सब कीमति नाठी समझत लाभ न हानै॥ हित की कहत लगत अनहित की रजराजस में सानै। कहत कबीर बिना

रघुवीरहि यह पीरहि कोजाने ५ भजनविन ॥ सकर्तासर्वधर्मा णांभक्तोयस्तवकेशव ॥ सकर्तासर्वपापानांयोनभक्तस्तवाच्युत ६ यदिमधुमथनत्वदंघ्रिसेवांह्वादिविदधातिजहातिवावितर्कम् ॥ तद खिलमपिदुष्कृतंत्रिलोककृतमकृतंतुकृतंकृतंचसर्वम् १ ॥

टीका ॥ अतिहीगँभीरमतिसरसकवीरहियोलियोभ क्तिभावजातिपांतिसबटारिये । भईनभवानीदेहतिलकर वानीकरौकरौगुरुरामानंदगरेमालधारिये ॥ देखैंनहींमुख मेरोजानिकैमलेच्छमोको जातन्हानगंगाकहींमगतनडा रिये । रजनीकेशेषमेंआवेशसोंचलतआपपरैपगरामक हैंमंत्रसोंविचारिये २६४ कीनीवहीवातमालातिलकवना इगातमानिउतपातमातशोरकियेभारिये । पहुँचीपुकार रामानंदजूकेपासआइ कहीकोऊपूछैंतुमनामलैउचारिये॥ लावोजूपकरिवाकोकवहमकियो शिष्यलायेकरिपरदामें पूछीकहिडारिये । रामनाममंत्रयहीलिख्योसवतंत्रनिमें खोलिपटमिलेसांचोमतउरधारिये २६५ ॥

सवतंत्रनिमें ॥ श्लोक ॥ श्रीरामेतिपरंजाप्यंतारकंब्रह्मसंज्ञ कम् ॥ ब्रह्महत्यादिपापघ्नमितिवेदविदोविदुः १ ॥ कवित्त ॥ रहैगो नराज रजधानीपै न पानीपुनि कहै वाक वानी जिमी आशमान जाइगो। सातहू पाताल अरु सातद्वीप भाइ सात एक वेर चांदसूर्य ज्योतिहू विलाइगो ॥ जो कछू सृष्टि रची करताकी वृष्टिही सो एक वेर सृष्टिहूको करता समाइगो। कहैं कवि काशीराम और कछू थिर नाहिं रहिवे को एक रामनाम रहिजाइगो २ छप्पै॥ यत विन योगी अफल अफल भोगी विन माया। जलविन सर- वर अफल अफल तरुवर विनछाया॥ शशि विन रजनी अफल अफल दीपक विन मंदिर। नर विन नारी अफल अफल गुण विन सव सुन्दर॥ श्रीनारायणकी भक्तिविन राजा परजा सव

अफल। तत्त्ववेत्तातीनिहुंलोक में रामरटैं ते नर सुफल २ ॥

वुनैतानोवानोहियरामभइरानो कहींकैसेकैवखानोव हीरीतिकछुन्यारिये । उतनोहीकरैतामेंतननिरवाहहोइ भोइगईऔरैवातभक्तिलागीप्यारिये ॥ ठाढ़ेमंडीमांझपट वेचनलैजनकोऊआयोमोकोदेहुदेहमेरीहै उघारिये । ल ग्योदेनआधोफारिआधेसोंनकामहोय दियोसबलैवोजो पैयहीउरधारिये २६६ तियासुतमातमगदेखेभूंखेआवैं कव दविरहेहाटनमें लावैंकहाधामको । सांचौभक्तिभाव जांनिनिपटसुजानवेतो कृपाकेनिधानगृहशोचपर्योश्या मको ॥ वालदलैधायेदिनतीनियोंवितायेजव आयेधरि डारिदईलह्योहैअरामको । माताकैशोरकोऊहाकिमम रोरिबांधै डारोविनजानेसुतनहींलैतदामको २६७ गये जनदोइचारिढूंढ़िकेलिवाइलाये आयेघरसुनी वातजानी प्रभूपीरको। रहेसुखपाइकृपाकरीरघुराइ दईक्षणमेंलुटाइ सववोलिभक्तभीरको ॥ दयोछांड़ितानोवानोसुखसरसा नोहिये कियेरोनथायेसुनिविप्रतजिधीरको । क्योंरेतैंजु लाहेधनपायेनाबुलायेहमैं शूद्रनिकोदियोजावोकहैंयोंक वीरको २६८ ॥

वुनै तानो वानो दोऊकरैं सो दोऊकैमे वने मनतो एकही है मनको अभ्यास भजनको इन्द्रियनको अभ्यास क्रिया को जैसे जड़भरत शरीर त्यागतीवार १ देवानांगुणलिङ्गानां ॥ अथवा हरि आपही मड़राइ २ सुखसरसानो एक फकीर तापे फकीर आवैं क- हीगुजर कैसेहै तवकहीहमें साहिव देताहै जव खाने हैं संतसंतोष सों परेरहेते दूसरो कही ऐसे हमारी गलीके कुत्ताहू करते हैं आप कैसे देताहै तव बांटि खाते हैं तव तो आनन्द माने है ३ ॥

क्योंजू उठिजाऊंकछूचोरीधनल्याऊं नितहरिगुणगाऊं कोउराहमेंनमारीहै । उनकोलैमानकियोयाहीलैअमान भयो दयोजोपैजाइहमैंतौहीतौजियारीहै ॥ घरमेंतोनाहीं मंडीजाउँतुमरहौवैठे नीठिकेछुड़ायोपैड़ोछिपैव्याधिटारी है । आयेप्रभुआपद्रव्यलायेसमाधानकियो लियोसुख होयभक्तिकीरतिउजारीहै २६९ ब्राह्मणकोरूपधरिआये छिपिवैठेजहांकाहेकोमरतभूखौजावोजू कबीरके । कोउ जाइद्वारताहिदेतहै अढ़ाईसेरवेरजिनिलावोचलेजावोप्यों कबीरके ॥ आयेघरमांझदेखिनिपटमगनभये नयेनये कौतुकसोकैसेरहैधीरके । वारमुखीलईसंगमानोवाहीरङ्ग रंगेजानोयहबातकरीउरअतिभीरके २७० संतदेखिदुरे सुखभयोईअसंतनिके तवतोविचारिमनमांझऔरआयो है । वैठीनृपसभातहांगयेपैनमानकियो कियोएकबीज उठिजलढरकायोहै॥ राजाजियशोचपर्योकर्योकहाकह्यो तवजगन्नाथपंडापांवजरतवचायोहै । सुनिअचरजभरिन्ट पनेपठायेनरल्यायेसुधिकहीअजूसांचहीसुनायोहै २७१॥

नये नये ॥ दोहा ॥ व्यास वड़ाई जगतकी कूकरकी पहिचानि॥ प्रीति किये मुख चाटिहै वैरकिये ततुहानि १ हाथ कछू नं लगै भजन नाठिको जाइ ऐसे विषयिनको संगहै जैसे सेमरके सुवा को कछू हाथ न लगै देखतही में सुन्दर सेवत विचारी घड़ाई खोइ आपही आवेंगे २ वारमुखी लई संग या कुसंगसों कबीर दास साधु ताकी महिमा घटी दिषै कहनलगे ॥ दोहा ॥ संगति खोटी नीचकी देखो करिकै व्यास ॥ महिमा घटी समुद्रकी वस्यो जु रावण पास ३ जल ढरकायो ऋषभदेव यथेष्ट कृपा देखि जगत् बुरो होय ॥

कहीराजारानीसोंजुबातवहसांचभई आंचलागीहिये अबकहौकहाकीजिये। चलेहीबनतिचलेशीशतृणबोझ भारीगरेसोंकुल्हारीबांधितियासंगभीजिये॥ निकसेबजा रह्वैकैडारिदईलोकलाज कियोमैंअकाजछिनछिनतनछी जिये। दूरितेकबीरदेखिह्वैगयोअधीरमहाआयोउठि आगेकह्योडारिमतिरीझिये २७२ देखिकेप्रभावफेरि उपज्योअभावद्विज आयोबादशाहजूसिकंदरसोनामहै। बिमुखसमूहसंगमातहूमिलाइलई जाइकैपुकारेजूदुखा योसबगाँवहै॥ लायोरेपकरिवाकोदेखौरेमकरकैसोअक रमिटाउंगाढ़ेजकरतनावहै। आनिठाढ़ेकियेकाजीकहत सलामकरोजानैनसलामजामेंरामगाढ़ेपावहै २७३ बां धिकैजँजीरगङ्गातीरमांझबोरिदियो जियोतीरठाढ़ोकहैयं त्रमंत्रआवहीं। लकरीनमांझडारिआगिनिप्रजारिदई न ईमानोंभईदेहकंचनलजावहीं॥ बिफलउपाइभयेतऊन हींआइनये तबमतवारोहाथीआनिकैझुकावहीं। आव तनढिगऔचिघारिहारिभाजिजाइ आगेआपसिंहरूपबै ठेसोभगावहीं २७४॥

भाजिजाइ भगवान् सिंहरूप हाथी के पास सम्मुख आइ ठाढ़े भये हाथी चिघारि के भाज्यो बादशाह ने कही हाथी क्यों नहीं पेले कही महाराज सम्मुख सिंह है तो मोहिं क्यों नहींदेखे सम्मुख आवे तब देखो जब आयो तब देखतही बड़ो डर कियो यह वही नृसिंह है जो प्रह्लादकी रक्षाको प्रकट्यो है याते संतनि के सम्मुख तब हरि दीखे १ भगावहीं॥ दोहा॥ बधिक बाज अरु दुष्ट नर जो इन चीत्यो होइ॥ तुलसी या संसारमें साधु न जीवैकोइ १ राजा स्त्रीसों पूछें कृष्ण सान्दीपनके पढ़े दक्षिणा

मांगो सो कही श्रीमों पूछें तब प्रभास में बूड़िगयो पुत्र सो ल्याइ देव ऐसे पंडित पूछे विफल उपाव ॥ जलेविष्णुःस्थलेविष्णुर्विष्णुः पर्वतमस्तके ॥ ज्वालामालाकुलेविष्णुःसर्वंविष्णुमयंजगत् ३ ॥

देख्योबादशाहभावकूदिपरेगहेपाव देखीकरामाति मातभयेमबलोकहैं । प्रभुपैवचाइलीजैहमैंनगजबकीजै लीजैसोईभावैगांवदेशनानाभोग हैं ॥ चाहैंएकरामजाको जपैंआठौयाम औरदामसोंनकामजामेंभरेकोटिरोगहैं । आयेघरजीतिसाधुमिलेकरिप्रीति जिन्हैंहरिकीप्रतीतितेई गाढ़वेकेयोगहैं २७५ होइकैखिसानेद्विजनिजचारिवि प्रनके मूड़निमुड़ाइवेषसुंदरबनायेहैं । दूरिदूरिगांवनमें नामनिकोपूछिपूछि नामजोकबीरजूकोभूठेन्योतिआये हैं ॥ आयेसवसाधुसुनियेतौदुरिगयेकहूंचहूंदिशिसंतनि केफिरैंहरिधाये हैं । इनहींकोरूपधरिन्यारेन्यारेठौरबैठे एऊमिलिगयेनीकेपोषिकैरिझाये हैं २७६ ॥

गहेपाव ॥ पद ॥ कलिमें सांचो भक्त कबीर । जबते हरिचरणन रुचि उपजी तबते बुन्यो न चीर ॥ दीनो लेहि न थांचे काहू ऐसो मनको धीर । योगी यती तपी संन्यासी इनकी मिटी न पीर ॥ पांच तत्त्वते जनम न पायो काल न ग्रस्यो शरीर । ब्यास भक्तको खेत जुलायो हरि करुणामय नीर १ मेरो मन अनतहीं सचुपावे । जैसे उड़त जहाजको पक्षी फिरि जहाज पै आवै ॥ जो नर कमलनैनको तजिकै आन देवको ध्यावै । विद्यमान गंगातट प्यासो दुर्मति कूप खनावै ॥ जिनमधुकर अंबुजरसचाखो ताहि करील न भावै । सूरदासप्रभु कामधेनु तजि छेरी कौन दुहावै २ दोहा ॥ कहाकरै रसखानिको कोऊ दुष्ट लबार ॥ जो पति राखन हारहै माखन चाखनहार ३ हरिको निश्चय मानिकै वनिजकरै

जोकोइ ॥ तुलसी मन विश्वास सों दाम चौगुना होइ ४ मछरी मीनखाई कुत्ता बिलाईते बचे ॥

आईअपसराछलिवेकेलियेवेसकिये हियेदेखिगाढ़ो फिरिगईनहींलागी है। चतुर्भुजरूपप्रभुआनिकेप्रकट कियो लियोफलनैननिकोवड़ोबड़भागीहै॥शीशधरेंहाथ तनसाथमेरेधामआवो गावौगुणरहौजौलौंतेरीमतिपागी है। मगमेंहैजाइभक्तिभावकोदिखाइवहु फूलनिमँगाइ पौढ़िमिल्योहरिरागी है २७७॥

आई अप्सरा ताको देखिकै मोहित नहीं भये जैसे नारदजी १ ॥ पद ॥ तुमघरजावो मेरी बहिना यहां तिहारो लेना न देना। राम विना गोविंद विना विष लागें ये वैना॥ जगमगात पट भूषण सारी उर मोतिनके हार। इन्द्रलोकते मोहनआई मोहिं करन भरतार॥ इनवातनको छांड़ि देहुरी गोविंदके गुणगावो। तुलसी माला क्यों नहिं पहिरो वेगि परमपद पावो॥ इन्द्रलोक में टोटपरयो है हमसों और न कोई। तुमतो हमें डिगावन आई जाहु दईकी खोई॥ वहुते तपसी बांधि विगोये कच्चे सूतके धागे। जो तुम यतनकरो बहुतेरा जल में आगि न लागे॥ हौंतो केवल हरिके शरणे तुमतो झूंठी माया। गुरुपरताप साधुकी संगति मेंजु परमपदपाया॥ नाम कवीरा जाति जुलाहा गृह वनरहौं उदासी॥ जो तुम मान महत करि आई तो इकमाइ दुजे मासी १॥कवित्त॥ वहमति कहां गई अब मति औरैभई ऐसी मतिकीजो मति आपनी विगारोगे। सुधि कहूं सोइ गई बुद्धिकहूं बूड़ि गई अब क्यों न भई सो तो नई घाट पारोगे॥ निपट निरंजन निहारिके विचारि देखो एकही विचारि कहा दोसरी विचारोगे। तुमसों न उजियारो मोसों न पतितभारो मोहिं मति तारो वैकुंठ को विगारोगे २॥

मूल॥ पीपाप्रतापजगवासनानाहरको उपदेशदियो॥ प्रथमभवानीभक्तमुक्तिमांगनकोधायो। सत्यकह्योतिहिं शक्ति सुदृढ़हरिशरणबतायो॥ रामानँदपदपाइ भयेअति भक्तिकीसीवा। गुणअसंख्यनिरमोलसंतधरिराखतग्रीवा॥ प्रभुपरसप्रणालीसरसभइसकलविश्वमङ्गलकियो। पीपाप्रतापजगवासना नाहरकोउपदेशदियो ६१॥ टीकापीपाकी॥ गाङ्गरोलगढ़वढ़पीपानामराजाभयो लयो पनदेवीसेवारङ्गचढ़्योभारिये। आयेपुरसाधुसीधोदियो जोईसोईलियो कियोमनसांझप्रभुबुद्धिफेरिडारिये॥ सो योनिशिसोयोदेखिसुपनोविहालअतिप्रेतविकरालदेहधरि कैपछारिये। अवनसुहाइकछूवहुपाईपरिगई नईरीति भईयाहिभक्तिलागीप्यारिये २७८॥

आयेपुरसाधु॥ पीपाकी दयारहै भक्ति अंग में॥ कवित्त॥ देवी सेठि शीतला बराही जा जगावैराति अऊत पितर पंचपीरको मनावै हैं। खेतखाल गूंगारव भैरव भूपालादिक नाना देवता मनावैं नवकोट जावै हैं॥ व्याहकाज छोंछिकपरोजन सराधश्रान कादिकै करज यों उदारता दिखावै हैं। केवल हराम जग सुमिरै न सीताराम कोपें जब धर्मराज नर्कको पठावै हैं १ पीपाजी भवानीको सेवें पै दया भक्ति अंगरहै याते साधुआये दियो सीधो जोई सोई लियो॥ श्लोक॥ यदृच्छालाभसन्तुष्टो द्वन्द्वातीतोविमत्सरः २ कियो मनसांझ साधुनिने भोग धरिकै हरिसे कही जेईके चुपकरि मति ह्वै रहियो राजाके भक्ति उपजाइयो ३ भागवतेएकादशे॥ भूतानांदेवचरितंदुःखाय च सुखाय च॥सुखायै वहिसाधूनांत्वादृशामच्युतात्मनाम् ४॥

१ उपदेश शब्द में दे को लघुकरके पढ़नेसे पदमें मात्रा न अधिकहोगी अथवा दे के स्थानमें द कहना॥

पूछ्यौहरिपाइवेकोमगजवदेवीकही सहीरामानंदगुरु करिप्रभुपाइये । लोगजानैंबौरोभयोगयोयहकाशीपुरी फुरीमतिअतिआयेजहांहरिगाइये ॥ द्वारपैनजानदेत आज्ञाईशलेतकहीराजश्रीनहेतसुनिसबहीलुटाइये। कही कुंवागिरैचलेगिरनप्रसङ्गहिये जियेसुखपायेखायेदरश दिखाइये २७६ कियेशिष्यकृपाकरीधरीहरिभक्तिहिये कहीअवजावोगेहसेवासाधुकीजिये । वितयेवरषजवसर सटहलजानिसंतसुखमानिआवैंघरमध्यलीजिये ॥ आये आज्ञापाइधामकीनीअभिरामरीति प्रीतिकोनपारावार चीठीलिखिदीजिये। हूजियेकृपालवहीबातप्रतिपालकरौं चलेयुगवीसजनसंगमतिरीझिये २८० ॥

पूछोहरिपाइवोको मग जैसे राजा मुचुकुंदने देवतन पै मुक्ति मांगी देवता बोले हमपै मुक्ति कहां होइ तौ हमहूं मुक्त न होइँ तापै दृष्टांत शीतलाको तब सोइवो मांग्यो मुक्तिही तुल्यहै देवी ने रामानंद बताये धरी हरिभक्ति हिये उपदेशन करिधरि दियो जैसे आधेको अपनो बड़ो अभ्यास जैसे अज्ञानी विषयी को तौ विषयको स्वतःही सिद्ध ज्ञान॥सवैया॥ जवते तुम आवन आशदई तबते तरफौं कब आइहोजू । मन आतुरता मनहीं में लखौं मन-भावन जानसुनाइहौजू ॥ विधिके छिनलौं दिन वाटपरौ यह जान वियोग विताइहौजू। सरसौ घन आनँद या रस सों तुमहा-रस को बरसाइहौजू १ ॥

कवीररैदासआदिदाससबसङ्गलिये आयेपुरपासपी पापालकीलैआयोहै। करीसासटांगन्यारीन्यारीविनैसाधु निको धनकोलुटाइसोसमाजपधरायो है ॥ ऐसीकरीसेवा बहुमेवानानारागभोगबाणीकैनयोगभागकापैजातगायो

है। जानीभक्तिरीतिघररहौकैअतीतिहोडु करिकैप्रतीति गुरुपगलगिधायो है २८१ लागीसंगरानीदशदोषकही मानीनहींकछ्कोवतावैडरपावैमनलावहीं। कामरीनफारि मधिमेखलापहिरिलेवो देवोडारिआभरणजोपैनहींभाव हीं॥काहूपैनहोहिदियोरोइभोइभक्तिश्राइक्रोटीनामसीता गरैंडारीनलजावहीं। यहदूरिडारौकरौतनकोउघारोकि योदयोरामानंदहियेपीपानसुहावहीं २८२ जोपैंयापैकृपा करीदीजैकाहूसंगकरिमेरेनहींरंगयामेंकहीवारवारहै। सो हकोदिवायदईलईनवकरधरि चलेढरिविप्रएकछोड़ेनवि चारहै॥ खायोविषज्यायोपुनिफेरिकैपठायोसब आयोसो समाजद्वारावतीसुखसारहै। रहेकोऊदिनआज्ञामांगीइन रहिवेकीकूदेसिंधुमांझचाहउपजीअपारहै २८३॥

करी साष्टांग धमको लुटाय ॥ कवित्त ॥ जिन जिन करनाई तिन करआई जिन करन न नाई तिन करन न आई है। कागर लिखाइ जिन कागरे लिखाई पाई धरामें धराई जिन धरा धरि खाई है॥ देदे लवराई जिन लई है पराई अब ताहू पास नेकहूँ न रहति रहाई है। जिन जिन खाई तिन उदर समाती खाई जिन न खवाई तिन खाई वहुताई है १ ॥ श्लोक ॥ बोधयन्तिनयाचन्ते भिक्षुकाश्चगृहेगृहे ॥ दीयतांदीयतांनित्यमदातुःफलमीदृशम् २ अहंता ममता थिनछूटे हरि प्राप्ति निश्चय न याने कुंवागिरौं प्रतीति गुरु पगलागि सूरदास ग्रामकी खवरि राखे परग्रामकी नहीं ऐसे जीव विषे जाने हरिको नहीं सो इनकही गुरुआश्रय रहिये तो भलो होय सोंहको दिवाइदई ऐसे तेरी प्रतीति भुक्त वैराग्य पलखवुखारे को वादशाह फकीर एक संग खी कही ऐसे आज्ञा॥ कवित्त ॥ सब सुख देके शरणागतको एके बार भक्ति के दियेपै और ठाठ ठठवतहौ। पावन पतित यह विरद तिहारो ताके दोष

दुखपुंज पलहीमें मिटवतहो॥ मुरज कहत ताहि अपनोके राखो द्वार मेरी वारहीको क्यों अवार हटवतहो। देवकार काके देव दानतार काके मोहिं नाथ द्वारकाके द्वारकाके पठवतहो १॥

आयआगेलेनआपुदियेहैंपठायजन देखीद्वारावती कृष्णमिलेवहुभाइके। महलमहलमांभन्दहुलपहल्ल खीरहेदिनसातसुखसकैकौनगाइके॥ आज्ञादईजाइवेको जाइकोनचाहैंहियेपियेवहुरूपदेखोमोहिंकोजुजाइके। भक्तवूडिगयेयहवडोईकलंकभयो मेटौतमअंकशंकगहीअकुलाइके २८५ चलेपहुँचाइवेकोप्रीतिकआधीनमहाविनजलमीनजैसेऐसेफिरिआयेहैं। देखिनईवातगातसूकेपटभीजेहियेलियेपहिंचानिआनिपगलपटायेहैं॥दईलैकेछापपापजगतकेदूरिकरो ढरोकाहूओरकहिसीतामभुआयेहैं। क्रठईमिलानवनमेंपठानभेंटभई लईक्रीनितियाकियाचैनप्रभुधायेहैं २८६ अभूलगिजावोघरकैसेकैसेआवैडरवोलीहरिजानियेनभावपैनआयोहै। लेतहौंपरिक्षाभैंतोजानोंतेरीशिक्षाऐपै सुनिदृढवालकानअतिसुखपायोहै॥ चलेमगदोसरेसतामेंएकसिहरहै आयोवासलेतकियोशिष्यसमभायोहै। आयोऔरगांवशेषसाहीप्रभुनावरहैकरेवासहरेटरेचौंधरसुहायोहै २८७॥

आयेआगे लेन॥श्लोक॥ क्षीरेणात्मगतोदकाय निखिलादत्ता पुरास्वेगुणाः क्षीरेतापमवेक्ष्य तेन पयसा स्वात्मा कृशानौ हुतः॥ गंतुंपावकमुन्मनास्तदभवत्त्रातुंचमित्रापदं युक्तंतेनजलेनशाम्यतिसतां मैत्रीपुनस्त्वीदृशी १॥ दोहा॥ सीतापतिरघुनाथजी तुम लगि मेरीदौर॥ जैसे काग जहाजको सूझत और न ठौर २॥

दोऊतियापतिदेखेंआयेभागवतऐपैघरकीकुगतिरति

सांचीलैदिखाईहै । लहँगाउतारिबेंचिदियोताकोसीधोलि
योकरोअनूपाकवधूकोटमेंदुराईहै ॥ करिकैरसोईसोईभोग
लगिबैठेकह्योआवौमिलिदोऊलेहुपाछेसीतभाईहै । वाहू
कोबुलावोताबोंआनिकेजिमावोतव सीतागईवाहीठौर
नगनलखाईहै २८८ पूछैंकह्योबातयेउघारेक्यों हैं गात
कहौऐसेहीयिहातसाधुमेंयालनभाईहै । आवैंजबसंतसु
खहोतहैअनंततनढक्योकैउघार्योकहाचरचाचलाई है ॥
जानिगईरीतिप्रीतिदेखीएकइनहींमेंहमहूंकहावैं ऐपैछटा
हूनपाई है । दियोपटआधोफारिगहिकैनिकारिलई भई
सुखरौलपाछेपीपासो सुनाई है २८९ ॥

दोऊतियापति महाराज पीपा अरु सीता श्रीद्वारका है आये
हैं वेई छाप लाये हैं श्रीकृष्णजूने दई है १ सो इन्हें लगावेगो
सो सोईपै आवैगो लंवेसे गोरेसे पीपाजी हैं वर्षतीसमें अरु सी-
ताजी वर्षपंद्रह में सर्वाङ्गसुन्दरी गौराङ्गी मानों सीताहीहैं उनको
दर्शन साक्षात् श्रीकृष्णही हैं याते नितकी बाट देखै २ ॥ दोहा ॥
आज द्वैजतिथि है सखी शशिऊग्यो आकाश ॥ मेरे दृग अरु पीव
के हैं दोउ एक पास ३ रति सांची जैसे नटकीसी कलाले ऐसे
पहले ४ ॥

कैवेदग्याकर्मअनधर्महै हमारोयहीकहीजाइवैठीजहँ
नाजनकीढेरीहै । घिरिआयेलोगजिन्हैंनैननकोरोगलखि
छबिसयेशोगनेकुनीकेहूनहेरीहै ॥ कहैंतुमकौनवरमुखी
नहीमोनसंतभक्तआसुगहैंमौनसुनिपरीवेरी है । करीअन्न
राशिआगेमोहरेरुपैयापागे पठैदईचौवरकैतहीनिरवेरी
है २९० आज्ञामांगिछोड़ेआयेकभूभूखेरूभूखेवाये औच
कहीदासआयेगयोअसनानको । मुहरनिभांड़ोभूमिगाड़ो

देखिछोड़िआयोकहीनिशितियाबोलीजाचोरशआनको ॥ चोरचाहैचोरीकरै ढरेसुनिवाहीओरदेखैं जोउघारिलांभ डारेहतेप्रानको । ऐसेआइपरीगनीलालसनवीलभई तोरेपांचग्रांटकरेएककेप्रमानको २९१ जोईआवे द्वार ताहिदेतहै अहारऔरबोलिकै अनंतसंतभोजनकरायोहै। वीतेदिनतीनिधनधाहप्याइश्रीजकियोलियो सुनिनामन्द पदेखिवेकोआयो है ॥ देखिकैप्रसन्नभयोनयोदेरीदीक्षा मोहिं दीजाहैअनीतिकरैआपसोसुहायो है । चाहौसोई करौंछैकृपालमोकोढरौअजूधरौआनि संपति औरानीज्या इलायो है १९२ ॥

करें वेश्याकर्म क्योंकि हमहूं देखा देखी आगेको चलें वह तन कौन कामको है और तन सब कान आवे बेल भैंस सुन्दहगउ हाथी भेड़ पीपाजी बोले हमें कोऊलेइ तो हमहूं बिकें सीता बोलीं हमारे पीछेलगिलेहु तुम कैसे बिकौगे वारजुखी होहिंगी तो स· त्संगते रंगचढ़यो गहगह्यो तीनिवार पुरुनि में गहगह्यो चढ़ा है एक पुट पीपाजी सों दूसरो चींधरजी सों तीसरो चींधररानी जीने गहगह्यो कह्यो ऐसे आनिपरी पीपाजीने कही कहा करोगी कही अब बाधा न करेंगी १ हतेप्राण ॥ श्लोक ॥ लिखिता चित्र गुतेन ललाटेक्षरमालिका । न तापि चालितुंशक्या पंडितैरपि शूरैरपि । लक्ष्मण दर्शन विभीषण आवे पड़ा फूल ढेरी लोह गु- ञ्जा मांगे ॥

करिकैपरीक्षादईदीक्षासंगरानीदई भईहैदुखारीचरें परदानसंतसों । दियोधनघोराकछुराख्योनेनिहारकप मानलनछोराबड़ोमान्योजीवजंतसों ॥ सुनिजरिवरिगये भाईसेनसूरजकेऊरजप्रतापकहाकहैसीताकंतसों। आयो

वनिजारोमोललियेचाहैखेलनको दियोवहकाइकहौपीपा जूअनंतसों २९३ वोल्योवनिजारोदामखोलिथैलादी जियेजूलीजियेजूआइग्रामचरणपठाये हैं। गयेउठिपाछे वोलिसंतनमहोच्छोकियो आयोवाहीसमै कहीलेहुमन भाये हैं॥ दरशनकरिहिये भक्तिभावभरयोआनिआनिकै वसनसबसाधुपहराये हैं। औरदिनन्हानगयेघोड़ाचढ़ि छोड़िदियोलियोवांध्योदुष्टनने आयोमानोलाये हैं २९४ गये हैंबुलायेआपपाछेघरसंतआयेअन्नकछुनाहिंकहूंजाइ करिल्याइये। विषयीवणिकएकदेखिकैवुलाइलईदईसबसौं जकहीसखीनिशिआइये॥भोजनकरतमांझरीपाजूपधारेपू छीवारेतनप्राणजबकहिकैजनाइये। करिकैशृंगारसीताच लीझुकिमेहआयोकांधेपैचढ़ाइबपुबनियांरिझाइये२९५॥

दईदीक्षा ॥ श्लोक ॥ राज्ञश्चामात्यजादोषाः पत्नीपापंस्वभ र्त्तरि ॥ यथाशिष्यार्जितंपापंगुरुःप्राप्नोतिनिश्चितम् १ दईसबसौं- ज ॥ कवित्त ॥ कागनि को मोतिया चुगावतहै रैनिदिन हंसनि को चुनीचूर कांकरी समेतहै। चेरीकाहिं चूड़ा अरु सुन्दर दुशा- लालाल शीलहूकी वात कभूं हियेहूं न लेतहै॥ गुणीते गुमानता गुण की पहिंचानि नाहिं आवै जो अजान तासों निपट कै हेत है। कोऊ जोसी मांगै सीधा सूधही जवाब देत कञ्चनीको कञ्चन उधार लै लै देत है २॥

हाटपैउतारिदई द्वारआपवैठिरहे चहेसूकेपगमाता कैसेकरिआईहै। स्वामीजुलिवाइलाये कहांहैनिहारोजाइ आइपाइपरयोडरयोराखोसुखदाईहै॥ मानोंजिनिशंकका अकीजिये निशंकधनदियोविनअंकजापैलरैमरैभाई है। मरयोलाजभारचाहैंधरयोभूमिफारिदृग वहैंनीरधारदेखि

दईदीक्षापाई है २९६ चलतचलतबातनृपतिश्रवणपरी भरीसभाविप्रकहैबड़ीविपरीतिहै। भूपमनआईयहनिपट घटाईहोतिभक्तिसरसाई नहींजानैघटीप्रीतिहै ॥ चले पीपाबोधदैनद्वारहीते सुधिदई लईसुनिकही आवोकरौ लेवारीतिहै।बड़ोमूढ़राजासोजगाँठैबैज्योमोचीघरसुनीदौ रिआयो रहेठाढ़ेकौननीति है २९७ हुतीघरमांझबांझ रानीएकरूपवती मांगीवहीलावोवेगिचल्यो शोचभारी है । डगमगपांवधरै पीपासिंहरूपकरैठाढ़ौदेखिडरैइत आवैआपस्वारी है ॥ जाइतौबिलाइमयोतियाढिगसुतन योनयोभूपपरकलाजानी न तिहारी है । प्रकट्योस्वरूप निजखिचिकैप्रसंगकह्यो कहांवहरंगशिष्यभयो लाज टारी है २९८ ॥

माता कैसे ॥ सवैया ॥ प्रीतम प्यारो मिल्यो सपने में परी जब नेसुक नींद निहोरे। कंतको आइबो त्योंही जगाइ कह्यो सखि धैन पियूष निचोरे॥ यों मतिराम गयो हियमें तब बालके बालम सों दृगजोरे। ज्यों पंटमें अतिही चटकीलो चढ़े रंग तीसरी बार के बोरे १ याको शुद्धहृदय अवही कैसे ह्वैगयो सीताजी के दर्शन ते सीधेकी बेर क्यों न भयो तीनपुट में रंग है द्वै विधि दर्शन एक विधि भोजन विप्रकहें यहां राजा के ब्राह्मणको पीपाजीको बोध क्यों न भयो बास सीप केलासी पतरा सो पात्र भेद है २ ॥

कियोउपदेशनृपहदैमेंप्रवेशकियोलियोवहीप्रणआप आयेनिजधामहैं। बोल्योएकनामसाधुएकनिशिदेहुतिया लेहुकहीभागोसंगभागीसीताग्रामहै॥ प्रातभयेचलेनाहिं रैनिहीकीआज्ञाप्रभुचल्योहारि आगेघरघरदेखीग्रामहै। आयोवाहीठौरचरौमातापहुँचाइआऊं आयगहेपांवभाव

भयोगयोकामहै २९९ विषयीकुटिलचारिसाधुवेषलियो धारिकीनीमनुहारिकही तिआनिजदीजिये।करिकैशृंगार सीताकोठेमांझबैठीजाइ चाहैंमगआतुरह्वैअजूजाहुलीजिये॥ गयेजबद्वारउठीनाहरीसुफारिबेको फारेनहींवानोजानिआइअतिखीजिये। अपनोविचारोहियोकियोभोग भावनाको मानिसांचभयो शिष्यप्रभुमतिधीजिये ३०० गूजरीकोधनदियो पियोदहीसंतननेब्राह्मणकोभक्तकियो देवीदीनिकारिकै। तेलीकोजिवायो भैंसिचोरनपै फेरि लायेगाड़ीभरिगेहूं तनपांचठौरजारिकै॥ कागदलैकोरो करवानिवांकोशोकहस्यो भरयोघरत्यागिडारी हत्याहूउतारिकै। राजाकोऔसेरभईसंतकोजोविभोदईलईचीठीसा निगयेश्रीरंगउदारिकै ३०१॥

गयो कामहै॥ दोहा॥ मन पक्षी जबलग उड़े विषै वासना माहिं॥ प्रेम बाजकी झपट में जबलगि आयो नाहिं १ विषयी कुटिल॥ चरण रँगे लोचन रँगे चले मराली चाल॥ नीर क्षीर निवरण समय बक उघरयो त्यहिकाल २ गूजरीको धनदियो साधु बोले ठाकुरजी को मन दही पै चल्यो है ठाकुर क्यों कहैं अपनो ही क्यों न कहैं ३ ब्राह्मणको भक्त कियो॥ श्लोक॥ वाञ्छाक ल्पतरुभ्यश्चकृपासिंधुभ्यएवच॥ पतितानांपावनेभ्योवैष्णवेभ्यो नमोनमः ४॥

श्रीरंगकेचेतधरेतियहियभावभरे ब्राह्मणकोशोकहरे राजापैपजाइकै। चँदवाबुझाइलियोतेलीकोसैबैलदियो दियोपुनिघरमांझभयोसुखआइकै॥ बड़ोईअकालपरयो जीवदुखदूरिकरयो परयोभूमिगर्भधनपायोदैलुटाइकै। अतिविसतारलिये कियोहैविचार यह सुने एकबारफिरि

भूलेनहींगाइकै २०२॥ मूल॥ धनिधन्यधनाकेभजनको बिनाबीजअंकुरभयो ॥ घरआयेहरिदासतिनहिंगोधूम खवाये। तातमातडरथोथखेतलंगूरबंवाये ॥ आसपास कृषिआरखेतकीकरतबड़ाई। भक्तभजेकीरीतिप्रकटपर तीतिजुपाई॥ अतिअचरजमानतजगतमें कहुँनिपज्यो कहुँउनवयो। धनिधन्यधनाकेभजनको बिनहिबीजअं कुरभयो ६२॥टीका॥ खेतकीतोबातकहीप्रकटकवित्त मांझ औरएकसुनोभईप्रथमजुरीतिहै। आयोसाधुविप्र धामसेवाअभिरामकरैटरोढिगआइकही मोहिदीजैप्रीति है॥पाथरलैदियोअतिसावधानकियोयहज्ञातीलाइजियो सेवैजैसीनेहनीति है। रोटीधरिआगेआंखिमूंदिलियोपर दाकेछिपोनहींटूकदेखि भईबड़ीभीतिहै २०३॥

चितधरयो तियाहि व भावभरयो ऐसी स्त्री जाति केस भाव भरयो सत्संगते एकादशे ॥ सत्संगेनहिदैतेयायातुधानाःखगा मृगाः॥ गंधर्वाप्सरसोनागाःसिद्धाश्चारणगुह्यकाः १॥ विद्याधर मनुष्येषुवैश्याःशूद्राःस्त्रियोंत्यजाः२॥घरआवे हरिदास॥कुंडलि- या॥ अगर भूख भागै नहीं सपने सो मनखाइ। आये नाग न पूजई बांबी पूजन जाइ॥बांबीपूजन जाइ भटकि भ्रम सबरै आ- वै। हरिजन हरहर हँसे तिनहिं तजि अंतहिधावै॥ नकटी भषण कोटि करै शोभा नहिंपावै। घरमें फजिहत होइ बाहिर परिवार जनावै३प्रीतिहै॥ श्रवणादर्शनाद्ध्यानान्मयिभावोनुकीर्त्तनात् ४॥

बारबारपांवपरैऔरभूखप्यासतजी धरैहियेनांचोभा दपाईप्रभुप्यारिये। छाकनितआवैनीकेभोगको लगावै जोईछोड़ीसोईपावै प्रीतिरीतिकछुन्यारिये॥ जाकोकोउ खाइताकीटहलअनाइकरैलावनचराइगाइहरिउरधारिये।

आयोफिरिविप्रनेहखोजहूनपायोकिहूं सरसायोवातैंलैदि खायोश्यामजारिये ३०४ द्विजलखिगाइनमेंगातनिस मातनाहिंभाइनकीचोटदृगलागीनीरझरी है। जायकेभव नसीतारवनप्रसन्नकरै बड़ेभागमानिप्रीतिदेखीजैसीकरी है॥ धनाकोदयालह्वैकेआज्ञाप्रभुदईढरौकरौगुरु रामानं दभक्तमतिहरी है। भयेशिष्यजाइआयछातीसोंलगाइ लियेकियेगृहकाजसबैसुनीजैसीधरी है ३०५॥

द्विजलखि गाइन में॥ कवित्त॥ गोरज बिराजै भाल लह- लही वनमाल आगे गैया पाछे ग्वालगावैं मृदु बानिरी। जैसी धुनि वांसुरीकी मधुर मधुर तैसी वंक चितवनि मन्द मन्द मुसु- कानिरी॥ कदम्ब बिटपके निकट तटनीके तट अटाचढ़ि चाहि पीतपट फहरानिरी। रसवरसावै तन तपनिवुझावै नैन वैननि रि- झावै वहुआवै रसखानिरी १॥ भूपके तेल लगायो यहतो वड़ो आश्चर्य्य है वैष्णवकी तो टहलकरै पै ३ भक्त राजा ताके तेल लगायो तहाँ टीकाकारने कहो है वही भगवन्त सन्त प्रीति को विचारकरै धरै दूरि ईशताई पाण्डवनिसों करी है २॥

मूल॥विदितवातजगजानियेहरिभयेसहायकसेनके॥ प्रभूदासकेकाजरूपनापितकोकीनो। क्षिप्रक्षुरहरीगही पानदर्पणतहँलीनो॥ तादृशह्वैतिहिकालभूपकेतेललगा यो। उलटिरावभयोशिष्यप्रकटपरचौजवपायो॥ श्रीश्या मरहतसम्मुखसदाज्योंवच्छाहितधेनके। विदितवातज गजानियेहरिभयेसहायकसेनके ६३ टीका॥ वांधोगढ़ बासहरिसाधुसेवाआशलगीपगीमतिअति प्रभुपरचौदि खायोहै। करिनितनेमचलेभूपकेलगाऊंतेलभयोमगमे लेसंतफिरिघरआयोहै॥टहलबनाइकरीनृपकीनशंकधरी

ध्यानउरश्यामजाइभूपतिरिझायोहै। पाछेसेनगयोपंथपूछे हिंयेरंगछयोभयोअचरजराजावचनसुनायोहै ३०६ फेरि कैसेआयेसुनिअतिहीलजायेकही सदनपधारेसंतभईयों अवारहै।आवननपायोवाहीसेवाअरुझायोराजादौरिशि रनायोदेखीमहिमाअपारहै॥ भीजिगयोहियोदासभावह दृढ़कियोपियोभक्तरसशिष्यहौकैजान्योसोईसारहै। अ बलौंहूंप्रीतिसुतनातीभईरीतियहै होइजोप्रतीतिप्रभुपा वैनिरधारहै ३०७॥

नापित॥ दशमे॥ अनुग्रहायभक्तानां मानुषंदेहमास्थितः॥ भजतेतादृशीःक्रीडा याःश्रुत्वातत्परोभवेत् १ ऐसे तुमने नाऊ रूप धरयो तो हम नाऊके शिष्य॥ सारसमुच्चये॥ नशूद्राभगवद्भक्ता स्तेपिभागवतोत्तमाः॥ सर्ववर्णेषुतेशूद्रा ये न भक्ता जनार्द्दने २ पद रचना॥ मधुपुरी क्यों न चलो हरिश्याम। बलिजाऊं रजधानी केसे छांड़ि गोकुलसों ग्राम॥ नन्दयशोदाकी रट मेटौ वेगिचलो उठिधाम। निशिवासर कहुँ कल न परतिहै सुमिरत तेरो नाम॥ तब तुम बेनु बजाइ बुलाई कालिंदीके तीर। अब वै बातें क्यों वि- सरैंगी हरि हलधर दोउवीर॥ गोपवधू व्रजमंडल मंडन सब मिलि जोरैंहाथ। सुखानंद स्वामी सुखसागर वेगि चलो उठि साथ ३॥

मूल॥ भुविभक्तिदानभयहरणभुजसुखानंदपारसपर स॥ सुखसागरकीछापरायगौरीरुचिन्यारी। पदरचना गुरुमंत्रमनोआगमउनहारी॥ निशिदिनप्रेमप्रवाहद्रवत भूधरज्योंनिर्झर। हरिगुणकथाअगाधभालराजतलीलाभ र॥ सुठिलंतकंजपोपणविमलअतिपियूषसरसीसरस। भुविभक्तदानभयहरणभुजसुखानंदपारसपरस ६४॥ महिमामहाप्रसादकीसुरसुरानंदसांचीकरी॥ एकसमयअ

ध्वचलतघराबाँकाछलपाये।देखादेखीशिष्यतिनहुँपींछेते खाये ॥ तिनपरस्वामीखिजेवमनकरि चिनविन्वासी । तिन तैसेप्रत्यक्षभूमिपरकीनीरासी ॥ सुरसुरीसुघरपुनिउदकलै पुहुपरेणुतुलसीहरी । महिमामहाप्रसादकीसुरसुरानंद सांचीकरी ६५ ॥ महासतीसतऊपमा त्योंसत्तसुरसुरी कोरह्यो ॥ अतिउदारदंपत्यत्यागिगृहबनकोगमने । अ चरजभयोतहँएकसंतसुनि जिनहोत्रिमने ॥ बैठेहुतेएका तआइअसुरनदुखदीयो।सुमिरेशारंगपाणिरूपनरहरिको कीयो ॥ सुरसुरानंदकीघरनिकोसतराख्योनरसिंहचह्यो॥ महासतीसतऊपमात्योंसत्तसुरसुरीकोरह्यो ६६ ॥

तब प्रतिमा रनछोर बहुतदिन बसे गोमतीतीर । ब्रजवासी दरशनको तरसें परशत श्यामशरीर ॥ प्रेम तीन प्रकारको तापै कबूतरको दृष्टांत ॥ दोहा ॥ हितकरि तुम पठयो लगी वा व्यजनकी बाइ ॥ गई तपनि तनकी तऊ उठी पसीना न्हाइ १ महिमा प्रसाद ॥ पाद्मे ॥ प्रसादंजगदीशस्याप्यन्नपानादिकञ्चयत् । ब्रह्मवन्निर्विकारंहियथाविष्णुस्तथैवतत् ॥ विचारंयेचकुर्वंतितेनश्यंति नराधमाः २ ॥ खिजे ॥ गुरोराज्ञांलदाकुर्यान्नतदाचरणंकाचित् ॥ महादेवजीने विषपियो और कोऊ कैसे पीवैगो गुरुको गुरु न होइजाइ तापै रोटीको दृष्टांत ॥ दोहा ॥ गौने व्याह उछाह को संतअन्न नहिं खाय ॥ जहां तहांके पायवे भजन तेज घटिजाय ३ ॥

मूल ॥ निपटैनरहरियानन्दकोकरदाताकुरगाभई ॥ घरघरलकरं नाहिंशक्तिकोसदनउदारै । शाक्तिभक्तसोंबो लिदिनाहिंप्रतिवरहीडारै ॥ लगीपरोसनिहोसभवानीभय सोमान्यो । बदलेदीबेगारिवेगिवाकेशिरडाल्यो ॥ भयोभ रतप्रसंगज्योंकालिकालडूदेखितनमेंतई । निपटैनरहरि

आनन्दकेकरदाताकुरगाभई ६७ कबीरकृपातेपरमतत्त्व पद्मनामपरचौलह्यो ॥ नाममहानिधिमंत्रनामहींसेवापूजा । जपतपतीरथनामनामबिनऔरनदूजा ॥ नामप्रीतिनामबैरनामकहिनामीबोलै । नामअजामिलसाखिनामबंधनतेखोलै ॥ नितनामअधिकरघुनाथतेरामनिकटहनुमतकह्यो । कबीरकृपातेपरमतत्त्वपद्मनामपरचौलह्यो ६८ ॥ टीका ॥ काशीवालीसाहुभयोकोढ़ीसोंनिबाहकैसे परिगयेकुमितिचल्योबूड़िबेकोभीरहै । निकसेपद्मआहपूछीढिगजाइकही गहीदेहखोलोगुणन्हाइगंगानीरहै ॥ रामनामकैरैबेरतीनिमेंनवीनहोत भयोईनवीनकियोभक्तमतिधीरहै । गयेगुरुपासतुममहिमानजानीअहो नामाभासकालकैकहीयोंकबीरहै ३०८ ॥

कबीर ॥ दोहा ॥ समझिपढ़े कै पढ़ि समझि अहो कहो द्विजराय ॥ सुनि यह बात कबीरकी पण्डित रह्यो हिराय १ तप जप तीरथनाम ॥ नाम लियो जिन सब कियो योग यज्ञ आचार ॥ जप तप तीरथ परशुराम सबै नामकी लार २ ॥ नामबैर ॥ कवित्त ॥ कोऊ एक यवन जरठ सङ्ग जात कहूं सूकरके शावक ने मारयो ताहि धायकै । जोरसों पुकारयो मोहिं मारयो है हरामजाति ऐसे कहि वेगि प्राणगये अकुलायकै ॥ गोपदसमान भवसागरसों पार गयो नामके प्रताप ऐसो पद कहो गायकै । प्रेमसों कहैगो कोऊ नाम कृपा राम कौन अचरज रामधाम देतहैं जु चायकै ३ ॥

मूल ॥ तत्त्वाजीवादक्षिणदिशावंशोधरराजतविदित ॥ भक्तिसुधाजलसमुद्रभयेबेलावलिगाढ़ी । पूरवजान्योरीतिप्रीतिउत्तरोत्तरबाढ़ी ॥ रघुकुलसदृशसुभावसृष्टिगुणस

दाग्रभरत। शूरधीरऊदारदयापरदक्षअनन्यव्रत ॥ जनुग दसखण्डगदमापधतिप्रफुलितकरसवितांउदित। तत्वा जीवादक्षिणदिशावंशोधरराजतविदित ६९ ॥ टीका ॥ तत्वाजीवाकी ॥ तत्वाजीवाभाईउभै विप्रसाधुसेवापन म नवँसेवालतातेशिष्यनहींभयेहैं। गाडेएकठंठद्वारहोइऊ होहरीडार संतचरणाम्रतकोलैकैडारियेहैं ॥ जबहींहरि तदेखैंताकोगुरुकरिलेखैं आयेश्रीकबीरपूजीआशपावल येहैं। नीठिनीठिनामदियोदियोपरचाइधाम काम कोइहो इओपै आवोकहिगयेहैं ३०९ कानाकानीभईद्विजजानी जातिगईपांति न्यारीकरिदईकोउवेटीनहींलेतहै। चल्यो एककाशीजहांवसतकबीरधीर जाइकहीपीरजबपूछेकोन हेतहै॥ दोऊतुमभाईकरोआपुमेंसगाईहोइ भक्तिरसाई नघटाईचितचेतहै। आइवहैकरीपरीजातिखरभरीकहै कहाडरधरीकहूमतिहूअचेतहै ३१० ॥

भक्तिसुधा अमृतमय है गुण मादकता मिष्टभक्तिरूपी अमृतहू मादक अतिमिष्टपै वह नश्वर अरु यह स्वसुखकर्ता यह सन्मुख कर्ता येलावेलबाटहै १ ॥ मनवरी ॥ दोहा ॥ तोलोबरोनरिगोंगची मोलबरोवरि नाहिं ॥ वेषवरोवरि परशुराम भेद बरोवरि नाहिं २ नामदियो ॥ याते परीक्षालई सबतीरथ करन कबीरजी आये ३ चितचेतहै ॥ चितमें विचारी सम्बन्ध तो सबतोहै येतो अभक्त तुम भक्त तो सम्बन्ध कामको नहींपर परायो देख्यो स्वयंभूमुनि वर्दमत्रापि ४ वंशीधर प्रह्लाद कही पिता उद्धार इकीस कुली ब्रह्मा मारीच कश्यप हिरण्यकशिपु नाना कृपा मामा गोसी पुरब जान्यो ॥ आरम्भगुर्वीक्षयिणीक्रमेण लघ्वीपुराद्धिमतीच पश्चात्। दिनस्यपूर्वार्द्धपरार्द्धभिन्नाछायेवमैत्रीखलसज्जनानाम्॥ दोऊ तुम भाई करो ब्रह्माके अंगते स्वयंभूमनु शतरूपा तिनते

देवहूती आकूती प्रसूती सृष्टि थोड़ी तब ब्रह्माके बेटा कर्दम आदि दई ५ ॥

करैंयहीवातहमैंऔरनासुहातआये सबैहाहाखातयह छांड़िहठदीजिये । पूछिवेकोफेरिगयेकरौंक्याहजोपैनये दण्डकरिनानाभांतिभक्तिदृढकीजिये ॥ तबदईसुतालईं वातनप्रसन्नह्वैकै पांतिहरिभक्तनसोमदामतिभीजिये । विमुखसमूहदेखिसुखनजाईकरै घरैहियमांभक्तहैपनप्रणोभिये ३११ ॥ मूल ॥ वरविनयव्यासमनोप्रकटह्वैज गकोहितमाधवकियो । पहलेवेदविभागकथितपुराणअष्टादश । भारतादिभागवतमथितउद्धारेउहरियश ॥ अब शोधेसवग्रन्थअर्थभाषाविस्तारेउ । लीलाजयजयजयति गाइभवपारउतारेउ ॥ जगन्नाथइष्टवैरागशिवकरुणारसभीज्योहियो । वरविनयव्यासमनोप्रकटह्वैजगकोहित माधवकियो ७० ॥

भाषा विस्तारयो ॥ पद ॥ हरिहरिनाम उचारिये हरियश सुनिये काना । हरिको कलंक नाइये हरिहि सकल गुणके निधाना ॥ हाथन हरिके कर्मकरि पायन परिक्रमा दीजे । नैन निरखि श्री जगन्नाथ आतमा तर्पण कीजे ॥ कोटि ग्रंथको अर्थ यह श्रीभागवत विचारा । वासुदेवकी भक्तिबिन नहीं नरको निस्तारा १ ॥ श्लोक ॥ स्त्रीशूद्रद्विजबंधूनां त्रयीनश्रुतिगोचरा ॥ कर्मश्रेयसिमूढा नांश्रेयएवंभवेदिह २ इति भारतमाख्यानं कृपयामुनिनाकृतम् ३ ॥ स्मृतौ ॥ आवेदत्वपोद्विजाःप्रोक्तास्तेषांसंस्कारजातक्रियाः ४ एसे व्यासने जगत्को हित कियो तैसेही माधवदासजीने ॥ मृषा गिरस्तात्यसतीरसत्कथाः ॥ तापै भट्टजी अरु कृष्णको वृत्तांत ५॥

टीकामाधवदासजीकी ॥ माधौदासद्विजनिजतियात

नत्यागकिया लियाइनजानजगऐसोईव्योहारहै। सुतकी बढ़नयोगलियेनितचाहतहौ भईयहऔरलैदिखाईकरतारहै॥ तातेतजिदियोगेहबेईअन्नपालैंदेह करैअभिमानसोईजानियेगँवारहै। आयेनीलगिरिधामरहेगिरिसिंधुतीर अतिमतिधीरभूखप्यासनविचारहै ३१२ भयेदिनतीनियेतौभूखकेअधीननहिं रहेहरिलीनप्रभुशोचपरयोभारिये। दियोशैनभोगआपलक्ष्मीजूलैरधारी हाटककीथारीझलझनपांवधारिये॥ बैठेहैंकुटीमेंपीठिदियेहियेरूपरँगे विजुरीसीकौंधिगईनीकेननिहारिये। देखिसोप्रसादबड़ोमनआह्लादभयो लयोभागमानिपात्रधरयोईत्रिधारिये ३१३॥

माधवदासजी कनौजिया ब्राह्मणरहैं यह विचारैहैं लरिकास्याने होहिं तौ माता स्त्रीको टहलको छोंड़िकै वैरागलेहिं तौलौं स्त्री समाइगई उलटीटहल लरिकनकी आइपरी जैसेकोई सवारी चाहैहो उलटौ शिरपै घोड़ा को बोझा धरयो १ दिखाई पालन सबको हरिही करैहैं अब जो लरिकनको बढ़िबो विचारौं फिरि सगाई व्याह फेरि छूटब इतने में शरीरकी छूछि है गई यह कारज तौ बद्रीनाथके पहाड़ हैं कब छूटैंगे सह दिखाइकै निकाल्यो जैसे बल्ख के बादशाहको २ हिये रूपरंग साधु द्वै जातिके एक भगवत्कामी एक स्थानी एक गमनी गमनीद्वै जाति के एकपर उपकारी एक अन्त कामी स्थिरी द्वै जातिके एक भगवत्कामी एक अर्थकामी शोभादेशचारी ग्रामचारी ग्रामचारीके तीनभेद एक हटानव्रती एक स्थानव्रती एक मानक माधवदास हरिकामी हैं सो साधुनके भेद हैं॥

खोलैजोकिंवारथारदेखियेनशोचपरयो कह्योलैयतन ढूंढ़िवाहीठौरपायोहै। लायेबांधिमारीबैनधारीजगन्नाथ

देवभेदजबजान्योपीठिदिहृद्रशायो है ॥ कहीतबआप सैंहीदियोजबलियोयाने मानेअपराधपांवगहिकैक्षमायो है । भईयोंप्रसिद्धबातकीरतिनसातकहूं सुनिकैलजात साधुशीलयहगायो है ३१४ देखनस्वरूपसुखितनकीवि सारेजातिरहिजातिमंदिरमेंजानेनहीं कोई है।लग्योशीत गातसुनोबातप्रभुकांपिउठे दईसकलातआनिप्रीतिहिये भोई है ॥ लागेजबवेगदेनोजाइपरेसिंधुतीर चाहेजबनीर लियेठाढ़ेदेहधोई है । करिकैबिचारयोंनिहारिकहींजानेमैं तौदेतहौंअपारदुखईशतालै खोई है ३१५ कहाकरौंअहो मोपैरह्योनहींजातनेकुमेटौ व्यथागातमोको व्यथाब भा रीहै । रहैभोगशेषऔरतनमेंजबेशकरै तातेनहींकरोदूरि हरातालैटारीहै ॥ वहूबातसांचयाकीगांसएकऔरसुनो साधुकोनहँसेकोऊयहमैंबिचारीहै ।देखनहींदेखतमेंखीड़ा सोंखिलाइगई नईनईकथाकहिभक्तिविसतारीहै ३१६ ॥

भई यों प्रसिद्ध बात ॥ सो ज्यों ज्यों सुने जगन्नाथने माधव-दासके लिये आप बेंतपाये त्यों त्यों ये लजात अरु कहैं हमारा कुनाम भयाहै जिनको पुष्पादि सों पूजिये तिन्होंने बेंतपाये सा-धुनके लक्षण हैं जैसे सुदामा कही मेरो दरिद्रगयो मेरेदरिद्रको ख्यातकियोहै सबकहैहैं सुदामा गरीब भक्तहै १ देहधोइये॥श्लोक॥ यद्यदाचरतिमद्भक्तस्तत्तत्कुर्यादतन्द्रितः॥ रह्योनहींजात सब जग जगन्नाथकी सेवा करैहै। जगन्नाथजी माधवदासकी सेवाकरै हैं॥

कीरतिअभंगदेखिभिक्षाकोअरंभकियो दियोकाहूवा ईपोताखीजतचलाइकै । देवोगुणलियोनीकेजलसोंप्रछा लिकरि करीदिव्यबातीदईदियेमेंबराइकै ॥ मंदिरउजारो

भयोहियेकोअँध्यारोगयो गयोफेरिदेखिवेकोपरीपाइँआ.
इकै । ऐसेहैंदयालदुखदेतमैंनिहालकरैं करैंजेपेबात।
कोसकैकौनगाइकै ३१७ पंडितप्रबलदिग्विजैकरिआयो
आपवचनसुनायोलूविचारलोसोंकीजिये । दईलिखिहार
काशीजाइकैनिहारपत्र भयोअनिहारलिखीजीतिसोकी
खीजियेमिरिमिलिमाथोजूकोबैसेईहगगमोएकलरकोकुल
योकहीचढ़ौजीउधीजिये।बोरबोजूतोवाबोलानगयोलुनि
न्हानआनजगन्नाथजीतेलैचढ़ायोवाकोरीझियै ३१८॥

भिक्षाको आरंभ ॥ दोहा ॥ धरती तौ खूंदन राहै काटसहैवन राइ ॥ कुवचनतो साधू महै और पै सहो न जाइ १ हार ॥कवित्त॥ दूनो भलो सुपथपै न कुपथ ऊनो भलो सूनो भलो गेह पै न वल साथ करिये। अनलकी लपट औ झपट भली नाहरकी कपटी के कपटसों दूरिपरिहरिये॥ यहै जगजीवन परम पुरुषारथहै पर वर जाइ फेरि ररासो निकरिये। हारिमानि लीजिये न कीजै वाद नीचनसों सब रसदीजै पै न परवश परिये २ ॥ दोहा ॥ हारे तौ हरिजन भले जीतनदौ संसार ॥ हारे हरिपै जाहिंगे जीते यमके द्वार ३ जगन्नाथजीते तब जगन्नाथकही गदहापै चढ़ो तेरे सुख न्याय है जैसे वाने कही काजी के सुख न्यायहै ४ ॥

ब्रजहीकीलीलासबगावैं नीलाचलमांझमनभई चाह जाइनैननिहारिये । चलेवृन्दावनमगलगिएकगांवज हांवाईभक्तिभोजनकोलाईचावभारिये ॥ वैठेवेप्रमादलेत लेतदृगभरिअहोकहोकहावातदुखहियेकोउघारिये । सांच रोकुँवरयहकौनकोभुराइलायेमाइकैसजीवै सुनिमतिलैवि सारिये ३१९ चलेऔरगांवजहांमहाजनभक्तरहैगहैमन मांझआगेविनतीहूकरीहै । गयेवाकेघरवहगयोकाहूऔर

घरमाँझभरितिया आइपाँयनमेंपरीहै ॥ ऊपरमहंतकही अ
हरकमंतआयोयहाँनीमसाइनाहिं आईअखरीहौ । कीजि
येरसोइँजोइ निछिनोइलावोतूधनीकेकेपियाचेनामसाधो
आगभरीहै ३२० गयेउठिपाछेभक्तआयोसोसुनायोनाल
सुनिअभिरामदौरेपंगहीमहंतहैं । लियेजाइपाइँलपटाये
सुखपायमिलेमिलेघरनांझतियाअन्तोसोफैलतहै ॥ संत
पतिबोलेमैं अनंतअपराधकिये जियेअनकहीतेवोसीतम
निजंतहैं । आवतमिलापहोइयहीरारवैवातगोइ आयेछ
न्दाबनजहांसदाईबसंतहै ३२१ ॥

सवैया ॥ झीने झगाले दगाही भरी औ लगाटी लगा सँग डोलतहैं । देखे पगा न जगा जगमें सुभगा कुलकानि के गोलत हैं ॥ नैनलगा सो लगाही गया सुभगा उर बान विलोलत हैं । लरिकानि में डोलत हैं जगनाथ रुरू कुरुरू करि बोलत हैं १ धूरि में धूरिभरे सबगात सुजात पुकारत डोलत हैं । अलकावलि राजति हैं बिथुरी सुथरी बरगोल कलोलत हैं ॥ अम्बुज लोचन चारु चितौनि सुभाल बिशाल विलोलत हैं । लरिकानि में डोलत हैं जगनाथ रुरू कुरुरू करि बोलतहैं २ माधवदास पंडित सों बोले आप बड़े उतावले इतने में आऊं तोलों आपही चढ़ि बैठे जब लाज लें दबिगयो तब माधवदासजी जगन्नाथजी से बोले यह दिग्विजय करि आयोहो सो सब रवारकरी सरेहु बुरोभयो यह आछो न कियो मेरे बदले चढ़ायो संतो अपने बदले चढ़ायो है नतः अपने हाथसों अपराध क्षमा करायो ये साधुता के लक्षण हैं ३ ॥ न्याये ॥ विद्याविवादायधनंमदाय शक्तिःपरेषांपरिपीडनाय ॥ खलस्यसाधोर्विपरीतमेतज्ज्ञानायदानायचरक्षणाय ४ पठकाःपाठकाश्चैव येचान्येशास्त्रचिन्तकाः ॥ सर्वेव्यसनिनोमूढाः यःक्रियावान्सपण्डितः ५ ॥ दोहा ॥ भक्तिविना श्रीभागवत कहें सुनें जे ग्रंथ ॥

ज्यों दर्वी व्यंजननि में स्वाद न जाने गंध ६ ॥ छप्पै ॥ पंडितपढ़ि भागवतभक्ति भक्तनि जु सिखावत । महिषी ज्यों पय स्रवत आप सो स्वाद न पावत ॥ मृगजुनाभि नहिं लखै लेततृण शिलमधि आवै । कटआगर करपरेवहे ये नरम न जानै ॥ जस दर्वी न्या- यो चतुरभुज भक्ति विना मंडूक भुनि । दर्पण दियो जु नैनविन ज्यों अंधअँधेरो डोरिपुनि ७ ॥ सप्तमे ॥ यथाखरश्चन्दनभारवा हीभारस्यवेत्तानतुचन्दनस्य ॥ तथाचविप्राःश्रुतिशास्त्रयुक्तामद्ध क्तिहीनाःखरवद्वहन्तिटतापैगंगलातेलीको दृष्टांत और पंडितको दृष्टांत ८ संतपति ॥ दोहा ॥ नैन निकट काजर वसै पै दर्पणदर- साइ ॥ ज्यों साधुनके संगविन हरि सुख छवि न लखाय ५ ॥ कवित्त ॥ वेदहूकी निंदाकरै साधुहूकी निंदाकरै गुरुकी अज्ञा विष्णु शिवभेदमानिये । नामहीके आसरेसे आइ वहुपाप ओ अश्रद्धानहीं सों उपदेशलेवमानिये ॥ एक अर्थ वाद अरु व्या- ख्याकुतरक करै महिमा सुनत हिये श्रद्धा नहिं आनिये । नाम की सजान सव धरम समान कहे नामन अफल अपराध दश आनिये ॥

देखिदेखिवृन्दावनमनमेंमगनभयेगयेश्रीविहारीजूके नादतहीपायेहैं । कहिरखोद्वारपालनेकमेंप्रसादलालयहु नारसाजनटभोगकोलगायेहैं ॥ नानाविधिपाकवरेस्वामी आपध्यानकौंबोलैहगिभावैनाहिंवेईलेखवायेहैं । पूछ्योसो जगन्योतंकिलाघोआगेगायोसवतुमतो उदासहासरसमव मानौहूँ ...ब्रजकेविवेकोभांडीरमेंप्रेमरहेनिशिकोहु ...लौंदिखायेहैं । लीलासुनिवेकोहरियानेगांवरहैं आइ गोवरधूपाथिपुनिनीलाचलआयेहैं ॥ घरहूकोआये सुतसुखीसुनिमातावाणी मारगमेंस्वच्छदकैनाणिकभिलाये हैं । याहीविधिनानाभांतिचरितअपारजानो जितेकछुजा

नेतितेगाइकैसुनायेहैं ३३२ ॥ मूल ॥ रघुनाथगुसाईंगरुड़ज्योंसिंहपौरिठाढ़ेरहैं ॥ शीतलगतलकलाननिंदितकुलपोतमदीनी। शोचगयेहरिसंगकृत्यलेनकमीनी ॥ जगन्नाथपदप्रीतिनिरंतरकरतखवासी। भगवतधर्मप्रधानप्रसननीलाचलवासी ॥ उत्कलदेशउड़ीसानगरबैनतेयसब कोउ कहैं। रघुनाथगुसाईंगरुड़ज्योंसिंहपौरिठाढ़े रहैं ७१ ॥

विसारिये ॥ दोहा ॥ जो मोसों मोसों करो तोर न है कहुं ठौर॥ तुमही ऐसी कीजियो अहो रसिक शिरमौर ॥ तुमतो उदास हास रस समझायो तुम जगतसों विरक्तभये सोतो आछो ऐ हरिसों विरक्त भये सो आछो नहीं माधवदास कही में तुम्हारे ठाकुरकी सचिक्कणता देखी सो प्रसंग २निशिको दुराइखाइ क्रम सों दिखाई है जब डरे तब कही मथुरा विश्रामघाट झारो संत चरणोदक शीत सेचनकरो सोई कियो मूलमें नाभाजीने थर है खस गुसाई खेमकरु लीला सुनिवेको हरियानेगोली गांवरहै गोवरधाधो जो प्रसंग ॥

टीका ॥ अतिअनुरागघरसंपतितोंरह्योपागि ताहिकरित्यागनीलाचलकियोवासहै। धनकोपठावैपिताऐपैनहींभावैकछूदेखिवोसुहावैमहाप्रभुजूकोपासहै ॥ मन्दिरके द्वारकपसुंदरनिहारोकरे सज्योरीतभाललकलातदईदासहै। शौचसंगजाइवेकीरीतिकोप्रमानयहै वसैसवजानो माधोदाससुखरासहै ३२४ श्रीमहाप्रभुकृष्णचैतन्यजूकी आज्ञापाइ आयेवृन्दावनराधाकुंडवासकियोहै। रहनिकहनिरूपचहनिकहनिसकै थकैसुनितनभावरूपकरि लियो है ॥ मानसीमैंपायोंदूधभातसरसातातिये लियेरसनारीदे

ठौरपारपदमांझधरिराखिये । कहतकहतअरुसुनतसुनतवाकेभयेमतवारे वहुग्रंथताकीसाखिये ३२६ ॥

देही धरी ॥ पद ॥ अबतोहरी नामलौ लागो । सब जग कोयह माखन चोरा नाम धरयो वैरागी ॥ कहाँ छोड़ि वह मोहन मुरली कहँ छोड़ी सब गोपी । मूंड़मुड़ाइ डोरि कटि बांधी माथे मोहन टोपी ॥ मात यशोमति माखन कारण बांधे जाको पांव । श्याम किशोर भये नवगोरा चैतन्य जाको नांव ॥ पीताम्बर को भाव दिखावे कटिकोपीन कसे । दासभक्तकी दासीमीरा रसना कृष्ण वसे १ ॥ दशमे ॥ आसन्वर्णास्त्रयोह्यस्यगृह्णतोऽनुयुगतनूः ॥ शुक्लोरक्तस्तथापीतइदानींकृष्णतांगतः २ ॥ एकादशे ॥ कृष्णवर्णंत्विषाकृष्णं सांगोपांगास्त्रपार्षदम् ॥ यज्ञैःसंकीर्त्तनप्रायं यजन्तिहि सुमेधसः ३ चाखिये ॥ दोहा ॥ भूतलगे मदिरापिये सबकाहू सुधिहोइ ॥ प्रेमसुधारस जिनपियो तिहि न रहै सुधिकोइ ४ जैसे गंगा यमुना सरस्वती महिमा गौर नाम गौरतन अन्तर कृष्ण स्वरूप ५ ॥

टीकाश्रीकृष्णचैतन्यमहाप्रभुजी ॥ गोपिनकेअनुरागआगेआपहारिश्याम जान्योयहलालरंगकैसेआवैतनमें । येतोसबगौरतनीनखशिखबनीठनी खुल्योयोंसुरंगरंगअंगरंगेबनमें ॥ श्यामताहमांझसोललाइकूनमाइजाइ तातेमेरेज्ञानफिरिआईयहमननें । यशुमतिसुतभोईशचीसुतगौरभये नयेनयेनेहुचोजनाचेनिजगननमें ३२७ ॥

हरिश्याम ॥ पंचाध्यायी ॥ भगवानपितारात्रीः शरदोत्फुल्लमल्लिकाः॥ वीक्ष्यरन्तुंमनश्चक्रे योगमायामुपाश्रितः २॥ कवित्त ॥ राग जिमिरागनहीं भरयो है या बांसुरीमें ताको तानेशिखा सुनि गोपी कांतवनिहे । कानमध्य तूलदिये दिये ऐसी वाती धरे नाहिं नेउपाइ कोऊ वाद जो पचति है ॥ वनके पखेरू उठि पांखन बयारि करें गोकुलकी कुलवधू कैसेके वचतिहै । जरिगई अति

ताती ताते तकिनेही कान्हैं फूंकि फूंकि गहैं तऊ आगरी नचाती है २ एक ओर बीजना डुरावति चतुरनारि एकओर झारीलिये करज-लपानकी। पाछेते खवासिनी खवावें पान खोलि खोलि राधे मुख लाली मानों तम करतानकी॥ ताही छिन बांसुरी बजाई नँ-दनन्दन जू आई सुधि वाही व्रज कुंजकी लतान की। बायेंगिरि नीरवारी दाहिने समीर वारी पाछे पानदान वारी आगे वृषभान की ३॥ सवैया॥ प्रेमगढ़ापग अंबनिको इन चालिबो आछि-निहूं को निवारयो। सूरति थाह दिखावन वे इन प्रेम अथाह के वांधि डारयो॥ प्रेमवास वसावन हैं इनवास छुड़ाइ उजा-रनिवारयो। देखो अहो हरि की बँसुरी इन कैसे सुवंशको नाम बिगारयो ८ दिवाके उज्यार तिय दूधसीरो करतिही संग वाके आसपास भावजन भीरकी। लोनेहू ते सुलखसलोनी साठि सोनेकीसी गौनकीसी आई किधौं आई सुनासीर की॥ वाही राम रूपभरी रतिहूते अति खरी कहूंवाके कान परी वंशी वल वीरकी। सानोलागी तीरकी यापरी है अहीरकी सँभार न शरीर कौं न ओरकी नछोरकी ५ भूलीसी ज्यों फिरति फिरातिकुंजकुंज निसें केतो समझाइ रही बैठारहो गेहमें। तबतो न जानी कान्ह सुनिवेको जातितान मानी नहीं कान्ह तरुणाईहीके तेहमें॥ अवतौ प्रह्लाद डसी विरह भुअंगमने अंग रोमरोम विष रमिगयो देहमें। सांसुरी भरन लागी आंसुरी ढरन लागी पांसुरी निकसि आई बांसुरीके नेहसें २ इन जेन मुरलीने तेते वेधउर कीने जेनराग तेने दाग रोम रोम कीजिये। अन्तरकी सूनीवर करेसूने औरनि के शेषसुनि श्रवण ढरोरो वनकीजिये॥ ताननकी तीखी उर वानन चलावे देनी चीरि चीरि अंगनि तुणीन तनकीजिये। बांसुरी वजेगी जो तो हम न जलेंगी श्याम बांसुरीवजाइ कान्ह हमें विदा कीजिये १ वाजी उठिधाई वाजी देखिबेको दौरी आई वाजी सुनि आई पौरि वंशी गिरिधरकी। वाजी हँसि बोलें वाजी संग लगी डोलें वाजी भई बौरी वाजिन बिसारी सुधिघरकी॥

बाजी न धरत धीर बाजी न सँभारे चीर बाजी न री छाती पर पीर दावानलकी । बाजी कहैं बाजी पुनि बाजीकहैं कहां बाजी बाजीकहैं बाजीवंशी चंचलचतुरकी ३ ॥ श्लोक ॥ तासांतत्सौभगमदंवीक्ष्यमानंचकेशवः ॥ प्रशमायप्रसादायतत्रैवान्तरधीयत ४ ॥ कवित्त ॥ जाही कुंज पुंजतर गुंजत भँवर भीर ताही तरुवर तर शीश धुनियत हैं । जाही रसनाते कही रसकी रसीली बात ताही रसनासों आप गुण गुनियतहैं ॥ आलम विहारी लाल हियेते अचेत भये येहो दई हेत खेत कैसे लुनियतहैं । जेइ कान्ह आंखिनिके तारे हुते निशि दिन तेई कान्ह काननि कहानी सुनियतहैं ५ ॥ मंजु रची रससों रुचिके सुगुमानकी मेंड़ खसाइ गयोरी । थाह बताइहमें सजनी मँझधारमें छांड़िनशाइगयोरी ॥ खेल सँयोगको नेकदिखाइ वियोग फनीये कटाइ गयोरी । प्रेम के फंदफंसाइगयो ब्रजमेंघर कान्ह बसाइगयोरी २ कदमकरील तीर पूंछति अधीरगोपी आनन रुखौहोंगरौं खरौंई भरौंहोंसों । चोरहो हमारो प्रेम चोनरानि तारयो गदरानिकसि भाज्यो ह्वैकै करिकरि जोहोंसों ॥ ऐसेरूपऐसेवेप मंहूको दिखैयोअनि देखतही राखानि नयनचुभौंहोंसो । मुकुटभुकौंहोंहिगहारहैं हरौंहों कटिफेटापियरौंहों अंगरंगसबरौंहोंसों ३ श्लोक ॥ चूतप्रियालपनसासनकोविदारजम्ब्वर्कबिल्वबकुलाम्रकदम्बनीपाः ॥ येन्येपरार्थभवकायमुनोपकूलेशंसन्तुकृष्णपदवींरहितात्मनांनः ४ पंचाध्यायी ॥ यमुनाकेविटपपूंछिभईनिपटउदासी । क्योंकहिहै सखिमहाकठिन यतीरथवासी ॥ श्लोक ॥ पुनःपुलिनमागत्य कालिंद्याःकृष्णभावना ॥ समवेताजगुःकृष्णं तदागमनकांक्षया ५ तबगोपीअधीनह्वै पूछनसों वेलिनसों पूंछतभई महाविह्वल शरीरह्वैगये सो कहै हैं तुमकहूं श्रीकृष्ण देखे हैं ॥ श्लोक ॥ भजतोपिनवैकेचिद्भजन्त्यभजतःकुतः ॥ आत्मारामाह्याप्तकामाअकृतज्ञागुरुद्रुहः ६ नपारयेहंनिरवद्यसंयुजांस्वसाधुकृत्यंविबुधायुषापिवः ॥ यामाभजन्दुर्जरगेहशृङ्खलांसंवृश्च्यतद्वःप्रतियातुसाधुनः ७ ॥ दोहा ॥ कसनकसौटी

हेमकोलोकरीति यह नेम ॥ प्रेम नगर की पैठमें भयो कसौटी हेम ८ वातें श्रीकृष्णजी गोपिकनिके आगेहारे इनके प्रेमको देखिकै महा प्रफुल्लित ह्वै कै हाथजोरिकै आइमिले ६ ॥

आवैकभूप्रेमहेमपिंडवततनहोइकभूसंधिसंधिछूटिअंगवटिजातहैं । औरएकन्यारीरीतिआंसूदिव्यकारीमानों उभैलालप्यारीभावसागरसमातहैं ॥ ईशतावखानिकहा करोंसोप्रमाणयाको जगन्नाथक्षेत्रनेत्रनिरखिसाक्षातहैं । चतुर्भुजषटभुजरूपलैदिखाइदियो दियोजोअनूपहित वातपातपातहैं ३२८ श्रीकृष्णचैतन्यनामजगतप्रकटभयोअतिअभिरामलैमहंतदेहीधरीहैं । जितोगौड़देशभक्तिलेशहूनजानेकोऊ सोऊप्रेमसागरमेंवोरयोकहिहुरी ॥ भयेशिरमौरएकएकजगतारिवेको धारिवेकोकौनसाखिपोथिनमेंधरीहैं । कोटिकोटिअजामीलवारिडारेदुष्टतापैऐसे हूभगतकियेभक्तिभूमिभरीहै ३२९ ॥

आवै कभूप्रेम ॥ पद ॥ रासमंडल वने नृत्यनीकीवनी । गौर गोविंदके नयन अरविंदसों छुटत आनंद मकरंद चहुंदिशिघनी ॥ तालवस मृदु चरण धरत धरणी हुलसि विलस हस्तक भेदचलन लोयनअनी । पुलकाआयांद घन कंपभरि थरहरनि परसव प्रस्वेद सुरभेदभारी वनी ॥ अहितासित आरकत धरत जड़ना जघहिं वहिठाढ़े रहत गहत वानक फनी । निपट अवसन्न जव तवहिं क्षिति धुकिपरत अंगनहिं हलत गतश्वासकी निगमनी ॥ तासमय जगतमें जीवजेतिक वसत प्रेमआनंदके होतसवरेधनी । चक्रृतसव पारषद शब्द मुखमें मिलत लगी टकटकी यह सुखमनोहरभनी ॥

मूल ॥ श्रीसूरकवितसुनिकौनकविजोनहिंशिरचालनकरै ॥ उक्तिचोजअनुप्रासवरनअस्थितिअतिभारी । वच

नप्रीतिनिर्वाहअर्थअद्भुततुकधारी॥प्रतिबिंबितदिव्यदृष्टि हृदैहरिलीलाभासी । जन्मकर्मगुणरूपसबैरसनापरकासी॥ बहुविमलबुद्धिगुणिऔरकीजोयहगुणश्रवणनिधरै। श्रीसूरकवितसुनिकौनकविजोनहिंशिरचालनकरै ७३ ॥

शिरचालनकरै ॥ श्लोक ॥ किंकवेस्तस्यकाव्येन किंकाण्डेन धनुष्मतः ॥ परस्यहृदयेलग्नं यन्नघूर्णयतेशिरः १ दोहा ॥ किधौं सूरको शरलग्यो किधौं सूरकी पीर ॥ किधौं सूरको पदसुन्यो यों शिर धुनत अधीर २ ॥ कवित्त ॥ जासों मनहंन तासों तन मन दीजियत जासों मनभंग तासों कछू न विशेखिये। बोलै तासों बोलि अनबोलै तासों अनबोलि प्रेमरस चाहै तासों प्रेमरस पेखिये ॥ प्रीतिरीति चाहै तासों प्रीतिरीति जानियत नातरु अनेक रूप सबही अलेखिये। नर कहा नारी कहा खूबी महाखूबी कहा आपको न चाहै ताहि आपहू न देखिये ३ कहावतऐसेत्यागीदानि। चारिपदारथ दिये सुदामा गुरुकेसुत दिये आनि॥ विभीषणेनिज लंकादीनी प्रेमप्रीति पहिंचानि। रावणके दश मस्तकछेदे दृढ़गहि शारँगपानि॥ प्रहलादकी जिन रक्षाकीनी सुरपति कियो निदानि। सूरदासपर बहुत निठुरता नैननहूँ की आनि ४ ॥ वचन प्रीति ॥ ऊधो यह निश्चय हम जानी। खोयो गयो नेह न गुनहै प्रीति कोउरी भई पुरानी ॥ यह लै अधर सुधारस सींची कियो पोष बहु लाड़ लड़ानी। बहुरो कियो खेल शिशुको गृह रचना ज्यों चलति विजानी ॥ ऐसी हितकी रीति दिखाई पन्नग कांचुरीज्यों लपटानी। फिरिहू सुरति करत नहीं ऐसे त्यागत अहँर लता कुम्हिलानी ॥ बहुरँगी जित जाति तिते सुख एक रंगी दुख देह दहानी। सूरदास पशुवनी चोरकी खायो चाहैं दाना पानी ५ ॥

मूल ॥ व्रजवधूरीतिकलियुगविषेपरमानंदभयोप्रेम केत ॥ पौगंडबालकिशोरगोपलीलासबगाई। अचरज

इइहिबातहुतौयहतौजुसखाई ॥ नयननिनीरप्रवाहरहत रोमांचरैनिदिन। गदगदगिराउदारश्यामशोभाभीजेउतन ॥ शारंगछापताकीभईश्रवणसुनतआवेसदेत । ब्रजवधूरीति कलियुगबिषेपरमानँदभयोप्रेमकेत ७४ श्रीकेशभटनरमुकुटमणिजिनकीप्रभुताबिस्तरी ॥ काशमीरकीछापपापतापनजगमंडन। दृढ़हरिभक्तिकुठारधर्मपरबिटपबिहंडन ॥ मथुरामध्यमलेच्छवादकरिबरवटजीते। काजीअजितअनेकदेखिपरचेभयभीते॥ हैबिदितवातसंसारमवसंतसाखिनाहिंनदुरी। श्रीकेशवभटनरमुकुटमणिजिनकीप्रभुताबिस्तरी ७५ टीकाश्रीकेशवभट्टकी॥ आपकाशमीरसुनीवसतविश्रामतीर तुरकसमूहद्वारयंत्रइकधारिये। सहजसुभायकोऊनिकसतआइताको पकरतधाइताकेसुन्नतनिहारिये॥ संगलैहजारशिष्यभरेभक्तिरंगमहारेवाहीठौरबोलेनीचपटटारिये। कोधभरि झारेआयआपैपुकारेवेतो देखिसवैहारेमारेजलवोरिडारिये ३३० ...सवदौरि जहांकाजीकीजुपौरियति कियेतिनसोईआजुकीजियेपुकारहै॥ आजुकोऊऐसोएकआयोहैजुमथुरा... संगहैंहजारशिष्यतेजकानपारहै ॥ लैकैझरकारेघर... मतिभांतिकह्यो क्योंरेअधरमीहिंदूधर्मकियोख्वारहै। ...तुमरांड़कियो पुरुषार्थभांड़जोई हरिसोंबिमुखताको...ारावारहै ३३१ काजीअतिडस्योहियेपस्योखरभस्यो...मआईअस्यो अवकरौकाउपायमैं। रचेभूतत्रयताल...ठिमायाजाल सुदर्शनकियेख्याल सहजसुभाइमैं॥ ...तनसेंसोअगिनिलगाइदई दईकहोदईकहा कहा

कियोहाइमैं। येतौहैंवड़ेप्रतापी मैंतौरहौंमहापापी अहो मतिथापीआवैंपरोभेदपाइमैं ३३२ आयपाइँपरथोनीर नैननितेढरयोवैन कहैसरयोंमरयोंप्रभु मेरीरक्षाकीजिये। तवस्वामीकह्योतोहिलेहौंमैंवचायपुनि एकहैउपायसीख सुनिमेरीलीजिये॥ फेरिजोअधर्मऐसोकरोगे नकर्मआव मेटौसवगर्भसदाशीतलह्वैजीजिये। औरजितेवादीहरि विमुखप्रसादीतिन्हैं लीयेसतमारगमें नौधारसपीजिये ३३३ जितेहिंदूतुरुकनिसैकरानि मारिहारेभरेदुखभारे वेतोस्वामीजूपैआयेहैं। प्रभुकह्योआवोअवदुखजनिपावो कैसोराइगुणगावो जलयमुनाकेन्हाये हैं॥ महीनएकव लटाये तिनकोलेपहराये हिंदूकेरचिह्नपायेजगयशगाये हैं। तुर्कतियाकान्हधरीआइसवपाइँपरी करीप्रभुदया नरनारीदरशाये हैं ३३४॥

पौंगडवालकिशोर ॥ रत्नाकूने ॥ कौमारंपञ्चमादान्तं पौगण्डं दशमावधि ॥ आपोडशंचकैशोरं यौवनंस्यात्ततःपरम १ ॥ हरि कुठार ॥ दोहा ॥ व्यासविषय जल वटिरह्यो नीचसंग जलधार॥ हरिकुठारसों प्रीतिकरि कटत न लागेवार २ ॥ वाराहे ॥ अहो मधुपुरीधन्यावैकुण्ठाच्चगरीयसी॥ विनाकृष्णप्रसादेन क्षणमेकंन तिष्ठति २ जाके सुनत निहारिये ॥ श्लोक मणिमंत्रमहौषधी नामचिंत्यशक्तिः ४ ॥

मूल ॥ श्रीभट्टसुभटप्रकट्योअघटरसरसिकनमनमो दघन ॥ मधुरभावसंमिलितललितलीलासुवलितछवि। निरषतहरषतहृदैप्रेमवरषतसुकलितकवि ॥ भवनिस्ता रनहेतदेत दृढभक्तिसवननित। जासुसुयशशशिउदैहर तअतितमभ्रमश्रमचित ॥ आनंदकंदश्रीनंदसुतश्रीवृष

सानुकूलताभजन। श्रीभट्टसुभटप्रकट्योअघटरससरसिकन मनमोदघन ७६ हरिव्यासतेजहरिभजनबलदेवीकोदी क्षादई॥ खेचरनरकीशिष्यनिपटअचरजयहआवै। विदितबातसंसार संतमुखकीरतिगावै॥ वैरागिनिकेवृन्द रहतसँगश्यामसनेही। ज्योंयोगेश्वरमध्यमनोशोभितवै देही॥ श्रीभट्टचरणरजपरसिकै सकलसृष्टिजाकीनई। ह रिव्यासतेजहरिभजनबलदेवीकोदीक्षादई ७७॥

माधुर कहिये माधुर्य शृंगाररस॥ पद॥ राधिका आजु आनन्द में डोलैं। सांवरे चन्दगोविन्द के रस भरी दूसरी कोकिला मधुर सुर बोलैं॥ पहर पट नील तन कनक हारावली हाथले आरसी रूप को तोलैं। जै श्री भट्ट आजु नागरि नीकी बनी कृष्णके शील की ग्रंथ खोलैं २ सन्तो सेव्य हमारे श्रीप्रियप्यारे वृन्दाविपिन विलासी। नंद नँदन वृषभान नंदनी चरण अनन्य उपासी॥ मत्तप्रणय बस सदा एक रस विविध निकुंज निवासी। जै श्री भट्ट युगल वंशीवट सेवत मूरति सब सुखरासी २ तो नंद वृष- भान कहैं इनके उपासिक श्रीराधाकृष्ण के संतहैं ३ ॥ दोहा॥ साधु सराहैं सो सती यती योषिता जानि। रजबतांचे शूरको बैरीकरै बखान॥

टीकाश्रीहरिव्यासदेवकी ॥ चटथावरगाँवबागदेखि अनुरागभयो जयोनितनेमकरिचाहैपाककीजिये। देवी कोअथानकाहूबकरालैमारोआनि देखतगिलानिइहांपा नीनहींपीजिये॥ भूखेनिशिभईभक्तितेजसिद्धिगईनई देह धरिलईआइलखिमतिभीजिये। करौंजरसोईकौनकरैक हूऔरभाई सोईमोकोदीजैदानशिष्यकरिलीजिये ३३० करीदेवीशिष्यसुनिनगरकोसटकीगो पटकौलैखाटजाकी

वड़ोसरदारहै । वढ़ीसुखबोलैंहौंतौभईहरिदासदासीजो नदासहोहुतौपैअभीडारैंमारहै॥ आयेसबभृत्यभयेमानों तननयेलयेगयेदुखपायतापकियेभयपारहै। कोऊदिनरहे नानाभोगसुखलहेएक भक्तकैश्वपत्रआयोपायोभक्ति लारहै ३३६ ॥

पायो भक्तिलार है ॥ श्लोक ॥ अश्वत्थःकाकविष्टायांसञ्जातो प्युच्यतेबुधैः ॥ देवानामपितृणांचैपूज्यएवनसंशयः २ ॥ पद जाति भेद जो करै भक्त सो तौ बड़ो अतिपापी। ताते भलो वधिक पर निंदक गुरुद्रोहप मदपापी ॥ वायसकी विष्ठासों उपजे पीपर नाम कहावै। परिकर्मा दंडवत करै द्विज सब जग पूजन आवै ॥ तुलसी जे घूरपै उपजे दोष न कोई धरई। तातुलसी के पातफूल दल हरि पूजन को रहई॥ कूकरमरे गोमती संगम अश्व चक्र है रहही। तिन चक्रनको सब जग वन्दै दोष न कोऊ कहही॥ ज्यों जल वरषे पुरवीथिन में गंगामें वहिआवै। सो तिहि परसिमहा अपराधी कलमष सबै नशावै॥ सेन धना रैदास कबीरा और कितै परवाना। इनको दरशन दीनोहै हरि प्रकट सबैजगजाना॥ योग यज्ञ जप तप व्रत संयम इनमें तौ हरिनाहीं। गंगाराम हित नवल युगुलवर वसत भक्त उरमाहीं २ ॥

मूल ॥ अज्ञानध्वांतअंतःकरनद्वितियदिवाकरअव तस्यो॥उपदेशेनृपसिंहरहतानितआज्ञाकारी। पक्ववृक्षज्यों नायसंतपोषकउपकारी ॥ वानीभोलारामसुहृदसबहिनप रछाया। भक्तचरणरजयाचिविशदराघवगुणगाया ॥ कलिकरमचंदकश्यपसदनबहुरिआइमनोंवपुधस्यो। अज्ञानध्वांत अंतःकरनद्वितियदिवाकरअवतस्यो ७८ श्रीविठलनाथव्रजराजज्योंलालड़ाइकेसुखलियो ॥ रागभोग

नितविविधरहतपरिचर्य्यातत्पर । शय्याभूषणवसनरुचिररचनाअपनेकर ॥ वहगोकुलवहनंदसदनदीखतक्षैसोहै। प्रकटविभवजहँघोषदेखिसुरपतिमनमोहै ॥ श्रीवल्लभसुतवलभजनकेकलियुगमेंद्वापरकियो । श्रीविठलनाथव्रजराजज्यों लाललड़ाइकेसुखलियो ७९ ॥ टीका ॥ कायथत्रिपुरदासभक्तिसुखरासभयो कह्योऐसेपनशीतदगलापठाइये। निपटअमोलपटहियेहितजटिआवैतातेअतिभावैनाथअंगपहिराइये ॥ आयोकोऊकालनरपतितेविहालकियोभयोईशव्यालनेकुघरमेंनखाइये। वहीऋतुआईसुधिआईआंखिपानीभरिआईएकखातिदीठिआईवेलिलाइये ३३७ ॥

चरणरज यांचि देव प्रसन्न कियो घरमांगो वह चतुर अधवंश धन नहीं पुत्रको सोनाके कटोरा में दूधप्यावते देखो ऐसे आत्म हरि ज्ञान १ ब्रजराजज्यों ॥ पद ॥ जे वसुदेव किये पूरण तप तेइ फल फलत श्री वल्लभ देह। जे गोपाल हुते गोकुल में तेइ अब आनि बसे करि गेह॥ जे वे गोपवधू हुती ब्रजमें अबतेइ वेद ऋचाभइ येह। छीतस्वामी गिरिधरन श्री विट्ठल वेईचेपपेई कछु न सँदेह २ भेदियाकी प्रेरणा दई आये इनवे ३ ॥

वेंचिकेवजारयोंरुपैयाएकपायो ताकोलायोमोटोथानमात्ररँगलालगाइये । भीज्योअनुरागपुनिनैनजलधारभीज्यो भीज्योदीनताईधरिराखो औरैआइये॥ कोऊप्रभुजनआइसहजदिखाईदई भईमनादियोलैभँडारीपकराइये। काहूदासदासीकेनकामकोपैजाउलैकै विनतीहमारीजूगुसाईंनसुनाइये ३३८ दियोलेभंडारीकरराखेधरिपटवायेनिपटसनेहीमाथवोलेअकुलाइके । भयेहेजड़ायेको

ऊवेगिहीउपायकरै विविधउठायेअंगवसनसुहाइके ॥ आज्ञापुनिदईयोंअँगीठीबारिदईफेरि वहीभईसुनिरहेअ तिहीलजाइके। सेवकबुलाइकहीकौनकीकबाइआई सवै सोसुनाईएकवहलीवचाइके ३३९ सुनीनत्रिपुरदासवो ल्योधननाशभयो मोटौएकथानआयोराख्योहैविछाइ के। लावोवेगियाहीछणमनकीप्रवीनजानि लायोदुखमा निख्योंतिलईसोसिमाइके ॥ अंगपहराईसुखदाई कापैगा ईजात कहीजववातजाड़ोगयोभरिभाइके । नेहसर साईलैदिखाईउरआईसवै ऐसीरसिकाईहदैराखीहैवसा इके ३४० ॥

नेहसरसाई ॥ दोहा ॥ हरिरहीम ऐसी करी ज्यों कमान शर पूर ॥ खैंचि आपनी ओरको डारि दियो अति दूर १ यह कहिके मन्दिर के द्वारपै गोविन्दकुण्डकी छत्री पै जाय वैठे गुसाईं के टह- लुवा प्रसाद लाये सो न लियो तब नाथजी आपही लाये ॥ दोहा ॥ खैंचि चढ़नि टीली ढरनि कहो कौन यह प्रीति। आज कालिह मोहन गही वंश दियाकी रीति ॥ कवित्त ॥ जवलौं न कोऊ पीर लागतिहै आप उर तवलौं पराई पीर कैसे पहिंचानिहौं। आजुलौं न जानतहौं लग्योनेह काहूसों है जवनेह लागिहै तौ हित उनमानिहौं ॥ कहत चतुरकवि मेरे कहिवे की तौ एकौ न रहेगी तव समझि जी आनिहौं। जैसे नीके मोहिं तुम लागतहो प्यारे लाल तैसो नीको तुम्हें कोऊ लागिहै तौ जानिहौं १ तव रहीम पीठि फेरिलई नाथजी थार धरिके अंतरधान होतभये तव यह पद गायो ॥ पद ॥ छवि आवन मोहनलालकी। लाल काछनी काछे कर मुरली पीत पिछौरी सालकी ॥ वंक तिलक केसरिको किये द्युति मानों विधुवालकी। विसरत नाहिं सखी मोमनते चितवनि नयन विशालकी ॥ नीकी हँसनि अधरसधरनिकी छवि

छीनी सुमन गुलालकी। जलसों डारि दियो पुर इनपर डोल-नि मुक्तामालकी॥ आपमोलबिन मोलनि डोलनि बोलनि मदन गोपालकी। यह स्वरूप निरखे सोइजाने इस रहीमके हालकी२ कमलदल नैननिकी उनमानि। बिसरत नाहिं सखी मोमन ते मन्द मन्द मुसकानि॥ यह दशननि द्युति चपलाहू ते महा चपल चमकानि। वसुधाकी वशकरी मधुरता सुधापगी बतरानि॥ चढ़ी रहे चितउर विशालकी मुक्तमाल थहरानि। नृत्य समय पीताम्बरहूकी फहर फहर फहरानि॥ अनुदिन श्रीवृंदावन ब्रज ते आवन आवन जानि। छविरहीम चितत न टरतिहै सकल श्याम की बानि ३॥ दोहा॥ मोहन छवि नैननिवसी परछवि दृगनि सुहाइ॥ भरी सराइ रहीम ज्यों पथिकआइ फिरिजाइ ४ अन्तर दाव लगीरहै धुवां न प्रकटै सोइ॥ कै जियजानै आपनो कै जा शिर बीती होय ५ तिहि रहीम तनमन दियो कियोहिये में भौन॥ तासों दुख सुख कहन की बात रही अब कौन ६ स्त्री की चूरी को दृष्टान्त ७

मूल॥ श्रीविट्ठलेशसुतसुहृदश्रीगोवर्द्धनधरध्याइये॥ श्रीगिरिधरजूसरसशीलगोविन्दजुसाथहि। बालकृष्ण यशवीरधीरश्रीगोकुलनाथहि॥ श्रीरघुनाथजुमहाराज श्रीयदुनाथहिभजि। श्रीघनश्यामजुपगेप्रभूअनुरागी सुधिसजि॥ ऐसातप्रकटविभुभजनजगतारततसयशगा इये। श्रीविट्ठलेशसुतसुहृदश्रीगोवर्द्धनधरध्याइये ८०

गिरिधरनरीझिकृष्णदासकोनाममांझसाझोदियो॥श्रीव ल्लभगुरुदत्तभजनसागरगुणआगर। कवितनोपनिर्दोष नाथसेवामेंनागर॥ वाणीवन्दितविदुपसुयशगोपालअलं

१ कृष्णदास इस पदमें, ष्ण. के पूर्व ऋकार, को शुद्ध उच्चारण न करनेसे मात्रायें अधिक न होंगी पन्द्रह मात्रा का पद पूर्ण है॥

कृत। ब्रजरजअतिआराध्यवहैधारीसर्वसुचित॥ साखि ध्यसदाहरिदासवरगौरश्यामदृढ़व्रतलियो। गिरिधरनरी झिकृष्णदासकोनाममांझसाझोदियो ८१॥

यदुनाथ॥ सवैया॥ शीश दिनेश तपै जिहि बार सुबारहि बार बिहारीको ऐबो। वास में वैरिनि आरज लाज सुएकहुवार बनै न चितैबो॥ शोच यहै सजनी रजनी दिन कौनसे ओसर ओसर पैबो। जानतहौं यदुनाथ यहै कबहूं कमहौलनिही मरि जैबो २॥ पद॥ बातनहीं हो पतितपावन। मोते काम परे जानोगे बिन रणशूर कहावन॥ सतयुग त्रेता द्वापरहूके पतितन की गति आपी। हमें उन्हें बहुतै अंतरहै हम कलियुगके पापी॥ कोऊ टांकदै टांक पंसेरा बड़ी बड़ाई सेर। हौं पूरन पतिताई ऐसो त्यों आननि में मेर॥ हौं दिनमणि खद्योत आनखल अ-विद्याको जु उजागर। गोपद पावनके न सरबरें हौं दुर्मति जल सागर॥ पतितपावनहै विरद तिहारो सोइ करो परवान। पाहन नाव पार करो नाभाको केहर पकरो कान २॥

टीका॥ प्रेमरसरासिकृष्णदासजूप्रकाशकियो लियो नाथमानिसोप्रमाणजगगाइये। दिल्लीकेबजारमेंजलेबी सोनिहारिनैन भोगलैलगाईलगीविद्यमानखाइये॥ राम सुनिभक्तनकोभयोअनुरागबसि शशिमुखलालजूकोजा हूकैसुनाइये। देखिरिझवारीझिनिकटबुलाइलये लई संगचलेजगलाजकोवहाइये ३४१ नीकेअन्हवाइपटआ भरणपहिराइ सुगन्धहूलगाइहरिमन्दिरमेंलायेहैं। देखि भईमतवारीकीनीलैअलापचारी कह्योलालदेखिवोलीदे खेमोहभायेहैं॥ नृत्यगानतानभावमुरिमुसुकानिदृग रूप लपटानीनाथनिपटरिझायेहैं। ह्वैकैतदाकारतनछूट्योअं

गीकारकरी धरीउरप्रीतिमनसबकेभिजायेहैं ३४२ आये सूरसागरसोकहीबड़ेनागरहौ कोऊपदगावोमेरीछायान मिलाइये। गायेपांचसातसुनिजातमुसुकातकही भलेजू प्रभातआनिकरिकैसुनाइये ॥ परेशोचभारीगिरिधारीउ रधारीबात सुन्दरबनाइसेजधरेयोंलखाइये। आइकेसुना योसुखपायोपक्षपातलें बतायोहूमनायोरंगछायोअभूगा इये ३४३ ॥

दिल्ली के सेवकनको प्रसाद दियो काहूने तो लियो कही अधिकारी भ्रष्टभयो है काहू लयो पै पायो नहीं विचारयो बड़ेन की क्रियासैं मन दीजै कौन भावसों भोग लगाइये तापै दृष्टांत नारद जी को नृत्यगान ॥ पद ॥ मोमन गिरिधर छविपर अटक्यो। ललित त्रिभंगी अंगनपर चलिगयो तहांहीं ठटक्यो॥सजलश्याम घन वरण नीलहै फिरि चित अंत न भटक्यो। कृष्णदासकी प्राण निछावरि यह तन जग शिर पटक्यो॥ २ ॥ दोहा ॥ सखिया कखिया हाथदे तन राख्यो ठहराइ॥ मनहरि मदिरा छविछक्यो दईनारि लटकाइ २ अभूंलगि गाइये ॥ पद ॥ आवत वनकान्ह गोप बालक संग नेचुकी खुररेणु छुरित अलकावली। भौंह मन्मथ चाप वक्र लोचन वाण शीश शोभित मत्तमोर चन्द्रावली॥ उदित उडुराज सुंदर शिरोमणि वदन निरखि फूली नवल युवति कुमुदावली। अरुण सकुचत अधर विंबफल उपहसत कछुक प्रकटे होत कुमुद दशनावली॥ श्रवण कुण्डल तिलक भाल बेसरि नाक कंठ कौस्तुभमणि सुभग त्रिवलीवली। रत्न हाटक खचित उरसि पद कनक पांति बीच राजत शुभ झलक मुक्तावली॥ वलय कंकण बाजुबंद आजानुभुज मुद्रिका करतल विराजत नखावली। कुणित वर मुरलिका अखिल मोहित विश्व गोपिका जन मन अन्थित प्रेमावली ॥ कटि क्षुद्रघंटिका कनक

हीरामई नाम अंबुज वलित शृंगार रोमावली। धाइ कबहुंक चलत भक्त हित जानि पिय गंड मंडल रचित श्रम जल कणा-वली॥ पीतकौशेय प्रधान सुंदर अंग बजत नूपुर गीत भरत सदा-वली। हृदय कृष्णदास वलि गिरिधरनलालकी चरणनख चंद्रि-का हरत तिमिरावली २॥ यहपद गावत सुनतप्रभु हर्षित हियसुख पाइ। छवि निरखत हरि आपनी मनहीं मन मुसक्याइ॥

कूँवामैंखिसिलदेहछुटिगईनईभई भयोईअशंकाकछू औरैउरआइये। रसिकनिमणिदुखजानिसोसुजाननाथ दियोदरशाइतनग्वालसुखदाइये॥ गोवर्द्धनतीरकहीआ गेवलवीरगये श्रीगुसाईंधीरसोंप्रमाणयोंजनाइये। घन हुवतायेखोदिपायोविशवासआयो हियेसुखछायोशंकाए कलैवहाइये ३४४ मूल॥ श्रीवर्द्धमानगंगलगँभीरउभै थंभहरिभगतिके॥ श्रीभागवतबखानिअमृतमयनदीव हाई। अमलकरीसबअवनितापहारकसुखदाई॥ भक्त नसोंअनुरागदीनसोंपरमदयाकर। भजनयशोदानन्दसं तसंघटकेआकर॥ भीषमभट्टअंगजउदारकलियुगदाता सुगतिके। श्रीवर्द्धमानगंगलगँभीरउभैथंभहरिभगति के ८२ श्रीरामनामपरतापतेखेमगुसाईंखेमकर॥ रघुन न्दनकोदासप्रकटभूमंडलजान्यो। सर्वसुसीताराम्औरकु छुउरनहिंआन्यो॥ धनुपवाणसोंप्रीतिस्वामिकेआयुध प्यारे। निकटनिरंतरहतहोतकबहूंनहिंन्यारे॥ सुरसूर वीरहनुमंतसदृशपरमउपासकप्रेमभर। श्रीरामनामपर तापतेखेमगुसाईंखेमकर ८३॥

माथुर वाराहपुराण में लिख्यो है सब ब्राह्मणन के मुकुट

माथुर सो मथुरियनि के मुकुटमणि विट्ठलदास ॥ श्लोक ॥ ब्राह्मणःक्षत्रियोवैश्यः शूद्रोवायदिचेतरः ॥ विष्णुभक्तिसमायुक्तोयः ससर्वोत्तमोत्तमः २ मानदद ॥ तृणादपिसुनीचेन तरोरिवसहिष्णुना ॥ अमानिनांमानदेन कीर्त्तनीयःसदाहरिः २ गुनहिगुनअंतरधारयो संतनिको स्वभाव सूपकोसों है सारही लेहिं असार फटकि डारें असंतको स्वभाव चालिनी कोसों ३ । ४ । ५ । ६॥

भयेविठलदासमाथुरमुकुटमणिसेअमानीमानप्रद ॥ तिलकदाससोंप्रीतिगुणहिगुणअंतरधारेउ । भक्तनकोउत्कर्षजन्मभरिरसनउचारेउ ॥ सरलहृदैसंतोषजहातहँपरउपकारी । उत्सवमेंसुतदानकर्मकियोदुष्कृतभारी ॥ हरिगोविंदजयजयगोविंदगिरासुहृदआनंदद। विठ्ठलोदासमाथुरमुकुटमणिसेअमानीमानप्रद ८४ टीका ॥ भाईउभैमाथुरसोरानाकेपुरोहितहैंलरिमरे आपसमेंजिन्होएकजामेंहै । ताकोसुतविट्ठलसुदासउखराशिहियेलियेदेसधोरीभयोवड़ोसेवैश्यामेहै॥ बोल्योनृपसभामध्यआवतनविप्रसुतक्षिप्रलैकेआवोकहीकहोपूजेकामेहै । फिरिकैदुलायोकरीजायरणयाहीठौर काहूसमझायोगावैनाचैप्रेमधामेहै ३४५ गयेसंगसाधुनलैविनेरंगरँगेसवरानाउठिआदरदेनीकेपधरायेहैं । कियेजाविछौनातीनिछातिनके ऊपरलेनाविगाईआयेप्रेमगिरेनीचेआयेहैं ॥ राजामुखभयोइवेलदुष्टनकोगारीदेत संतभरिअंकलेतघरमधिलायेहैं । भपवहूभेंटकरीदेहवाहीभांतिपरी पाछेसुधिभईदिनातीसरेजगायेहैं ३४६ उठेजवमायनेजनायसबवातकही सहीनहींजातिनिशिनिकसेविचारिकै । आयेयोंछटीकरासें गरुड़गोविंदसेवाकरतमगनहियेरहतनिहारिकै ॥ राजाके

जोलोगसुतौढूंढ़िकररहेवैठि तियामातुआइकरैंरुदनपुकारिकै । कियेलैउपाइरहीकितौहाहाखाइयेतौ रहेमड़रायतनवसीमनहारिकै ३४७ ॥

विनय रंगरंगे ॥ कवित्त ॥ कविता रसिकतादि गुन सब उगषसे नम्रता सुजनता न रीझि आप पास में । बातें गढ़ि छोलि कहैं पोलिको न पारावार रीझे नचि चारु वनवासी के विलासमें ॥ इनके जे गुण तिन्हें उपमा न पाई कहूं चहूं दिशि हेरि हेरि ल्यियों लै प्रकाशमें । काहू न सुहाय तजिजाय सो भवन बैठे जैसे चांदनी सरस आ२ पूस मास में २ छाये कहू ॥ श्लोक॥ रण्डेमन्यस्त्वमन्यस्व दुर्भगेदुःखकारिणि ॥ परान्नंदुर्लभंलोके देहोयंचपुनः पुनः १ ॥ दोहा ॥ तुरसी कुरसी सों कलों चढ़ई हरि के अंग ॥ पीवतही वैकुण्ठ को लियो जातिहै भंग २ ॥

देख्योजबकष्टतनप्रभुजीस्वपनदियो जावोमधुपुरीऐसेतीनवारभाखिये । आयेजहांजातिपांतिआयेकछूऔरैरंगदेख्योएकखातीसाधुसंगअभिलाखिये ॥ तियारहेगर्ववतीसनीमतिशोचरती खोदेभूमिपाई प्रतिमासोधनराखिये । खातीकोवुलाइकही लहीयहलेहुतुम उनपांइपरिकह्योरूपसुखचाखिये ३४८ करेसेवापूजाअरुकामनहींदूजाजगजागिगई भक्तिभयेशिष्यबहुभाइकै।वड़ोईसमाजहोतनानासिंधसोतआये विविधवधायेगुणीजनउठेगाइकै ॥ वर्षैआईएकनटीरूपगुणधनजटीवहगावै तानकटीचटपटीसीलगाइकै । दियेपटभूषणलैभूषणमिटतिकहुंचहूंदिशिहेरिपुत्रदियोअकुलाइकै ३४९ रंगीराइनामताकीशिष्यएकरानासुता भयोदुखभारीनेकुजलहूनपीजिये । कहिकैपठाईवासोंचाहोसोईलीजै धनमेरोप्रभुरूप

मेरेनैननकोदीजिये ॥ द्रव्यतौनचाहौरीझिचाहौ तनमन दियोफेरिकैसमाजकियोविनतीकोकीजिये । जितेगुणीज नतिन्हैंदियेअनगनदान पाछेनृतकस्योआपदेतसोनली जिये ३५०

भूषण मिटत ॥ कवित्त ॥ हाथिनको अंकुश वनाये पुनि घोरन को लाहेकी लगाम मुख दशन चवातकी । योगिनको पुरी राज्य रोगिनको पथपुरी जाते ज्वर जात है विषम उर पातकी ॥ सांपनको मन्त्र भूत प्रेतनको यन्त्र रचि पानी पढ़ि दिये ते न व्यथा रहै गातकी । अवनी में आय विधि रचे हैं उपाय ऐपै तासों न वसाय जे पचावैं रीझ वातकी ॥ दोहा ॥ रूप चोचकी वान पुनि और कटीली तान ॥ रसिक प्रवीणन के हिये छेदनको ये वान २ ॥

ल्याईएकडोलामेंवैठारिरँगीराइजूको सुंदरशृंगारक हीवारतेरीआइये । कियोनृत्यभारीजोविभूतिसोतोवारी लियेभरीअंकवारीभेटकियेद्वारगाइये ॥ मोहननिछावरि ऐंभयोमोहिंलेहुमतिलियोउन शिष्यतनतज्योकहांपाइ ये । कह्योजूचरित्रवडेरसिकविचित्रनिको जोपैलालमित्र कियोचाहौहियेलाइये ३५१ ॥ मूल ॥ हरिरामहठीलेभज नवलरानाकोउत्तरदियो ॥ उग्रतेजउदारसुघरसुथराईसी वा । प्रेमपुंजरसराशिसदागद्गदसुरग्रीवा ॥ भक्तनको अपराधकरैताकोफलगायो ।हिरण्यकशिपप्रहलादप्रकट दृष्टांतदिखायो ॥सतिसंस्फुटवक्ताजगतमेंराजसभानिधर कहियो । हरिरामहठीलेभजनवलरानाकोउत्तरदियो ८५ टीका ॥ रानासोंसनेहसदाचौपरिकोखेलोकरैं ऐसोसोसं न्यासीभूमिसंतकीछिनाईहै । जाइकेपुकास्योसाधुभिरकि विडास्योपस्योविमुखकेवशवातसांचीलैभुठाईहै ॥ आये

हरिरासजूपैसवहीजनाईरीति प्रीतिकरिबोलेचलौआगे आवोभाईहै। गयेबैठेआयोजनमनमेंनलायोतव नृपस मझायोभाख्योफेरिभूदिवाईहै ३५२॥

राना सों सनेह॥ दोहा॥ विषय विषम जे भरि रहे राजा मद रँग भोइ॥ तिनके द्वारे रहत जे विषयी जानो सोइ २ भाई हैं हमारो दिनिपाल कहिके नातेमाने हमारो तो नातो कंठी कोहै॥ अस्माकंवदरीचक्रंयुस्माकंवदरीतरुः ६ अथवा भाई हैं साधुनकी सेवा जहां निमित्त रजोगुण नृपतिके रहे हैं नहीं तो महाअपराध लगैहे तो तिहारो काम न होइ तो काहेको रहेंगे॥ दोहा॥ धनुष वाण धारेरहैं अग्रदासके काज॥ भीरपरें हरि भक्त पै सावधान तव राज ३॥।

मूल॥ श्रीकमलाकरभटजगतमेंतत्त्ववादरोपीधुजा॥ पंडितकलाप्रवीणअधिक आदरदेआरज। संप्रदायशिर छत्रद्वितियमनोंमध्वाचारज॥ जेतिकहरिअवतारसवैपूर णकरिजाने। परिपाटीध्वजविजै सदृशभागवतवखाने॥ श्रुतिस्मृतिसम्मतपुराणमततप्तमुद्राधारीभुजा॥श्रीकमला करभटजगतमेंतत्त्ववादरोपीधुजा ८६ ब्रजभूमिउपासक भट्टसोरचिपचिहरिएकैकियो॥ गुपथलमथुरामंडलजिते वाराहवखाने। कियेनारायणप्रकटप्रसिधपृथ्वीमेंजाने॥ भक्तिसुधाकोसिंधुसदासतसंगसमाजन। परमरसज्ञअ नन्यकृष्णलीलाकोभाजन॥ गहिज्ञानस्मार्तकपक्षकोना हिंनकोउखंडनवियो। ब्रजभूमिउपासकभट्टसो रचिपचि हरिएकैकियो ८७ टीका॥ भट्ट श्रीनारायणजूभयेब्रजपरा यणजायताईग्रामतहां ब्रतकरिध्याये हैं। वोलिकैसुनाये

१ मुद्रापद्में मुकारको गुरूच्चारण न करना॥

इहांअमुकोसरूपहैजू लीलाकुंडधामश्याम प्रकटदिखाये हैं ॥ ठौरठौररासकेविलासलै प्रकाशकिये जियेयांरसिक जनकोटिसुखपायेहैं । मथुरातेकहीचलौवैनीपूछेवैनीकि होऊंचेगावआइखोदसोतलैदिखाये हैं ३५३ ॥

व्रजभूमि ॥ कवित्त ॥ व्रजनाम व्यापक अखंड प्रेम ब्रह्म जैसे सच्चित अनंद माया त्रिगुणते न्यारो है । जाके वन उपवन ग्राम नदी परवत हरिरूप रच हरि खेलेखिलख्यारो है ॥ रत्नमय भूमि अरु अमृतमै जल ताको मारुत सुगंधनि सों भर्यो हरियारो है । ब्रह्मा शिव नारद मुनींद्रकहैं वेद चारो खेद मिटिजाइ जाके सुमिरो उचारो है २ ॥ दोहा ॥ व्रजवृन्दावन अवटंस राधा कृष्णस्वरूप ॥ नामलेत पातक कटैं ज्यों हरिनाम अनूप २ ज्ञान कृष्णारत सो ज्ञान अद्वैत वेदांत सों सुखी रहत है ३ ॥

मूल ॥ श्रीमद्व्रजवल्लभवल्लभ सुदुर्लभसुखनयनन दिये ॥ नृत्यगानगुनिनिपुणरासमें रसवरपावत । अव लीलाललितादिवलितिदंपतिहिरिझावत ॥ अतिउदार निस्तारसुयशव्रजमण्डलराजत । महामहोत्सवकरतव हुतसवहीसुखसाजत ॥ श्रीनारायणभटभक्तप्रभु परम प्रीतिरसवशकिये । श्रीमद्व्रजवल्लभवल्लभसुदुर्लभ सुखनयननदिये ८८ संसारस्वादसुखवातज्यों दुहु श्रीरूपसनातनत्यागदिय ॥ गौड़देशवंगालहुतेसवहीं अधिकारी । हयगयभवनभँडारविभवभूभुजअनुहारी ॥ यहसुखअनित्यविचारवासवृन्दावनकीनो । यथालाभ संतोषकुंजकरवामनदीनो ॥ व्रजभूमिरहसिराधाकृसन भक्ततोषउद्धारकिय।संसारस्वादसुखवातज्यों दुहुश्रीरूप सनातनत्यागदिय ८९ ॥

संसारस्वाद ॥ भागवते ॥ जहौगुवेवमलवद्दुत्तमश्लोकलाल
सः॥ भर्तृहरिशतके ॥ यांचिन्तयामिसततंमयिसाविरक्तासाप्यन्य
मिच्छतिजनंसजनोन्यसक्तः॥अस्मत्कृतेचपरितुष्यतिकाचिदन्या
धिकृतांचतंचमदनंचइमांचमांच २ ॥ कवित्त ॥ जितेमणिमाणि-
कहैं जोरे मणिमाणिकहैं धरामेंहैधरा धन धूरही मिलाइवी।देह
देह देहफेर पाइहै न ऐसी देह कौन जानै कौन देह कौन योनि
जाइवी ॥ भूखएक राखै मतिराखै भूख भूषणकी भूषणकी भूषण
ते भूषण न पाइवी । नगनके जगमग गनन न देइघातै नगन च-
लैंगेसाथ नगन चलाइवी ॥ भुवन अनुहारि बादशाही की उन-
हारि तापै दृष्टांत गुलामको अनित्य विचार ॥ श्लोक ॥ धनंहिपु
रुषोलोके पुरुषोधनमेवच॥अवश्यमेवंत्यजतितस्मात्किंधनतस्त्व
या ४ ॥ विना परमेश्वर निर्वाह काहूको नहीं ५ ॥

टीका ॥ कहतवैरागगयेपागिनाभास्वामीजूके गईयों
निवरतुकपांचलागीआंचहै । रहीएकमांझधरयो कोटिक
कवित्तअर्थ याहीठौरलैदिखायोकविताकोसांचहै ॥ राधा
कृष्णरसकी आचारजताकहीयामें सोईजीवनाथभटकपै
वालीनाचहै । बड़ेअनुरागीयेतोकहिनोवड़ाई कहाअहो
जिनकूपाहष्टप्रेमपोथीवांचहै ३५४ वृंदावनब्रजभूमिजा
नतनकोऊप्रायदईदरशाईजैसीशुकमुखगाई है । रीतिहू
उपासनाकीभागवतअनुसार लियोरससारसोरसिकसुख
दाई है ॥ आज्ञाप्रभुपाइपुनिगोपेश्वरलगेआइ कियेग्रंथ
भाइभक्तिभांतिसवपाईहै । एकएकवातमेंसमातमनबुद्धि
जव पुलकितगातदृगझरीसी लगाईहै ३५५ रहैनंदगांव
रूपआयेश्रीसनातनजू महासुखरूपभोगखीरकी लगा
इये । नेकुमनआइसुखदा प्रियालाड़िलीतू मानोंकोऊ
बालकीसुसौंजसबलाइये ॥ करिकैरसोईसोईलैप्रसादपा

शोभायो अमलसोंआयोचढ़िपूर्त्रीसोजनाइये। फेरिजिन ऐसीकरीयहीदृढ़हियेधरो ढरोनिजचाखिकहिआंखेंभरि आइये ३५६॥

सांचेहैं॥ दोहा॥ थोड़े अक्षर रससहित कहैं सुनै रससार ताहि मनोहर जानियो रसिकचतुर निरधार॥ कवित्त॥ भक्तस्वरूप राधाकृष्णरसरूप पद रचनाकेरूप दान रूपनाम भाखिये। त्यागरूप भागरूप सेवा सुखसाजरूप रूपहीकी भावना औरूप सुखचाखिये॥ कृपारूप भावरूप रसिक प्रभावरूप गावत जोरूप लखि मन अभिलाखिये। महाप्रभु कृष्ण चैतन्यजूके हृदयरूप श्रीगुसाइ रूप सदा नैनानिमें राखिये २ शुकसुखसों रज यमुना गाई रसादिक न गाये २॥

रूपगुणगानहोतकानसुनिसभासब अतिअकुलान प्राणमुरछासी आई है। बड़ेआपधीररहेठाढ़ेनशरीरसुधि बुधिमेंनआवैऐसीबातलैदिखाई है॥ श्रीगुसाईकर्णपूरीपाछेआइदेखेआछे नेकुढिगभयेश्वासलाग्योतवपाई है। मानोंआगआंचलागीऐसोतनचिह्नभयो नयोयहप्रेमरीतिकापैजातिगाई है ३५७ श्रीगोविंदचंदआइनिशिको सुपनादियो दियोकहिभेदसवजासोंपहिचानिये। रहों मैं खरिकमांझखोलैनिशिभोरसांझ सींचैदूधधारगाईजाइ देखिजानिये॥ प्रकटलैकियोरूपअतिहीअनूपछवि कवि कैसेकहैंथकिरहेलखिमानिये। कहांलौंवखानोंभरेसागर नगागरमें नागररसिकहियेनिशिदिनआनिये ३५८॥

ऐसी बात॥दोहा॥हृदय सरोवर छलछलहि दंत गयंद झकोर॥ महासमुद्रहि परे जब पावत ओर न छोर २॥ कवित्त॥ पावक प्रचंडहूके पुंजते अधिकतातो वज्रसों विचारो कहानाकी समतूल है। कोटिक कटककी मुकुटताके आगेकहा महादुख दारुण के

डरहूको मूलहै॥ जाके डरसीचहूनआवे पानलेन और सोई रैनि दिनमोही शिरहूको शूलहै।मरयोहूनजायकितो जियोहाइहाइ यह नेह किधों वैरी देवनाही मानि भूलहै २ कौने कह्यो घरिरे अवधि के करैया लागि वेरोथिनकहं ऐसो काम करियतु है। जालों भजे घूटियेन डरहू अहूटिये जू टटिये पतंगलों पुजारे भरियतुहै॥ नंद न अचम्भो और गोकुल के चंद कीरों हरिहरि हाइहाइ बरें मरियतुहै। कहांकहि कालों तोलों बावरे बिरंचि ऐसो पात्रकको नाम कहूं प्रेम धरियतुहै॥

रहैंश्रीसनातनजूनंदगांवपावनपै आवनदिवतलीनि दूधलैकेप्यारिये। लांपरोकिशोरआपपूछेंकिहिओररही कहैंघारिभाईपितारोलिहूउचारिये॥ गयेग्रामबूझिघर हरिपैनपायेकहूं चहूंदिशिहेरिहेरिनैनभरिडारिये। अब कैजोआवैफेरिजानरहिंपावैशीश लालपागभावैनिशिदिनउरधारिये २५९ कहीब्यालीरूपदेनीनिरखिस्वरूपनै न जानीश्रीसनातनजूकाव्यअनुसारिये। राधाननतीर कुमडारमाहिंमूखे हूके देवत जातरूपनिगतिमतिवारिये॥ आयेयोंअनुजपासकिरेआसदानदेंकि भयोअतिअासग हेपांवउरधारिये। चरितअपारउरभाईहितसारपगे जाने जगमाहिंमतिमनमेंउचारिये २६० ॥

श्रीशलालपाग॥ सवैया॥ बरषा उपरें ऋतु सावनकी निकस्यौ वह छैल महाछवि छोर। फूल अनार के रंग रँगी पगियाछिरकी न बनाय सँवारे॥ तादिन ते रँग और कछू हो सखी सुन श्यामा सुने झिझकारे। झुके दृग बाल लखे नवलाल सुभाल पै लाल रही पाग निहारे १॥ कबाली रुपदेश्वत सफल फनि॥कवित्त॥ पीतपटनाक तजी दीहि डारिकैने फिरि पीछेके विरहविष रोम रोम छायनो। होतो जन जैसो हाल कैसे ब्रजवासिन को ऐसो

कोक गाडरू कहांते ढूंढिलावतो ॥ ईश्वर दुहाई जोपै होतो ऐसी नागिन तो कालीको नथैया कान्ह काहेको कहावतो । नुरि मुसकानि मंत्र जानति नराधेजीतो वेनीकि डसनि ब्रजवसन न पावनो १ वेणीव्यालांगनाफणी २ ॥

मूल ॥ हरिवंशगोसाईंभजनकीरीतिसकृतकोईजानिहै ॥ राधाचरणप्रधानहृदयअतिसुदृढउपासी । कुंजकेलिदंपतीतहांकीकरतखवासी ॥ सर्वसुमहाप्रसादप्रसिधताके अधिकारी।विधिनिषेधनहिंदास अनन्यउतकटव्रतधारी ॥ श्रीव्यासस्रुवनपथअनुसरैसोईभलैपहिंचानिहै । हरिवंशगुसाईंभजनकीरीतिसुकृतकोईजानिहै ९१ ॥

हरिवंशगुसाईं ॥ पद ॥ वंदौं राधिका पदपदम । परम कोमल शुभगशीतल कृपायुत सुख कदम ॥ चरणचिंतत अमल उरसिज जगत सबही छदम । भालपर अक्षर अनयास सोहै होतपरसत रदम ॥ कृष्ण अलंकृत स्वहस्तपूजन निगम नूपुर रदम । रसिक जनजीवन समूली अग्रसर वसुसदम ॥ रीति सुकृत ॥ कवित्त ॥ जाके हितहेत धनधाम तजिदेत पुनि वनवाललेत सुनि क्लेशन करत हैं । तारीलै लगावैं देहसुधि विसरावैंतऊ उरमें न आवै तव दुखमें जरत हैं ॥ वहुत उपाय करैं मरिवेते नाहीं डरैं गिरिहूते गिरैं नदीमाहिंन परत हैं । ऐसे नंदनंदन महावर सुजाके देत ताको व्यासनंदन जू ध्यानही धरत हैं ॥ सुधानिधौ ॥ यस्याःकदापिवसनांचलखेलनोत्थधन्यातिधन्यपवनेनकृतार्थमानी ॥ योगीन्द्रदुर्गमगतिर्मधुसूदनोपि तस्यैनमोस्तुवृषभानुभुवोदिशेपि २ ब्रह्मवैवर्ते ॥ राशब्दंकुर्वते राधा प्रदत्तेभक्तिमुत्तमाम् ॥ धाशब्दंकुर्वते पश्चाद्यातिश्रवणलोभितः ३ राधाचरण प्रधान ॥ दोहा ॥ कुंवरि चरण अंकित धरणि देखत जिहिं जिहि ठौर॥ प्रियाचरण रजजानिकै लुटत रसिक शिरमौर ५ जिहिउरसर राधाकमल वसोलसो वहुभाय ॥ मोहन भौंरारैनिदिन रहै तहां सद्राय ६ ॥

चौपाई॥ जाके हियेसरहितजलनाहीं। राधापदकलतानैनमाहीं॥ चरणकमल उदै होइ न जौलों। मोहन भँवर न आवै तौलों २॥ कवित्त॥ ब्रह्ममें ढूंढ़ो पुराणनमें बहु वेदऋचापढ़िचौगुने चाइन। जान्यों नहीं कवहूं वह कैसोहै कैसे स्वरूप है कैसे सुभाइन॥ हेरत हेरत हारपरयो रसखानि बतायो न लोग लुगाइन। देखो कहां दुरयो कुंज कुटीर में बैठो पलोटत राधाके पाइन २ कहा जानों कौने बीच देखो उन प्राणप्यारी तादिनते मिलिबे के यतन करतहैं। पानी पान भोजन भुलानो भौन सोजनसनि- दक पनाइ कन धीरज धरतहैं॥ दैगई महावर तिहारे तरवानि मांझ ताके करपल्लवकी पौरे पकरतहैं। नैननसों लाइ उरलाइ कहै हाइहाइ वारबार नाइन के पाइन परत हैं ३॥ पद॥ भज मन राधिका के चरण। सुभग शीतल परम कोमल कमल केसे वरण॥ कणितनूपुर शब्द उचरत विरहसागर तरण। ललिताहि परमानँद वलिवलि श्याम जाकी शरण ४ राधेजूके चरण पलो- टत मोहन। नीलकमलके दलन लपेटे अरुण कमलदल सोहन॥ कवहुँक लैलै नयनन लावत अलिधावत ज्यों गोहन। जै श्रीभट्ट छवीली राधे होत जगेते छोहन ५॥ राधासुधानिधौ॥ योब्रह्म रुद्रशुकनारदभीष्ममुख्यैरालक्षितोनसहसापुरुषस्यतस्य॥ सद्यो वशीकरणचूर्णमनन्तशक्तिंराधिकाचरणरेणुमनुस्मरामि ६॥ आगमे॥ ब्रह्मानन्दरसादनन्तगुणतोरम्योरसोवैष्णवस्तस्मात्को टिगुणोज्ज्वलश्चमधुरः श्रीगोकुलेन्द्रोरसः॥ तञ्चानन्तचमत्कृति प्रतिमहःसद्ब्रह्मवीनांपरःश्रीराधापदपद्मसेवपरसंलव्धस्वरूतंमल७॥ दशमे॥ नेमंविरंच्योनभवो न श्रीरप्यंगसंश्रया॥ प्रसादंलेभिरे गोपी यत्तत्प्रापविमुक्तिदात् ८॥ ब्रह्माण्डे॥ शृणुगुह्यतमंतात नारायणमुखाच्छ्रुतम्॥ सर्वेश्वपूजितादेवी राधा वृन्दावनेवने २ माधुर्येमधुराराधा महत्त्वेराधिकागुरुः। सौन्दर्येसुन्दरीराधा राध्वाराध्यतेमया॥ प्रधानको अर्थ॥ कवित्त॥ भूपति के सम्पतिसों भरे हैं विविधि कोश दीनी तहां छाप कहो रंक पावै

कैसे है । विना रीझ रावरी निहारि सके राजकौन पांगुलौ सुमेरु चढ़िसकै नहीं जैसे है ॥ राजाहूकी दई एपै मिलैगी प्रधान हाथ नीतिसें प्रमाण वात कहियेजु ऐसे है । राधिकाचरण रति पावै हित कृपाही सों नाभाजी प्रधानता दिखाई यह ऐसे है ३ ॥ दृढ़ उपासी सुवानिज्यो ॥ धर्माद्यर्थचतुष्टयंविजयता किंतद्वृथावार्त्तया सैकान्तेश्वरिभक्तियोगपदवी त्वारोपितामूर्द्धनि ॥ यावृन्दावनसीम्निकाचनघनाश्चर्य्यकिशोरीमणिस्तत्कैंकर्यरसामृतादिहपरंचिन्तनमेरोचते ४ ॥ करतलवासी ॥ ताम्बूलंक्वचिदर्पयामिचरणौ संवाहयामिक्वचिन्मालाद्यैः परिमण्डयेक्वचिदहो संवीजयामिक्वचित् ॥ कर्पूरादिसुवासितंक्वचपुनः सुस्वादुरम्भोमृतं पायाम्येवगृहे कदाखलुभजे श्रीराधिकामाधवौ ५ ॥ कवित्त ॥ जहां नव नागरी रसिक नागर दोऊ प्रेमसों विवश ह्वै करत हांसी । हुलस हुलसात लपटात तन सुधिजात परस्पर वात रसके विलासी ॥ इतै अनखात उत वाना पगपरनिकी है चरणकी छवि हिये हरि प्रकासी । जहां दृगसैनकी वात समझन हेत हितभरी खरी हरिवंश दासी ६ ॥ परस्पर वात ॥ दोहा ॥ वतरस लालच लालकी मुरली लई लुकाय ॥ सौंहकरै भौंहन हँसै देनकहै नटजाइ ७ ॥ सर्वगुमहाप्रसाद ॥ सवैया ॥ काहूलियो जप काहूलियो तप काहू महाव्रत साधि कियो है । काहू लियो गुण काहू लियो धन काहू महाउनमाद हियो है ॥ रंचक चारु चकोरनि दम्पति सम्पति प्रेमपियूष पियो है । राधिकावल्लभलालके थारको श्रीहरिवंश प्रसाद लियो है ८ ॥ कवित्त ॥ आदरयो प्रसाद औनिरादरी जगत रीति इष्टही की मिष्टवात सव सनभाई है । सुहथ जिमाये गोर ख्यालरस रीति प्रीति अर्थौ भयो गुणातीत नेमको जताई है ॥ धर्म्म धर्म्म वर्ण्यो चरणोदक प्रसादसुख सर्वगु सो मान्यो भक्ति वेलिही वढ़ाई है । शुद्ध रस मारग चलायो लोक शंके नाहिं युगुल उच्छिष्ट अधिकारता यों पाई है ९ ॥ आदिपुराणे ॥ एकादशी सहस्राणि द्वादशीनांशतानिच ॥ राधिकायाःप्रसादस्य कलांनार्हं

न्तिषोडशीम् ३॥ गरुड़पुराणे ॥ आकण्ठभक्षितोनित्यं पुनातिसक लांहसः ॥ सर्व्वरोगोपशमनं पुत्रपौत्रादिवर्द्धनम् ४ ॥ विधि निषेध ॥ स्मर्तव्यःसततंविष्णुर्विस्मर्त्तव्योनजातुचित् ॥ सर्व्वेविधिनिषे धाःस्युरेतयोरेवकिंकराः ५ अनुसरै ॥ कवित्त ॥ हित हरिवंश बिन हितकी न रीति जान कैसे वृषभाननंदनी सों प्रीति करि- ये। कौन सोहै धर्म्म जासों कर्मनिको भर्म्मजाय सुत वित् राज पाय कैसे ध्यान धरिये ॥ रसिकनरसनिकी राह औ कुराहकोन कौन की उपासना सों आशु सिंधु तरिये। जोपै नंद नंदन को चहैं जगवंदनको तोपै व्यासनंदनके नामको उचरिये ६ ॥ दोहा॥ रेमन श्री हरिवंश भज जो चाहत बिश्राम ॥ जिहि रस सबब्रज सुन्दरी छाँड़िदिये सुख धाम ७ जय जय श्री हरिवंश सदाहंसनि लीलारति। जय जय श्री हरिवंश भक्ति में जाकी दृढ़ मति ॥ जय जय श्री हरिवंश रटन श्रीराधा राधा। जयजय श्री हरिवंश सुमिरि नाशै भव बाधा ॥ कहि व्यास आश हरिवंशकी जयजय श्री हरिवंशजी। सुठि सराहिसकै को कवि सुयश पूरोप्रकट प्रशं- सजी ॥ कवित्त ॥ तूही हरिवंशी हरिकरसों प्रशंशी रहै राधा गुण गान हेत अधर पै बसना। नई नई तानन से काननमें पैठि पैठि दंपति के आनन में तेरी वे बिलसना ॥ प्यारेहूके हियेलागि प्यारीजीके अनुराग उत औरं प्रेम इत रूपहै वरसना ॥ हियेमाहिं हित भई चित्तमेंहै चोपनई नैननिमें नेह नई रसरसरसना ८ ॥

टीका श्रीहरिवंशगुसाईं ॥ हितजकीरीतिकोईलाखन में एकजानेराधाईप्रधानमाने पाछेकृष्णध्याइये। निकट बिकटभावहोतनसुभावऐसो उनहींकीकृपादृष्टिलेकुक्योंहूं पाइये ॥ विधिऔनिषेधछेदडारेप्राणप्यारेहियेजिये निज दासनिशिदिनवहेगाइये। सुखदचरित्ररसरसिकबिचित्र नकेजानतप्रसिद्धकहाकहिकेसुनाइये ३६१ आये घर त्यागरागबढ्योप्रियाप्रीतमसों विप्रबड़भागहरिआज्ञाद

ईजानिये । तेरीउभैसुताव्याहिदेशोलेबोनामेरोउनको जोवंशसोप्रशंसजगमानिये॥ताहीद्वारसेवाविस्तारनिज भक्तनिकीआगतकीगतिसोप्रसिद्धपहिंचानिये। मानिप्रि यबातगृहगयोसुखलह्योतवकह्योकैसेजातयहमनमनआ निये ३६२ राधिकावल्लभलालआज्ञासोरसालदईसेवासो प्रकाशऔविलासकुंजधामको । सोइविसतारसुखसारदृ गरूपपियोहियोरसिकनिजिनलियोपक्षवामको ॥ निशि दिनगानरसमाधुरीकोपानउरअन्तरसिहातएककामश्या माश्यामको । गुणसोंअनूपकहिकैसेकैस्वरूपकहैंलहैमन मोहजैसेऔरनहींनामको ३६३ ॥

मानि प्रियबात ॥ दोहा ॥ टोना टामन सहस विधि करि देखौ सबकोय ॥ पीवकहै सो कीजिये आपुनहीं वस होय १ ॥ पद ॥ प्रीतम प्रीति सों वस होइ । मंत्र यंत्र अरु टोना टामन काम न आवत कोइ ॥ जो अपने प्रीतम प्यारे सों रहिये प्राण समोइ। तौ काहे को और ठौर वह जात प्रीति पतिखोइ ॥ हितके गुणमें प्रीतम को मन मानिक लीजै खोइ। सुर विहगति राखे अपने मन तन मँजूप में गोइ ॥ गरि गयौ भार गरव को सजनी अवतो तू जिहि ठौरहि जोइ। उठि चलि मिलो किशोरी पतिसों केलि कल्पतरु घोइ ॥

मूल ॥ असआशधीरउद्योतकररसिकछापहरिदास की ॥ युगुलनामसोंनेमजपतनितकुंजविहारी। अवलोक तरहैंकेलिसखीसुखकेअधिकारी॥ गानकलागंधर्वश्याम श्यामाकोतोषे। उत्तमभोगलगाइमोरमर्कटतिमिपोषे॥ नितनृपतिद्वारठाढ़ेरहेदर्शनआशाजासकी । असआश धीरउद्योतकररसिकछापहरिदासकी ९२ ॥

रसिक छाप हरिदासजी रसिक हरिदास ॥ दोहा ॥ श्री स्वामी हरिदास को यश त्रिलोक विस्तार। आप पियो प्यायो रसिक नवल निकुंज विहार ॥ कवित्त ॥ रतन सुदेशराई अवनि निकुंज धाम अति अभिराम पियप्यारी केलिरास है। रमत रमत दोऊ सुमति सुरति सेज अमित कटाक्षन के हार भाव हासहै ॥ भावक प्रवीण सुपुनीत गुणगान करें वाते लोक लोकन में सुयश सुवास है। सखी रूपवने घने रासरस पानकरै रसिक शिरोमणि श्री स्वामी हरिदास है २ ॥ छ० ॥ जा पथको पथलेन सहासुनि मूंदति नैन गहे नितजाको। जापथको पछतातहैं वेद लहैं नहिं भेद रहैं जकजाको ॥ सो पथ श्रीहरिदास लह्यो रस-रीतिकी प्रीतिवलाय निशाको। भावत गावत गोविंदको रसिको यों अनन्यनको पथ बाँको ३ ॥ युगुल नामसों नेम ॥ दोहा ॥ तु-लसी जनककुमारि विन जे सेवत रघुवीर ॥ जैसे चंदा रैनि विन स्रवे न अमृत सीर ४ ॥ कवित्त ॥ वहीहै शरदचंद दिनमें उदोत देख्यो ज्योतिको न लेशलागै थारी के अकार है। रैनि रस देन मांझ चैनके समूह होत सो तज्यो प्रकाश रास ताको यों विचार है ॥ शब्द सुधाकर और पात्र निशि वासरहै तासर न कोऊ जामें सार निरधार है। रसिक प्रवीणहू चकोर रजनीशहीसों युगुल स्वरूप गुण नामही अधार है ५ ॥ सम्मोहनीतन्त्रे ॥ गौरतेजोवि नायस्तु श्यामतेजःसमर्चयेत् ॥ जपेद्वाध्यायतेवापिसभवेत्पातकी शिवे २ ॥ सखीसुख ॥ कवित्त ॥ विपिन विहार फूलफूलेहैं अपार लाल लाड़िली निहार मन आई यों शृंगारिये। वीनि वीनि फूल मृदुअंगकी सुसम लैलै भूषणरचत सीरि नीके कै सँवारिये ॥ स-न्मुखही मोहन हियेमें लख्यो प्रतिबिंब सोहन सनेह मोह भरी अँकुवारिये। वहै जानि श्यामा पीठि दई अतिवामा वेहो जीती चतुराई यों भुराई परवारिये ३ ॥ पद ॥ छोड़परी मोरहिं अरु श्यामहिं। आवोचलो सखि सवकी गति लीजै रंगधौं कामहिं ॥ हमारे तिहारे मध्यस्थ राधे और जाहि वड़ो पंछ देख्यो तृण दै

कहाहि यामहिं। श्रीहरिदास के स्वामी श्यामा को चौपरिकोसो खेल एकगुण द्विगुण त्रिगुण चतुरगुण दीजै री जाके नामहिं ४ पियको नचावन सिखवती प्यारी। वृन्दावन में रास रच्यो है शरद रैनि उजियारी॥ रूपभरी गुणहाथ छरी लिये डरपत कुंजबिहारी। व्यास स्वामिनी निरखि नट श्यामहिं रीझदेत करतारी ५ महाराज कौन आछो नृत्य करेहैं तृणदैके पूंछे द्वै बेर मोरी कह्यो तीजे लालजीको अंकमें भरिलयो कही तो समान को नृत्य करैहै जैसी चौपरि की नरद एकबेर कच्ची होय फेरि पकै सोई चौपरिको खेलकहिये जय लाड़िली लाल मिले तव प्रियाजीने रीझिकै रसिक छापदई॥ ६ ॥ कवित्त॥ चहूंओर बैठेमोर दाखिचारो ओरनते जोरयो मनमथ राख्यो मनहिं दुहाई में। कस्तूरी अरगजा को तिलक विराजै भाल माँगभरे यौवनकी जग मग जाई में॥ अलक चमर घनश्याम वाजे नूपुरादि हँसनि विलोकनि सो वटति बधाई में। विरचर ऐसी राज देखो देखो सखी आज दुहुनि रजाइ पाई एकही रजाई में २ सवैया॥ जैसे अनखानि सनरानि लपटानि पुनि अति इतरानि मुसकानि रंग वरषे। जैसे फिरजान अति दीनता निदान पान आपने प्रमान डहि मिगिपानदरपे॥ झटक रिसान भुवतान त्यों त्यों प्राणनाथ प्राणन सिहान मान मनमेंही हरषे। ऐसीकुंजकेलि रसबेलि सुख झेलिरहो बिना हरिदासदासी ताहि कौन निरषे २ पद॥ प्यारी तेरी पुतरी काजरहूते कारी॥ मानों द्वै भवँर उड़े हैं बराबर। चंपकी डार बैठे कुंद अलि लागी है जेव अराअर॥ जब आइ घेरत कटक कामको तब जियहोत दरादर। हरिदासके स्वामी श्यामाकुंजविहारी दोउमिल लरत झराझर॥ अनन्य नृपति श्री स्वामी हरिदास। श्री कुंजविहारी सेये विन छिन नकरी काहू की आस॥ सेवा सावधान करिजाने सुघर गावत दिनरसरास। देहविदेहभये जीवतही विसरे विश्वविलास॥ श्रीवृन्दावन रज तनमन भज तजि लोकवेदकी आस। प्रीति रीति कीनी सवहिन

सों किये नखासखवास॥ यह अपनो व्रत और निवाहो जबलग कंठ उसास। सुरपति भूपति कंचनि कामन तिनके भावे घास॥ अब के रसिक व्यास हम ऐसे जगत करत उपहास ३ ऐसो ऋतु सदा सर्वदा जो रहै बोलत नित मोरनि। नीके बादर नीके बनक चहूंदिशि नीको वृन्दावन आछी नीकी सेवन की घोरनि॥ आछी नीकी भूमि हरीहरी आछी नीकी रगनि काम की रोरनि। श्रीहरिदास के स्वामी श्यामाको मिलगावत बन्यो राग मलार किशोर किशोरनि ४॥

टीका॥ स्वामीहरिदासरसराशिको बखानिसकैरसि कताछापजोईजायमध्यपाइये। लायोकोऊचोवावाकोअ तिमनभोवावामें डार्योलैपुलिनयहैखोवाहियेआइये॥ जानिकैसुजानकहीलैदिखावोलालप्यारे नेसुकउघारेपट सुगंधउड़ाइये। पारसपषानकरिजलडरवाइदियोकियो तबशिष्यऐसेनानाविधिपाइये ३६४ मूल॥ उत्कर्षतिल कअरुदामकोभक्तइष्टअतिव्यासके॥ काहूकेआराध्यम च्छकच्छशूकरनरहरि। वावनपरसाधरनसेतुबंधनहुशै लकरि॥ एकनकेयहरीतिनेमनवधासोंल्याये। सुकुल समोखनसुवनअच्युतगोत्रीजुलड़ाये॥ नौगुनोतोरि नूपुरगुह्योमहतसभामधिरासके। उत्कर्षतिलकअरुदाम कोभक्तइष्टअतिव्यासके ६३॥

लायोकोऊ चोवा॥ दोहा॥ कै सुगंध सोंधो सरस कै उत्तम फलगान॥ इनहीं के कर सौंचहै मेरी मेरे जान २ तुलाइ दियो कुण्डलिया॥ नेगन लाग्यो रामके अगर घड़ा यहखोट। रानी राज सिंगार पट धोबी को धुवरोट॥ धोबी को धुवरोट किया दूर्लभ मानुष तन। सुलभ विषय सब जोर व्रजआधीन जगत जन॥ कौड़ी कामिनि कुटुँब तिनहिं हित हीराहारयो। ज्यों बनि

जारो बैल थक्यो तब मगमें डारयो॥ चाक चौर हाजिर कुंवर अगर इते पर आस। गाडर आनी ऊनको बांधी चरे कपास॥ बांधीचरे कपास विमुख हरि लों न हरामी। प्रभुप्रतापकी देह कुछित सुखसोई कामी॥ जठर यातना अधिक भजन वदिबाहर आयो। पवन लगत संसार कृतघ्नी नाथ भुलायो॥ उत्कर्ष तिलक अरु॥ पद॥ मेरेभक्त हैं देवा देऊ। भक्तनि जानौं भक्तनि मानौं निजजनमो जिव तेऊ॥ मातपिता भक्ते ममभइया भक्त दमाद सजनबसनेऊ। सुत संपति परमेश्वर मेरे हरिजन जाति जनेऊ॥ भवसागर को वेरोभक्तहै हरिखेवट कुरखेऊ। बूड़त बहुत उबारे भक्तन लिये उबारि जरेऊ॥ तिनकी महिमा व्यास कपिलकहि हारे सबपर बेऊ। व्यासदासकी प्राणजिवन धन हरि परिवार बड़ेऊ॥ रासकेलि॥ कवित्त॥ शरद उज्यारी फुलवारी में विहारी प्यारी श्रीगोविंद तैसी वाणी मंडली सखीन की। प्रेम को प्रकाश राश रस को विलास तामें राग रागिनी है सुरताल ग्राम तीनकी॥ उरपतिरपके संगीतनि के भेद भाव नीकीधुनि नूपुरकी किंकिणी चुरीन की। लीन भई मुरली मृदंगकी नवीन गति बीनकी बजनि औ बजावनि प्रवीन की २॥ उचकि उचकि पग धरत धरणिपर झिझकि झिझकि कर करन उचतहैं। ललक ललक गति लेतहैं सुबह पुनि झपक झपक दृग पलन सुचतहैं॥ ठुमुक ठुमुक पग बजत घुंघुरु धुनि मधुर मधुर सुरतानन खचतहैं। मुलक मुलक मन हरत सकल जन आज राज ब्रजराज रास में नचत हैं ३॥ ऐसे रासमें जनेऊ तोरिकै श्री प्रियाजूको नूपुर गुह्यो तब यह पद गायो॥ पद॥ रसिक अनन्य हमारो जाति। कुलदेवी राधावर-सानो खेरो ब्रज बासिन की पांति॥ गोत गोपाल जनेऊमाला शिखा शिखंडी हरिमंदिर भाल। हरिगुणगान वेदधुनि सुनियत मंजु पखावज कुतकरताल॥ शाखा यमुना हरिलीला षटकर्म प्रसाद प्राणधनरास। सेवा विधि निषेध सतसंमत बसत सदा वृन्दावनवास॥ स्मृति भागवत कृष्ण ध्यान गायत्री जाप।

वंशी ऋषि निजमान कल्पतरु व्यास अशीशनदेत शराप ॥

टीका ॥ आयेगृहत्यागिवृन्दावनअनुरागकरिगयोहिय्योपागिहोइन्यारोतालोंखीजिये। राजालेनआयेऐपैजाइवोनभायो श्रीकिशोरअरुझाओमनसेवासतिभीजिये ॥ चीराजरकसीशीशचिकनोखिसिलजाइलेहुजूबँधायनहींआपबांधिलीजिये। गयेउठिकुंजसुधिआईसुखपुंजआयेदेख्योबँध्योमंजुकहिकैसेसोपैरीझिये ३६५ संतसुखदेनबैठेसंगहीप्रसादलेतपरोसततियासबभांतिनप्रवीनहैं। दूधनगताईलैमलाईछिटकाईनिज खिजउठेजानिपतिपोपतनवीनहैं ॥ सेवासोंछुड़ायदईअतिअनलनीभईगईसुखबीतेदिनतीनितनक्षीनहैं। सबसमुझावैंतबदंडकोमनावैं अंगआभरणवेचिसाधजेवैंयोंअधीनहैं ३६६ सुताकोविवाहभयोवड़उतसाहकियो नानापकवानसबनीकेबनिआयेहैं। भक्तनिकीसुधिकरीखरीअरबरीमतिभावनाकरतभोगसुखदलगायेहैं॥आइगयेसाधुसोदुलाइकहीपावोजाइपोटनिबँधायचाइकुजनपठायेहैं। वंशीपहराईद्विजभक्तिलैदृढ़ाईसंतसंपुटमेंचिरियादेहितसोंबसायेहैं ३६७॥

आयेवृन्दावन ॥ सवैया ॥ भूमिहरी द्रुमफूलिरहे लखि ठौररहे दृगठौर सुहाते। न्यारे से लोग रँगीले तहांके मिलेहँसिप्रेम हिये सरसाते ॥ नाम न आवे औ आवै गरोभरि नासलियो नहिंजात है वाते। सांवरी एक नदीपैबसे सो कहौ किमि कौउ या गांवकी बाते २ ॥ खीजिये ॥ पद ॥ सुधारोहरि मेरो परलोक। वृन्दावन में कीनोदीनो हरि अपने निजओक ॥ माताको सों हितकियो हरिजानिआपने नोक। चरणधूरि मेरे शिरमेली और सघनिदै

रोक॥ जेनर राक्षस कूकर गदहा ऊंट वृषभ गज वोक। वृन्दावन तजि बाहर भटकत तो शिर पनहीं ठोक २ ॥ जाइवो न भावै ॥ वृन्दावन के रूप हमारे मात पिता सुतबंध। गुरुगोविंद साधुगति मतिफल अरु फूलनकोगंध॥ इन्हें पीठिदे अनत दीठि करि रो अंधनमें अंध। व्यास इन्हें छोड़िरुझाद्वे ताको परियो कंध ३॥ दोहा॥ वृन्दावनको छांड़िकै और तीर्थ को जात॥ छांड़ि विमल चिंतामणी कौड़ी को ललचात ४॥ राधा वल्लभ कारणे सही जगत उपहास॥ वृन्दावनके श्वपचकी जूठनि खाई व्यास १॥ वृन्दावन छांड़िये नहीं ६॥ खिजउठे॥ पद॥ तिया जो न होई हरिदासी। सोदासी गणिका सम जानो दुष्टराड़ मसवासी॥ निशिदिन अपनो अंजन मंजन करत विषयकी रासी। परमारथ कबहूं नहिं जाने आनि परे यमफांसी॥ कहाभयो स्वरूप गुण सुंदर नाहिंन श्याम उपासी। ताके संग न पतिगति जैहे याते भली उदासी॥ साकतनारि जुघरमें राखे निश्चय नरक निवासी। व्यासदास यह संगति तजिये मिटै जगतकी हांसी २ अंग आभरण बेंचि बीस हजार रुपैया के बेंचिकै वैष्णव जिमाये तब तिया रसोई में लई मैं श्वेत वस्त्र पहिराइ कै सेवामें आवै २॥ पद॥ विनती सुनिये वैष्णवदासी। जा शरीरमें बसत निरंतर नरक बात पितखांसी॥ ताहि भुलाइ हरिहि यों गहिये हँसे संग सुख वासी। बड़े स्वहाग ताहि मनदीजे औरु बराक विश्वासी॥ ताहि छांड़ि हित करै और सों गरेपरै यम फांसी। दीपक हाथपरे कूवां में जगतकरै सबहांसी॥ सर्वोपरि राधापतिसों रति करन अनन्य विलासी। तिनकी पदरज शरण व्यासको गति वृन्दावन वासी २॥ पोटन॥ पद॥ हरिभक्तनते समधीप्यारे। आये भक्त दूरि बैठारो फोरत कानहमारे॥ दूर देशते समधी आये ते घर में बठारे। उत्तम पलिका सौरसपेदी भोजन बहुत सँवारे॥ भक्तन को दे चून चनाको इनको मिलवट न्यारे। व्यासदास ऐसे विमुखनको यमसदा टेरनहारे॥ तापर दृष्टांत उंगली सों राहबताई २॥

पोटबँधाइके मिठाई साधुन को दई तब पुत्र खिजे यह कहा करतहो २ ॥

शरदउज्यारी रासरच्योपियप्यारीतामेंरंगबढ़ोभारी कैसेकहिकैसुनाइये । प्रियाअतिगतिलईबिजुरीसीकौंधि गईचकचौंधीभईछबिमंडलमेंछाइये ॥ नूपुरसोंटूटिछूटिप स्योअरवस्योमनतोरिकैजनेऊकस्योबाहीभांतिभाइये । स कलसमाजमेंयोंकह्योआजकामआयो ढोयोहैजनमताकी बातजियआइये ३६८ गायेभक्तइष्टअतिलूनिकेमहंत एकलेनकोणरीक्षानायोसंतसंगभीरहैं । भूलकोजताबै बाणीव्यासकोसुनाबैसुनिकहोभोगआबै यहांमानेनरिधी रहैं ॥ तबनप्रमाणकरिशंकधरीलैप्रसादग्रासदोइचारिउ ठेमानोंभईपीरहैं । पातरिसमेटिलईसतकरिमोकोदईपा बोतुमऔरपावलियेटगनीरहैं ३६९ ॥

तोरिकै जनेऊ ॥ पद ॥ इतनो है सब कुटुंब हमारो । सेन धनानाभा अरु पीपा अरु कबीर रैदास चमारो ॥ रूप सनातन हरिको सेवक गंगल भट्ट सुटारो । सूरदास परमानँद मेहा मीरा भक्त बिचारो ॥ ब्राह्मण राजपूज्य कुलउत्तम करत जातिको गारो । आदिअंत भक्तनको सर्बस राधा वल्लभ प्यारो ॥ इहि पथचलत श्याम श्यामाके व्यासहि बोरो भावैनारो ३ ॥

भयेसुततीनबांटनिपटनवीनकिये एकओरसेवाएक ओरधनधस्योहै । तीसरीजुठौरश्यामबंदनीऔछापधरी करीऐसीरीतिदेखिबड़ोशोचपस्यो है ॥ एकनेरुपैयालये एकनेकिशोरजूको श्रीकिशोरदासभालतिलकलैकस्योहै। छोयेदियेस्वामीहरिदासदिशिराशिकियो वहीराशिललि तादिगाओमनहस्योहै ३७० ॥

शीतकरी पद ॥ जूठनजे न भगत की खात। तिनके वदन सदन नरकनके जेहरि जनन घिनात ॥ कामविवश कामिनके पीवत अधरन लार चुचात। भोजन पर माखी मूततहैं जिहि जेंवत नाहिं सकात ॥ वाजदारकी पांति व्याहमें जेंवत विप्रवरात। भेंटत सुनहिं रन्ध्रमुखलागत सुखपावत जडतान ॥ अपरसहै भक्तनिछुइ छुतिहोतिल सचेल अन्हात। भक्तनपीछे सब डोलत हैं हरिगंगाअकुलान ॥ साधुचरण रज मांझ व्यासले कोटिक पतित समात २ आदिपुराणे॥ मद्भक्तायत्रगच्छन्तितत्रगच्छामिपार्थिव ॥ भक्तानामनुगच्छन्तिमुक्तयःश्रुतिभिःसह २ भागीरथके पीछे डोलीही हैं आप जगमें तीर्थही हैं ३ वहीरीति ॥पद॥ लाल लटकता योवन संता खेलतरास अनंता। यमुना तीर भीरयुव तिनकी मध्यराधिका कंता ॥ एकनि के कर कंजकपोल परिरंभनि देत हसंता। किशोरदासके स्वामि बिहारी बिहरत केलि करंता ४ ॥

मूल ॥ श्रीरूपसनातनभक्तिजल जीवगुसांईसरगँभीर ॥ वेलाभजनसुखैककषायनकबहूंलागी। वृन्दावनदृढ़ वासयुगुलचरणनिअनुरागी ॥ पोथीलेखनपानिअघटअक्षरचितदीनो। सद्ग्रंथनकोसारसवैहस्तामलकीनो ॥ संदेहग्रंथिछेदनसमाराससउपासकपरमधीर। श्रीरूपसनातनभक्तिजलजीवगुसांईसरगँभीर ९४ टीका ॥ कियेनानाग्रन्थहदैग्रन्थिदृढ़छेददारौं डारैंधनयमुनामेंआवैसन्तओरते। कहीदाससाधुसेवाकीजेकहैंपात्रजान करौंनीकेकरीबोल्योंकोटिकोपजोरते ॥ तबसमझायोसंतगौरवबढ़ायो यह सबकोसिखायोबोलेमीठेनिशिभोरते। चरितअ

१ इस छप्पैमें धीर और गँभीर, दोनों पदों के रकारको हल याने आधाकरने से अथवाधी और भी का लघुकर पढ़ने से मात्रायें ठीकहो रहेंगी ॥

पारभावभक्तिकोनपारावार कियोहूवैरागसारकहैंकौन छोरते ३७१ ॥

भक्त जलपद जयजय मेरे प्राण सनातन रूप । अगतिनकी गतिदोऊ भैया योग यज्ञके जूप ॥ श्रीवृन्दावन की सहज माधुरी प्रेम सुधा के कूप । करुणासिंधु अनाथ बंधुजय भक्तसभाके भूप ॥ भक्त भागवत मत आचारज चतुर कुल चतुरभूप। भुवन चतुरदश विदित विमलयश रसनाके रसतूप ॥ चरण कमल कोमलरज छाया मेटत कलरजधूप। व्यास उपासक सदा उपासी श्रीराधाचरण अनूप ॥ बोले कवित्त ॥ सीखे व्याकरणकोष काव्य औ पुराण सीखे सीखे वेद पढ़िवो जो धर्म्मनकु मूरिहै। न्याय वेदान्त आदि सीखे षटशास्त्र वर पंडिताई चतुराई जानै भरिपूरि है ॥ सीखे घटपट मांप जेवरी वखानिवे को माया भ्रम जाकी अतिजीवनिकी मूरिहै । भक्तनकी सभावीच प्रेम रस सींचि सींचि बोलिवो न सीख्यो सब सीखिवेमें धूरिहै २ ॥ प्रसंगमजरंपाशमात्मनःकवयोविदुः ॥ सएवसाधुषुकृतोमोक्षद्वारमपावृतम् १ ॥

मूल ॥ श्रीवृन्दावनकीमाधुरीइनमिलिआस्वादनकियो ॥ सर्वसुराधारवनभट्टगोपालउजागर । हृषीकेशभगवानविपुलविट्ठलरससागर ॥ थानेश्वरजगनाथलोकमहमुनिमधुश्रीरंग । कृष्णदासपंडितउभैअधिकारीहरिअंग ॥ जनघमण्डीयुगलकिशोरभूगर्भजीवदृढ़व्रतलियो । श्रीवृन्दावनकीमाधुरी इनमिलिआस्वादनकियो ९५ ॥

इनमिल विषयरस स्वादीको मिलवो कहाराजा को दूसरो न रुचै अरु दत्तात्रेयहूने कारीकन्याकी चूरी दूसरीहू दूरिकरी पैकैसे मिलै दत्तात्रेयजी ने ब्रह्मज्ञानीन को संग निषेध कियो उपास-

इनको नहीं ब्रह्मज्ञानी विधवातुल्य हैं उपासक सुहागवती ति-
नको संगरूरी चाहिये जैसे चूरी को शब्द पतिको प्यारो लगै
ऐसे संगरूप चूरी को शब्द कृष्णपति को प्यारो लगे याते ब्रह्म-
ज्ञानी के कृष्णपति नहीं तिनहीं को संग चूरी त्यागहै याते इन्हें
नेमिलिके रूप माधुरीको स्वादलिये ॥ पद ॥ जो कोउ वृन्दावन
रसचाखैं। खारी लगत खांड़ अरु खारक आन देशकी दाखैं ॥
प्राणसमान तजै नहिं सीवा लोभ दिखावत लाखैं। भूखे रहि
कै पावे भाजी निरखि रहै तरुसाखैं ॥ परे रहे कुंजनि के कोने
कृष्ण राधिका भाखैं। जनगोविंद वलवीर कृपाते पटरानी जू
राखें २ क्योंकि राधे को वृन्दावन वेदन में गायो है ॥ सवैया ॥
पौरिके पौरिया द्वारके द्वारिया पाहरुवा घर के घनश्याम हैं।
दासी के दास सखीन के सेवक पार परोसिन के धनधाम हैं ॥
श्रीधर कान्हभरे हित भामर मानभरी सतभामासी वाम हैं।
एक वही विसरामथली वृषभानलली की गली के गुलाम हैं २ ॥

टीकागोपालभट्टकी ॥ श्रीगोपालभट्टजूकेहियेवेर
सालबसेलसेयोंप्रकटराधारवनस्वरूपहैं । नानाभोगरा
गकरैंअतिअनुरागपगे जगेजगमाहिंहितकौतुकअनूप
हैं ॥ वृन्दावनमाधुरीअगाधकोसवादलियो जियेजिन
पायोसीतभयेरसरूपहैं । गुणहीकोलेतजीवऔगुणको
त्यागदेत करुणानिकेतधर्मसेतुभक्तभूपहैं ३७२ ॥ टीका
अलिभगवान्की ॥ अलिभगवानरामसेवासावधानमन
वृन्दावनआइकछुऔरैरीतिभईहै । देखेरासमंडलमेंविह
रतरसरासबाढ़ीबिप्यासदृगसुधिबुधिगईहै ॥ नामधरि
दासऔविहारीसेवाप्यारीलली खगीहियमांझगुरुसुनी
बातनई है। विपिनपधारेआपजाइपगधारेशीश ईशमेरे
तुमसुखपायोकहिदईहै ३७३ ॥

वाढ़ीछवि पद ॥ रहौ कोउ काहू मनहिं दिये। मेरे प्राणनाथ श्रीश्यामा सपथकरौ तृणलिये ॥ जे अवतार कदम्ब भजत हैं धरि दृढ़व्रत जुहिये। तेऊ उमँगि तजत मर्यादा वनविहार रसपिये ॥ खोये रतन फिरत जे घर घर कौनकाज अपंजिये। जय श्रीहित हरिवंश अनन्त सच नाहींविन धारत ताहि लिये २ आनिदेशकी गैलहरिति श्रीकृष्ण दौरि मेवाती लूटलै हैं जो रावरी। सोईअलि भगवान्को लूटिलियो जो जोरावर रामहोतौ बचायलेतो श्री शुकदेवजी ने ब्रह्मनेष्ठको लूटिलियो ॥ दोहा ॥ अनव्याही हौसे करें व्याही लेत उसास। गौनेकी मौने रहीं देख राज गृहहास ॥

टीकाविट्ठलविपुलकी ॥ स्वामीहरिदासजूकेदासना मविट्ठलहैं गुरुकेवियोगदाहउपज्योअपारहै। रास के समाजमेंविराजसबभक्तराज बोलिकैपठायेआयेआज्ञाब ड़ोभारहै ॥ युगलस्वरूपअवलोकनानाभेद नृत्यगानता नकानसुनिलीनसँभारहै। मिलिगयेवाहीठौरपायोभावतन और कहैंरसलागरसोताकोयोंविचारहै ३७४ ॥ टीका लोकनाथकी ॥ महाप्रभुश्रीकृष्णचैतन्यजूके पारषदलोक नाथनामअभिरामसंबरीतिहै। राधाकृष्णलीलासोरंगीन मेंनवीनलन जलमीनजैसेतैसेनिशिदिनप्रीतिहै ॥ भाग वतगानरसखानसोतौप्राणतुल्य अतिसुखमानिकहैगा वैजोईनीतिहै। रसिकप्रवीणभगवन्तचरणलागि कृपा कैजताइदईजैसीनेहरीतिहै ३७५ ॥ टीका ॥ मधुगुसाईं की ॥ श्रीमधुगुसाईंआयेवृन्दावनचाहबढ़ी देखोंइननैन नसोंकैसोधौंस्वरूपहै। ढूंढ़तफिरतवनवनकुंजलताद्रुस मिटीभूखप्यासनहींजानेछाँहधूपहै ॥ यमुनापढ़तिकाटि करतकरारेजहांवंशीवटतटदीठिपरेवेअनूपहै। अंकभरि

लियोदौरिअजहूंलौंशिरमौर चहैभागभालसाथगोपीना थरूपहै ३७६ ॥

पायो भावतन ॥ पद ॥ प्यारी नेकु निरखो नवरँग लालै । तुवपदपंकज तलरजचंदन तिलक बनावत भालै ॥ तेरेवरण वसन आभूषण उरधरि चंपकमालै । वीठल विपुल विनोद करो बल भुजभरि बाहु विशालै ॥ जलमीन जैसे ॥ दोहा ॥ मीनमारि जलधोइये खाये अधिक पियास ॥ बलिहारी वा चित्तकी मुये मित्तकी आस २ परसा हरिसों प्रीतिकरि मछरी कीसी न्याइ ॥ जीवत मरत न छाड़हीं जल विन रह्यो न जाइ ३ ॥

गुसाईंश्रीसनातनमदनमोहनरूपमाथेपधरायकही सेवानीकेकीजिये । जानोकृष्णदासब्रह्मचारीअधिकारी भयेभटश्रीनारायणजूशिष्यकियेरीझिये ॥ करिकैशृङ्गार चारुआपहीनिहारिरहे गहेनहींचेतभावमांझमतिभीजि ये । कहांलौंबखानकरौंरागभोगरीतिभांति अवलौंविराज मानदेखिदेखिजीजिये ३७७ श्रीगोविंदचंदरूपराशि सुखराशिदासकृष्णदासपंडितयेदूसरेयोंजानिले । सेवा अनुरागअंगअंगमतिपागिरहीपागिरहीमतिजोपैतोपैया हिमानिले॥प्रीतिहरिदासनसोंविविधप्रसाददेतहियेल्या इलेतदेखपद्धतिप्रमानिले । सहजकीरीतिमेंप्रतीतिसोंवि नीतकरैटेरेवाहीओरमनअनुभवआनिले ३७८ ॥

मतिपागिरही ॥ कवित्त ॥ गोविंद रँगीले रंगरंगनि शृंगार कियो लिये करछरी हिये सबके विलोयेहैं । इत इतरात जात धरे पगधरणी पै यौवन उमंग आप अंगअंग भोये हैं ॥ चितवनिमें न सनी सैननसों बातैंकरै हरैमनलाइ भरे नेहसों समोये हैं । ऐसो कवि कौन सकै नैनन स्वरूप कहि लाल लाल कोयनमें केते घर खोये हैं २ प्रसाद देत ॥ कुंडलिया ॥ भवभोरे सेवा खड्ग लै का·

टयो निजमाथ। राइनिभाइनि जासुको खँड़ावरादे हाथ॥ खँड़ावरादे हाथ देत प्रभुको तुलसीदल। कैदोनाभरि फूल कितो करवा भरिकै जल॥ भोजनगटकत आप रजोगुणदे पुनि हरषे। याथारुथल मांझ दयानिधि को लै बरषै ५ अलोनी रोटि। गले में अटके कही कहा गीता विस्तार करोगे॥

गुसाईंभूगर्भेवृन्दावनदृढ़वासकियो लियोसुखबैठिकुंजगोविंदअनूपहैं। बड़ेईविरक्तअनुरक्तरूपमाधुरीमेंताहीकोसवादलेतमिलेभक्तभूपहैं॥ मानसीविचारहीअहारसोंनिहाररहेगहेमनवृत्तिवेईयुगलस्वरूपहैं। बुद्धिकेप्रमाणउनमानिमेंबखानकियो भयोवहुरंगजाहिजानेरसरूपहैं ३७९ मूल॥ श्रीरसिकमुरारिउदारअतिमत्तगजहिउपदेशदिय॥ तनमनधनपरिवारसहितसेवतसंतनकहि। दिव्यभोगआरतीअधिकहरिहूतेहियमहि॥ श्रीवृन्दावनचंदश्यामश्यामारँगभीने। मगनसुप्रेमपियूषपयधपरचेवहुदीने॥ श्रीहरि प्रियश्यामानन्दवरभजनभूमिउद्धारकिय। श्रीरसिकमुरारिउदारअतिमत्तगजहिउपदेशदिय९५ टीका॥ श्रीरसिकमुरारिसाधुसेवाविस्तारकियोपावेकौनपाररीतिभांतिकछुन्यारियै। संतचरणामृतकेमाठगृहभरेरहेताहिकोप्रणामपूजाकरिउरधारियै॥ आवेंहरिदासतिन्हेंदेतसुखराशिजीभएकनप्रकाशसकैथकैसोविचारियै। करैंगुरुउत्सवलैदिनसानसबैकोई द्वादशदिवसजनघटालगीप्यारियै ३८० संतचरणामृतकोलाबोजायनीकीभांतिजीकीभांतिजानिवेकोदासलपटायोहै। आनिकैबखानकियोलियोसबसाधुनको पानकरिबोलेभोसवादनहीं आयोहै॥ जितेसभाजनकहीचाखौदेवौमनकोऊमहिमान

जानेकनजानीलेड़िआयोहै। पूछीकह्योकोदीएकरह्योआ नौलायोपियोदियोसुखपासनैननीरढरकायोहै ३८१ ॥

आनो ॥ चैतन्यचरितामृते ॥ दृष्टैःस्वभावजनितैर्वपुषस्तुदोषै र्नप्राकृतत्वमिहभक्तजनस्यपश्येत् ॥ गंगाम्बसांनखलुबुद्बुदफेनपंकैर्ब्रह्मद्रवत्वमुपगच्छतिनार्य्यधर्म्मैः १ ॥ लौप्याईन एक तिसाई जैसे प्रीतिकरि शालिग्रामसों पूजे ॥

नृपतिसमाजमेंविराजभक्तराजकहैं गहैंवेविवेककोऊ कहनप्रभावहै। तहांएकठौरसाधूभोजनकरतरौरदेखोदू जीसोंटासंगकैसेआवेभावहै ॥ पातरिउठाइश्रीगुसाईंपर डारिदईदईगारिसुनीआपनोलेदेखोदावहै। सीतसोंविमु खभैंतौआनिसुखमध्यदियो कियोदासदूरिसेतसेवासेंन चावहै ३८२ बागमेंसमाजसंतआपचलेदेखिवेकोदेख तदुराभोजनहूंकोशोचपस्योहै। बडोअपराधमानिसाधून लमानचाहैंभूमितनबैठिरहीदेख्योकहूंवस्योहै ॥ जाइकैगु नाईदासकाहूकेतमासूपास सुनिकैहुलासबढ्योआगेआ निकस्योहै। रूठहीउसासभरिसांचेमेंलपाइलियेकियेसन भायेऐसेरंकादुखहस्योहै ३८३ उपजतअन्नगांवआवैसा धुसेवाठांवनयोनृपदुष्टआयकावाकावकियोहै। आसरोंज नतकरौकह्योलैबिचारआपश्यामानन्दजूमुरारिपत्रलिखि दियोहै ॥ जाहीभांतिहोहिताहीभांतिउठिआवोयहांआये हाथबांधिकरिअचेहूंनलियोहै। पाछेसाष्टांगकरीकरीलै निवेदनलोभोजनलेंकहीचलेआयेभीज्योहियोहै ३८४ ॥

सीत सों विमुख ॥ दोहा ॥ जानि अजानी ह्वे रहै तानलेइ जो जानि। अगिलाहोवे अगन सम आपुन होवे पानि २ कियो दास दूरि रसोई पावो ले महाराज लाज कैसे रहै सोंटा को

लागै है सोंटाहू खाइहै वावरे मनुष्य खाइसेर सोंटा खाइ चारि सेर कैसे महाराज जब सोंटा सों भांग घोटिकै पीवैं तब चारि पनवारे उड़ाइ जाइ सोंटाही तौ खाइहै दासको दूरि करि दियो ३ शोच पर्यो सन्तके लक्षणहैं कुछ न कियाकरै तौ लाज करै नाहीं काहेको करै ३।४।५।६॥

आज्ञापाइअचयोलैदैपठायेवाहीठौर दुष्टशिरमौरज्ञांतहांआपआये हैं। मिलेसुतसहीशिष्यआइकैसुनाई बातजावोउठिप्रातयहुनीचजेलेगाये हैं॥ हमहींपठावैंकामकरिसमआवैंलवमनभैंनआगेजानीनिहडरपाये हैं। चिंताजनिकरौहियेधरौनिर्हचिंतताई भूपसुधिआईदिनातीनकहांआये हैं ३८५ सुनिआयेगुरुवरकलआवोमेरेघर देखौकरामतिवातयहलैसुनाईहै। कह्यौआनिअभुजावोचलौउनसानदेखेंचलेसुखमानिआयोहाथीधूमआईहै॥ छोड़िकेकहारभागगयेननिहारिसके आपरससारबानीबोलीजैसीगाईहै। बोलौहरिकृष्णकृष्णछांड़ौगजतमतनसनिगयोहियेभावदेहसोनवाईहै ३८६ वहैदृगनीरदेखिकैगयोअधीरआप कृपाकरिखीरकिग्योदियोभक्तभाव है। कानमेंसुनायोनामनामदैगोपालदासमालापहिरायगेरेप्रकट्योप्रभावहै॥ दुष्टशिरमौरभूपलखिवहिठौरआयोपाइलपटाइभयोहियेअतिचावहै। निपटअधीनग्रामकेतिकनवीनदियेलियेकरजोरिमेरोफल्योभागदावहै ३८७

आज्ञा पाइ अचयो लै गुरु सें भाव भक्ति की नीम है जैसे हवेली को नीम होइ तौ सतखण्डौ उठाइ लई नहीं तौ गिरिपरै ऐसेही गुरुमें भक्ति होइ तौ दशधा भक्ति दशखण्डी सिद्धहोइ उनमान देखे हकीम प्रवल रोग सुनतही न भाजै रोग को उन-

मान देखिये बोले हरे कृष्ण ॥ भागवते ॥ प्रविष्टःकर्णरन्ध्रेण स्वानांभावसरोरुहे । धुनोतिसमलंकृष्णःसलिलस्ययथासरित् ॥ प्रभावहै ॥ शृण्वतांस्वकथांकृष्णः पुण्यश्रवणकीर्त्तनः ॥ हृद्यंतस्थोह्यभद्राणिविधुनोतिसुहृत्सताम् ३ ॥

भयोगजराजभक्तराजसाधुसेवासाजसंतनसमाजदेखकरतप्रणामहै । आनिडारैगौनबनिजारिनिकीवारिनिसोंआयेंइपुकारनवेजहांगुरुधामहै ॥ आवतमहोछौमध्यपावतप्रसादसीतबोलेआपहाथीसोंयोंनिन्दबहुकामहै । छोड़िदईरीतितबभक्तनिसोंप्रीतिबढ़ी संगहीसमूहफिरैफैलिगयोनामहै ३८८ संतसातपांचसातसंगजितजाततितलोगउठिधावैंलावैंसीधैबहुभीरहै । चहुंओरपरीहईसुवासुनिचाहतभईहाथपै न आवतसोआनैकोऊधीरहै ॥ साधुएकगयोगहिलयोभेषदासतन मनमेंप्रसादनेमपीवैनहींनीरहै । बीतेदिनतीनिचारिजललैपिवावैधारिगंगाजूनिहारिमध्यतज्योसोशरीरहै ३८९ मूल ॥ भवभयप्रवाहनिस्तारहितअवलम्बनयेजनभये ॥ सोझासींवअधारधीरहरिनामत्रिलोचन । आशाधरदेवराजनीरसधनादुखमोचन ॥ काशीश्वरअवधूतकृष्णकिंकरकटहरियो । साभूऊदारामनामडूंगरव्रतधरियो ॥ श्रीपदमपदारथरामदासविमलानन्दअमृतश्रये । भवभयप्रवाहनिस्तारहितअवलम्बनयेजनभये ९६ ॥

निन्द बहुकाम है ॥ वैष्णवोवंधुसत्कृत्य २ महाराज बन्धुन के लिये चोरी करै ठगाई करै आप बोले धन न होइ तौ करै ताते यह काम छोड़ि दे भेट मुक्ती आइरहैगी बहुभीरहै पांचसौ सातसै वैष्णवनकी भीररहै संग जहां चलै गोपालदास हाथी सीधै चढ़े

आवे और यांते भीर वहुत रहे वैष्णवनकी गूदरी तो लाद लेहै और हारो नीरो साधुहु चढ़िलेहि ऐसो महंत कहा पा.चे नौर महंत तो वैष्णवन कंधे लादे यह वैष्णवनको सब बोझलचले २॥

टीका॥ सदनाकसाईताकीनीकीकसआईजैसे यारवा नीगोनेकीकसौटीकसआईहै। जीवकोनवधकरैपैकुला चारढेरैवेचैमांसलाइप्रीतिहरिसोंलगाईहै॥ गंडकीकोसु तश्विनजानेतासोंतौलचौकरैभैरहगसाधुआनिपूजेपैनभाई है। कहीनिशिस्वप्नमेंवाहीठौरमोकोदेहुसुनौगुणगानरी झैहियेकीसचाईहै ३६० लैकैआयोसाधुदेतोकह्योअप राधकियोकियोअभिपेकसेवाकरौपैनभाईहै। येतोप्रभु रीझैतोपैजोईचाहोसोईकरौ गरीभरिआयोसुनिमतिविस राईहै॥ वेईहरिउरधारिडारिदियोकुलाचारि चलेजगन्ना थदेखचाहउपजाईहै। मिल्योएकसंगसंगजातवेसुहात लख नव नापदूरिदूरिरहेजानिपाईहै ३६१॥

सुनौ गुनगान॥ पद॥ मैंतो अतिही दुखित कुराद। पां: ग्राह गीलत हे सोको गज ज्यों करो उधार॥ नाम गरीनिवाजउ- जातो करन विषे हठतार। सदनाको प्रभु तारो ऐसे पहताहे कारीभार १॥ कवित्त॥ यह पद आपा कै हे एक कारि गावतहैं हम तुम्हें गावतहैं सदा वेद बानीसों। मांस भरे हाथनिसों आज तुम्हें छूवतहैं हमें बैऊ मास बीते तुम्हरी कहानीसों॥ लछमी- नारायण जू बड़े रिझवार तुम रीझनिकलतहे तुम्हारी रजधानी सों। हम निरमल गंगाजलसों न्हवावें निन तुम रीझे सदना के वधना के पानीसों २ डारिदियो॥ पद॥ तजौ मन हरिविमु- खनको संग। जिनके संग कुमति उपजनहे परत भजनमें भंग॥ कागे कहा करपूर चुनावे मरकट भूषण अंग। खरको कहा अरग- जालेपे श्वान अन्हाये गंग॥ काह भयो पयपान कराये विष नहिं

तजतभुवंग। सूरदास कारी कामरि पर चढ़त न दूजोरंग॰।८१५॥

आयोमगग्रामभिक्षालेनइकठामगयो नयोरूपदेख कोऊतियारीझपरीहै । बैठोयाहीठौरकरौभोजननिहोरक ह्यो रह्योनिशिसोइआईमेरीमतिहरीहै ॥ लेवोमोकोसंग गरोकाटोतौनहोइरंग बूझीऔरकाटीपतिग्रीवपैनडरीहै। कहीअवपागोमोसोंनातैकोनतोसोंमोसों शोरकरिउठीइ नमारोमीरकरीहै ३९२ हाकिमपकरिपूछेंकहैहँसिमारोह म डाख्योशोचभारीकहीहाथकाटिडारिये । कट्योकरचले हरिरंगमांझभिलेमानी जानीकछूचूकमेरीयहैउरधारिये॥ जगन्नाथदेवआगेपालकीपठाईलेन सदनासुभक्तकहांच ढैनविचारिये । चढ़ेआयेप्रभुपाससुपनोसोंमिट्योत्रास बोलेदैकसौटीहूपैभक्तिविसतारिये ३९३ ॥ काशीश्वरजी कीटीका ॥ गुसाईं श्रीकाशीश्वरआगेअवधूतवर करप्री तिनीलाचलरहेलागेनीकोहै । महाप्रभुश्रीकृष्णचैतन्यजू कीआज्ञापाइ आयेवृन्दावनदेखिभयोभायोहींकोहै ॥ से वाअधिकारपायोरासिकगोविन्दचन्द चाहतमुखारविन्द जीवनजोजीकोहै । नितहीलड़ावैभवसागरछुड़ावै कौन पारावारपावैसुनैंलागैजगफीकोहै ३९४ ॥

चूक मेरी ॥ कुण्डलिया ॥ अगर कहै अपराध यह प्रभु हैं सदा अदोप । ढाक चढ़त बारी गिरै करै रावसों रोप ॥ करै रावसों रोप दोप हरिको कहँ दीजे । आपुन कुमति कमाय परेखो काको कीजे ॥ तृपावंत है जीव सरोवर पै चलि आवै । यह नहिं देखी सुनी आइ सर तृपा बुझावै १ पालकी पठाई ॥ श्रीजगन्नाथ देव जी करई औपध दै पिछले जन्मको अपराध खोयो चाहैं तव बुलाया ॥ दोहा ॥ दुर्जनको है तन भलो सज्जन

को भलो आस ॥ जो सूरज अधिकी तपै तौ बरसनकी आस २ न्याय के कर्ता न्याय करतही हैं ॥

मूल ॥ करिकरुणाछायाभक्तिफलयेकलियुगपादपरचे ॥ जतीरामरावलयश्यामखोजीसँतसीहा। दुलहापद्मम नोर्थराँकद्योगूजपर्ज ॥ जाड़ाचाचागुरूसवाईचांदनपापा। पुरुषोत्तमसोंसांचचतुरमनभेट्योआपा ॥ मतिसुंदरधीधांगेश्रमसंसारचालनाहिंननचे। करिकरुणाछायाभक्तिफलयेकलियुगपादपरचे ९७ टीका ॥ खोजीजूकेगुरुहरिभावनाप्रवीणमहा देहअन्तसमैबांधिघंटालोंप्रमानिये। पावैंप्रभुजबतबबाजिउठेंजांनौयहै पायेनहिंबाज्योबड़ीचिन्तामनआनिये ॥ तनत्यागवेरनहिंहुतेफेरिपाछेआये वाहीठौरपौढ़िदेख्योआँबपक्योमानिये। तोरताकेटूककियेछोटोएकजन्तुमध्य गयोसोबिलाइबाजउठेजगजानिये ३९५ शिष्यकीतौयोगताईनीकेमनआईआजु गुरूकीप्रबलऐपैनेकुघटिक्योंभई। सुनोयहीबातमनबातब्रतकहीकहीसही लैदिखाईऔरकथाअतिरसमई॥ वेतोप्रभुपाइचुकेप्रथमप्रसिद्धपाछे आछेफलदेखिहरियोगउपजीनई। इच्छासोसफलश्यामभक्तबशकरीवही रही पूरपक्षसबव्यथाउरकीगई ३९६ ॥

मति सुन्दर धीधागे॥ मृदंग कैसी मतिहीसों सुन्दर ठहराई है पैहै झूठी ताकी चाल में सब संसार नचै है १ ॥ कवित्त ॥ आवो सदा काळ पै न पायो कहूं सांचो सुख रूप सों बिमुख दुख कूप घास बसाहै। धर्म को संघाती है न महाही अफाती पुनि ऐपै यह सन्निपात कैसी युत दशाहै॥ माया कोऊ पटि गहे

१ इस ग अक्षर को लघु करके पढ़ना ॥

नाथ। सों लपटि रहै भूल्यो भ्रम भीर में वहीर को सों शशाहै। ऐसोगन चंचल पताका कोसों अंचल सुज्ञानके जगेते निरवाण पद धराहै २ ऐसे श्रम करि के नहीं नचै संसार की चाल में रच्यों है ३।४।५।६॥

टीका राकाबांकाकी॥ राकापतिबांकातियाबसैपुरपं ढुरमें ढरसेंनचाहनेकुरीतिकहुन्यारिये। लकरीनबीनिकरिजीविकानबीनकरै धरैहरिरूपहियेतासोंयोंजियारिये॥ निलीकरतनामदेवकृष्णदेवजूसों कीजेदुखदूरिकहीमेटीलिखीभारिये। चलोलैदिखाऊँतबतेरेमनभाऊँजूहैबनाकिनहोंडेदीनगमांझडारिये ३६७ आयेदोऊतियापतिपाछेप्रभुआगेस्वामीओचकहीमगमांझफूमपदतिनिहारिये। पाम्बोंधूरिजातकृभमनचलिजात यातेवेगिलैअलसों धूरिवापेडारिये॥ पूछीअजूकहाकियेभूमिमेंनिहुरितुम कहीपिडीमातबोलीधनहूनिदारिये। कहैमोकोरॉकापैबाँकाआजुदेखी तुही एनिप्रभुबोले बात सांचीहै हमारिये ३६८॥

जीविका नवीन करै॥ उतनी ही लावे उतनी ही नृत्य करे अथवा साधुन को देकै बचै सो आप पावै यह नवीनता तो काहूपै न बनै विनती करता नामदेव॥ दोहा॥ कहूं कहूं गोपाल की गई सिटल्लो नाहिं॥ काबुलमें मेवा करी व्रजमें टेटी खाहिं १ कहूं कहूं गोपालकी गई सिटल्लो नाहिं॥ विमुख लोग घोड़ा चढ़ै काठवेंच जन खाहिं २ कहा भयो जल में जल वर्षत वर्षत नाहिं खेत जहँ सूखा॥ अघाये आगे बहुत परोसत परसत नाहिं शरन जहँ भूखा ३॥ सवैया॥ श्रीहरिदासके गर्भ भरे कमनैत अनन्य निहारिनि के। महामधुरे रस पान करैं अवसान खता-मिल हारिनि के॥ दियो नहिं लेहन मांगत काहू पै जोरन नेह

तिहारिनिके। किये रहे अंड विहारिय सों हम बेपरवाह विहारिनिके ४। ५॥

नामदेवहारेहरिदेवकहीऔरैवात जोपैदाहगातचलौं लकरीसकेलिये। आयेदोऊवीनिवेकोदेखीइकठौरढेरी है हूभिलीपावैतेउहाथनहींछेरिये॥ तवतौप्रकटश्यामलायो योलिवाइघर देखिमूढ़फोराकह्योऐसेप्रभुफेरिये। विनती करतकरजोरिअंगपटधारे भारोवोझपरोलियोचीरमात्र हेरिये ३९९ मूल॥ परअर्थपरायणभक्तयेकामधेनुकलियुगनजे॥ लछिमनलफरालड़्हिसतजोधेपुरत्यागी। सूरजकुंभनदासविमानीखेमवैरागी॥ भावनविरहीभरतनफरहरिकेशलटेरा। हरीअयोध्याचक्रपाणिसरयूतटडेरा॥ तिरलोकपुपरदीवीजुरीउद्धवबनचरवंशजे। परअर्थपरायणभक्तयेकामधेनुकलियुगनजे ९८ टीका॥ लडूनाम भक्तजाहनिकसेविमुखदेश लेशहूनसंतभावजानेपापपगेहैं। देवीकोप्रसन्नकरैमानुषकोमारिधरैं लैगयेपकरिजहांमारिवेकोलागेहैं॥ प्रतिमाकोफारिविकरालरूपधरिआइ लेकेतरवारमूड़काटेभीजेरागेहैं। आगेनृत्यकरैदृगभरैं साधपांवधरैं ऐसेरखवारेजानिजनअनुरागेहैं ४००॥

नहीं छेरिये॥ कही कोऊ कंगला धरिगयो आगे ले लेहिंगे लकरी क्यों न लिले प्रातहि धनको सुहड़ो देख्यो हो ले जेतो न जानिये कहांहै तौ॥ अचाह सों कंगाल कह्यो॥ दोहा॥ वर घर डोलन दीनहै जन जन याचत जाइ॥ दिये लोभ चशमा चखन लघु पुनि बड़ो लखाइ १ जैसे लोभीको लघुबड़ो दीखे तैसे त्यागी को बड़े हैं ते लघु दीखैहै। प्रयंत धन मुक्ति स्वर्ग तुच्छ दीखै अत्यन्त॥ दोहा॥ रामअगलतेतेरहैं पीवे प्रेम निशंक॥ आठ गांठि

कोपीन में कहे इंद्र सों रंक २ घे परवाही वैष्णव ऐसे ३ ॥

टीकासंतकी ॥ सदासाधुसेवाअनुरागरंगपागिरह्यो गह्योनेमभिक्षाव्रतगांवगांवजाइके । आयेघरसंतपूछेति यासोंयोंसंतकहा संतचूल्हेमांझकहीऐसेअलसाइके॥ वा नीसुनिजानीचलेमगसुखदानी भिलेकह्योंकितहुतेसोवखा नीउरआइके। बोलीवहसांचवोहीआंचहीकोध्यानमेरेआ निगृहफिरिकियेमगनजिवाइके ४०१ टीका तिलोककी॥ पूरवमेंओकसोतिलोकह्योसुनारजाति पायोभक्तसारसाधु सेवाउरधारिये। भूपकेविवाहसुता जोराएकजेहरिको ग ढ़िवेकोदियोकह्योनीकेकेसँवारिये॥ आवतअनंतसंतऔ सरनपावैकिहूं रहेदिनदोयभूपरोषयोंसँभारिये । लावोरे पकरलाये छाड़ियेमकरकही नेकुरह्यो कामआवे नातैमा रिडारिये ४०२ आयोवहीदिनकरछुयेहूनइननृपकरैप्रा णविनवनमांझछिप्योजाइकै। आयेनहींचारिपांचजानी प्रभुआंचगढ़िलियोसोदिखायो सांचचलेभक्तभाइके ॥ भूपकोसलामकियो जेहरिकोजोरादियो लियोकरदेखि नैनछोड़ैनअघाइके। भईरीझभारीसवचूकमेटिडारीधन पायोलैमुरारीऐसेवैठेघरआइकै ४०३ ॥

वानी सुनिजानी चले ॥ सवैया ॥ होतही प्रात जो घात करै नित पार परोसिन सो कलगाढ़ी। हाथ नचावति मूड़ खुजाव- ति पौरि खड़ी अति कोटिन वाढ़ी ॥ ऐसी वनी नखते शिखलों मनों क्रोधके कुंडमें वोरिकै काढ़ी। ईंट लिये पियको मुख जोवत भूतसी भामिनि भौनमें ठाढ़ी १ ऐसी कलहा को वचन सुनिके साधू उठिचले क्योंकि जिनके वचनसुनिकै भूतहू भाजिजाहिं २ राजाके पुरोहित कुरला डारा अपनी स्त्री पतोह संपत्ति और

शरीर सुख विद्या अरु वरनारि माँगे मिलैं न चारि विन पूरवके पुण्य विन अनंत संत॥ प्रथमे॥ तुलयाम लवेनापि न स्वर्गनापुन र्भवम्॥ भगवत्सङ्गिसङ्गस्य मर्त्यानांकिमुताशिषः ३ सत्संग को मार्ग आछो है ४॥

भोरहीमहोत्सौकियोजोईमांगैसोईदियो नानापकवा नरसखानस्वादलागे हैं। संतकोस्वरूपधरिलैप्रसादगोद भरिगयेजहांपावैं जोतिलोकग्रहपागे हैं॥ कौनसोत्रिलो कअजूदूसरोत्रिलोकीमेंन वैनसुनिचैनभयोआयोनिशिं रागे हैं। चहलपहलधनभस्यो घरदेखिढस्योप्रभुपदकंज जानीमेरेभागजागे हैं ४०४॥ मूल॥ अभिलाषअधिक पूरणकरनयेचिंतामणिचतुरदास ॥ सोभुभीमसोमनाथ विकोविशखालमध्याना। महदामुकुँदगयेसत्रिविक्रम रघुजगजाना॥ बालमीकिवृधव्यासजगनभांझ्विठल अचारज। हरभुलालहरिदासबाहुबलराघवआरज॥ लाखाछीतरउद्धवकपूरघाटमघूराकियप्रकास्। अभिला षअधिकपूरणकरनयेचिंतामणिचतुरदास् ९९ भुविभ क्तपालदिग्गजभगतयेथानापतिशूरधीर्॥ देवनृहरियानं दमुकुँदसंतरामतमोरी। खेमश्रीरँगनँदविष्णुवीदवाजूसु तनोरी॥ छितमह्वारकादासमाधोमांडनदामोदर। वाल् नरहरिभगवानकन्हरकेशवसोहँघर॥ दासप्रयागलोहँग गुपालनागूसुतग्रहभक्तभीर्। भुविभक्तपालदिग्गजभग तयेथानापतिशूरधीर् १००॥

चहलपहल॥ दोहा॥ परमारथ अनुसरतही बीचहि स्वारथ होय। खेती कीजै नाजकी सहज घास तहँहोय १॥ घाटम पद॥

---

१ लघु करके पढ़ना॥

जो नर रसना नाम उचारै । केतिक वात आप तरिवेकी कोटि पतित निस्तारै ॥ काम क्रोध मद लोभ तजै जो जीवदशा प्रति-पालै । तीरथ जेतिक ते वसुधापर तिनहूँ के अघटारै ॥ सेनाजाति यद्यपि कुलनीचो सतगुरु शब्दविचारै । घाटमदास रामजो परचै तीनलोक उद्धारै२॥थानापति क्यों न भये ॥ क्षुधारूपिणी कूकरी हरिने दईलगाई । परसा टूकाडारिकै गोविंदके गुणगाई ३।४।५॥

मूल ॥ बद्रीनाथउड़ीसाद्वारकासेवकयेहरिभजनपर ॥ केशौभीमहरिनाथखेतगोविंदब्रह्मचारी । बालकृष्णभल भरतअच्युतआपाव्रतधारी॥ पंडागोपीनाथमुकुन्दागजप तिमहमसु । गुणनिधियशगोपालदेइभक्तनकोसर्वसु ॥ श्रीअंगसदासानिधिरहैपुण्यपुंजभलभागभर । बद्रीनाथ उड़ीसाद्वारकासेवकयेहरिभजनपर १०१ टीकाप्रतापरु द्रराजाकी ॥ श्रीप्रतापरुद्रगजपतिकोवखानकियेलियो भक्तिभावमहाप्रभुपैनदेखहीं । कियेहूउपायकोटिओटिलै संन्यासलियो हियोअकुलायअहोकहूंमोकोपेखहीं ॥ जगन्नाथरथआगेनृत्यकरेंमत्तभये नीलाचलनृपपाइपरयो भागलेखहीं । छातीसोंलगायोप्रेमसागरबुड़ायोभयो अतिमनभायोदुखदेतयेनिमेखहीं ४०५ ॥ मूल ॥ हरिसुय शप्रचुरकरिजगतमेंयेकविजनअतिशयउदार ॥ विद्याप तिब्रह्मदासबहोरणचतुरविहारी । गोविंदगंगारामलाल बरसानियांभारी॥ पियदयालप्रशुरामभक्तिभाईखाटीको । नंदसुवनकीछापकवितकेशवकोनीको ॥ असआशकरण पूरणभिषमजनदयालगुणनाहिपार् । हरिसुयशप्रचुरक रिजगतमेंयेकविजनअतिशयउदार् १०२॥

प्रेमसागर ॥ महाप्रभु जू प्रेम भक्ति देत भये ॥ श्लोक ॥

ज्ञानतःसुलभामुक्तिर्भुक्तिर्यज्ञादिपुण्यतः ॥ ज्ञानयज्ञसहस्रैस्तु हरिभक्तिःसुदुर्लभा २ अर्जुनके रथकी रक्षाके निमित्त अनेक झूठ सांच बोले ऐसे भक्तन सों बँधेहैं पै हरिके बँधेही में शोभा है ॥ श्लोक॥तवकथामृतंतप्तजीवनं कविभिरीडितंकल्मषापहम् ॥श्रवणमङ्गलश्रीमदाततंभुविगृणन्ति येभूरिदाजनाः २ भूरिदा कहिये बड़े दाता जन्म कर्म्म के दूरि करनेहारे सो इन कविन हरिके गुण रूपही वर्णन करे हैं तिन गुणानुवादन को बांचिके जगत् तरिजायगो विश्वास मानि ३ ॥

टीकागोविंदस्वामीकी ॥ गोवर्द्धननाथसाथखेलेसदा झेलेरंग अंगसख्यभावहियेगोविंदसुनामहै। स्वामीकरि ख्यालताकीबातसुनिलीजेनीके सुनेसरसातनैनरीतिअ भिरामहै ॥ खेलतहौलालसंगगयोउठिदांवलैकेमारीखैंच गिल्लीदेखिमंदिरमैंश्यामहै । मानिअपराधसाधूधकादैनि कारिदियो मतिसोअगाधकैसेजानैवहवामहै ४०६ बैठे कुंडतीरजाइनिकसैगोआइवन दियोहैलगाइताकोफल भुगताइये। लालहियेशोचपस्योकैसेजातभस्योवहअस्यो मगमांझभोगधस्योपैनखाइये ॥ कहीश्रीगुसाईजीसोंमो पैकोनभायोकछुचाहौजोखवायोतौपैवाकोजामनाइये।वा कोहुतोदांवमोपैसोतौभावजानौनाहिं कहैंमेसोंवातैशोक मारैंवेगिलाइये ४०७ वनवनखेलेविनवनतनमोकोनेकु भनतजगारीअनगनतलगावैगो । सुधिवुधिमेरीगईभई बड़ीचिंतामोहिंलाइयेजूढूंढ़िजबचैनढिगआवैगो ॥ भोग जेलगायेमैंतौ तनकनपायेरिसवाकीजवजाइ तवसोहिं कछूभावैगो । चलेउठिधाइनीठिनीठिकेमनाइलायेमंदिर मेंखाइमिलिकहीगरेलावैगो ४०८ ॥

सख्यभाव॥ नवप्रकारकी भक्तिहै तामें सख्य बड़ीकठिन है तामें ईश्वरताकी गंध न रहै दृष्टांत बादशाह के खिलवत खवाने अरु दो मित्रनको २॥ विश्वासःसमतानित्यं सख्यत्वंभावउच्यते १ पन्हैयां पहराई नाथजी को खेलत पाषाण की मूरति चैतन्य ह्वै कैसे खेलन लगी ३ यादृशीभावना यस्य ४ गोविन्द स्वामी के अवलों मनभावना रहै याते संगखेले एकगोपहों सो नंदजीके मंदिर में जाइके पगड़ी उतारि लायो लालकी सगाई मारि जाइ है ५॥

गयेहैंबहरभूमितहांकृष्णभूमिआये करीबड़ीधूमआकबौंड़निसोंमारिकै। इनहूंनिहारिउठिमारिदईवाहीसोंजूकौतुकअपारसख्यभावरससारिकै॥ मातामगचाहैबड़ीबेरभईआईतहां कहीबारबारओटपाईडरधारिकै। आयोयोंबिचारअनुसारसदाचारकियो लियोप्रेमढिगकभूंकरतसँभारिकै ४०९ आवतहौभोगमहासुंदरसोमंदिरको रह्योमगबैठिकह्योआगेमोहिंदीजिये। भयोकोपभारीथारडारिकैपुकारकरी मरीनअनीतिजातिसेवायहलीजिये॥ बोलिकैसुनाईअहोकहामनआईतब खोलिकैबताईअजूबातकानकीजिये। पहिलेजुखाइबनमांझउठिजाइपाछेपाऊंकहांधाइसुनिमतिरसभीजिये ४१० मूल॥ जेबसेबसतमथुरामँडलदयादृष्टिमोपरकरौ॥ रघुनाथगोपीनाथरामभद्रदासस्वामी। गुंजमालिचितउतमबिठलमरहटानिष्कामी॥ यदुनंदनगोविंदरामनँदमुरलीसोती। हरिदासमिश्रभगवानमुकुंदकेशवडंडोती॥ चतुरभुजचरित्रविष्णुदासबैनीपदमोशिरधरौ। जेबसेबसतमथुरामँडलदयादृष्टिमोपरकरौ १०३॥

आइतहां देखै तो धूममचाइ रह्योहै माताकहै ओटपाई धूम कौन सों मचाइ रह्योहै इहां तो कोई है नहीं माताको कृष्ण क्यों न दीखे गोविंदस्वामी को कैसेदीखे गोविंदस्वामी श्रीकृष्ण के संगते अप्राकृतभयो यातेदीखे जैसे कच्चोआंब पालसों पकै खटाई जातिरहै मिठाई ह्वैजाइ जैसे ध्रुव भगवान्‌के संगते अप्राकृतभये ऐसेही गोविंदस्वामी अप्राकृतभये मतिरसभींजिये विट्ठलनाथ जी की मति रसमें भीजिगई सो सख्यभाव में भीजिगये हैं २॥

टीकागुंजामालीकी ॥ कहौनामास्वामीआपगायोभैं प्रतापसंत वसैब्रजवसैंसोतौमहिमाअपारहै । भयेगुंजा मालीगुंजहारधारुनामपस्यो कस्योवासलाहौरमेंआगेसु नौसारहै ॥ सुतवधूविधवारोवोलिकैसुनायोलेहु धनप तिगेहुश्रीगुपालभरतारहै । देवोप्रभुसेवामांगेनारिवारि वारयहै डारैसबवारियापैगनैजगत्रारहै ४११ दईसेवा वाहिऔरघरधनतियादियो लियोब्रजबासवाकीप्रीतिसु निलीजिये । ठाकुरविराजैंजहांखेलैंसुतऔरनके डारेईंट खोवारयोप्रभुपरखीजिये ॥ दियेवेधिडारिधस्योभोगपैन खातहरि पूत्रीकहीवेईआवैंतवहींतोजीजिये । कह्योरिस भरिधूरिनींकेभोरडारोंभरि खावोहमहाहाकरीपायोलाड़ रीभिये ४१२ मूल ॥ कलियुगयुवतीजनभगतराजम हिमासवजानेजगत ॥ सीताभालीसुमतिशोभऊमाभ टियानी । गंगागौरिउँबीठगुंपालिगणेशदेरानी ॥ कला लखाकृतगढ़ौमानमतिशुचिसतभामा । यमुनाकोलीर मामृगाभक्तनविश्रामा ॥ युगजीवाकमलादेवकीहीराह

रिचेरीभगत। कलियुगयुवतीजनभक्तराजमहिमासबजा नेजगत १०४॥

भक्तराज॥ स्कान्दे॥ स्त्रियोवायदिवा शूद्रो ब्राह्मणःक्षत्रियोपि वा॥ पूजयित्वाशिलाचक्रं लभतेशाश्वतंपदम् १ दोहा॥ रामरंग लाग्यो नहीं विप्र जनेऊ वाह॥ रज्जब लोना तागलगि चक्र चूनरी वाह २ महिमा वह सब भक्त राज है जाति पांति की गनती नहीं एक पंगति में राखी रानी ब्राह्मणी कोली भटियानी रैदासिनी भक्तिही श्रेष्ठ है जहां भक्ति तहां भगवान् शवरीके गये अभिमानी ऋषिनके न गये प्रीति की रीति सांची जानी॥

टीकागणेशदेरानीकी॥ मधुकरशाहभूपभयोदेशओ ढछेकोरानीसोगणेशदेसुकामवाकोकियोहै। आवैंबहुसं तसेवाकरतअनंतभांति रह्योएकसाधुखानपानसुखलियो है॥ निपटअकेलीदेखिबोल्योधनथैलीकहांहोइतौवताऊं सवतुमजानौहियेहै। मारीजांघछूरीलखिलोहूवेगिभागि गयो भयोशोचजानेजिनिराजावंददियोहै ४१३ बांधि नीकीभांतिपौढ़िरहीकहीकाहूसोंन आयोढिगराजामति आवोतियाधर्म्महै। वीतेदिनतीनजानीवेदननवीनकछू कहियेप्रवीणलोसोंखोलिसबमर्महै॥ टारीबारदोइचारि नृपकेविचारपर्योकह्योसावधानजिनिआनौजियभर्महै। फिर्योआसपासभूमिपारितनरासकरी भक्तिकोप्रभाव छां ड़ितियापतिशर्म है ४१४॥

आवैं बहुसंत वह तरंगके पै सबही को सेवै कह्यो सावधान॥ कवित्त॥ संतहैं अनंत गुण अंतको न पावै याको जाने रसवंत कोई रीझै पहिचानि कै। औगुण न दीठिपरै देखतही नैन भरै धरै पगओर उर प्रेम भरि आनि कै॥ जोपै कछू घाटि किया देखि

पति इनमांझ करिलै विचार हरिहीकी इच्छा मानिके। बालक शृंगारके निहारि नेहवती माता देतिहै दिठौनाकारो दीठि दुर जानिके ॥ दोहा ॥ कामी साधु कृष्ण कहि लोभी बावन ज़ानि॥ क्रोधीको नरसिंहहीं नहीं भक्ति की हानि २ जाको जैसो सुभाव जाय नहिं जीवसों ॥ नींव न मीठी होइ सींचि गुड़ घीव सों ३ कोइला होइ न ऊजला नौमन साबुन लाइ ॥ मूरख को समझावनो ज्ञान गांठिको जाइ ॥ काहू ने कही सुन्दर क्यों न भये तापै दृष्टांत राजा आशकरनको और साहबजादे फकीरको प्रसंग १ ॥

मूल ॥ श्रीहरिकेसम्मतजेजगततेदासनकेदासजू ॥ नरवाहनवनवारिपूर्णमलराजविदावत। धाराजंगिजयंत रुपाअनभइउदरावत ॥ गंभीरेअर्जुनजनार्दनगोविंदजीता। दामोदरसांपिलेगदेश्वरहेमविदीता ॥ मयानंदमहिमाअनंतगुढ़िलेतुलसीदासजू। श्रीहरिकेसम्मतजेभगततेदासनकेदासजू १०५ टीकानरवाहनजीकी ॥ हैभैगांवनांवनरवाहनसोसाधुसेवी लूटिलईनावजाकीवंदीखानेदियोहै। लौंडीआवैदेनकछुखाइबेकोआईदया अतिभ कुलाइलैउपाइग्रहकियोहै ॥ बोलीराधावल्लभश्रोलेवोहरिवंशनामपूछेशिष्यनामकह्योपूछीनामलियोहै। दईमैं राखायदस्तुराखियोदुराइबात आपुदासभयोकहीरीझिपददियोहै ४१५ मूल ॥ प्रभुश्रीमुखपूजासंतकीआपुनतेअधिकीकही ॥ यहैवचनपरिमानदास जदियानैभाऊ। बूंदीवनियाराममड़ोतैंमोहनदाऊ ॥ मांडौढीजगदीशलपनचटथावरभारी। सुनपथमेंभगवानसवैसलखानउधारी ॥ जगजीवनेरगोपालकेभक्तइष्टतानिर्मही। प्रभुश्रीमुखपूजासंतकीआपुनतेअधिकीकही १०६ टीकाजो

वनेरगोपालकी ॥ जोवनेरवाससोंगुपालभक्तइष्टताको कियोनिरवाहवातमोकोलागीप्यारिये । भयोहौविरक्त कोऊकुलमेंप्रसंगसुनौ आयोयोंपरीक्षालेनद्वारपैविचारि ये ॥ आइपरयोपाइँपाइँधारोनिजमंदिरमेंसुंदरीनदेखौसु खपनकैसेटारिये । चलौजिनिटारौतियारहैगीकिनारो करिचलेसवक्लिपीनेकुदेखियाकेमारिये ४१६ ॥

लूटिके सेवे तो पापलगैगो जगत्के पाप पुण्य मिथ्या जाने स्वप्नवत् ताकोफल दुखःसुख कहा जैसे व्यभिचारिणी स्त्रीके स्वप्न को फलझूठो सेवामें सांचो॥यादृशीभावना यस्य १ दईऊंचे को देखि याभे मारिये ४१५ मँगवाई १ कामदार बोले तीनि लाख तीस हजार को माल क्यों फेरि दियो नरवाहन बोले ॥ जो हरिवंशको नाम सुनावै तनमन धन तापै बलिहारी। जो हरि- वंश उपासक सेवै सदा सेऊँ तेहि चरण विचारी ॥ श्री हरिवंश गिरा यश गावे सर्वस देहौं तेहिपर वारी। जो हरिवंश को धर्म सिखावे सो मेरे प्रभुते प्रभु भारी ॥ पददियो ॥ पद ॥ मंजुल कल कुंज देश राधा हरि विशद वेश राका नभ कुमुद चंद शरद यामिनी। श्यामल द्युति कनक अंग विहरत मिलि एक संग नीरद मनो नीलमणि लसत दामिनी ॥ अरुण प्रीति नवदुकूल अनुपम अनुरागमूल सौरभयुत शीत अनिल मंदगामिनी। कि- सलय दल रचत सेन बोलत पिय चारुवैन मानस हित प्रति पद प्रतिकूल कामिनी ॥ मोहन मन मथन मार परसत कुचनी विहार नेपथयुत नेति नेति वदति भामिनी । नरवाहन प्रभु सकेलि वहु विधि भर भरति झेलि सो रति रस रूप नदी ज- गत पावनी २ चलि हे राधिके सुजान तेरे हित सुख निधान रास रच्यो श्याम तट कलिंदनंदनी। निर्त्तत युवतीसमूह राग रंग अति कुतूह बाजत तमूल मुरलिका अनंदनी ॥ वंशीवट निकट जहां परम रवनि भूमि तहां सकलसुखद मलय बहै वायु

मंदनी। जाती ईषत् विकास कानन अतिशय सुवास राका निशि शरद मास विमल चंदनी ॥ नरवाहनप्रभु निहारि लोचनभरि घोषनारि नख शिख सौंदर्य कामदुखनिकंदनी। विलसो भुज ग्रीवमेलि भामिनि सुखसिंधु झेलि नवनिकुंज स्यामकेलि जगत वंदनी ३ आपन ते अधिक पूजा अष्टप्रकार की ब्राह्मण भोजन अग्नि होम जल मंत्र गोत्रन वैष्णव उदर और इत्यादि ४ आदिस्तुपरिचर्यायां सर्वाङ्गैरभिवन्दनम्॥ मद्भक्तपूजाभ्यधिकास र्वभूतेषुमन्मतिः ५ ॥

एकपेतमाचोदियोदूसरेनेरोपकियो देवोयाकपोलपै योंवाणीकहीप्यारिये। सुनिआंसूभरिआये जाइलपटाये पांयकैसेकहीजाइयहरीतिकछुन्यारिये ॥ भक्तइष्टसुनोमे रेवड़ोअचरजभयोलईमैंपरीक्षामोकोभईशिक्षाभारिये। बोलेअकुलाइअजूऐपेकहांभायऐपै साधुसुखपायकहैंय हीमेरोज्यारिये ४१७ मूल ॥ वरपरमहंसवंशानमेंभयो बिभागीवानरो॥ मुरधरिखंडनिवासभूपसबआज्ञाकारी। रामनामविश्वासभक्तपदरजव्रतधारी ॥ जगन्नाथकेद्वार दंडवतप्रभुपरधायो। दईदासकोदाँदिहुँडीकरिफेरिपठा यो॥ सुरधुनीओघसंसर्गतेनामबदलिकुत्सितनरो। वर परमहंसवंशानमेंभयोबिभागीवानरो १०७ टीकाला खाभक्तकी ॥ लाखानामभक्तताकोबानरोबखानकियो कहैंजगडोमजासोंमेरोशिरमौरहै। करैसाधुसेवाबहुपाक डारिमेवासंतजेंवतअनंतसुखपावैंकौरकौरहै ॥ ऐसेमेंअ कालपर्योग्राममेंघरमालजालकैसेप्रतिपालकरैं ताकीऔर ठौरहै। प्रभुजीस्वपनदियोकियोमैंयतनएकगाड़ीभरिगे हूंभैंसआवैकरोगौरहै ४१८ ॥

विभागी वानरो ॥ भगवान्की भक्तिरूपी संपत्ति चारों बांटि पावें ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र काहूसों घटती नहीं जैसे काहू के चारि पुत्र पंडित मूर्ख निर्धन पंगुला सबही बांटि पावें कुत्सित ॥ नारदपञ्चरात्रे ॥ यस्माद्यस्मादपिस्थानाद्गङ्गायामम्भआपतत् ॥ सर्वभवतिगाङ्गेयंकोनसेवेतबुद्धिमान् १ दोहा ॥ तुलसी नारो जगत को मिले संग में गंग ॥ महानीचपन आदिको शुद्ध करै सतसंग २ नीर नगर को परशुराम् ता समरत अज्ञान ॥ साधु समागम सुरसरी मिल इक होत समान ३ ॥

गेहूंकोठीडारिमुहुंमूंदिनीचेदेखौखोलि निकमेअनो लिपीसिरोटीलैबनाइये । दूधजितोहोइसोजमाइकेविलो ईलीजेदीजेयोंचुपरिसंगछांछदैजिमाइये॥ खुलिगईआंखें भाखेंतियासोंजुआज्ञादई भईमनभाईआजुहरिगुणगाइ ये । भोरभयेगाईभैंसिआईवहीरीतिकरीकरीसाधुसेवाकी प्रतीतिप्रीतिगाइये ४१९ संतसेवारीतिप्रभुप्रीतिहूबखा नकीजेलीजेउरधारिसारभक्तिनिरधारहै । रहैढिगगांवत हांसभाएकठांवगईडाटिगयेभाईसोठगाहीकोविचारहै ॥ बोलिउठ्योकोऊयोंव्योहारकोतोभारचुक्यो लीजियेसँभा रिलाखासंतभवपारहै । लाजदबितिनादियेगेहूंलैपचास मन दईनिजभैंससंगसबसरदारहै ४२० मारवाड़देशते चल्योईसासटांगकियेहियेजगन्नाथदेवयाहीपनजाइयोने हभारिभारीदेहवारिफारिडारीकैसे करैतनधारीनेकुश्रमभु रभाइये ॥ पहुँच्योनिकटजाइपालकीपठाइदई कहैलाखा भक्तकोनवेगदेवताइये । काहूकहिदियोजाइकरगहिलि योअजू चलोप्रभुपासइहिक्षणहींबुलाइये ४२१ कैसेच लौंपालकीमेंप्रणप्रतिपालकीजे दीजेमोकोदानयाहिभां

तिजानिहारिये। बोलप्रभुकहीयोंसुमिरनीबनाइल्यायेश्र
बपहराइमोहिंसुनिउरधारिये॥ चढ़ेचढ़िवढ़ेकियोबाहिंग्र
हजानींभैंतो पढ़िपढ़िपोथीप्रेममोपैविसतारिये। जाइ
कैनिहारेतनमनप्राणवारे जगन्नाथजूकेप्यारेनेकढिगतेन
टारिये ४२२॥

बोलीदेवता पितृ अतिथि इनको अणियारहै न देइ तो ताते
लाखाको दीजे १ एकोपिकृष्णस्यकृतःप्रणामोदशाश्वमेधावभृथेन
तुल्यः॥दशाश्वमेधीपुनरेतिजन्मकृष्णप्रणामीनपुनर्भवाय २॥ बड़े
गहैं कर होत बड़ ज्यों बावनकरदंड। मौजी प्रभुको संग बड़ गंधो
अखिलब्रह्मांड ३॥

बेटीएककारीब्याहिदेतनबिचारीमनधनहरिसाधुनको
केसेकैलगाइये। दीजैवाकोकार्यकहीजगन्नाथदेवजूनेली
जैमोपैद्रव्यउरनेकहूनआइये॥ बिदापैनभयेचलेदंगसन
लयेगयेआगेनृपभक्तमगचौकीअटकाइये। दियोहैस्वप
नप्रभुजनिहठकरौअजू हुंडीलिखिदईलईबिनैकैजनाइ
ये ४२३ हुंडीसोहजारकीलैगृहद्वारआयेजव ताहीमेल
गायेलोकवेटीब्याहकियोहै। औरुसबसंतनबुलाइकैख
वाइदियेलियेपगदाससुखराशिप्रणलियोहै॥ ऐसेहीबहु
तदामवाहीकेनिमित्तलैलै साधुभुगतायेअतिहरषतहियो
है। चरितअपारकछूमतिअनुसारकह्योलह्योजिनस्वाद
सोतौपाइनिधिजियोहै ४२४॥

पद॥ हरिके जनकी अतिठकुराई। महाराज ऋषिराज देव
मुनि संकुचि रहत शिरनाई॥ दृढ़ विश्वास कियो सिंहासन ता
पर बैठेभूप। हरि जस छत्र विमल शिरसाजत राजत परम अ-
नूप॥ निशिप्रहदेश राजकरताको लोकन अति उत्साह। काम

क्रोध मद मोह लोभ ये भये चोरते शाह॥ अर्थ कामकहूँ दूरिगये दुरि धर्म मोक्ष शिरनायो। बुधि विवेक दोउ पवँरि पवँरिया समय न कबहूं पायो॥ अष्टसिद्धि नवनिद्धि चातुरी करजोरे आधीनी। छरीदार बैराग विनोदी झरक बाहिरी भीनी॥ हरिपद पंकज प्रीति प्रियावर ताही सों अनुराता। मंत्री ज्ञान न अवसर पावै बातकहत सकुचाता॥ माया मोह न व्यापे कबहूं जो यह भेदहि जाने। सूरदास पदटरत न टारे गुरुप्रसाद पहिंचाने १॥ धन हम तो गुमस्ता ऐसे॥

मूल॥ जगतविदितनरसीभगतजिनगुज्जरधरपावनकरी॥ महास्मारतकलोगभक्तिलवलेशनजाने। मालामुद्रादेखितासुकीनिंदाठाने॥ ऐसेकुलउतपन्नभयोभागवतशिरोमनि। ऊसरतेसरकियोपंडदोषहिखोयोजनि॥बहुतठौरपरचेदियेरसरीतिभक्तिहिरदैधरी। जगतविदितनरसीभगतजिनगुज्जरधरपावनकरी १०८ टीकानरसीमहिताकी॥ जूनागढ़बासपितामाततननाशभयेरहैएकभाईऔभौजाईरिसिभरीहै। डोलतफिरतआइबोलतपिवावोनीरभाभीपैनजानीपीरबोलीजरीबरीहै॥ आवतकमायेजलप्यायेबिनसरैकैसे पियोयोंजुवाबदियोदेहथरहरीहै। निकसेविचारकहूंदीजेतनडारमानों शिवपैपुकारकरीरहेचितधरीहै ४२५ बीतेदिनसातशिवधामतेनजातद्वारपरैकाहूतुच्छाहारसोऊसुधिलेतहै। इतनीबिचारिभक्तप्यासदईढारि लियोप्रकटस्वरूपधारिभयोहितहेत है॥ बोलेवरमांगिअजूमांगिमैंनजानतुहौं तुम्हैंजोइप्यारोसोइदेवोचितचेतहै। पथ्योशोचभारीमेरीप्राणप्यारीत्यारीतासोंकहतडरत्तवेदकहैंनेतिनेतहै ४२८

पावनकरी पहले अपावनता कैसी है जाहि पावनकियो जैसे खाई नद अरावो बड़ोहोइ तो ताको सरकरै सो शूरमा कहावै अरु शोभापावै ऐसे अपावन बड़ी होइ तब पावन की शोभा सो नरसी तो अभक्तदेश जीतिकै भक्तिको राज्यकियो १ महाभारतक लोग स्मारतकर्ता यह कर्म करिकै नामलीजे के सरिजाइ ॥ अष्टमे॥ मंत्रतस्तंत्रतश्छिद्रंदेशकालार्हवस्तुतः ॥ सर्वंकरोतिनिश्छिद्रंनाम संकीर्त्तनंतव २ ऐसो क्यों बांकीगढ़ी सुरंगसो टूटै है ॥

दियोमैंकृकासुरकोत्ररडरभयोजहां ,वैसेवरकोटिकोटि यापैंवारिडारेहैं । बालकनहोइयहपालकहैलोकनकोमन कोविचारकहादीजेप्राणप्यारेहैं ॥ जोपैनहींदेतमेरोबोलि वोअचेतहोतदियोनिजहेततनआलिनकेधारेहैं । लायेवृ न्दावनरासमंडलजटितमणि प्रियाअनगतबीचलालजू निहारेहैं ४२७ हीरनिखचितरासमंडलनचतदोऊरचत अपारनृत्यगानतानन्यारिये । रूपउजियारीचंदचांदिनी नसमतारीदेतकरतारीलालगतिलेतप्यारिये ॥ ग्रीवकीढु रनिकरअँगुरीमुरनिमुखमधुरसुरनिसुनि श्रवणतापारि ये । बजतमृदंगमुरचंगसंगअंगअंग उठततरंगरंगछवि जीकीज्यारिये ४२८ दईलैमशालहाथनिरखिनिहालभ ईलालदीठिपरीकोऊनईयहआईहै । शिवसहचरीरंगभ रीअटकीबातमृदुमुसुकातनैनकोरमेंजताईहै ॥ चाहैंया हिटारयोयहचाहैप्राणवाख्योतव श्यामढिगआइकहिनीके समुभाईहै । जावोयहध्यानकरौ करौसुधिआऊँजहांआ येनिजठौरचटपटीसोलगाईहै ४२९ ॥

बजत मृदंग ॥ कवित्त ॥ पियप्यारी दोऊमिल रासको मचाइ रहे देखै जो निहारि वाहि रही न संभारहै । तना थेईथेई कहि

करत हैं नृत्यगति रंग लोभरत पेख सकुचत मारहै ॥ बाजत मृदंग सुरचंग उठत उमंग गावतहै ताल संगलाग्यो प्रेम लारहै। शरद समाज घन वृन्दावन प्रकटभो कहै कवि कोन जाको पावे नहीं पारहै १ भागवते॥वलयानांनूपुराणांकिंकिणीनांचयोषिताम्॥ सप्रियाणामभूच्छब्दस्तुमुलोरासमण्डले २ बकारते मानिये ३ ॥

कीनीठौरन्यारी बिप्रसुताभईन्यारीएकसुताउभैवारी जगभक्तिबिसतारीहै । आवैबहुसंतसुखदेतहैंअनंतगुण गावतरिझावतऐसेवाविधिधारीहै॥ जितीद्विजजातिदुख भयोअतिगातमानीबड़ोउतपातदोषकरैनविचारीहै । ये तोरूपसागरमेंनागरमगनमहा सकैकहाकरिचहूंओरागि रिधारीहै ४३० तीरथकरतसाधुआयेपुरपूछेकाऊहुंडी लिखिदेहिंहमैंद्वारकासिधारिये । जेवरहैदूषिकहीजातही भगावैभूखनरसीबिदितसाहआगेदामडारिये ॥ चरणप करिगिरिजावोसुलिखावोअहोकहोवारवार सुनिविनतीन टारिये । दियोलैबतायघरजायवहीरीतिकरी भरीअङ्कवा रिमेरेभागरूहावारिये ४३१ सातसैरुपैयागनिढेरीकरि दईआगेलागेपगदेवोलिखिकहोबारबारहै । जानीवहैंका येप्रभुदामदेपठायेलिखि क्रियेमनभायेसाहसांवलउदार है ॥ बाहीहाथदीजेपैलेकीजियेनिशङ्ककाज गयेयदुराज जानीपूछोसोबजारहै । ढूंढ़िफिरिहारेभूखप्यासमीड़िडारे पुर तजिभयेन्यारेदुखसागरअपारहै ४३२ ॥

कीनी ठौर न्यारी ॥ सवैया ॥ देव औ दानव दोऊ छले बलिहू को छल्यो बलि बावन यातें । आनि छल्यो सिगरो ब्रजरी पुनि एसो छली नहिं ओर है तातें ॥ होहु छली छलमों कह्यो वेद हो जानि परी न किशोर की घातें । मोहिं घरी कु जिवायो चहै तो

करौ कि न वाही विश्वासी की बातैं १ आवैं बहुसंत ॥ दोहा ॥ नागरलो हरिरूप पर सागर पग न रसाल ॥ मत आगर जागर सदा सेवत संत मराल २ दोष ॥ मृदुसों मृदु अति कठिनहै कठिन मन्दमतुसार ॥ अलि अंबुज में दुरिरह्यो काटे काठ अपार ३ ॥

शाहकोस्वरूपकरिआयेकाँधेथैलीधरि कोनपासहुंडी दामलीजियेगिनाइकै। बोलिउठेढूँढ़हारेभलेजूनिहारआ जुकहीलाजहमैंदेतमैंहूंपायेआइकै ॥ मेरोहैइकोसौवास जानैकोऊहरिदास लेवोसबराशिकरोचीठीदीजेजाइकै। धरेहैंरुपैयाढेरलेखोकरोवेरवेर फेरिआइपातीदईलईगरे लाइकै ४३३ देखिआयेशाहदौरिमिलेउतसाहअंगवेउरं गवोरेसतसंगकोप्रभावहै। हुंडीलिखिदईदामलियेसोख वाइदियेकियेप्रभुपूरेकामसंतनसोंभावहै ॥ सुतासुसरारि भयोकछुकविचारिसासुदेतबहुगारिजाकेनिपटअभावहै। पितासोंपठाइकहीछातीलैजराईइन जोपैकछूदियोजाइ आवोइहिदावहै ४३४ चलेगाईटूटीसालेवूढ़ेउभैबैलजो रिपहुँचेनगरछोरहिजकहीजाइकै । सुनतहिआईदेखिमु हँपियराईफिरीदामनहींएकतुमकियोकहाआइकै॥ चिंता जनिकरौजाइसासूदिगढरोलिखिकागदमेंधरौ अतिउत्त मअघाइकै। कहीसमुझाइसुनिनिपटरिसाइउठी कियेप रिहासलिख्योगांवखुनसाइकै ४३५ ॥

आये ॥ कवित्त ॥ वलिजूके नित्त चित्त रहतही मेरे हिये हरि जू की भक्ति मेरे आईहै कि नाहिंने। मोरध्वज करत विचार यह बारवार कबहूँक प्रभु अपनाइहैं कि नाहिंने ॥ पारषद दोऊ सोऊ चहतहैं मनको निवेश ओर देश हमैं होइगो कि नाहिंने। गुणगण

स्वानि भगवानं जोई लीला करैं साधुसुख इच्छा हेतु और हेतु नाहिंने १ जानेहरिदास बोले हम हरिदास नहीं तुम दामदास हो मिले कैसे नरसीजी के सङ्गते जो कछू नरसी को लिख्यो चिट्ठी में आयो सो सब देनौं २ ॥

कागदलैआईदेखिदोसरेफिराईपुनि भूलेपैनपाईजा तपाथरलिखाये हैं। रहिवेकोदईठौरफूटीदईपौरिजहांबैठे शिरमौरआपबहुसुखपायेहैं ॥ जलदैपठायोभलीभांतिकै औटायोभई बरषासिरायोसोसमोइकेअन्हाये हैं। कोठरी सँभारिआगेपरिदासोदियोडारि लेवजायेतालवेसअगि नितआयेहैं ४३६ गांवपहरायोछविछायोयशगायोअहो हाटकरजतउभैपाथरह्वैआयेहैं । रहिगईएकभूलेलिखन अनेकजहां लेहौताहीपासजापैसबमिलपायेहैं । विनती करतिवेटीदीजियेजूरहैलाज दियोमैंगवाइहरिफेरिकैवु लाये हैं। अंगनसमातिसुतातातकोनिरखिरंग संगचली आईपतिआदिविसराये हैं ४३७ ॥

जलदै पठायो जल लावनवारे बोले मूंड़ तो ढको तब कही बावरे हो मूंड़ उघारिके लज्जा छोड़िके हरिको भजन करिये ये अपनी ओर खेंचें वे अपनी ओर खैंचें जैसे निपट और बादशाह को प्रसंग १ लै बजायेताल ॥ कवित्त ॥ लयकरि ताल बानी बोले सो रसाल सुनियो नंदलाल मैं कहावत ब्रजराजको । गणिका सी नारी तारी प्रहलाद भीर टारी कुब्जिजासुधारी कान्ह द्रौपदी की लाज को॥ चरणद्रोही वधिक तारयो गजने पुकारयो केवल रामआये सुदामा गृहकाजको। नरसी की बार हरि क्यों अबार लागे आव आये ततकालरूप धरिके बजाजको २ रहैलाज नाहीं तौ नाककटगी तब नरसीजी बोले कै नाककटैगी तौ कृष्णकी रहैगी तापै दृष्टान्त ब्रजोह लालखारी को सुतादोइ नरसी के कुवँर

सेना रतनसेना ये तौ बेटीनकेनामहैं आगे विस्तार कह्योहै ३ ॥

सुताहुतीदोइमोइभक्तिरहीघरहीमें एकपतित्यागिए रूपतिहूनकियोहै। भूमिमेंफिरतउभैगाइनिसोंचाइनिसों धनसोंनभेंटकाहूनामकहिदियोहै ॥ आइलागीगाइवेको कहीसमुझाइअहोपाइवेकोनहींकछुपावैदुखहियोहै। चाहैहरिभक्तितोमुड़ाइकैलड़ाइलीजै कीजैवारदूरिरहीप्रेमरसपियोहै ४३८ मिलीउभैसुतारंगभ्झिलीसंसगाइनि वे चाइनिसोंनृत्यकरैभाइनिवताइकै। सालंगहैनाममामा मंडलीकमंत्रीरहैकहैविपरीतिवड़ीराजासोंसुनाइकै ॥ बड़ेबड़ेदंडीअरुपंडितसमाजकियो करौवाकीमंडीदेशदीजियेछुड़ाइकै। आयेचारिचोबदारचलोजूविचारकीजै भयोदरबारहमैंदियोहैपठाइकै ४३९ चारौतुमजावोदूरिभयोहमैंराजाडर सकैकहाकारिअजूचलैसंगसंगही। नाचतबजावतयेचलीढिगगावतसुभावतमगनजानी भींजिगईरंगही ॥ अयेवाहीभांतिसभाप्रवलत्रहूतभई तऊ बोलेरीतियहयुवतीप्रसंगही। कहीभक्तिगन्धदूरिपड़ेपोथीपरीधूरिश्रीशुकसराहीतियामाथुरनभंगही ४४० ॥

पति त्यागि ॥ कुंडलिया ॥ नारी तजै न आपनो सपनेहू भरतार। गुंग पंगु बहिरा बधिर अंध अनाथ अपार ॥ अंध अनाथ अपार वृद्धबाचन अतिरोगी। बालक पंड कुरूप सदा कुवचन जड़योगी ॥ कलही कोढ़ी भीरु चोर ज्वारी व्यभिचारी। अधम अभागी कुटिल कुमति पति तजै न नारी १ ॥ छप्पै ॥ पिताबचन प्रहलाद मेटि अपनो मतठान्यो। बलिराजा गुरु वचन नेकु हिरदे नहिं आन्यो ॥ दई स्वामिको पीठि बिभीषण कुल मरवायो।

गोपिन पतिव्रत त्यागि कियो अपनो मनभायो ॥ निगम निरूपहि मंद कर्मकी लगी नहीं प्रतिवाइहे । हरि धर्महिके साधे जगन्नाथ धरम ह्वै जाइहै २ ॥ पोथी ॥ दोहा ॥ पोथी तो थोथी भई पण्डित भयो न कोइ ॥ एकै अक्षर प्रेमको पढ़े सुपंडित होइ ३ शुक सराही ॥ भागवते ॥ धिग्जन्मनस्त्रिवृद्विद्यां धिग्व्रतंधिग्बहुज्ञताम् ॥ धिक्कुलंधिक्क्रियादाक्ष्यं विमुखायेत्वधोक्षजे ४ ॥ पद ॥ हम सबहि मन्दभाग भगवान सों विमुखभये धन्य वे नारि गोविंद पूजे ॥ मूंदिरहे नैन हम सबै उलूक ज्यों भानु भगवान आये न सूझे ५ संग गोधन लगे खेल रसरंगमगे भोरके निकसि भूखे आइये ॥ देहु तो भात करजोर ग्वालन कह्यो अहो भूदेव तुमपै पठाये ६ केवल करुणा टरनि प्रात भोजन करनि निगमहू अगम महिमा पतावै ॥ कहां प्रभुकी यचनि हमरे मदकी मचनि देवकी रचनि कछु कहि न जावै ७ शौच आचार गुरुकुलहि सेवा कछू कुटिल करकश हिये बुद्धिहीनी ॥ देखो इन तियनिको भाग या जगत में सच्चिदानन्द के रंगभीनी ८ उमँगि पहिले चली पार संसार के सांवरो कुँवर हिय मांझ पोयो ॥ धरि रहे कूर सुरलोक आशा अलप पाइ अमी आशु अछूत निचोयो ९ तिया कौतुक मिली कछुक जानी चली कमलिनी हियो मनना मिलावैं ॥ शेष त्रिपुरारि ब्रह्मादि सनकादि सुख चरणकी रेणु शिरपर चढ़ावैं १० यदपि नारायण अवतार यदुकुल विषे सुन्यो बहु भांति तौ मनन आये ॥ देखो या देवकी माया अतिमोहिनी दई दृग धूरि हम सब भुलाये ११ धिक् जन्म जाति कुल क्रिया स्वाहा स्वधा योग यज्ञ जप तप सकल धिक हमारे ॥ ज्ञान विज्ञान धन धर्म कछु कर्म नहीं ईश पद विमुख आरँभन सारे १२ गृह आगार संसार दुख सम्भवे मिथुन मृग निरमयो मन मिलावे ॥ सूरकी शोर हरि विमुख जगमें बड़े बूझि गयो दीप जब बड़ कहावे १३ ऐसे संसारी जीव बड़े कहावें साधु उन्हें छोटो मानें ॥

बोलिउठोविप्रएककछुकप्रसंगदेख्यो कह्योरसरंगभ

च्योढच्योनृपपाइमें । कहीजूबिराजोगाजोनितसुखगाजो जाइकियेहरिराइवशभीजेरहोभाइमें ॥ धारेउरऔरशिर औरप्रभुमन्दिरमें सुंदरकेदारोरागगावैभरेचाइमें । श्याम कंठमालटूटआवतग्लालहिये देखिदुखपायेपरेबिमुखसु भाइमें ४४१ नृपतिसिखायोजाइवृथायशछायोकाचे सू तमेंपुहायोहारटूटैरूणातकरीहै । माताहरिभक्तभूपकहो जनिकरोकाननऊबाधि राजसकीमायामतिहरीहै ॥ गयो ढिगमंदिरकेसुंदरमैंगाइभाट तागोबटवाइकरिमालागुहि धरीहै । प्रभुपहिराइकहेगाईअबजानिपरै भरैसरराग औ रगायोपैनपरीहै ४४२ बिमुखप्रसन्नभयेतबतौउदारनैदे नयेनयेचोजहरिसनमुखभाखिये । जानेग्वालबालएकमा लगहिरहेहिये जियेलख्योचहीरूपकह्योलाखलाखिये ॥ नारायणबडेमहाअहोमेरेभागलिख्यो करैकौनदूरिछबि पूरिअभिलाखिये । मरौकहाजाइआपपरसैकलंकतुम्हें राखियेनिशंकहारभक्तिगाइरिनाखिये ४४३ ॥

नयेनये चोज ॥ सवैया ॥ अति सूधो सनेह को मार ग है जहँ नेकु सयानप बांक नहीं । तहँ सांचे चलै तजि आपनपौ झि-झकै कपटी जु निसांक नहीं ॥ घन आनँ प्यारे सुजान सुनौ इत एकते दूसरो आंक नहीं । तुम कौन धौं पाटी पढ़े हौ लला मन लेत पै देत छटांक नहीं १ ॥ प्रण राखि लियो तुम भीषमको क्षणमें गजराजके काजको धायो । देत बिलंब न लायो सुदामहिं पावक ते प्रहलाद बचायो ॥ दीनदयाल सुने मनीराम सुयाही ते मैं चित दे गुण गायो । मैं तौ गरीब गरीब रह्यो तुम कैसे गरीबनिवाज कहायो ॥ बड़ी गरीबी गोबिंदा जो पै होइ ग-रीब २ ॥ मेरे भाग लिख्यो ॥ श्लोक ॥ लिखिता चित्रगुप्तेन

ललाटेक्षरमालिका ॥ नसापिचालितुंशक्या पण्डितैस्त्रिदशैरपि ३ कवित्त ॥ दीननके पाल ब्रजपाल हो अनथपाल गाइनके पाल नेकु इतैहू निहारिये। बैकुंठकेपाल हरि चौदहभुवनपाल बिरद के पाल निज बिरद सँभारिये॥ भक्तपाल धर्मपाल स्रष्टिपाल हे कृपाल हूजिये दयाल और भाँति न बिचारिये। सुरन के पाल कहौ सूरति बिहाल अब येहो जू गोपाल लाल मोहिं ना बिसारिये ४॥ पद॥ बधिरभयेशोदेवा बधिरभये लो। अपनो बिरद क्यों विसरे लो॥ कोपियो मडनी कन्हाने मारिसी। मूढ़ डीक भूलिदात्रि थापसी भक्तिकरो तो नरसी॥ योमारि थो तो भक्तबछल तारो बिरद जाइसी। मलेच्छनी जाति कबीर उधारो ना माना छाप॥ राग पोकाई॥ जेदेव नेपद मापती आपी माला ने अबमूक भाई। जाइ न फूल सूतनो धागो दोइदमड़ी ने मोल पायी॥ नरसी ने एकहार ले आपतांता रात्रापनावा परस्पोजावी ५॥ दोहा॥ आशिक शिर अपना अरे धरदे पैरो लाइ॥ चे निशाफ नहवूबके करे दूर अनखाइ ६॥ भूलना॥ जिस दे परे न परीया कंडा सो घाव दरद क्या जाने। पे दरदान इश्क सुहेला इश्कंजना दे भाने॥ शिर लाहु लटू देसके सो कछु इश्क सयाने। कहे भगवान हित रामराइ प्रभु हार न दिल विच आने ७॥

रहैतहाँसाहुकियेउभैलै बिवाहजानैतियाएकभक्तकहेहरिन्नोदिखाइये। नरसीकहीहींमलैसोईप्रभुबाणीलईसांचकरिदईगयेरागछुटवाइये॥ बोलेपटखोलिदियेकियेदरसानतानेतानेपटसोंवेहकहीदेवोभाइये। लियेदामकासकियेनागदगहायदियो दियोकछुखाइवेकोपायोलैभिजाइये ४४४ गहनेधरयोहौरागकेदारोकोसाहघरधरिरूपनरसीकोजाइकैछुड़ायोहै। कागदलैडारयोगोदमोदभरिगाइउठे आयेभक्तनभक्तनश्यामहारपहिरायोहै॥ भयोजे

जैकारनृपपाइलपटाइगयो गह्योहियेभावसोप्रभावदर शायोहै। विमुखखिसानेभयेगयेउठिनयेमाहिं विनाहरि कृपाभक्तिपथजातपायोहै ४४५ करनसगाईआयोपायो वरभायोनाहिंघरघर फिरयोद्विजनरसीबतायोहै। आइ सुखपाइपूछ्योसुतसोदिखाइदियो कियोलैतिलकमनदे खतचुरायोहै॥ अजूहमलायकनतुमसबलायकहौ शाय कसोछुटोजाइनामलैसुनायोहै। सुनतहीसाथोठोंकिकहै तालकूटाग्रहवालबोरिआयोजावोफेरिदुखछायोहै४४६॥

गाइ उठे॥ पद॥ थोजीथोजी राज थारागलनी मालम्हानै थोजी राज। कृपाजुकीजे विमुखपतीनें मुखसों तो वचन कहो जी राज॥ केशरवरणी कुँवँरि राधिका कस्तूरी वरणा छोजी राज। सावरी सूरति माधुरी मूरति यह छवि हियरै रहोजी राज॥ अनाथन नाथ यमुनावाला सुषमासागर छोजीराज। पैठि पताल कालीनाग जु नाथ्यो म्हारी करुणा ल्योजी राज॥ जुहीना फूल सूतनोधागो सो काढे गाइ गहोजी राज। रिमिझिमि करतो सांवलियो आवे नरसी महिता तुम ल्योजी राज १॥ चौपाई॥ अहो धकी दुष्टाने ध्यायो। मारन ताहि कुचन विषलायो॥ दई धायकी गति पुनि ताही। ता दयालु विनु सुमिरौं काही॥

काढ़िकैअँगूठाडारौ लखसोउचारौबातमनमेंबिचारौ कियोतिलकबनाइकै। जानेसुताभागऐसेरहेशोचपागि सबआयेजबब्याहिवेकोधनदेअघाइकै॥ लगनहूँलिखि दिप्रोदियोद्विजआनलियोडारिराख्योकहूं गावैतालयेव जाइकै। रहेदिनचारियेविचारिनदीनेकुमन आयेकृष्णरु क्मिणीजूझूमिमिलेधाइकै ४४७ ठौरठौरपकवानहोतति यगानकरैंघुरतनिशानकानसुनियेनबातहै। चित्रमुखकि

घोलैविचित्रपटरानीआपघोरी रंगवोरीपैचढायोसुतरात है॥ करीसोऽयौनारतामभानुषअपारआये द्विजनविचा रपोटचांधीपैनमातहैं । मणिमयसाजवाजिगजरथऊंट कोरझमकेंकिशोरआजसजीयेंवरातहै ४४८ नरसीसों कहैंगहैहाथतुमसाथचलोअंतरिक्षमेंहूंचलौं येतीवातमा नियै। कहीअजूजानौतुमभैतोहियेआनोंयहै लहैसुखम नमेरो फेंटतालआनियै॥ आपहीविचारसवभारसोंउठाय लियोदियोडेरापुरीसमधीकोपहूंचानिये । मानुषनठायो दिनआयेपैनआयेअहो देखिछविछायेनरपूंछैंजोवखानि ये ४४९॥

आयेकृष्ण॥पंचाध्यायी॥ अनुग्रहायभक्तानां मानुषंदेहमा श्रितः॥ भजतेताहशीःक्रीडायांश्रुत्वातत्परोभवेत् १ ॥ सिलेधाइ के॥ कोऊ कहै नरसीने कृष्णको साक्षात् ठाकुर जाने कोहिंगे के राजा के साहूकार जाने होहिंगे सो नहीं पुर के न जाने नरसी ने हरिही जाने २॥ दशमे ॥ मल्लानामशनिर्नृणांनरवरःस्त्रीणांस्म रोमूर्तिमान् गोपानांस्वजनोसतांक्षितिभुजांशास्ता स्वपित्रोःशि शुः॥ मृत्युर्भोजपतेर्विराडविदुषांतत्त्वंपरंयोगिनां वृष्णीनांपरदेव तेतिविदितो रङ्गंगतःसाग्रजः ३ ॥

नरसीवरातमतिजानोयहनरसीकी नरसीनपावैऐसो समभअपारहै। आइकेसुनाईसुधिवुधिविसराईअहोकर तहैंसाईवातभाषोनिरधारहैं ॥ गयोजोसगाईकरिदरवर आयोद्विजअंगमेंनमातकेसेरंगविसतारहै । कहीएकघा सधनरासभोनपूजैकिहूं चहूंदिशिपूरिरहोदेख्योभक्तिमा रहै ४५० चलेअचरजमानि देखिअभिमानगयोलयोपा छोब्राह्मणकोहमैंराखिलीजिये । जाइगहिपांइरह्योभाइभ

रिद्या।करोगयेद्दगभरेपांइपरेकृपाकीजिये ॥ मिलेभरिअंकलेदिखायोसोमयंकमुख हूजियेनिशंकइन्हेंभोरसुतादीजिये । व्याहकरिआयेभक्तिभावलपटायेसब गयेगुणजानैजितैसुनिसुनिजीजिये ४५१ । मूल ॥ दिवदासवंशजसोधरसदनभईभक्तिअनपायिनी ॥ सुतकलत्रसंमतसवैगोविंदपरायन । सेवतहरिहरिदासद्रवतमुखरामरसायन ॥ सीतापतिकोसुयशप्रथमहीगमनबखान्यो । द्वैसुनदीजेमोहिंश्रवितसवहीजगजान्यो ॥ गुनिगिरागदितलीलामधुरसंततआनँददायिनी । दिवदासवंशजसोधरसदनभईभक्तिअनपायिनी १०९ ॥

नरसीचरात हष्टिकूट ॥ पृथ्वीमण्डलीनचपाक्षिराजो दुग्धंस्रवन्ती नच कामधेनुः॥ ग्रनेत्रधारीनचशूलपाणिर्नारीचनामानचराजकन्या १ ॥ हमैराखिलीजे हमतो तेरेसेरहैहैं नहींतो धनहूं जाइगो अरु अपयश होहिगो व्याह करि आये कोऊकहै नरसीकी ऐसीसहायकी यह तो बड़ो अचरजहै कवित्त सबही जग है ॥ दोहा ॥ रामराम सब कोउकहै दशरथकहै न कोइ । एकवार दशरथकहै कोटियज्ञ फलहोइ ॥ दशरथतो बड़ेई सामर्थ्यवानहैं जिनके नामसों आठोसिद्धिनवोनिधिआगरहैं २ ॥

श्रीनंददासआनंदनिधिरसिकसुप्रभुहितरँगमगे॥लीलापदरसरीतिग्रन्थरचनामेंनागर । सरसउक्तियुतयुक्तिभक्तिरसगानउजागर ॥ प्रचुरयपधिलौंसुयशरामपुरग्रामनिवासी । सकलसुकलसंवलितभक्तपदरेणुउपासी ॥ चलिचन्द्रहासअग्रजसुहृदपरमप्रेमपयमेंपगे ॥ श्रीनंददासआनंदनिधिरसिकसुप्रभुहितरँगमगे ११० ॥

१ इस सो, को लघु करके पढ़ना ॥

रसिक ॥ दोहा ॥ घरको परनो परिहरयो कहो कौन उप: तुलसी यासों जानिये नहीं धर्म को-लेश ॥ १ ॥ हम चाक: नाथ के जन्म जन्मके दास ॥ रूपमाधुरी मनहरयो डारिप्रे फांस २ ॥ कबित्त ॥ अधर बंधूक औ वदन अधिकाई छवि बिधि कीनी यह रूपको उदधिके । कान्ह देखी आवत अच मुरछिगिरे घूंघुट उघारि राख्यो सखिनके मधिके ॥ गंगगई सर मृग गिरधर घेधे अधिक अधीनभई चितवनि तधिकें । बेधे वधिक बधेको फेरि खोजलेत वधिक बधून खोजलिये घधिकै ३ ॥ लीलापद ॥ पहिले तो देखोआइ माननी की द लाल तापाछे लीजिये मनाइ प्यारेहो गोविंद । करपेदिये ब रही है नयन मूँदि कमल बिछाय मानों सोयो अहे पूर्णच रिसभरी भौंहैं मानो भौंर बैठे अर्धरात इन्दुतरे आयो म: भरयो अरविंद । नन्ददास प्रभु ऐसी प्यारी को रुसैंये बलि सुख दीखेते मिटत सबै दुखद्वंद ४ ॥ दोहा ॥ जिहिघट ि अवँ अगिनि पर यकभये सुभाइ ॥ ताही घटमें नन्दहो प्रेम ठहराइ ५ ॥ कुञ्ज कुञ्ज प्रतिपुञ्ज अलि गुञ्जत इमि परभ रविडर तम लघ भजिगयो रोवत ताको तात ६ अबला सरी तीर जब नीरचुवत बरचीर ॥ जनु अँसुवनि लागीं झर बिछुरन की पीर ७ ॥

मूल ॥ संसारसकलव्यापकभईजकड़ीजनगो' की ॥ भक्तितेजअतिभालसंतमंडलकोमंडन । बुधि शभागवतग्रंथसंशयकोखंडन ॥ नरहरिग्रामनिवास वागडनिस्तारयो । नवधाभजनप्रबोधिअनन्यदास: धारयो ॥ हरिभक्तिकृपाबांछीसदापदरजराधालाल: संसारसकलव्यापकभईजकड़ीजनगोपालकी ११ धवदृढ़ माहिऊपरैअतिप्रचरकरीलोटाभगति॥ प्रसिध

कीराशिगढ़ागढ़परचोदीयौ । ऊंचेतेभयोपातश्यामसा चोप्रगकीयौं ॥ सुतनातीपुनिसदशचलतऊहीपरिपाटी। भक्तनसोंअतिप्रेमनेमनहिंकहुंअँगघाटी ॥ नृत्यकरतन हिंतनसँभारेसमसरजनकनकीसकति । माधवदढ़महिऊ परैअतिप्रचुरकरीलोटाभगति ११२ ॥

जकड़ी साखी ॥ अरीसुनि आतमप्यारी लाल मनाइले। प- हिले पहरै रैनिके तनवसन लजाइले ॥ यह प्रीतम मन भावतो तेरेनिकट बिराजे । सान न कीजे पीयसों अरी तेरो यौवन लाजे ॥ दूजेरी पहरै रैनिके तैं मरम न जान्यो । यंह यौवन बहु मोलको लै विषमें सान्यो ॥ तीजेरी पहरै रैनिके तू अजहुंन चेती । अंगन दियो सुजानके मैं बकीजुकेती ॥ फिरि पाछे पछिताइगी मिलि साइब सेती। चोथेरी पहरै रैनि क शशि ज्योतिहुमानी । मैंतो तोहिं बहुतैकही तें चितनहिं आनी ॥ ये देखो पहु पीरीं भई टरे सरवरपानी । खेम रसिक भये भोरके सुन्दरि पछितानीं १ ॥ अतिप्रेम ॥ दोहा ॥ प्रेमभक्ति एको पलक कोटिवरषको योग ॥ प्रेमभक्ति सब योगहै योग प्रेमबिन रोग २ ॥

माधवदासजीकीटीका ॥ गढ़ागढ़पुरनाममाधौवाढ़ै प्रेमभूमिलोटैजबनृत्यकरैभूलैसुधिअंगकी । भूपतिबिमु खभूंठजानिकैपरीक्षालई आनरीतिजानिपरदेखीगतिरं गकी । नूपुरनिबांधिनाचिसांचसोदिखायदियो गिरेहूक राहिमध्यजियेमतिपंगकी । बड़ोत्रासभयोनृपदासवि श्वासदढ़ोमढ़ेउरभावरीतिन्यारीहीप्रसंगकी ४५२ ॥ मूल ॥ अभिलाषाअंगदभक्तिकीपुरुषोत्तमपूरणकियो ॥ नगअमोलइकताहिसबैभूपतिमिलियाचै । श्यामदास

---

१ इस रकारमें दो मात्रायें गिनने से पद ठीक है ॥

बहुकरैदासनाहिंनममकाचै ॥ एकसमयसंकटलैवपानी मेंडारयो । प्रभूतिहारीवस्तुवदनतेवचनउचारयो ॥ प्रभुपांचदोइशतकोमसतैंहरिहीरालैउरधरयो । अभिलाषा अंगदभक्तकीपुरुशोत्तमपूरणकियो ११२ टीकाअंगद भक्तकी ॥ राइसेनगढ़वामनृपसोसलाहदीनताकोयह काकारहैअंगदविमुखहै । ताकीनारीप्यारीप्रभुसाधुसेवा धारीउर आयेगुरुघरकहैकृष्णकथासुखहै ॥ बैठेमौनदेखिकौनकैसेमौनरहो जातबोल्योतियाजाति कहाकरौनर रुखहै । सुनिउठिगयेवधूअन्नजलत्यागिदियेलियेपांवजाइविपैवशभयोदुखहै ४५३ ॥

गदागद ॥ भागवते ॥ ज्ञानतः सुलभामुक्तिर्भुक्तिर्यज्ञादिपुण्यतः ॥ सेयंसाधनसाहस्त्रेर्हरेर्भक्तिःसुदुर्लभा १ ॥ कृष्णकथा कहै सो गुरुसों पूछै एक नित्यमुक्तनतपूछै निरवधिविषयीते न पूछै मुमुक्षुते पूछे जिज्ञासु २ ॥ छप्पै ॥ तात मात सुत भ्रात आपको बंधनमाने । छूटेकर्म नहिंलेश यहै उर अंतर जाने ॥ जन्म मरण की शंकरहै निशिदिन मनमाहीं । चौरासीके दुःख नेकु नहिं बरणे जाहीं ॥ इहिभांति सदा शोचतरहै संतन सों पूछत फिरै । है कोऊ सतगुरु ऐसई सो मेरो कारज करै ३ ॥

मुखनदिखावैयाहिदेख्योई सुहावैकहो भावैसोईकरौ नेकुवदनदिखाइये । मैंहूंजलत्यगिदियोअन्नजातकापै जियोजियोजबनीकेतबआपकूखाइये ॥ बोलीमोसोंबोलोजिनछाँड़ोतनयाहीछिन प्रणसांचोहोतौतौपैसुनतसमाइये । कहोअबकीजैसोईमेरीमतिगईखोई भोईउरदयाबातकहिसमझाइये ४५४ वेईगुरुकरौजाइपाइनिमें परिगयो चाइनिलिवायलायोभयोसिखदीनहै । धारीउ

रसालभालतिलकवनाइक्रियो छियोशीतप्रीतिकोऊउम जीनवीनहै ॥ चढ़िफौजसंगचढ्योवैरीपुरमारिवढ्योक ढ्योटोपीलैकेहीरासतएकछीनहै । डारैसववेचिपागपेच सध्यराख्योसुख्य भाख्योलोअमोलकरखो जगन्नाथदी नहै ४५५ कानाकानीभईनृपवातनमेंसुनिलईकहीहीरादे यतौपैओरसाफाकियेहैं । आपसमझावैबहुयुगनिवतावै याकेमनमेंनआवैजाइलवैकहिदियेहैं ॥ अंगदयहनिलागै वाकीभूवापगैताकों देवोविषमारोफारितूहीपगछिये हैं । कनतरमोईघरगरलमिलाइपाक भोगकूलगायोअजूजैवो वोलिलियेहैं ४५६ ॥

नेई ॥ दोहा ॥ डरवारस टर परमगुरु डर करनी लें सार ॥ खोजी दरै सुऊवैरे गाफिल पावै मार १ प्रीति ॥ भागवते ॥ यस्य देवेणराभक्तिर्यथादेवेनथागुरौ॥ तस्यैतेकथिताह्यर्थाःप्रकाशन्तेमहा त्मनः २ बहुयुगति वनाके साम दान दंड भेद सनेह धनभेद ३ भूवासों बोल्यो तेरो भाई अंगद वड़ो दुष्टहै तेरे निमित्त गांव बहुत दियेहैं सो तोको न दिये अब वाहि मारि सबदेश को पट्टा तोहीं को करिदेहिंगे ४ ॥

वाकीएकसुतासंगलैकेबैठेजवनको आईसोछिपाइक हीजैवेंकहूंगईहै । जेंवतनवोवहारीतवसोविचारीभीनि भीतरोइमिलीगुरैरीतिकहिदईहै ॥ प्रभुलैजिलायेरांडभां डकैनिकासद्वारदैकरिकिंवाररसपायोओपनईहै । वड़ोहू खहियेरह्योकह्योकैसेजातकाहू वातसुनीनृपहूनेजैसीभां तिभईहै ४५७ चलेनीलाचलहीराजाइपहिराइआवैंआ इघेरिलीनेनृपनरनिखिसाइके । कहीडारिदेवोकैलराइस नमवलेहुवमनहमारोभूपआज्ञाआयेधाइके ॥ बोलेनेक

रहोमैंअन्हाइएकराहदेत हेतमन और जलडारयोलैदि खाइके । वस्तुहैतिहारीप्रभुलीजिये उचारीयहन्वाणीजा गीप्यारीउरधारीसुखपायके ४५८ एतोघरआयेवेतोज लमधिकूदिधाये अतिअकुलायेनेकुखोजहूनपायोहै । रा जाचलिआयोसबनीरकढ़वायोक्षीच देखिमुरझायोदुख सागरबुड़ायोहै ॥ जगन्नाथदेवआज्ञादईसुधिदेवोजाय आयकेसुनाई नरतनबिसरायोहै । गयोजाइदेख्योउर परजगमगरह्योलह्यो सुखनैननिको कापै जात गायो है ४५९ ॥

वैठे जेंवनको अंगद जेंवनको बहिनिकी कन्याको संग लै वैठ तौ कन्याछोड़ तौ सनेह सो सनेहमें भक्ति कैसी यह साक्षात् लाड़िली लालकी सखी प्रकट भई है यह स्वरूप सखा विना और कहां अरु हमारे भक्तनके घरमें जन्मै सो सामान्य जीव है सो नहीं परन्तु की जीति को भावकियो भावही सों प्रीति है है हेत मन और अब मेरो वल नहीं पहुँचै तव विचारि कही हरि सर्वज्ञ हैं सो जलमें डारिदियो सो भगवान्ने अलगही लियो १ सर्व्वं तत्पाणिपादमिति ॥

राजाहियेतापभयोदयेअन्नत्यागिकयो आवैजोपैमा औरब्राह्मणपठायेहैं । घरनोदैरहेकहेनृपकेबचनसबतब हैं ख्यालनिजपुरढिगआयेहैं॥ भूपसुनिआगेआयपाइलप टाइगयोलयोउरलाइदृगनीरलैभिजायेहैं । राजासरवसु दियोजियेहरिभक्तिकियो हियोसरसायोगुणजानेजिते गायेहैं ४६० ॥ मूल ॥ चतुरभुजनृपतिकीभगतिकोकौन भूपसरवरकरै ॥ भक्तआगमनसुनतसँमुखजोजनइक जाई । सदनआनिसतकारसदशगोबिन्दवड़ाई ॥ पादप्र

छालनसुहथराइरानीमनसांचें। धूपदीपनैवेद्यबहुरितिन आगेनाचें। यहरीतिकरौलाधीशकीतनमनधनआगे··· चतुरभुजनृपतिकीभगतिकोकौनभूपसरवरकरै ११··।

टीका ॥ पुरढिगचाख्योओरचौकीराखीयोजन··· आवैतिन्हैंलावतलिवाइकै। मालाधारीप्रभुलन··· वैकोऊद्वारकरैवहीरीतिसोसुनाईछप्पैगाइकै॥ ··· भूपभक्तिनिपटअनूपकथासबको भंडाराखोलिदेतदोऱ्यो ध्याइकै। पात्रऔअपात्रमोविचारहीजोनहींतौपैकहाऐसी बातदईनेकुसेंउडाइकै ४६१॥

जग मग रह्यो॥ कवित्त॥ तरवा ललाई नख चन्द्रिका सु-छवि छाई हियमें समाई वह कैसे क··त है। नूपुरादि चूरा पग धोती पग रही लगि क्षुद्रघंटिका अ··र ज्योति जगमगात है॥ अँगा बूटेदार वनमाल मोती हीराकान्ति कौन कवि उपमा को कह न सकात है। तिलक विशाल माथे चीरा छवि जाल जापै कलँगी रसाल देखि अंगद सिहात है १॥ राजाके हिये ताप॥ दोहा॥ निर्दयिन के शिरपर रहै साधु फूलके गुच्छ॥ केवल तन वस भूमिमें परे रहे मन सुच्छ २॥

भागवतगावैभक्तभूपएकविप्रतहां बोलिकैसुनावैऐ सीमनजिनलाइये। पात्रैआशैकौनहदैभौनमेंप्रवेशकरि श्रीअनुरागकहाउरमधिआइये॥ करीलैपरीक्षाभाटभि क्षुकपठाइदियोदियोमालातिलकसोदासयोंलुनाइये। ग येगयोभूलिफूलकुलग्रिसतारकियो लियेपाहिंचानिअब जानकैसेपाइये ४६२ बीतेदिनतीनिबीसआईबससीख सुधिकहीहरिदामकोऊआयोयोंसुनाईहै। बोलेजूनिशाक जावोगावोगुणगोविंदके आयेघरमध्यभपकरीजैसीभाई

है॥ भक्तिकेप्रसंगकोनरंगकहूंनेकुजान्यो जान्योउनलाल सोपरीक्षामँगवाईहै। दियेलैभंडारखोलिलियोमनमान्यो दईसंपुटमेंकौड़ीडारिजरीलपटाईहै ४६३ आयोवहीरा जापासमभामेंप्रकाशकियो लियोवनदियोपाके सोईलै दिखायोहै। खोलिकेलपेटामध्यसंपुटनिहारिकौड़ीसमुझि बिचारेहारैमनमेंनआयोहै॥ वड़ाभागवतविप्रपंडितप्रवी णमहानिशिरसलीनजानि आनिकैवतायोहै। कयो उनमानभक्त मानकोप्रमानजरी मूंदिकैपठायो ताहि गुण समुझायोहै ४६४॥

उड़ावंद॥ कवित्त॥ सरल सों शठ कहैं वकतासों ढीठ कहैं बिनै करे तासों कहैं धनको अधीन है। क्षमीसों निबल कहें दमी सों अदत्ती कहें मधुर वचन कहे तासों कहैं दीन है॥ दातासोंई दंभी कहैं निरनेही सों गुमानी कहैं तृपणा घटावे तासों कहैं भाग हीनहै। साधु गुण देखे अहो तहांही लगावै दोष ऐसो कछू दुर्जन को हृदोई सलीनहै १ भगत भूपहैं॥ श्लोक॥ पुष्पाणांस्तव कस्येवद्दयीरांतिर्मनीषिणाम्॥ सर्वलोकस्यमूर्ध्वास्तेविशीर्येतवने पिवा २॥

राजारीभिपांवगहेकहे जूवचननीकेऐ नेकआपजाइ तखयाकोलाइये। आयेद्वारेपांइलपटायेभूपभावभरेपरे प्रेमसागरमेंचरचाचलाइये॥ चलिवैनदेतसुखदेतपले खोलमनखोलिकेभंडारदियोलियोनरिझाइये। उभैसुवा सारोकहीएककरधारोमेरे दईअकुलाइलईमानोनिधिपा इये ४६५ आयोगजमभावहुवातनिअग्वारोजहांवेली उ ठीसारोकृष्णकहोझारिडारेहैं। पूछैंनृपकह्योअहोलह्योसव पाहीसोंजुपंछीवासमाजरहेहरिप्राणप्यारेहैं॥ कोटिको

टिरसनाबखानोपैनपाऊंपार सारसुनिभक्तिआपशीशपां वधारे हैं। राखौयहबखगतनसनपगिरह्योश्याम अतिअ भिरामरीतिमिलेओपधारेहैं ४६६ ॥

उभय सुवासारो ॥ अरिल्ल ॥ शिरपै ठाढ़ो काल ये वेड़ी देहि है। भयो धुंध में अंध कहा करि लेहि है ॥ राम कृष्ण कहु मूढ़ फेरि पछिताइहै। दुनियां दौलत छांड़ि अकेला जाइहै १ भाग्यो है मुटमर्दमवासी कैद ते। वली न जीत्यो जाय हजारन जैदते॥ महाराज सें अर्ज करों सुनु कानदे। अरिहा मारि बांधि कै छांड़ि याहि जिन जानदे २ पद ॥ कोई सुनियो संत सुजान दियां हरि लारे। जो तू कहै मेरे द्रव्य बहुत है संग न चलै अधेलारे ॥ जो तू कहे मेरे कुटुम्ब बहुतहै यम लै चले अकेलारे। कहत कबीर सुनो भाईसाधो मनका करिले चेलारे ३ कृष्ण कहु कृष्ण कहु कृष्ण कहु भाई। होइगी वही जो प्रभु ने बनाई ॥ राखौ ॥ तापै वेलमा फकीर को दृष्टांत हमारोही घर जाहिगी ॥

मूल ॥ तजिलोकलाजकुलशृङ्खला श्रीमीरागिरिधर भजी ॥ सदृशगोपिकाप्रेमप्रकटकलियुगहिदिखायो। निरअंकुश अतिनिडररसिकयशरसनागायो ॥ दुष्टनदो पविचारिमृत्युकोउद्यमकीयो। वारनबांकोभयोगरल अमृतज्योंपीयो ॥ भलभक्तिनिशानवजायकेकाहूतेनाहिं लजी। तजिलोकलाजकुलशृङ्खला श्रीमीरागिरिधर भजी ११५ ॥

लोकलाज ॥ कवित्त ॥ क्षीर में यों नीर ज्यों समानी बूंद सागर में तनमें सुमन वास भोइगी सुभोइगी। तेरी देखिबे की वानि नैननि में परी आनि आनि कुलकानि अब खोइगी सुखोइगी ॥ लोक परलोकहू की भूली सुधि ऊधो राम यहै वात मन मांझ मोइगी सुमोइगी। रूप उजियारे गुण भारे लाल प्यारे आंखें तारी

सों लगी हैं होनी होइगी सुहोइगी १ गिरिधर भजी गिरिधरने मीराबाई भजी अथवा मीराबाई जीने गिरिधर को भज्यो याते सनेहीही नेह की मूर्ति है २॥ कवित्त॥ नेहराज रूप राज रसिक रसालराज नैन सुखराज लै उठायो गिरिराज है। छोटे से हैं करवर अंगुरी पै धरयो गिरि खुभी कोसो छत्र वह लिये गज-राज है॥ हाथनि ललाई तामें पहुँचनि छविछाई ऊंचो कियो हाथ सब छवि को समाज है। नैनानि की सैननि सों कहैं अल-वेली सखी चोरि चोरि खायो दधि काम आयो आज है ३ नेकु जो निहारो पिया प्राणनिकी प्यारी अति पंकज से हाथनि तें धारयो गिरिभारो है। प्रेमसों लपेटी कहै नेह भरी बात आली लेहुरी लकुट नेकु देहरी सहारो है॥ कहै हँसि आली मिलि काम आयो आजु बल खायो दधिमाखन जो चोरिकै हमारोहै। नेह भरी बातसुनि हियहुलसात मंद मंद मुसुकात मुख रूपको उज्यारो है ४ सबहीके ग्वाल बाल गोधन हैं सबही के सबहीको आनि परी प्राणन की भीरहै। सबही पै मेघ बरषत हैं सुगोलाधार सबही की छेद छाती करत समीरहै॥ किधौं यह मेरोई अनोखो ढोटा मांगि आन्यौ बोझिल पहाड़ तर कोमल शरीर है। नेकु याके हाथतेलै गिरिलेहु क्यों न कोऊ जाति के अहीर पै न काहू हिय पीरहै ५ सदृश गोपिका प्रेम॥ कवित्त॥ पीरी परिगई अरु-गई गई आननते कानन गईही सो सयान मुख भाग्यो है। चलि चलि कहै बैन फिरि फिरि जात नैन भई बिन चैन मैन अङ्गअङ्ग राग्यो है॥ काशीराम औरको यतनु कौन गिनतीमें क्षण क्षण छीजै देहनेह रंगपाग्यो है। हरि अवधूत और हेत सों न नीकी होति भूत नाहिं लाग्यो याहि नंदपूत लाग्यो है ६ ॥ पद ॥ अब जो यातनको फेरि बनावें। तऊ नंदनंदन बिन ऊधो और न मन में आवें॥ जो यातनकी त्वचा उचेले लैकरि दुन्दुभि सजई। मधुर उतंग शब्द सुरसुनियत लाल लालई बजई॥ छूटें प्राण मिलै तनमाटी द्रुमलागे तिहि ठाम। हुनि अत्र सूर फूल फल शाखा

लेत उठे हरिनाम ७ भक्ति निशान बजायके ॥ मांझ ॥ जिन दांवनि हम महलीहूपे तिन दांवनिते नहिं जाने। पायंदाज न अंदर पहुंचे निंदा करत खिसाने ॥ कुंजमहल बांनिंदा हम निंदा अहिसानेमाने। वल्लभ रसिक चुनिन्दाहूये वजि निंदा सहदाने ८ ॥

टीकामीराबाईजीकी ॥ मेरतौजनमभूमिझूमिहितनेम लगेपगेगिरिधारीलालपिताहीकेधाममें । रानाकेसगाई भईकरीब्याहसामानईगईमतिबूड़िवा रँगीलेघनश्याम में ॥ भाँवरेपरतमनसाँवरेस्वरूपमांझतामरेसीआवैं चलिवेकोपतिग्राममें । पूछैंपितुमातुपटआभरणलीजियेजू लोचनभरतनीरकहाकामदाममें ४६७ देवोगिरिधारी लालजोनिहालकियो चाहौऔरुधनमालसबराखियेउठाइकै। वेटीअतिप्यारीप्रीतिरंगचढ्योभारीरोइमिलीमहतारीकहीलीजियेलड़ाइकै ॥ डोलापधराइदृगदृगसोंलगाइचलीसुखनसमाइचाइप्राणपतिपाइकै। पहुँची भवनसासुदेवीपै गमनकियोतियाअरुवरगठि जोरो कह्यो भाइकै ४६८ देवीकेपुजाइबेको कियोलेउपाइसासुवरपैपुजाइपुनि वधूपूजि भाखिये । बोलीजुबिकायोमाथोलालगिरिधारीहाथऔरकोननवैएकवहीअभिलाखिये ॥ बढ़तसुहागयाकेपूजेतातेपूजाकरो मतहठकरोशीशपाइनिमें राखिये। कहीवारवारतुमयहीनिरधारजानौ वहीसुकुमारजापैवारिफेरिनाखिये ४८९ ॥

विकायो माथो ॥ सवैया ॥ काटों न क्यों इन नैननके गिरिधारी विना पल अंत निहारे। जीभ कटे न भजे नँदनंदन बुद्धि कटे हरिनाम विसारे ॥ मीरा कहै जरिजाहु हियो पद पंकज विना मन अंत न धारे। शीशनवे व्रजराज विना वह शीशहि

काटि कुँवा कि न डारे १ ॥ दोहा ॥ रसनकटै आनहिं रटै फुटैं आन लखि नैन ॥ श्रवणफुटैते सुनै बिन श्रीराधा यश बैन २ कही वारबार ॥ पद ॥ यशुदा वारवार यों भाखे । है कोऊ ऐसो हितू हमारो चलत गोपालै राखे ३ ॥

तबतौखिसानीभईअतिजरिबरि गईगईपतिपालयह बधूनहींकामकी । अबहींजवाबदियोकियोअपमानमेरो आगेक्योंप्रमाणकरै भरैश्वासचामकी ॥ रानासुनिकोप कस्योधस्योहियेमारिबोई दईठौरन्यारीदेखिरीझमतिवामकी । लालनलड़ावैगुणगाइकैमल्हावैसाधु संगहीसुहावैजिन्हैंलागीचाहश्यामकी ४७० आइकैननँदकहैगहै किनचैनभाभीसाधुनसोंहेतमेंकलंकलगैभारिये । राना देशपतीलाजै बापुकुलरतीजातिमानिलीजेबातवेगिसंग निरवारिये ॥ लागेप्राणसाथसंतपावतअनंतसुख जाको दुखहोयताकोनीकेकरिटारिये । सुनिकैकटोराभरिगरल पठायदियोलियोकरिपानरंगचढ्योयोंनिहारिये ४७१ ॥

लागे प्राणसाथ ॥ कोऊ कहो कुलटा कुलीन अकुलीन कहो कोऊकहै अंकन कलंकनि कुनारी हौं । कैसे सुरलोक नरलोक परलोक सब कीन में अलोक लोक लोकनते न्यारी हौं ॥ तन जाहु मनजाहु देव गुरुजनजाहु जीभ क्यों न जाहु टेक टरत न टारी हौं । वृन्दाबनवारी गिरिधारी के मुकुटपर पीतपटवारे की मैं मूरति पैं वारीहौं १ ॥ तारे क्यों न तजों रैनि नैन शीश क्यों न तजौं जीव क्यों न जाहु सोउ अबहीं या तनते । तन क्यों न जरिजाहु जरि क्यों न क्षारह्वोहु छार क्यों न उड़िजाहु बिरह पवनते ॥ सैन रहै चलनि चितौनि बनि मनबसी जबते वे आये बनवारी बने बनते । जानो ह्वै सुजाहु अरु रहै सो तो रहो आली माधवजी की प्रीति जनि जाहु मेरे मनते २ ॥

गरलपठायोसोतोशीशपैचढ़ायोसंग त्यागविषभारी ताकीझारनसम्हारीहै। रानानेलगायोचरबैठेलाधुढिगढ रितवहींखबरिकरिमारोअहधारीहै॥ राजैगिरिधारीलाल तिनहींसोंरंगजाल बोलतसहतख्यालकानपरोप्यारीहै। जाइकैसुनाईभई अतिचपलाईआयोलियेतरवारिदेकिवा इखोलिन्यारीहै ४७२॥

गरल॥ पद॥ राणाजी जहर दियो हमजानी। जिन हरि मेरो न्याव निबेरो छान्यो दूध अरु पानी॥ जबलगि कञ्चन कसियत नाहीं होत न बारहबानी। अपने कुलको परदा कैलेह अबला वह रानी॥ श्वपच भक्तपर वारों विमुख सब सों हरि हाथ बिकानी। मीराप्रभु गिरिधर भजिवे को सन्तचरण लपटानी १॥ दोहा॥ बड़ी भक्ति मीरा गही रानाके बड़ि भूल॥ चरणामृत कहि विष दियो भयो सजीवनमूल २॥ चपलाई॥ चौपरि खेलों पीवसों बाजी लावों जीव॥ जो हारों तो पीवकी जो जीतों तो पीव ३॥ वेगिदै वताइये तरवारि हाथमें नांगीहै के वह विषयी नर कहां गयो ४॥ दोहा॥ निकट वस्तु दीखै नहीं मृग जीवन है जिंद॥ तुलसी ऐसे जगतको भयो मोतियाविंद ५ सबै चतुर अरु बड़े हैं अपने अपने ठौर॥ सब तजिके हरिको भजै सोइ चतुर शिरमौर ६॥

जाकेसंगरंगभीजिकरतप्रसंगनाना कहांवहनरगयादेगिदेवताइये। आगेहीविराजैकछूतोसों नहींलाजेअजू देखिसुखसाजेआंखिखोलिदरशाइये॥ भयोईखिसानोगनालिख्योचित्रभीतिमानोउलटिपयानोकियोनेकुनपाइये। देख्योहूप्रभावऐपैभावमेंनभिज्योजाइविनहरिकृपा कहोकैसेकरिपाइये ४७३ विषयीकुटिलएकभेषधरिसाधु

लियो कह्योयोंप्रसंगमोसोंअंगसंगकीजिये। आज्ञामोको दईआपलालगिरिधारीअहो शीशधरिलेईकछूभोजनहू कीजिये॥ संतनसमाजमेंबिछाइसेजबोलिलियोशंकअब कौनकीनिशंकरसपीजिये । श्वेतमुखभयोविषैभावसब गयोनयो पांयनमेंजाइमोकोभक्तिदानदीजिये ४७४ रूप कीनिकाई भूपअकबरभाईहिये लियेसंगतानसेनदेखि वेकोआयोहै । निरखिनिहालभयोछविगिरिधारीलाल पदसुखजालएकतबहींचढ़ायोहै ॥ वृन्दाबनआइजीव गुसाईंसोंमिलिझिली तियामुखदेखिबेकोपनलैछुड़ायो है। देखोकुंजकुंजलालप्यारीसुखपुंजभरी धरीउरमांझ आइदेश वनगायोहै ४७५ ॥

भाई अकबरने तानसेनसों पूँछी सांवरे पै सब रीझे हैं तबहीं मीरावाई पै सब दर्शन को आयो १ ॥ पदसुखजाल ॥ पद ॥ प्यारीके कच बिथुरे मानोंधाराधरकी श्यामघटा उनही तामधि पुहुप छूटिपरे जैसे बड़ीबड़ी बूँदें। तामधि मुक्ता बगपांति तरोना अलक बीच बिजुलतासी कौंधनि नेत्र खञ्जनरी पिकबोलनि बोलें रूँदें ॥ लालसारी पहरे हरीकोर मघवा धनुसी घूंघट करि चली पीठ पाछे तेतरके लाल मुनियांसी कञ्चुकी तनीकी फूँदें। मेंहँदी सों आरक्त नख वीरबहूटी ऐसी पावस बनिता मिली मीरा गिरिधर खुले काम प्रीति काम हारगूँदें २ ॥

रानाकीमलीनमतिदेखिबसीद्वारावति रतिगिरिधारी लालनित्यहीलड़ाइये। लागीचटपटीभूपभक्तिकोस्वरूप जानिअतिदुखमानिविप्रश्रेणीलैपठाइये॥ बेगिलैकैआवो मोकोप्राणदैजिवावोअहो गयेद्वारधरनोदैबिनतीसुनाइ ये। सुनिविदाहोनगईराइरनछोरजूपै छांड़ोराखोहीनलीं

नभईनहींपाइये ४७६॥ मूल ॥ आवेरेअच्छितकूर्मको द्वारकेशदर्शनदियो ॥ कृष्णदास उपदेश परम तत्त्व पर चोपायो । निर्गुणसगुणस्वरूपतिमिरअज्ञाननशायो ॥ काछवाछनिकलंकमनोगांगेययुधिष्ठिर। हरिपूजाप्रहलाद धर्मध्वजधारीजगपर ॥ पृथ्वीराजपरचौप्रगटतनशंखचक्रमंडितकियो । आवेरेअच्छितकूर्मको द्वारकेशदर्शन दियो ११६ पृथ्वीराजराजाकीटीका ॥ पृथ्वीराजराजा चल्योद्वारकाश्रीस्वामीसंग अतिरसरंगभस्योआज्ञाप्रभु पाइयो । सुनिकैदिवानदुखमानिनिशिकानलग्योकहीप ग्योसाधसेवाभक्तिपुरछाइये॥ देखियेनिहारिकैविचारकी जेइच्छाजोईलीजेनहींसाथजानोबातलैदुराइये । आयो भोरभूपहाथजोरिकरिठाढ़ोरह्यो कहोरहोदेशसोनिदेशन सुहाइये ४७७॥

बिदाहोन गई ॥ पद ॥ हरि हरो जनकी भीर। द्रौपदी की लाज राखी तुम बढ़ायो चीर ॥ भक्त कारण रूप नरहरि धरयो आप शरीर। हिरण्यकश्यप मारि लीनो धरयो नाहिंन धीर ॥ बूड़ते गजराज तारयो कियो बाहर नीर। दास मीरालाल गिरिधर जहां दुख तहँ पीर १ ॥ सजन सुधि ज्यों जानों त्यों लीजे। तुम बिन मेरो और न कोई कृपा रावरी कीजे ॥ द्योस न भूख रैनि नहिं निद्रा यह तन पल पल छीजे। मीरा प्रभु गिरिधर नागर अब मिलि बिछुरन नहिं कीजे २ ॥

द्वारावतिनाथदेखोगोमतीसनानकरोंधरोंभुजछापआयमनअभिलाखिये । चिन्ताजिनिकीजैतीनोंबातइहांलीजैअजदीजैजोईआज्ञासोईशिरधरिराखिये॥ आयेपहुंचाइदूरिननजलपूरिबहै दहैउरभारीकहासगरसचाखिये ।

बीतेदिनदोइनिशिरहेहुतेसोइभोर गईभक्तिगिराआइबा
पीकृष्णभाखिये ४७८ अहोपृथ्वीराजकहाँस्वामीहीतोंका
पीलही आयोउठिदौरिबाहीठौरप्रभुदेखेहैं । पूछ्योंकह्यो
स्नानघरोगोमतीसनानकरो सुनिकैअन्हायोपुनिचैनकहूंपे
खेहैं ॥ शंखचक्रआदिछापतनरूपव्यापिगई भईदोंअवार
रानीघाइअवरेखेहैं । बोलेरहोनीरसैंशरीरलैसनाथकी
सैलीजैनाथहियेनिजभागकरिलेखेहैं ४७९ भयोजबभोर
पुरबड़ोभक्तशोरपर्योकह्योआनिदरशनभईभीरभारीहै ।
आयेलखुभंतओमहंतबड़ेबड़ेधाये अतिसुखपायेदेहरच
नानिहारीहै ॥ नानाभेदआवैंहितमहिमासुनावैंराजा सु
नतलजावैंजानीकृपावनवारीहै । मंदिरकरायोप्रभुरूपपध
रायोसबजगयशगायोकथालोकोलागीप्यारीहै ४८० द्वि
प्रअंगहीनसोअनाथवैजनाथद्वारपर्योचषचाहैंसासकेति
करिहारेहैं । आज्ञाबारदोइचारभईइहैफेरिहौंहियाचोहठ
सारदेखिशिवपिघलानेहैं ॥ पृथ्वीराजअंगकेअंगोछासों
अँगोछोजाइआइकेसुनाईद्विजगौरबड़रानेहैं । नयोभंग
बाँधोतनआइदियोछायोनैन खुलेचैनभयोजनलखिसर
सानेहैं ४८१ ॥

प्रभु भाखिये भगवान्‌ने विचारी कृष्णदासजी तीन बातें देनी
कहि गये हैं सो देचुको पाछ कृष्णदास द्वारका आवेंगे उनकी
अनुहारि करनी होयगी स्वामी कीसी वाणी कही क्योंकि राजा
को कृष्णदासजी की वाणी में प्रीति बहुत रही है ॥

मूल। हरिभक्तनकोआदरअधिकराजवंशमेंइनकियो ।
ब्रजभूमिमेंरताभक्तअतिजैमलपोपे । टोडेभजनलिपा

नरायचंद्रहरिजनतोषे ॥ अभैरामरसएकनेमनीमाकेभारी। करमशीलसुरतान वीरभूपतिव्रतधारी ॥ ईश्वरअक्षैराजरायमलमधुकरनृपसर्वसदियो । हरिभक्तनको आदरअधिकराजवंशमेंइनकियो ११७ टीका ॥ मेरते वसतभूपभक्तिकोस्वरूपजानै जैमलअनूपताकीकथाकहिआयेहैं। करीसाधुसेवारीतिप्रीतिकीप्रतीतिभई नईएकसुनोहरिकैसेकैलड़ायेहैं ॥ नाचेमानमन्दिरसोंसुन्दरबिछायतासआतपरवैगलाकेचित्रलेवनायेहैं । त्रिविधबिछौनाकेजराजतउठैनापानदानधरिसोनाझरीपरनालिवायेहैं ४८९ ॥

नीचे मानमन्दिर ॥ कवित्त ॥ सीरे तहखाने तामें खासे खसखाने नीचे अतर गुलाबन सों ब्याल रपटति है। भूधर तुषारे होत छूटत फुहारे अरु भारे भरतावदान धूप दपटति है ॥ ऐसे में गवन कहि कैसे करि कीजे वलि सौंध की तरंग आनि अंग लपटति है। चन्दन किंवार घनसार के पगार चारु तऊ आनि चीरन की झार झपटति है १ विछे हैं बिछौना घनसार के नवीने ताम कीने छिरकाव तर अतर गँभीरके। गुरुते गुलाब के फुहारे छूटैं ठौर ठौर उठत झकोर तामें त्रिविध समीर के ॥ सेज अरविन्दनकी चन्दन की चोली चारु श्रीगोविंद सुमन शृँगारहैं शरीरके। झनक मनक सों वनिक वनि वेठीआजु राधिका रवन संग भवन उसीर के २ ॥

ताकीदारुसीठीकररचनाउतारिधरे भरे दूरिचोकीआयभावस्वच्छताइये । मानसोंविचारैलालसेजपगधारै पानखातलैउगारडारेपौढ़ेसुखदाइये ॥ तियाहूनभेदजानै सोनसेनीधरीवानेदेखिकैकिशोरसोयोंफिरीभोरआइये ।

पतिको सुनाईभईअतिमनभाईवाको खिजिडरपाईजानी भागअधिकाइये ४८३ टीकामधुकरशाहकी ॥ मधुकर शाहनामकियोलैसफलयाते वेषगुणसारग्राहतजतश्र सारहै। ओंडछेकोभूपभक्तभूपसुखरूपभयोलयोपनभारी जाकेश्रौरनविचारहै॥ कंठीधरिआवैकोऊधोइपगपीवैस दाभाईदुखघरघरडाखोभालभारहै। पाइँपरछालिकही आजुजानेहालकियेहियेदयेदुष्टपावँगहेदगधारहै ४८४॥ मूल॥ खेमालरतनराठौरकेअटलभक्तिश्राईसदन॥ रैना परगुणरामभजनभागवतउजागर। प्रेमीप्रेमकिशोरउद ररराजारतनाकर॥ हरिदासनिकेदासदशाऊंचीध्वजधारी निर्भयअनन्यउदाररसिकयशरसनाभारी॥ रतिदशधा संपतिसंतबलसदारहतप्रफुलितवदन। खेमालरतनरा ठौरकेअटलभक्तिश्राईसदन ११८॥

वेष गुणसारग्राही भँवरवत् सारग्राही मक्षिकावत् असार ग्राही दोषी भाइनि ने खरको माला तिलक देके राजा के भेज्यो राजा ने वाहीको चरणोदक लियो राजाके गुरु व्यासदेव जू वहाँ रहे हैं यत्र पद बनाय॥ पद॥ भक्त बिन किन अपराध सह्यो। छहा कहानि असाधनि कीनों हरि बलधर्म रह्यो॥ अधम राज मदमाते लैरथ सो जड़भरत नह्यो। पट झपटत द्रौपदी न मटकी हरिको शरण चह्यो॥ मत्तसभा कौरवन विदुर ज्यों कहा कहा न कह्यो। शरणागत आरत गजपति को आपन चक्र गह्यो॥ हा हरिनाथ पुकारत आरत कौन ओर निवह्यो। व्यास वचन सुनि मधुकरशाह भक्ति पथ सदागह्यो॥ करि मनसा कत को मुहु कारो। साकत मोहिं न देखे भावत कह बूढ़ो कहवारो॥ साकत देखन डर लागतहै नाहरहूते भारो। भक्तनसों कुवचन बोलतहै नेकुडरैनलवारो॥ आठै चौदशिकूंडो पूजत आगे अज्ञान अँ-

प्यारो। व्यासदास यह संगति तजिये भजिये श्याम सवारो १॥ पद॥ जो सुखहोत भक्त घरआये। सो सुखहोत नहीं बहुसंपति बांझहि बेटा जाये॥ जो सुख भक्तनिको चरणोदक गातहि गात लगाये। सो सुख सपनेहू नहिं पइयत कोटिक तीरथ न्हाये॥ जो सुख भक्तनिको सुख देखत उपजत दुख बिसराये। सो सुख कबहुँ होत नहिं कामी कामिनि उर लपटाये॥ जो सुख होत भक्त बचनन सुनि नैनानि नीर बहाये। सो सुख कबहुँ नपइयतु है घर पूतको पूत खिलाये॥ जो सुखहोत मिलत साधुनके क्षण क्षण रंग बढ़ाये। सो सुखहोत न रंक व्यासको लंक सुमेरहि पाये ३ असारको लेहिं नहीं सारको संगहै साधुगुण हंसके ४ जैसे मधुकरशाह कामी कृष्ण क्रोधी नृसिंह लोभी वामन मोही रामचन्द्र ऐसे अवगुणमें गुणलेहिं हरिहीकी इच्छामानें नारदजी भक्तराज हैं पै उनहीं ने शाप दियो सनकादिक भगवान् रूपहैं उनहूँ ने शाप दियो पै भलोही करयो ऐसे साधु जो करैं सो भलोही करैं यह सार लें लेहिं ५॥ कवित्त॥ काठकी कठारी के तपसी भरिवारि लेत काठको सँवारि धाम श्यामको बैठावहीं। काठकी कमान शर काठके बनाइ लेत काठी काठ चढ़ि शूर रणजीति आवहीं॥ काठकी सुमिरनीके साधु राम नामलेत काठको पषाण घिसि देवको चढ़ावहीं। काठकी अवज्ञाको कहत बनिआवै नाहिं नाव चढ़ि काठकीधौं तवै पार पावहीं ६ काठकी वस्तु महा अमोल गनिये काठ तरणतारण है॥

मूल॥ कलियुगभक्तिकरींकमानरामरेणुकैऋजुकरी॥ अजरघुरयआचरयोलोकहितमनोंनीलकँठ। निंदकजग अनिराइकहामहिमाजानेशठ॥ विदितगँधर्वींव्याहकियो दुःकुंतप्रमाने। भरतपुत्रभागवतसुमुखशुकदेवबखाने॥ असऔरभूपकोउछ्वैसकैदृष्टिजाहिनाहिंनधरी। कलियुग भक्तिकरींकमानरामरेणुकैऋजुकरी ११९ टीका॥ पूनों

मेंप्रकाशभयोशरदसमाजरास विविधविलासनृत्यराग रंगभारीहै। वैठेरसभीजिदोऊबोल्योरासराजारीझिमेटक हाकीजेविप्रकहीजोईप्यारी है ॥ प्यारकोविचारेननिहारे कहूँनेकुछटा सुताकूपधराआनकूपसेवाज्यारी है। रही सभाशोचआपजाइकैछिनायलाये वेषसोंद्विजाप्रेकेरसंप तिलैवारी है ४८५ ॥

ऋजुकरी नरमकरी ॥ कवित्त ॥ पनच पुरानी वहि पानी यों धनुप आयो छुवत छेटूक भयो ताको कहा करिये। आलस अलप अपराध साधु जियजानि क्षमाकीजे क्षीणकीजे चित क्रोध भरिये ॥सूझत तौ द्विजवर पूजिये न जूठवर कठिन कुठार आनि कण्ठपर धरिये। गुरुमति लोपिये न पूजे परकोपिये न तासों पांय रोपिये न जाके पाइँ परिये १ प्रकाश भयो ॥ रूपकी रीझसों प्रेमपग्यो किधों प्रेमकी रीतिहि रूपसों पागी। मनसा वच में न जगी छवि मंडन के मनसा वश मैनके जागी ॥ लाजहि लै कुलकान भगी ओ किधों कुलकानि लै लाजहि भागी। नैनलगे वहि मूरतिसोंरी किधों वहि मूरति नैननलागी २ ॥ नृत्य अरु गान बतरान मुसुकान देखि विह्वल विकल ह्वैके सकल विकै चुके। वड़े वड़े धर्मदास तेऊ लये नारिसों सँभारिहूनसके हरि सर्व्वसहू देचुके॥ नीरभरी अँखियन अँखियन भीर अति ऊरध अधीर गति मति विसरे चुके। ऐसो पैस देखिकै न और ऐन देखे अब मनके अनग नैन यहै पन लैचुके ३ ॥

मूल ॥ हरिगुरुहरिदासानसों रामघरनिसांचीरही ॥ आरजकोउपदेशसुतौउरनीकेधाख्यो । नवधादशधाप्री तिआनसबधर्मविसारयो ॥ अच्युतकुलअनुरागप्रकटपु रुषारथजान्यो । सारासारविवेकबातत्रीनोंमनमान्यो ॥ दासत्वअनन्यउदारता संतनमुखराजाकही। हरिगुरुह

रिदासानसोंरामघरनिसांचीरही १२० टीका ॥ आयेअ
धुपुरीराजारामअभिरामदोऊ दामपैनराख्यो साथुअभिप्रभु
गतायेहैं । ऐसेयेउदाररहाहखरचसँभारनाहिं चलिकेवि
चारभयोचूरादीठआयेहैं ॥ मुद्राशतपांचमोलखोलिलि
याआगेधरेदीजवेचिगयेनाभाकरपहिराये है । पतिकोबु
लाइकहीनकिदेखिरीझभीजे काढ़िकेकरजपुरआयेदैपठा
येहैं ४८६ ॥ मूल ॥ अभिलाषउभैखेमालकेते किशोरपूरा
किया ॥ पांयननूपुरबांधिनृत्यनगधरहितनाच्यो । रामक
लशमनरलीशीलतातेनहिंबांच्यो ॥ बाणीविमलउदारभ
क्तिमहिमाविस्तारी । प्रेमपुंजसुठिशीलविनयसतनरुचि
कारी ॥ सबसृष्टिसराहैंरामसुतलघुबैसलछनआरजलि
या । अभिलाषउभैखेमालकेतेकिशोरपूराकिया १२१ ॥

हरि गुरु दासन सों सांचो होइ भक्ति तबहीं सांची जैसे प्रवा-
हनोतो सांची भक्तिमें तो स ही कहे हैं आप बहुमोल वस्त्र पहिरै
हरिको थोड़े मोल लालजूको अथवा भजन करिके फल चाहै
सो सांचो नहीं और भजन करते कछु विघन होइ तब हरिको
देइ तो सांचोही भजन करिके भक्तही चाहै सांचो किशोर १ ॥
कुण्डलिया ॥ जो पीसंती फाकियो अगर सुउत्तम चालि । लागि
बफाती खीचरी यह घरआज न कालि ॥ यहघर आज न कालि
धौलघर धूवां कैसो । तन तुषार को सार ताहि नर थिर कर
वैसो ॥ स्वपने सोना पाइ कृपणता कर धन जोरयो । पुनि जागे
ते कहौ प्रात काको ऋण तोरयो २ ॥

टीका ॥ खेमालरतनतनत्यागसमैअश्रुपात बातसुत
पूछेअजूनीकेखोलिदीजिये । कीजेपुण्यदानबहुसंपतिअ
मानभरीधरीहियेदोईसोई कहीसुनिलीजिये ॥ विविधक

नाईसलाईमतिभईयेन नितहीविचारअबमनपरखीजि
ये। तीरसहितटशीशधरिकैनलायोऔरनूपुरनिबांधिनृ
त्यकियोनाहिंलीजिये४८७रहेचुपचापसबैजानीकामआ
पहीकोबोलेल्योयोंकिशोरनातीआज्ञामोकोदीजिये। यही
नितकरोंनहिंटरौंजौलौंजीवैतन मनमेंहुलासउठिआती
लाइलीजिये॥ बहुसुखपायोपाये वैसेहीनिवाहेपनगायेगु
णलालप्यारीअतिमतिभीजिये। भक्तिविसतारकियोवैस
लघुभीज्योहियेदियेसनमानसंतमभासबरीझियेे४८८
मूल॥ खेमालरतनराठौरकीसुफलबेलिमीठीफली॥ हरी
दासहरिभक्तिभक्तमंदिरकोकलसो। भजनभावपरिपक्वह
दयभागीरथिजलसो॥ त्रिधाभांतिअतिअनन्यरामकीरी
तिनिबाही। हरिगुरुहरिबलभांतितिनहिंसेवादृढ़गाही॥
पूर्णइंदुप्रमुदितउदधित्योंदासदेखिबाढ़ैरली। खेमालर
तनराठौरकीसुफलबेलिमीठीफली १२२॥

खीजिये॥ दोहा॥ जबलगि रँगहो बिन रँग्यो हरि रंग माहिं
मँजीठ॥ अब मूरखमाथोधुनै जबरँगदीनीपीठ १॥ मनवरूद त-
नजालगी तुलसी बरकन्दाज॥ प्रेमपलीती दगगई निकसी आहि
अवाज २॥ प्रेम विना हरि ना मिलें कोटि यतनकरि कोइ॥ जैसे
गुण बिन कूपजल आवै हाथ न सोइ ३॥

मूल॥ हरिवंशचरणबलचतरभुजगौड़देशतीरथकि
यो॥ गायोभक्तिप्रतापसबहिदासत्वदृढ़ायो। राधावल्ल
भभजनअनन्यतागरबबढ़ायो॥ मुरलीधरकीछापकवित
अतिहीनिरदूषण। भक्तनकीअंघ्रिरेणुवहेधारीशिरभूष
ण॥ सतसंगमहाआनंदमेंप्रेमरहितभीज्योहियो। हरि

बंगा चरणवलपतुरभुज गौड़देशतीरथकियो १९६ ॥

गायोभक्ति प्रताप दिखायो जैसे निपटले ॥ छप्पै॥ श्वपच प-
हिरि यज्ञोपवीत करि कशन गहत जब। करम करै अघपरै डरै
पुनि विश्व त्रास तव ॥ पुनि ललाट पट तिलकदेइ अरु तुलसि
मालधरि। हरिके गुणउचरै पाय कुलकर्महिं परिहरि॥ चतुर्भुज
पुनित अंत्यजभयो मुरलीधर शरणो लियो। तिहि पाके लिनि
लागिये जिन लोह पलटि कंचन कियो १ ॥

टीकास्वामीचतुर्भुजकी॥ गौड़वानदेशभक्तिलेशहून
देख्योकहूंमानुषकोमारिइष्टदेवकोचढायोहै। तहांजाय
देवताकोमंत्रलैसुनायोकान लियोउनमानिगांवसुपनसु
नायोहै ॥ स्वामीचतुर्भुजतूकैबेगितुमदासहोहुनातोहोहि
नाशसबगांवभज्योआयोहै। ऐसेशिष्यकियेमालाकंठी
पाइजियेपांवलियेमनदियेओंअनंतसुखपायोहै ४८९ ॥

जहां जाय देवताको मंत्रलै सुनायो॥ कवित्त ॥ [illegible]
छलतजि गोकुलकी गैलभजी कुबिजा सुरैलपगी [illegible]
आव हैं सुखारी हमकरत भिखारी प्रीति पाछिली बिसारी यही
यह कछू न्यायहै ॥ अहो घनश्यामयह जीति व्रज [illegible] सनको
न विश्वास सारिरही कोन उपाय है। मरण उपाय यहै [illegible] सुख
पाई जोई काहू कलपायहै सो कैसे कल पावई १ ॥

भोगलैलगावैंनानासंतनिलडावैं कथाभागवतगावैंना
वभक्तिबिसतारिये। भज्योधनलैकैंकोऊधनीपाछेपरयोआं
ऊआनिकैद्वारायोबैठिरह्योननिहारिये॥ निकसीपुराण[illegible]
तकैंनयोगातदिक्षाशिक्षासुनि शिष्यभयोगयोचोपु[illegible]
ये। कह्योयाजनमनिकस्योकछुदिशोफारो ह्यांलैउवाको
प्रभुरीतिलागीप्यारिये ४९० राजाकुठमानिकह्योंकोऊ[illegible]

नपाणया कोसा धुयेविराजमानलैकलंकदियोहै। चलेठौर मारिबेकोधारिबेकोसकैकैसे नैनभरिआयेनीरबोल्योधन लियोहै॥ कह्योनृपसांचोहैकैभूठोजिनिहूजैसंत महिमा अनंतकहीस्वामीऐसोकियोहै। भूपसुनिआयोउपदेशम नभायोशिष्यभयोनयोतनपायोभाजगयोहियोहै ४९१प फिरह्योखेतसंतआयेकरितोरिलेत जितेरखवारेमुखसेत शोरकियोहै। कह्योस्वामीनामसुन्योकहीबड़ोकामभयोय हतोहमारोसोईआपसुनिलियोहै॥लैकैमिसटान्नआपसुमु खवखानकियोलियोअपनाइआजभीज्योमेरोहियोहै। लै गयोलिवाइनानाभोजनकराइभक्ति चरचाचलाइपाइहि तरसपियोहै ४९२ मूल॥ चालककीचरचरीचहुँदिशि उदधिअंततलोंअनुसरी॥ शक्रकोपिसुठिचरितप्रसिधपु निपंचाध्याई। कृष्णरुक्मिणीकेलिरुचिरभोजनविधि गाई॥ गिरिधारणकीछापगिराजलधरज्योंगाजै। संतशि खंडीखंडहृदयआनँदकेकाजै॥ जाड़ाहरणेजगजाड़िता कृष्णदासदेहीधरी। चालककीचरचरीचहुँदिशिउदधि अंततलोंअनुसरी १२४॥

रुक्मी पुराण बात॥ भागवते॥ शृण्वतांस्वकथाकृष्णःपुण्य श्रवणकीर्तनः॥ हृद्यन्तःस्थोह्यभद्राणिविधुनोतिसुहृत्सताम् १॥ दूसरे जन्म कैसे भये॥ आगमे॥ कृष्णमन्त्रोपदेशेनमायादूरसु गागता॥ कृपयानुग्रहंयस्यद्वितीयंजन्मकथ्यते २नारदपञ्चरात्रे॥ श्लोकः॥ पितृगोत्रंयथाकन्यास्वामिगोत्रेणगोत्रिका॥ श्रीकृष्ण भक्तिनाशेषाऽच्युतगोत्रेणगोत्रिकः ३ दियेफारो॥ दोहा॥ सा- धनहूं धनसार है जेठ मास धनसार॥ धनहू में धनसार है भूठे को धनसार ४॥

विमलानंदप्रबोधावंशमेंसंतदाससीवांधरम ॥ गोपि नाथपदरागभोगछपनभुजाये । पृथुपद्धतिअनुसारदेव दंपतिदुलराये ॥ भगवतभक्तसमानठौरद्वैकोवलगायो । कवितशूरसोंमिलतभेदकछुजातनपायो ॥ जसजनमकर मलीलायुगतिरहसिभक्तिभेदीमरम । विमलानंदप्रबो धावंशमेंसंतदाससीवांधरम १२५ टीका ॥ बसतनिमा ईग्रामश्यामसोंलगाईमतिऐसीमनआई भोगछपनलगा येहैं। प्रीतिकीसचाईयहजगमेंदिखाईसेवें जगन्नाथदेव आपरुचिसोंजिमायेहैं ॥ राजाकोस्वपनदियोनामलेप्र कटकियोसंतहीकेगृहमेंतोजेंवोंयोंरिझायेहैं । भक्तिकेअ धीनसवजानतप्रवीनजनऐसेहैं रंगीनलालठौरठौरगाये हैं ४९३ ॥

युगत तापै चना गेंऊं के न्याय को दृष्टांत ॥ प्रीतिके सचान जगन्नाथ को छप्पनलगै हैं अपने ठाकुर को गोपीनाथ को मैं हूं लगाऊं घरको धनसब लगायो कर्जहू काढ्यो तब विचारो केतो छप्पनहीं भोग लगाऊं नहीं तो लबही उड़ाऊं सो भगवान् ने चोप करिकै राजा को स्वप्न दिखायो नाम ख्यात कियो भूंठो पन होतो छप्पन भोगकी नाईं चनाहू न मिलते १ भक्ति दियो पावै उद्यम क्यों कियो सो वृत्तान्त हमने न जान्यो २ ।

मूल ॥ श्रीमदनमोहनसूरदासकीनामशृंखलाजुरिअ टल ॥ गानकाव्यगुणराशिसुहृदसहचरिअवतारी । राधा कृष्णउपासिरहसिसुखकेअधिकारी ॥ नवरसमुख्यशृंगार विविधभांतिनकरिगायो । वदनउच्चरतवेरसहसपायँनह्वै

---

१ चनों को लपुन्दरके मांजने वाने मन कहने से पद बनता है

धायो ॥ अंगीकारहिर्कीअत्रधियहज्योंआख्याझातज मल। श्रीमदनमोहनसूर्दासकीनामशृंखलाजुरिअटल १२६ टीकासूरदासमदनमोहनजूकी ॥ सूरदासनामनैन कंजअभिरामफूलेफूलेरंगपीकेनीकेजीकेऔरज्यायेहैं। भ येसो अमीनत्योंसंडीलेकेनवीनरीति प्रीतिगुरुदेखिदाम वीसगुणेलायेहैं ॥ कहीपूत्रापावेंआपमदनगुपाललालप रेप्रेमरूप्यालकादिभ्रकरापठायेहैं। आयोनिशिभयोउयाल भियोअज्ञायोगलैके अबहींलगावोभोगजरिफिरिपायेहैं ४९४ पदलैवनायोभक्तिरूपदरशायोदूरि संतनकीपन हींकोरक्षककहाऊंमैं। काहूसीखिलखोसाधुरिचोचाहैपर पेकोआदेद्वारमन्दिरकेखोलिकहीआऊंमैं ॥ रह्योवैठिजा इजूतीहाथमउठायलीनी पूरीआशमेरीप्रभुनिशिदिनगा ऊंमैं। भीतरबुलायेंश्रीगुसाईंवारदोईचारिसेवासोंपीसा रिकह्योजनपदध्याऊंमैं ४९५ ॥

शृंगार ॥ कवित्त ॥ लाल भये लटू भटू ठाढ़े हैं अटाके नीचे लालची रह्यो लुभाइ टकोरी लगाइकै। गोकुल की वधू विधु मुख के विलोकिबे को नीकी एक तान उठ्यो बांसुरी बजाइकै ॥ सुनि धुनि वाके श्रवणनिपरी काशीराम अति अकुलाइकै झरोखे भांकी आइकै। खोलिकै किंवारी व्रजनारी तहां देखैं भांकि गिरि पर्यो है गोपाल फिरिकीसी खाइकै १ ॥ पथिकनिहेरि पिय पार्लो रूप धारि दृग ऊरध कै वारी पान करै लखे वनको। विरल दुवार करि अँगुरिन धारि पल गतिहि निवारि भावै अंतरन धनको ॥ त्योंही वह नारि प्रीति रीति उर धारि छांड़ि अगुन तनारि देखी प्रेम दुहुमनको। सुरति निहारि वह कीनो निरधारि छांड़ि नर नरनारि देखो प्रेम दुहुमनको २ ॥ पद ॥ रूमी

के पाछे टाढ़ी वदन नीको लागत मानों कंचन गिरिते उदय राशि नवलित किये। सोहतरी माथे विंदुला कुमकुम को दिये कर दीप लिये॥ नीलांबर सजनी रजनी राजत कुरंग नयनी राकारी संगलिये। सूरदास मदनमोहनके लोचन आतुर चकोर न तृप्तहोत नाहिं मधु पान किये ३॥ कवित्त॥ चरण चिनाश नख चंद्रिका पै आइ परे उछरि निहारि नाभि त्रिवली झकोर है। उरज उतंग पुनि पुनि पुनि रंग करि ढरि कटि ओर मुख छवी वेनी छोरहै॥ पाइ रंगभूमि रस झूमि रीझ खेलरच्यो मच्यो छवि पाइ मन डारत मरोर है। लाड़िली को रूप अति लाड़िलो मैं देख्यो आली लाल दृग गेंदन सों खेलैं निशि भोरहै ४ दृष्टांत पोस्ती की रेवरी को पदलै वनायो॥ पद॥ मेरे गति तूही अनेक तोप पाऊं। चरण कमल नख मणि परि विषय सुख वहाऊं॥ घर घर जोड़ी लैं हरि तो तुम्हैं लजाऊं। तुम्हरौ कहाइ कहौं कौनको कहाऊं॥ तुमसे प्रभु छांड़ि काहि दीननको धाऊं। शीश तुम्हैं नाइकै अव कौनको नवाऊं॥ कंचन उर हार छांड़ि कांच को वनाऊं। शोभा सव हानि करौं जगत को हँसाऊं॥ हाथी ते उतरि कहा गदहा चढ़ि धाऊं। कुमकुमको लेपछांड़ि काजर मुँह लाऊं॥ कामधेनु घरमें तजि अजाको दुहाऊं। कनक महल छांड़ि क्यों परनकुटी छाऊं॥ पाइँनि जोपै लौ प्रभू तौ अनत जाऊं। सूरदास मदनमोहनलाल गुण गाऊं॥ संतन की पानहीं को रक्षक कहाऊं ५॥

पृथ्वीपतिसंपतिलैसाधुनखवाइदईभईनहींशंकयोंनि शंकरंगपागे हैं। आयेसोखजानोलेनमानोयहवातअहो पाथरलैभरेआपआधीनिशिभागे हैं॥ रुक्कालिखिडारेह मगटकेयेसंतननेयातेहमसटकेहैंचलेजवजागे हैं। पहुँचे हुजूरभूपखोलिकैसँदूखदेखे पेखेआंककागदमेंरीझेअनु रागे हैं ४९६ लेनकोपठायेकहीनिपटरिझायेहमैंमनमेंन

ठायेलिखीबनतनडार्यो है। टोडरदिवानकह्योधनकोनि
शानकियोलाखोरेपकरिमूड़फेरिकैसेभाख्योहै॥लैगयेहुजूर
नृपबोल्योमोसोंदूरिराखो ऐमोमहाक्रूरसौंपिदुष्टकछ्था
र्योहै। दोवैलिखिदीनोंअकवरदेखिरीझिलीनोजावोवा
हीठौरतोपैद्रव्यसबवार्यो है ४९७॥

रुक्का॥ दोवैछंद॥ तेरह लाख संडीले उपजे सब साधन
मिलि गटके॥सूरदास मदनमोहनोजी आधिराति को सटके१॥
बनत न डारयो है बड़े बड़ेही की चाकरी करें तब बादशाह की
करें अब कृष्णकी करें तापै चोरको दृष्टांत॥ दोहा॥ इक तम
अँधियारो करै शून्य दई पुनि ताहि॥दश तमते रक्षाकरी दिन-
मणि अकबर शाहि १॥ जावो वाही ठौर॥ कवित्त॥ सेइ देखे
साहब सँभारि देखे वाम लोनी सोइ देखे खोरलों सुगंध भरि
सों भरे। खाइ देखे पान पकवान पुंज वार बार पोढ़ि देखे
तिया संग निशि खलिका परे॥ चढ़ि देखे हाथी हय हीरा उर
धारि देखे भूषण विविध भांति कीट मणि सों जरे। मन न
सिरानो कित विषै रस सानो मंद ताते बार बार क्यों न बोल
तू हरे हरे २॥

आयेवृन्दावनमनमाधुरीमेंभीजिरह्योकह्योसोईपदसु
नोरूपरसरासहै। जादिनप्रकटभयोगयोशतयोजनपै
जनपैसुनतभेदबाटीजगप्यासहै॥ सूरहिजहिजनिजमह
लटहलपायचहलपहलहियेयुगलप्रकासहै। मदनमोह
नजूहैइष्टमहाप्रभुअचरजकहाकृपादृष्टि अनायासहै
४९८ मूल॥ कहुकात्यायनिकेप्रेमकीबातजातकापैकही॥
मारगजातअकेलगानरसनाजूउचारो। तालमृदंगीवृक्ष
रीझिअम्बरतहँडारो॥ गोपनारिअनुसारिगिरागदगद

आवेसी। जगप्रपंचतेदूरिअज्ञापरसेनहिंलेसी ॥ भगवा नरीनिअनुरागकीसंतसाखिमेलीसही ॥ कहुकात्यायनि केप्रेमकीबातजातकापैकही १२७ ॥

उरझो है नीकी नकवेसरि सों पीतपट वनमाल बीच आइ उरझे है दोऊ जन। नैननसों नैन बैन बैनन उरझि रहे चटकीली छवि देखे लपटात श्याम घन ॥ होड़ाहोड़ी नृत्य करैं रीझ रीझ अंकभरे ततथेई ततथेई कहत मगनमन। सूरदास मदनमोहन रास मंडल में प्यारी केर अंचल ले पोंछत हैं श्रम कन १ ॥ कात्यायनी गौड़देश की राजकन्या ॥ दशमे ॥ कस्याचित्स्वभुजं न्यस्यचलंत्याहापराननु ॥ कृष्णोहंपश्यतगतिंललितामितितन्म नाः ४ सवैया ॥ खोइ गई बुधि सोइ गई सुधि रोइ हँसे उन- मान जग्यो है। मौन गहे चक चौंकि रहे चलि बात कहे तन दाह दग्यो है ॥ जानि परै नहिं जानि तुम्हें लखि ताहि कहा कछु आहि पग्योहै। शोचतही पगिये घन आनँद हेत लग्यो कि धों प्रेत लग्यो है ३ ॥ पात्र जोई ॥ श्लोक ॥ यानैर्वापादुकाभिर्वा गमनंभगवद्गृहे ॥ देवोत्सवाद्यसेवाचअप्रणामस्तदग्रतः १ ॥

श्रीकृष्णविरहकुंतीशरीरत्योंमुरारितनत्यागियो॥चिदि तविलोदागांवदेशमुरधरसवजाने। महामहोत्सौमध्यसं तपरिषदपरवाने ॥ पगनघूंघुरूबांधिरामकोचरितदिखा यो। देशीशारँगपाणिहंसतासंगपठायो॥ इतउपमाऔर नजगतमेंपृथाविनानाहिंनवियो ॥ श्रीकृष्णविरहकुंतीश रीरत्योंमुरारितनत्यागियो १२८ टीका श्रीमुरारिदास जीकी ॥ श्रीमुरारिदासरहैंराजगुरुभक्तदास आवतसना नकियेकानधुनिकीजिये। जातिकोचमारकरैसेवासोंउचा रकहेंप्रभुचरणामृतकोपात्रजोईलीजिये ॥ गयेघरमांझ

वाकेदेखिउरकांपिउठोलायोदेवौहमैं अहोपानकरिजीजि ये। कहीमैंतोनूनतुच्छबोलेहमहूँतेसुच्छ जानेकोऊनाहिं तुम्हंमेरीमतिभीजिये ४९९ वहैहगनीरकहैंमेरीन्हडीपीर भई तुमजातिधीरनहींमरेयोगताई है। लियोईनिपटहठ वडेपदलाभुतामैंश्यामैप्यारीभक्तिजातिपांतिलैवहाई है॥ कैलगईगांदनाकोनामलैचवावकरैं भरैंनृपकान सुनिवा तूलनहाई है। आयोप्रभुदेखिवेकोगयोवहरंगउड़ि जा न्योसोप्रसंगसुनो वहैबातवाई है ५००॥

सन्निन्दासतिनामवैभवकथाश्रीशेषयोभिन्नधीरश्रद्धाश्रुतिशास्त्र देशिकगिरांनाम्न्यर्थवादभ्रमः॥ नाम्न्यस्तीतिनिषिद्धवृत्तिविहित स्यागोचधर्मान्तरैस्साम्यंनामानिशंकरस्यचहरेर्नामापराधादश १ काशीखंडे॥ ब्राह्मणःक्षत्रियोवैश्यःशूद्रोवायदिचेतरः॥ विष्णुभ क्तिसमायुक्तोज्ञेयस्सर्वोत्तमोत्तमः २॥

गयेसवत्यागिप्रभुसेवाहीसोंरागजिन्हें नृपदुखपागि गयोमुनीयहबातहै। होतहोसमाजसदाभूपकेवरपमांझ दरशनकाहूहोतमानोंउतपातहै॥ चलईलेवाइवेको जहांश्रीसुरारिदासकरीसासटांगराशि नैनअश्रुपात है। सुखहूनदेखेयाकोविमुखकैलेखेअहो पेखेलोगकहैंयहैगु रुशिष्यख्यातहै ५०१ ठाढ़ोहाथजोरिमतिदीनतामैंबो रिकीजेदंडसोपैकोरियोंवहोरिमुखभाखिये। घटतीनमेरी आपकृपाहीकीघटतीहै वढ़तीसीकरीतातेनूनताईराखि ये॥ सुनकैप्रपन्नभयेकहेलैप्रसंगनयेवाल्मीकिआदिदैदे नानाविधिसाखिये। आयेनिजग्रामनामसुनिसवसाधुआ येभयोईसमाजजैसोदेखिअभिलाखिये ५०२ आयेजहूगु

णीजननृत्यगानछाईश्रुति ऐपैसंतसभामनस्वामीगुणदे खिये। जानिकैप्रवीनउठेनूपुरनवीनबांधिसप्तसुरतीनग्रामलीनभयेपेखिये॥ गायेरघुनाथजूकोमनकोमननसमेतासँगगमनप्राणचित्रसमलेखिये। भयोदुखराशिकहांपेयेश्रीमुरारिदासगयेरामपासयेतौहियेअवरेखिये ५०३॥

गये सन त्यागि दोहा॥ साधक सिद्धको एकमत जित चालै नित सिद्धि॥ हरिजन चिंता ना करै सुख आगे नवनिद्धि १ गुरु शिष्यख्यातहै॥ गुरु निर्मोही चाहिये शिष्य न छांड़ै प्रीति॥स्वारथ छोड़े हरि मिलें यहै भजनकी रीति २ फल टूट्यो जल म परयो खोजीमिटी न प्यास॥ गुरुतजिकै गोविंद भजे निश्चय नरक निवास ३॥ सप्तस्वर॥ कवित्त॥ केकीकीकुहक सों खरिज सुरजानि लीजे चातक के बोलसोंऋपभसुरलेखिये॥ उचरतछा गजानि लीजे गंधारसुर ऊरजके बोलसुर मध्यमही पेखिये॥ कोकिलाके बैन सुर पंचमलखीजै योंहींहींसत तुरंग सुर धैवत विशेखिये। घनकी गरजसों निषाद सुरजानि लीजे कहे शिरदार सुर सप्तयों विशेखिये ४॥

मूल॥ कलिकुटिलजीवनिस्तारहितवाल्मीकितुलसीभयो॥ त्रेताकाव्यनिबन्धकरीशतकोटिरमायन। इक अक्षरउद्धरैब्रह्महत्यादिपरायन॥ अवभक्तनसुखदेनबहुरिलीलाबिस्तारी। रामचरणरसमत्तरहतअहनिशिव्रतधारी॥ संसारअपारकेपारकोसुगमरूपनौकालयो। कलिकुटिलजीवनिस्तारहितवाल्मीकितुलसीभयो १२९

एकअक्षर॥ रामायणे॥ चरितंरघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरम्॥ एकैकमक्षरंपुंसांमहापातकनाशनम्॥१ रामचरण दो०॥पलकनिमगनाधिध्यानधरियरुणीजटावनाय। नैनदिगम्बरहैरहेरूपछि भातिलगाय॥

टीकातुलसीदासजूकी ॥ तियासोंसनेहबिनपूछेपिता गेहगईभूलीसुधिदेहभजेवाहीठौरआयेहैं। वधूअतिलाज भईरिससोंनिकसगई प्रीतिरामनईतनहाड़चामछायेहैं॥ सुनीजबबातमानोह्वैगयोप्रभातवह पाछेपछितायतजि काशीपुरीधायेहैं। कियोतहांबासप्रभुसेवालैप्रकाशकीनों लीनोंदृढ़भावनेमरूपकेतिसायेहैं ५०४॥

तियासोंसनेह ॥ दोहा ॥ सकल लोकअपवशकिये अपनेही बलवान॥ सबलासोंअबलाकहैं मूरखलोग न जान ३ वाहीठौर आयेहैं ॥ दोहा ॥ तरसतहैं तुवमिलनबिन दरशनबिनयेनैन॥ श्रुतितरसैंतुववचनबिन सुनितरुणीरसऐन ४ बड़ोनेहतुमसोंल-ग्योऔरनकछूसुहाय॥तुलसीचन्दचकोरज्योंतरफतरैनिघिहाइ ५ कहांगयोमनभावतो सदारहैमनमाहि ॥ देख्योचाहैंनैनभरिबात निकट्योंपतियाहि ६ सेवा॥श्लोक॥ गोप्यःकृष्णेवनंयातेतमनुद्रुत चेतसः॥ कृष्णलीलांप्रगायन्त्योनिन्युर्दुःखेनवासरान् ७ ॥

शौचजलशेषपाइभूतहुबिशेषकोऊ बोल्योसुखमानि हनूमानजूबतायेहैं। रामायणकथासोरसायनहैकाननको आवतप्रथमपाछेजातघृणाछायेहैं॥ जाइपाहिँचानिसंगच लेउरआनिआये बनमध्यजानिधाइपाइलपटायेहैं। करैं तीनकारकहीसकोगेनटारिमैंतो जानेरससाररूपधर्यो जैंमेगायेहैं ५०५ मागिलीजैवरकहोदीजैरामभूपरूप अतिहीअनूपनितनैनअभिलाखिये। कियोलैसँकेतवाही दिनहीसोंलाग्योहेतआईसोईसमैचेतकबिछबिचाखिये॥ आयेरघुनाथसाथलक्ष्मणचढ़ेघोड़े पटरंगबोरेहरेकैसे म नराखिये। पाछेहनूमानआयेबोलेदेखेप्राणप्यारेनेकुननि हारेमैंतोभलेफेरिभाखिये ५०६॥

शौचजल ॥ श्रुतौ ॥ शौचान्तेचपदान्तेचतर्पणान्तेतथैवच ॥ हस्ताद्धस्तेह्यधोहस्तेपञ्चतोयंसुरासमम् १ भूतविशेषदेवतनमेंनीच हैं २ निहारिमेंनो ॥ पद ॥ लोचन रहेवरीसोइ । जानिबझिअकाज कीनोंदयोसुखमेंगोइ ॥ अवगतिजुतेरीगनिनजानोरह्योयुगमेंसोइ । सवैरूपकीअवधिमेरेनिकसिगयोढिगह्रोइ ॥ कर्महीनहिपाइहीरा दयोपलमेंखोइ । तुलसीदासजुरामविछुरेकहोकैसीहोइ ३ ॥

हत्याकरिविप्रएकतीरथकरतआयो कहैमुखरामभिक्षाडारिपैहत्यारेको । सुनिअभिरामनामधाममें बुलाइलियेदियोलैप्रसादकियोशुद्धगायोप्यारेको ॥ भईद्विजसभाकहिवोलिकैरठायोआप कैसेगयोपापसगलैकैजैयेन्यारेको । पोथीतुमवांचोहियेभावनहींसांचोअजूतातेमतिकाँचोदूरिकैरनअँध्यारेको ५०७ देखीपोथीवांचनामम हिमाहूकहींसांच ऐपैहत्याकरेकैसेतरैकहिदीजिये । आवै जोप्रतीतिकहीयाकेहाथजेंवैजव शिवजूकोवैलतवपंगति मेंलीजिये॥थारमेंप्रसाददियोचलेजहांपानकियो वोलेआपनामकेप्रतापमतिभीजिये । जैसीतुमजानोतैसीकैसेकै वखानोअहो सुनिकैप्रसन्नपायोजैजैध्वनिरीझिये ५०८ ॥

सुनिअभिराम नाम ॥ श्लोक ॥ रामरामेतिरामेतिरमेरामे मनोरमे ॥ सहस्रनामतातुल्यंरामनामवरानने १ अँध्यारेको ॥ पद ॥ पढ़त पढ़ावतसोमनमान्यो । कौन काज गोविंद भक्ति विन जो पुराणकहि जान्यो ॥ घरघर भटकि फिरे कामिनि लगे गालफटकि धन आन्यो । निशि दिन विषय स्वाद रस लंपट तजि पांचनि को कान्यो ॥ स्वपनेहू हरि किये न अपने हित हरिवंश वखान्यो । सुने न वचन साधुके मुखते चरण पखारि न अचया पान्यो ॥ सारासार विवेक न जान्यो मनसंदेह न मान्यो । दया दीनता दासभाव विन व्यारा नहीं पहिंचान्यो १ ॥ न्याये ॥ य-

स्यनास्तिस्वयंप्रज्ञाशास्त्रंतस्यकरोतिकिम् ॥ नयनाभ्यांविहीनस्यद र्पणःकिंकरिष्यति २ नानके प्रताप ॥ पद ॥ अद्भुतरामनामके अंक। धर्मांकुर के पावन द्वै दल मुक्ति वधूताटंक ॥ मुनिमनचरके पंख उभय वर जपटाड़ि ऊरधजात जनम मरण काटनको कांती क्षण में चितवतवात ॥ अंधकार अज्ञान हरणको रवि शशि युगल प्रभात। भक्तिज्ञान वीरजवर वोवे प्रेम निरन्तरभात ३ ॥

आयेनिशिचोरचोरीकरनहरनधन देखेश्यामघनहाथचापशरलिये हैं। जबजबआवैंवाणसाधडरपावैंएतोअतिमड़रावैंऐपैबलीदूरिकिये हैं ॥ भोरआयपूछेअजूसांवरेकिशोरकोनसुनिकरिमौनरहेआंसडारिदिये हैं। दईसो लुटाइजानीचोकीरामलगाइदई लईउन्हींदिक्षाशिक्षाशुद्ध भयेहिये हैं ५०९ कियोतनविप्रत्यागलागचलीसंगति यान्दूरिहीतेदेखिकियाचरणप्रणामहैं। बोलेयोंसुहागवती सखोपतिहोहुसतीअबतोनिकसिगईजाहुसेवोरामहैं ॥ बोलिकैकुटुम्बकहीजोपैभक्तिकरोसही गहीतबबातजीवदियोअभिरामहैं। भयेसबसाधुव्याधिमेटीलैविमुखताकी जाकीबासरहैतौनसूझैश्यामधामहैं ५१० ॥

डरपाके मारे क्यों नहीं सद्गति कह्यो चाहै ॥ श्लोक ॥ येयेहताश्चक्रधरेणराजंस्त्रैलोक्यनाथेनजनार्दनेन ॥ तेतेगताविष्णुपुरीं नरेन्द्राःक्रोधोपिदेवस्यवरेणतुल्यम् १ ॥ गतिहोइजैसेचनाचाबिके पेटभरे एक मोहनभोग खाइकै सो तुलसीदास को उपदेश मोहनभोग भगवान्‌के बाण अमोघ झूठो क्यों पर्‌यो समुद्रहू पे बाण झूठो न पर्‌यो मारवाड़ में डार्‌यो फेरि कैसो इहां चोरन की अविद्या को मार्‌यो २ लुटाइये ॥ कुंडलिया ॥ सुखसोवै नींद कुम्हारिया चोर न मटियालेहि। चोरन मटियालेहि भजन मन

हाथहोय मन ॥ लगनअहङ्गोनहां रहै सुसदीसंततजन। इंद्रीआ-
रास न छांड़ सकल मिथ्या करि जानै। हरि लीला रसपान मत्त
निर्भय गुण गानै ॥ अगर वसत जो रामपद जमहि चुनौती देहि।
सुखसोवैं नींद कुम्हारिया चोर न सटिया लेहि २ ॥

दिल्लीपतिबादशाहअहिदी पठायेलेनताकोसोसुनायो सूबैविप्रन्यायोजानियो। देखिबेकोचाहैंनीकेसुखमोनि वाहैआइकहीबहुबिनैगहीचलेमन आनिये॥ पहुँचेन्टपति पासआदरप्रकाशकियो दियोउच्च आसनलैबोल्योमृदुबा निये। कीजैकरामातिजगख्यातसबमातकियै कहीझूठीबा तएकरामपहिंचानिये५११ देखोंरामकैसोकहिकैदकियेकि येहियदूजियेकृपालहनुमानजूदयालहौ। ताहीसमैंफैलिग येकोटिकोटिकपिनयलोचैंतनखैंचैंचीरभयोयोंबिहालहौ॥ फोरेकोटमारेचोटकियेडारेलोटपोटलीजेकौनओटजाइमा नोप्रलैकालहौ। भईतबआंखेंदुखसागरकोचाखेंअबवेई हमैंराखेंभाखैंवारों धनमालहौ ५१२ आइपाइलियेतुम दियेहमप्राणपावैंआपसमझावैं करामातिनकलीजिये। लाजदबिगयोन्टपतबराखिलियोकह्यो भयोघररामजूकोवे गिछोंड़िदीजिये॥ सुनितजिदियोऔरकरयोलैकैकोटिन यो अबहूंनरहैकोऊवामेंतनछीजिये। काशीजाइवृन्दा वनआइमिलेनाभाजूसों सुन्योहोकवित्तनिजरीझमति भीजिये ५१३ ॥

दियोउच्चआसन ॥ दोहा ॥ ब्यासबड़ाई जगतकी कूकरकी पहिचानि ॥ प्यारकिये सुखचाटई वैरकिये तनहानि १ ॥ दूजिये पद ॥ ऐसीतुम्हैं न चाहिये हनुमान हठीले। साहब सीतारामसे तुमसे जुबसीले॥ तेरेदेखत सिंहके शिशु मेडकलीले। जानतहूं

कलि तेरेहू मनो गुणगणकीले ॥ हांकसुनन दशकंधके बंधनभये ढांने। सोचलगयो किधौंभयो गहरगहीले ॥ सेवकको परदाफटै तुमनमरथ शीले। अधिक आपते आपनो सुनमानसहीले ॥ यह गति तुलसीदासकी देखिसुयश तुहीले। निहूं लाल तिनको भलो जोरामरँगीले २ ॥

मदनगोपालजूकोदरशनकरिकही सहीरामइष्टमेरेदृगभावपागीहै। वैसोईस्वरूपकियोदियोलैदिखाइरूप मनअनुरूपछविदेखिनीकीलागीहै ॥ काहूकह्योकृष्णअवतारिजुप्रशमहारामअंश सुनिबोलेमतिअनुरागीहै। दशरथसुतजानोसुंदरअनूपमानो ईशताबताईरतिकोटि गुणीजागीहै ५१४ ॥

रामइष्ट ॥ दोहा ॥ कहाकहौंछविआजकी भलेविराजे नाथ ॥ तुलसी मस्तक जबनवै धनुषबाणलेउहाथ १ ॥ वैसोई ॥ क्रीट मुकुट माथेधरयो धनुषबाण लियोहाथ ॥ तुलसी जनके कारणे नाथभये रघुनाथ २ ॥

मूल ॥ गोप्यकेलिरघुनाथकीश्रीमानदासपरगटकरी ॥ करुणावीरशृँगारआदिउज्वलरसगायो। परउपकारकधीरकवितकविजनमनभायो ॥ कोशलेशपदकमलअनन्यदासनव्रतलीनो। जानकिजीवनसुयशरहतनिशिदिनरँगभीनो ॥ रामायणनाटककीरहसियुक्तिउक्तिभाषाधरी। गोप्यकेलिरघुनाथकीश्रीमानदासपरगटकरी १३० श्रीवल्लभजूकेवंशमेंसुरतरुगिरिधरभ्राजमान्। अर्थधर्मकाममोक्षभक्तिअनपायनिदाता ॥ हस्तामलश्रुतिज्ञानमवहिशास्त्रनकेज्ञाता। परिचर्य्याब्रजराजकुंवरकेमनकोक

षै। दरशनपरमपुनीतसभातनअंमृतवर्षै॥ विट्ठनाथन नसुभावजगकोऊनहिंतासमान। श्रीवल्लभजूकेवंशमेंसुभ तरुगिरिधरभ्राजमान १३१ श्रीवल्लभजूकेवंशमेंगुण निधिगोकुलनाथअति॥ उदधिसदाअक्षोभसहजसुन्दर मितभाखी। गुरुवत्तनगिरिराजभलापनसवजगसाखी॥ विट्ठलेशकीभक्तिभयोवेलादृढ़ताके। भगवततेजप्रताप नमितनरवरपद्जाके॥ निर्व्यलीकआशैउदारभजनपुंज गिरिधरनरति। श्रीवल्लभजूकेवंशमें गुणनिधिगोकुल नाथअति १३२॥

जानकीजीवन॥ कवित्त॥ सखादुराव चौंर उरवशी उड़ावें मोर सावित्री चरण सेवें महसी महेशकी। वरुण धनेशराज उडुराज रविराजगधरवीकन्यासुकवारी नागशेशकी॥ द्वारे पर आइसब ठाढ़ी मख। तिनमाहिं दामिनिसी दमकि रही अवला नरेशकी। तराति किशोर रतिपति के समूहराज आसपास तिन बीच बेटी मिथिलेशकी १॥ सवैया॥ दूलहश्रीरघुनाथवन्यो दुलही सिय सुन्दरि मंदिरमाहीं। गावतगीत सबैमिलिसुन्दरि वेदपचातुरि विप्रपढ़ाहीं॥ रामकोरूप निहारति जानकि कंक- णके नगकीपरिछाहीं। ओरसबैसुधि भूलिगई करटेकिरही पल टारतिनाहीं २॥ उक्त भाषा हनुमन्नाटके॥ आकृष्टेगुधिन्वार्मुके रघुपतौवामोत्रवीदक्षिणं पुण्येकर्मणिभोजनेचभरतः प्रागल्भ्यम स्मिन्नाकिम्॥ वामान्यःपुनरब्रवीन्ममननःग्रहंनिजंस्वामिनं छि- न्यांरावणवक्त्रपंक्तिमथवाप्येकैकमादिश्यताम् ३॥

टीका गोकुलनाथजूके॥ आयोकोऊशिष्यहोनला योभेंटलाखनकोभाखनकोंच।तुरीपैमेरीमतिरीझिये। कहूं

पादातमें रकारको गुरुमानके दो मात्रायें गिनी जायँगी॥

हैसनेहतेरोजाकेमिलेबिनादेहव्याकुलताहोइजोपैतोपैदी क्षादीजिये ॥ बोल्योअजूमेरोकाहूवस्तुसोंनहेतुनेकुनेति नेतिकहींहमगरुढंदिलीजिये। प्रेमहीकीबातइहांकरहीप लटिजातगयोदुखगातकह्योंकैमेरंगभीजिये ५१५ कान्ह होहलालखोरिघोरदियोमनलैकैश्यामरससागरमें नागर रसालहै। निशिकोस्वपनमांझनिपुणश्रीनाथजीनेआज्ञा दईभीतिनईभईओटसालहै॥गोकुलकेनाथजूसोंबेगिदेज ताइदीजे कीजैयाहीदूरिविप्रपूरिदेखोख्यालहै। भोरजो निचारैनहींधीरजकोधारै वहांजाऊंकोऊमारैपैड़ेपर्योयहु लालहै ५१६ ऐसेदिनतीन आज्ञादेतयैप्रवीननाथहाथ कहामेरेबिनागयेनहींसरैगो। गयेद्वारद्वारपालबोलेजूवि चारिएक दीजैसुधिकानसुनखीजैबातकरैगो ॥ काहूनेसु नाइदईलीजियेबुलाइअहो कहोऔरदूरिकरोकरेंदुरिढरै गो। जाइवहीकहीजहीआपनीपित्रानमिले सुनोमेरोनाम श्यामकहोनहींटरैगो ५१७॥

कहूंहै सनेहतेरो ॥ दोहा ॥ इहां किया नाहिं इश्कका इस्ता- माल सँभार ॥ सो साहबसों इश्कवहकरक्यासकैगँवार १ ॥ रस सागर ॥ मांझ ॥ लोनासांवरनागरसागरवरमुरलीधुनिगरजे। बल्लभरसिकतानलहरें आवतगावतमुरपरजै॥मोरपक्षकरडलेडुले कलगीत पुतरिलोंवरजे। रूपकहरदरियाव आव जिन नावधर्म की लरजै॥ प्रेमहीकी बातसों प्रेममोपै न बनै कलिपलटिदै जैसे जलको बरद्दा प्रेमहरिहूपै न बन्यो लहटू चकई डोरि लूटी छा- लकें स्वभावखट्टे मीठेकोस्वाद सब बनाये जो सनेह कृष्णसों है तैसो पुत्रनसों कियो सुतहित कियो सो बलदेवजाने २ ॥ ओट सालहै नाथजीको भीतिकी ओटको बड़ो दुख भयो अरु लरिका

कान्हा देखे विना हलाल औरसों भलीप्रीति करी ३ ॥ ख्यालहै तापै फ़क़ीरको अरु लरिकाकी गुड्डीको दृष्टांत ॥

मूल ॥ रसरसिकरँगीलोभजनपुँजसुठिवनवारीश्यामको ॥ बातकबितबड़चतुरचोखचौकसअतिजांने । सारासारविवेकपरमहंसनिपरमानै ॥ सदाचारसंतोषभूतसबकोहितकारी॥आरजगुनतनअमितभक्तिदशधाव्रतधारी॥दरशनपुनीतआशयउदार्‌अलापरुचिरसुखधामको । रसरसिकरँगीलोभजनपुँजसुठिवनवारीश्यामको १३३॥

बात ॥ कवित्त ॥ कीरतिको मूल एक रैनिदिन दानदेयो धर्मकोहै मूल एक साधु पहिचानिवो । बढ़िवेको मूल एक ऊंचो मन राखियोई जानिवे को मूल एक भली बात जानिवो ॥ व्याधिमूल भोजन उपाधि मूल हास्य जानो दारिदको मूल एक आरस बखानिवो । हारिवेको मूल एक आतुरी है रणमांझ चातुरी को मूल एक बात काहे जानिवो १ ॥ दोहा ॥ बातनि हाथी पाइये बातनि हाथीपाइ ॥ बातनिसों विष ऊतरै बातनि विष ह्वै जाइ २ तापै केशवदास को अरु बीरबल को दृष्टांत ॥ कवित्त ॥ आयो एक पंडित अखंडित विचारवान वेद औ पुराण मंत्र यंत्रनि को गातुरी । ताने पुनि कही सही हाड़हू को सिंहकरौं लावो लाइ दियो लियो अतिहुलसातुरी ॥ आप द्रुम चढ़यो तिन पानी लैकै पढ़यो पुनि छिरकेत जियो अति कियो जाको घातुरी । कीजिये विवेक एक चातुरीसों बच्यो याते एक ओर चारिवेद एक ओर चातुरी ३ ॥ दोहा ॥ बात बिडारै भूत को बात बचावै प्रान ॥ बात अधिक भगवान ते कही हंस अख्यान ४ हरि आवै पै बात न आवै जैसे ब्रह्माको सनकादिक पूछी चित्त विषयमेंजाइ विषय चित्तमें आइ न्यारो कैसे होय तब उत्तर न आयो तब हंसरूप धरिकै श्रीभगवान्‌ने जवाब दियो ५ ॥ दोहा ॥ कागा काको धन हरे कोयल काको देइ ॥ मीठी बाणी बोलिके जग अपनो करि

लेइ ६ प्रस्तावे ॥ हेजिह्वेरससारज्ञेमधुरंकिन्नभाषसे ॥ मधुरंवदकल्याणिसर्वेन्द्रामधुराप्रिये ७ चतुराई बात कहा एक पंडित वीरबलपैआयो बात वासों पूछी कछू पढ़ेहौ कही पढ़ें वेद शास्त्र पुराण कवित्त बात ८ कवित्त बड़ेचतुर ॥ कवित्त ॥ मेह बरसाने तेरे नेह बरसाने देख एक बरसाने वर मुरली बजावेंगे। साजि लाल सारी लाल करें लाल सारी देखिबेकी लालसारी लाल देखे सुख पावेंगे ॥ तुही उरवशी उरवशी नाहिं आन तिय कोटि उरवशी तजि तोसों चित लावेंगे। सेज घनवारी वनवारी तन भूपनारी गोरे तनवारी वनवारी आज आवेंगे ६ ॥

भागवतभलीविधिकथनकोधनजननीएकैजन्यो॥नारायणमिश्रवंशनवलाजुउजागर। भक्तनकीअतिभीरभक्तिदशधाकोआगर॥ आगमनिगमपुराणसारशास्त्रनसबदेखे। सुरगुरुशुकसनकादिव्यासनारदजुविशेखे॥ सचिसुधाबोधमुखसुरधुनीयशवितानजगमेंतन्यो। भागवतभलीविधिकथनकोधनजननीएकैजन्यो १३४ ॥ कवित्त ॥ मिश्र श्रीनारायण जु मधुपुरी वास कियो पुनि हरद्वैरमें नृसिंहारण्यसों मिले। तिनोंकी सुआज्ञा पाइ वद्रिकाश्रमहिं जाइ मिलि शुकदेवजू से महासुख सें भिले ॥ आयेफिरिकाशीसुखराशीवेसंन्यासीपायेतिनहूंसोंजनमानिसुखमनमेंहिले। पंडितप्रवीणजितेतिनकीकथासोंतितेचितेमोचितेईरहेमानोंमहाअहिकिलेप १८॥

भागवत ॥ छप्पै ॥ निगम कलपतरु उदे सोई भागवत प्रमाना। द्वादश मोटी डार सोई अस्कंद बखाना ॥ त्रिंशत पुनि पैंतीस अध्यायसों छोटी शाखा। सूक्षम कली शलोक सहस अष्टादश भाषा ॥ इत अक्षरवर पुनि पंच लख सहस छिहत्तर और गुनि।

तत्त्ववेत्ता तीनिहुँ लोकमें ब्रह्मबीज भागवत पुनि १ भली विधि॥ कवित्त॥ भागवत कथन समुद्र को मथन हरि गुण नाम रूप जैसे अमृत उधारयो है। मृत्युप्राय जीव जग भक्ति दान देके दुसतर भवसागर को पारले उतारयो है॥ प्रेमरंग राते कहैं नेह भरी बातें सब जगतके नाते करि हाते सो उबारयो है। करुणा-निधान गुण रतन की खानि मानो ते ज्ञान विज्ञान युक्ति जीव विसतारयो है २ धन जननी जैसे माता एक पुत्र जनै तैसे एक इनहीं को श्रीशुकदेव जीने भागवत दई है औरन पै कैसे आइ सो पको फल सुवा डारै एकनो कैसेहु मुखते गिरतेही ऊपरही लैलेहिं। एक जमीन मैं ते लेहिं तिन को सवाद नहीं ऐसे सुवारूपी शुक तिन के मुखते लई ३॥ नाम॥ दोहा॥ नाम नरायण मिश्रजी नवला वंश सुहात॥ कोटि जनम के तम हरै आतपलों विख्यात ४॥ भक्तन की॥ दोहा॥ साधु तहांही संचरै जहां धर्मकी सीर॥ सरवर सूखे परशुरामहंसन बैठेतीर ५॥ कवित्त॥ राजतहैं भक्तराज मानुष समाज प्रेम रस नीर भीर से गँभीर सुख छायो है। हरिगुण रूपजाल मानिक रसाल मानों छायासो विशाल जस सही सरसायो है॥ श्रेनी कलहंस मानों झूमि रहे पर्महंस अतिही प्रशंस रंग रूप विरमायो है। अल-बेलो अली आगु है विश्वास रसिकन प्रेमही की राशि सो उच्छिष्ट शेष पायो है ६॥ सारशास्त्रभागवते॥ मन्येसुरान्भागवता नधीशेसंरंभमार्गाभिनिविष्टचित्तान्। येसंयुगेचक्षततार्यपुत्रस्यांसे सुनाभायुधमापतन्तम् ७ सुधा बोध॥ सवैया॥ भक्तिसुधारसज्ञान वचन मुख सुखद सबहिसों सहजहिं बोलैं। परम प्रवीन विचित्र नवीन ग्रँथन को ग्रथी गूढ़ग्रंथकी खोलैं॥ नारायण जग तारण कारण भूमण्डल सुरसरि सँग डोलैं। जा जस शीतल छांह तरंग विन अलबेली अलि हंस कलोलैं ८॥

मूल॥ कलिकालकठिनजगजीतियोराघवकीपूरीपरी॥

कामक्रोधमदमोहलोभकीलहरनलागी। सूरजज्योंजलग्रहेबहुरिताहींज्योंत्यागी ॥ सुंदरशीलस्वभावसदासंतनसेवाव्रत। धर्मनिषकनिर्वह्योविश्वमेंविदितवड़ोभ्रत ॥श्रीअल्हुरामरावलकृपाआदिअंतधुकतीधरी। कलिकालकठिनजगजीतियोराघवकीपूरीकरी १३५ हरिदासभलप्पनभजनबलबावनज्योंबढ़्योबावनो॥अच्युतकुलसोंदोषस्वपनहूउरनहिंआन्यो। तिलकदामअनुरागसवनगुरुजनकरिमान्यो ॥ सदनमाहिंवैराग्यविदेहनिकीसीभाँती। रामचरणमकरंदरहतिमनसामदमाती ॥ योगानंदउजागरवंशकरिनिशिदिनहरिगुणगावनो। हरिदासभलप्पनभजनबलबावनज्योंबढ़्योबावनो १३६ ॥

अच्युत ॥ दोहा ॥ कामी साधुहि कृष्ण कहि लोभी वामन जानि ॥ क्रोधीको नरसिंह कहि नहीं भक्तकीहानि १ रामचरण ॥ जिहिघट नौवतनामकी सो घटछीनीनाहिं ॥ प्रकटे देखिकवीर ज्योंदीपकओडलनाहिं २ ॥ जंगली कह्यो नाम न लियो सो नाभा जी एककुवांके मनखंडेपै वैठे हैं तहां माथे तिलकधारे माला मारवाड़ी आइगये जब हां छप्पै वनाई जंगली देशके कहे तिन को आचार्यजी पूछेको दृष्टांत ३ ॥

जंगलीदेशकेलोगसवपरशुरामकियेपारषद ॥ ज्यों चंदनकोपवननींवपुनिचंदनकरई। बहुतकालतमनिविड़उदयदीपकज्योंहरई ॥ श्रीभटपुनिहरिव्याससंतमारगअनुसरई। कथाकीरतननेमरसनिहरिगुणउच्चरई ॥ गोविंदभक्तिगदरोगगतितिलकदामसदवैदहद। जंगलीदेशकेलोगसवपरशुरामकियेपारषद १३७ श्रीपरशुरामजीकीटीका ॥ राजसीमहंतदेखिगयोकोऊअंतलेनवो

ल्येजुअनंतहरिसगेमायाटारिये । चलेउठिसंगवाके पहरिकोपीनअंग बैठिगिरिकंदरामैंलागीठौरप्यारिये ॥ तहांवनजारोआइसंपतिचढ़ाइदई औरसंगपालकीहूम हिमानिहारिये । जाइलपटान्योंपाइभावमैंनजान्योंकछु आन्योंउरमांझआवैप्राणवारिडारिये ५१६ ॥

गदरोगगतिसुजान सुंदर वैद्य जगे तौ भारी रोगजाइ तिलक दाम औषधि दई तिलक दोस इनकी सद औषधि है १ ॥ श्लोक ॥ तुलसीकाष्टमालातुप्रेतराजस्यदूतकाः॥ दृष्ट्वानश्यतिदूरेणवातोद्धूतंयथादलम्२क्रियातहूणांघ्र० ॥ छप्पै ॥ संत तिलककरतार तिलक शंकर शिरसो है । ब्रह्माके शिर तिलक तिलक बिन जगमें कोहै ॥ तिलक बिना शिर अशुभ तिलक राजा पदपावै । तिलक संतसन्मान तिलक सों महँत कहावै ॥ जग जियैयुगति मुयेमुकाते सुरगण मुनि जन शिर धरै । तुलसी तिलक सतगुरू कमल पसे भवसागर तरैं ३ बैठि गुरूके पास तिलकालिखाराहि कीजे । बिना तिलक जो अफल तिलक करि दीक्षादीजे ॥ दान पुण्य तप धर्म तिलक बिन निष्फल जावै । तिलकधार कछु करै अमित फल वेद बतावै ॥ त्यों तिलक देखि यमहू डरै तिलक बिना कहि दीनजन । तत्त्ववेत्ता तीनिहुँलोक में भोड़ो मुहड़ो तिलक बिन ४ तिलकहि सत अस्नान तिलक ब्राह्मण शिर सोहै । तिलक बिनाकछुकरौ सबै फल निष्फल जोहै ॥ तिलकतिया शृंगार तिलक नृप शीश लगावै । तिलक वेद परमाण तिलक त्रैलोक चढ़ावै । है तिलक तत्त्व युगयुगसदा तिलक मिलें सिधिपाइये । श्रीपरशुराम ब्रह्मांड में सुयश तिलक को गाइये ५ दोहा ॥ बाना बड़ो दयाल को तिलक छाप अरु माल ॥ यम डरपै कालू कहै भय मानै भूपाल ६ माया टारिये ॥ माया सगी न तनसगो सगो न यह संसार ॥ परशुराम या जीव को सगो सु सिरजनहार ७ कहत हैं करने नहीं मुँहके पड़े लबार ॥ कारो मुहड़ो

होइगो साईंके दरबार ८॥ भाव में न जान्यों आप में आपभाव लायो आपु बोले तुम बड़े उपकारी हो॥ पद॥ रे मन संत बड़े उपकारी। यद्यपि सकल सिद्धि इनके सँग जीवन सों हितकारी॥ निर्मलजल बोले अतिनिर्मल निर्मल कथा दृढ़ावै। निर्मल में मलदेखे कबहूं तो ततकाल छुड़ावै। माया मिले महोक्षो माड़ै आनँदमें दिनकाटै। करि हरिभक्ति तरै भवसागर और न तारन माड़ै॥ त्यागै लेह देह पुनि त्यागै चित लालच नाहिं काई। चतुरदास इन भक्तनि को सँग छांड़ि अनत नहिं जाई ९ आप तो गुणग्राही हो तापे ऊंटकी नारिको दृष्टांत पै में अपराध कियो पै तुम ताही न निंदा पहुँचै न अभाव पहुँचै १० कुण्डलिया॥ अगर श्यामके भृत्यसन दुनी देत घिसि जात। आकाशै बिचुरीखिवै खरी चलावै लात॥ खरी चलावै लात बिमुखकृत भक्तनि निंदा। उलटिपरे तिहि छार छार परसे नहिं चंदा॥ ज्यों छाया उपहार प्रहार न लागो तनको। त्यों जगकी उपहास कहा पहुँचे हरिजन को ११ रात उपकारी पै साहूकार को सुई दीनी से दृष्टांत॥

मूल॥ गुणनिकरगदाधरभट्टअति सबहिनकोलागै सुखद॥ सज्जनसुहृदसुशीलवचनआरजप्रतिपालै। निरमत्सरनिष्कामकृपाकरुणाकोआलै॥ अनन्यभजन दृढ़करनधस्योबपुभक्तनकाजै। परमधरमकोसेतुविदित वृन्दावनगाजै॥ भागवतसुधावरषैवदन काहूकोनाहिं नदुखद। गुणनिकरगदाधरभट्टअतिसबहिनकोलागै सुखद १३८॥

निर्मत्सर॥ दोहा॥ बात कहैं निर्लोभकी भस्यो हिये आत लोभ॥ युगल प्रेम रस रूपकी कैसे उपजे गोभ १ सो ऐसो वक्ता न होइ। श्रोता ऐसो चाहिये जाके तनमन श्याम॥ वक्ताहू हरि को भगत जाके लोभ न काम २ श्रोता ऐसो न होइ। कथा सुनै नहिं बीरतन बधै आपनीबाइ॥ पापी मानुष परशुराम के औंबे

उठिजाइ ३ श्याम ॥पद॥ सखीहौं श्याम रंगरँगी। देखि बिकाइ गई वह मूरति सूरति माहिं पगी॥ संगहुतो अपनो सपनो सो सोइरही रसखोई। जागेहु आगे दृष्टिपरै सखि नेकु न न्यारोहोई॥ एक जु मेरी अंखियनि में निशि द्यौस रह्यो करि भौन। गाइ चरावनजात सुनौसखी सोधौं कन्हैयाकौन॥ कासों कहौं को पतियाइरी कौन करै बकवाद। कैसेके कह्योजात गदाधर गूंगेको गुरुस्वाद ४ ॥ कवित्त ॥ मोरपक्ष धरे पटपील बन मालगरे सांवरी सी मूरति प्रवीन मोसों पगीहै। टरत न टारी पलकणहूं न होनि न्यारी जेतिक बिसारी बिसरति नाहिं लगी है॥ चलतिहौं तो चलतिहै बैठीहौं तो बैठीहै सोईहौं तो सोई हेरी जागीहौं तो जगी है। तुम रावि मिलि मेरी आंखिन को दीपदेख पेऊ तौ मैं मूंदराखी तऊ तहां लगी है ५ कान न करति सीख कानन फिर-तिसुनि अतिही हठीली फिरि पाछे पछिताई है। पाल झुलिजैहै काम अंगनि में रहे काल नैनशर लागे कुलि पुनि गिरिजाईहै॥ अबलों न मानती हौं मेरी कही बात सुनि पाछे जउजानति है बातनि पिछाई है। दीठिकहूं ऐहै मनमोहन मनोज छबि दौरि दौरि अटनि चढ़ेको फलपाई है ६ ॥

टीकागदाधरभट्टजूकी॥ श्यामरंगरँगीपदसुनिकैगुसा ईजीनपत्रदैपठायोउभैसाधुवेगिआयेहैं। रैनीबिनरंगजाके से चढ़योअतिशोचबढ़योकामदौप्रेमवढ़योतहांलौंजआ येहैं॥ पुरढिगकूपतहांबैठेरसरूपलगेपूछिवेकोतिनहींसों नामलैबतायेहैं। रहोकौनठौरशिरमौरवृन्दावनधामनाम सुनिमूर्च्छाह्वैकेगिरेप्राणपायेहैं ५२० कान्हरकहीभट्टश्रीग दाधरजीयेईजानोमानोउहिपातीचाहफेरीकैजिवायेहैं। दियोपत्रहाथलियोशीशसोंलगाइचाइदांचतहीचलेवेगि वृन्दावनआये हैं ॥ मिलेश्रीगुसाईंजीसोंआंखेंभरिआ

ईनीरसुधिनशरीरश्रीरधीरबहीगाये हैं । पढ़ेसवग्रंथसंग नानाकृष्णकथारंग रसकीउमंगअंगअंग भावछाये हैं ५२१ नामहैकल्यानसिंहजातिरजपूतपूतबैठोआइ कथा सोअमृतरंगलाग्योहै । निपटनिकटवासग्रौरहाप्रकाश गांवहालपरहासतन्योतियादुखपाग्योहै ॥ जानीभटसंग सोंअनंगवासदूरिगईकरौंलैकेनईआनिहिये कामजाग्यो है । मांगतफिरतहुतीदुचतीश्रोंगभवतीकहीलैरुपैया बी सकेकुकहोरागयो है ५२२ ॥

विषय महादुर्गतिही है ब्रह्मा पुत्रीके पाछे परयो चन्द्रमा गुरुपत्नी के राधादेवजू श्रीमोहनी के ब्रह्मा के रोंगटाके फोंगटाकी नलीकी तुलीपै अध्यातसों काढ़िये १ ॥ कवित्त ॥ सूधेकहे तू अबै नहिं मानत तू इत फेरि न नेकु चितैहै । भूमि में आंक बनावत मेटतपोथिये कालिये दिनजैहै ॥ सांचीहौं भापति मोहिं ददा कीसों प्रीतमकी गतितेरिपै हैहै । मोसों कहा अंठिलात अजानुल कैहौं ककाजूसों तोहूं पढ़ैहै २ ॥

गदाधरभट्टजीकीकथामेंप्रकाशकह्योअहोकृपाकरोश्र बमेरीसुधिलीजिये । दईलौंडीसंगलोभगंगचितभंगकि येदियेलैचताइअबमेरोकामकीजिये ॥ बोलेआपबैठियेजू जापनितकरोहियेपापनहींमेरोगईदरशनदीजिये। श्रोता दुखपाइभाषैझूंठीयाहिमारिनाखै सांचीकहिराखैसुनित नमनछीजिये ५२३ फाटिजाइभूमितौसमाइजाइश्रोता कहैंबहैदृगनीरहैअधीरसुधिआईहै । राधिकावल्लभदास प्रकटप्रकाशभासभयोदुखराशितब सुनिसोवलाई है ॥ सांचीकहिदीजे नाहींअभीजीवलीजै डरसबैकहिदईसुख

लियेसंङ्गाभाई है। काढ़ितरवारितियामारिवेकल्यानग योदयोसोप्रबोधहै मैंकरीदयानाई है ५२४॥

मेरो काम कीजिये पद॥ साधो जगमें कामिनि ऐसीरे। राजा रंक सबनिके घरमें वाघिनि ह्वैकै बैसीरे॥ बसती छोड़िरहैं बनवासा चाबति सूखे पातारे। डांवपरे तिनहूं को नारि देदातीपर लातारे॥ ज्ञानी गुनी शूर वे पंडित येतो सबै सयानेरे। सूधे होइ परें फांसीमें युवती हाथ बिकानेरे॥ तीनिलोकमें कोउ न छांड्यो फिरै दाढ़ तरसारे रे। हरीदास हरिसुमिरण लागे राच भगवंत उबारे रे १ दियो परबोधन्दाय॥ कामान्धायनपश्यन्ति ज न्मान्धश्चनपश्यति॥ नपश्यन्तिमदोन्मत्ता अर्थीदोषनपश्यतिर॥ दोहा॥ त्रिपदचुगै जिनि चुगैमन चुगत कछू सुखहोइ॥ फिरि फांसी ऐसी परै तिहि सम दुःख न कोइ ३ रंगन कबहूं जाइ जिनि भूलि विपचन रंग॥ मनमथ ठग मारत तहां लिये बहुत ठगसंग ४ राधावल्लभ लाल बिन क्यार न पायो सुःख॥ डार डार मेंहूं फिर्‌यो पात पात में दुःख ५॥

रहैकाहूदेशमेंमहंतआयोकथामाहिंआगेलेबैठापदेखि सबैसाधुभीजेहैं। नेरेअनुमानपर्योनहोतशोचसोतपरेक रेलैउपाइहैलगाइदिर्चैलीजेहैं॥ संतएकजानिकैजताइद ईमहंतजूकोगयेपाससबैजनमिलिअतिरीझेहैं। ऐसीचाह होइमेरेरोइकैपुकारकरी चलीजलधारनैन प्रेमआइधीजे हैं ५२५ आयोएकचोरघरसंपतिबटोरिगांठिबांधीलैस रोरिक्योंहू उठैनाहिंभारीहै। आइकैउठाइदईदेखीइन रीतिनई पूछौनामप्रीतिभईसूलोयेविचारीहै॥ बोलेआप लैपधारोहोतहीसवारोआवैऔरदूरागुणीमेरेतेरेयहीज्यारीहै। प्राणनकोआगेधरोआनिकेउपाइकरोरहैलसुन्याइ भयोशिष्यचोरीडारीहै ५२६॥

जलधारि ॥ दोहा ॥ परसा हरियशसुनतहीं स्वै न जलभरि आंखि ॥ भरि भरि मूठी धूरिकी तिन आंखिनमें नाखि १ हरियश सुनिकै नैन जो स्रवैं न भरि भरि वारि ॥ परसा मूठी धूरि की तिन आंखिनमें डारि २ फुटो नयन फाटो हियो जरो सुनत किहि काम ॥ स्वै द्रवै पुलकै नहीं तुलसी सुमिरत राम ३ ॥ सोरठा ॥ हरियश जीवनमूरि तुलसी सुनत न दृग स्रवैं ॥ तिन नैननि में धूरि भरिभरि मूठी मेलिये ४ ॥

प्रभुकीटहलनिजकरनकरतआपभक्तिकोप्रतापजानैभावतनाईहै । देतहुतेचौकाकोऊशिष्यबहुभेटलायोदूरि हीतेदासदेखिआयोजनाईहै ॥ धोवोहाथबैठोआइसुनिकैरिसाइउठेसेवाहीमेंयाइयाकोलीजिसमुझाईहै । हियेहि तरासजगआशको बिनाशकियोपियोप्रेमरसताकीआश लैदिखाईहै ५२७ मूल ॥ हरिचरणशरणचारणभगतहरिगायकयेताहुआ ॥ चौमुखचौराचंडजगतईश्वरगुणजानैं । करमानंदअरुकोल्हुअल्हुअक्षरपरवानैं ॥ माधवमथुरा मध्यसाधुजीवानंदसीवां । हुदानरायणदासनाममांडननग्रीवां ॥ चौरासीरूपकरचिचतुरबाणीबरनतनिजजुवा । हरिचरणशरणचारणभगतहरिगायकयेताहुवा १३८ टीकाकरमानंदचारनकी ॥ करमानंदचारनकी बाणीकी उचारनमें द्रवणजोहियोहोइसोऊपिघिलाइये । दियो गृहत्यागिहरिसेवाअनुरागभरे बटुवासुग्रीवहाथछरीपधराइये ॥ काहूठौरजाइगाड़वेहीपधरायेवापैलायेउरप्रभु भूलिआयेकहांपाइये । फेरिचाहभईवई श्यामकोजताइ जातलैमँगवाइ देखिमतिलैभिजाइये ५२८ ॥

निजकर ॥ हृषीकेण हृषीकेशसेवनभक्तिरुच्यते ॥ रामभक्ति

यश में नहिं देखी। लोचनमोरपक्षकरलेखी॥ सोसमकुलिश क॰
ठोर सुहाती। रघुपति चरित न सुनि हरषाती॥ जगआश को
विनाश कियो॥ सवैया॥ आशको दास रहे जबलों तबलों जग
को नरदासकहावै। त्यागी गुनी कवि पण्डितकोऊहो आशलिये
सबको भरमावै॥ स्वर्ग महीतल वासकहूँ करौ आश जहांलगि
नाच नचावै। ताते महासुखपाइ निराश में आशतजे भगवानको
पावै १॥ दिखाई है॥ कुंडलिया॥ अयकहैं अपस्वारथी परमा
रथ पूजालेइ। आपु न जाई सामुहे औरनको सिखदेइ॥ औरन
को सिखदेइ हिया अपनो नहिं शोधै। नखशिख जटित अज्ञान
मूढ़ जगको परबोधै॥ निज आंखिनके अंध गैल औरनि उपदेशै॥
भवजल भख्यो अपार ताहि तरिसकै न शेशै २॥ दोहा॥ सीता
राम सुजानतजि करै औरको जाप॥ ताके मुख में दीजिये नौ॰
सादर को बाप ३॥ फेरि चाहभई॥ हरिसेवा राखिलई गुरुको
त्यागि दियो माता पिता पुत्र स्त्री आदिक क्योंकि सबको त्यागि
हरिकी सेवा करनी नहीं तो धूरि लगाइकै धूरिही फांकनी हरि
सेवा घरही में क्यों न करी एकान्त बिना न होइ गृह म दुख
आइ लगै ४ वनमें काहेको दुखहोइ। लेना एक न देना दोइ ५
तापै दृष्टांत डुकरियाकी हँसुलीको॥श्लोक॥ अहंभक्तपराधीनः॥

कोल्हअल्हभाईदोऊकथासुखदाईसुनोपहिलोविरक्त
मदमांसनहिंखातहै। हरिहीकेरूपगुणवाणीमेंउचारकरै
धरैभक्तिभावहियेताकीयहबातहै॥ दूसरोअनुजजानोखा
हसबअनुमानोनृपहीकोगावैंप्रभुकभूगाहजातहै। बड़ेके
अधीनरहैजोईकहैसोईकरै ईशकरिचाहैआपदीनतामें
मातहै५२९बड़ेआयकहीचलौद्वारकानिहारिसईमिथ्या
जगभोगयामेंआपुहीविहातहै। आज्ञाकेअधीनचल्यो
आयेपुरलीनभयेनये चोजमंदिरमेंसुनौकानवातहै॥ को

ल्हनेसुनायेसबजेजेनानाछंदगाये पाछेअल्हदोइचारक हैंसकुचातहैं । भयोईहुँकारोप्रभुकहीमालागरैडारोलाय पहरावोकह्यो मेरोबड़ोभ्रातहै ५३० दयोपैनयन्हिदयो बड़ोअपमानभयोगयोबूड़ोसागरमेंदुखकोनपारहै । बूड़ तहीआमेंभूमिपाइचलोझमिप्रीतिसों अनीतिभूलैनाहिं मानोतरिवारहै ॥सोईआयेलेनहरिजनमनचैनझिल्योमि ल्योकृष्णजाइपायोअतिसुखसारहै॥बैठेजबभोजनकोदई उभैपातरिलै दूसरीजुकैसी कहीवहीभाईप्यारहै ५३१ ॥

आपुही विहात है ॥ पद ॥ सुपनो सो धन अपनो श्याम । आदि अन्त तासों ना बिछुरिय परत काल सों काम ॥ तन धन सुत दारा गृह सर्वसु जाहि भजे लैनाम । देखि देखि फूलो जिनि भूलो जग नटवाको धाम ॥ ज्यों बछराके धोखे गइया चाटति है वह चाम । ऐसे व्यास आश सब झूंठी सांचो है हरिनाम१॥ कुंडलिया ॥ एक छेदकी यह दशा देहहि घने देखाइ । गिलति कटोरी वारिको गिली आपही जाइ ॥ गिली आपही जाइ विषै भोगत अज्ञानी । ज्ञानी परे न वात आप फित जात बितानी ॥ पुनि जैसे जल लैन थके दूरै जलबेली । ऐसेही सब विषै मिटै गुरु चेला चेली २ ॥ पाछे अल्ह ॥ सवैया ॥ देश विदेश के देखे नरेशन रीझिकै कोऊ जो बूझ करैगो । याते तने तन जातगिरो गुण सोगुण औगुण गांठि परैगो ॥ बांसुरीवारो बड़ो रिझवार है श्याम जु नेक सोढार ढरैगो । लाड़िलोछैल छबीलो अहीरको पीर हमारे हियेकी हरैगो ३ ॥ नये नये चोज॥ विरक्तको आदर सत्कार मन्दिरमें भगवान्‌सदा करै हैं सो न कियो विपयी को कियो यह नयो चोज ॥

सवैनृपभयोदुखगयोसोईहुतोनयोदियोपरवोधवाकी वानलुनिलीजिये । तेरोछोटाभाईमेरोभक्तसुखदाईताको

कथालेबलाईजामेंआपहीसोंधीजिये ॥ प्रथमजनममांझ वड़ोराजपुत्रभयोगयोगृहत्यागिसदामोसोंमतिभींजिये। आयोवनकोऊभूपसंगरागरंगरूप देखिचाहभईदेहदई भोगकीजिये ५३२ तेरेईवियोगअन्नजलसबत्यागिदियो जियोनहींजातवापैवेगिसुधिलीजिये। हाथपैप्रसाददीनो आइघरचीन्हिलीनोलुपनोसोगयोबीतिप्रीतिवासकीजि ये ॥ द्वारकाकोसंगसुनिआवतहीआगेचल्यो मिल्योभूमि परिदगभरिबहेदीजिये। कहीसबबातश्यामधामतज्योता हीक्षणकस्योवनवासदोऊमतिअतिभीजिये ५३३ अल्ह हीकेवंशमेंप्रशंसयाहिजानिलेहु वड़ोऔरुभाईछोटोना रायणदासहै। दीरघकसाऊलघुउपज्योउड़ाऊभाभीदियो सीरोभोजनलैग्योदुखरासहै ॥ देवोमोकोतातोकरिबोली वहक्रोधभरियहूजाकरोभरवावैकियोहासहै। गयोगृह त्यागिहरियागकस्यो वैसेहीजु भक्तिवशश्यामकह्योप्रकट प्रकाशहै ५३४ ॥

दियो प्रबोध ॥ कुंडलिया ॥ अगर असत आलाप तजि हरि गुण हिरदे लेखि। परयतको कह देखिये पाइन तरकी देखि ॥ पाइन तरकी देखि बात जनि कहै पराई। आनि जरै कोउ घरो राखि उर जरतो भाई ॥ सारो राखत सती सुनो नहिं राखत धारो। अपनो पहरे जागि गांठिलो भुतो उवारो १ ॥ गयो गृह त्यागि ॥ कवित्त ॥ दूरहीसे मीठी मीठी बातें सो बनाय कहै अं- तर कपट तासों पल न पतीजिये। वाणी विन पंडित विवेक विन भूपति औ ज्ञानहीन गुरु ताकी दीक्षाहू न लीजिये ॥ कहै हरि भक्त राज विन कैसो रजपूत विना सनमान ताको दान कहा छी- जिये। नदी विन ग्राम हरिसेवा विन काम कैसो जामें नहीं प्रीति

सोई मित्र कहा कीजिये २॥ दोहा॥ या भवपारावारके उलँघि पार को जाइ॥ तिय छवि छाया ग्राहिनी बीचहि पकरे आइ ३ रसन शिश्न संयम करै हरिचरणनतर वास॥ नबहीं निश्चय जानिये राम मिलनकी आस ४ तजविलास जो विषयके जौन भ्रमसों जाहिं॥ भानु उदय तमरहै तो वहै भानही नाहिं ५॥

मूल॥ नरदेवउभैभाषानिपुणपृथीराजकविराजहुव॥ सवैयागीतश्लोकवेलिदोहागुणनवरस। पिंगलकाव्यप्रमाणविविधविधिगायोहरियस॥ परदुखविदुखश्लाघ्यवचनरचनाजुविचारै। अर्थविचित्रनिमोलसबैसागरउद्धारै॥ रुक्मिणीलतावर्णनअनुपवागवदनकल्याणसुव। नरदेवउभैभाषानिपुणपृथीराजकविराजहुव १४०॥

उभयभाषानिपुण॥ पंडित ह्वैकै भाषाको प्रमाण नहीं करै जामें हरियश होइजाइ भाषाको विवेकी हैं ते सब प्रमाण करै हैं १॥ श्लोक॥ साधुभिर्ग्रस्तहृदयो भक्तैर्भक्तजनप्रियः २॥ अज्ञानी नहीं प्रमाण करै हैं तापै दृष्टांत वैष्णवको अरु पंडितको ३ हरियश॥ दोहा॥ हरियश रसनहिं कवित महिं सुनै कौन फल ताहि॥ शठ कठपुतरी संग धुरि सोयेको फल काहि ४ वचन रचना॥ सुवरणको चाहत सदा कवि व्यभिचारी चोर॥ पांवभरत चिंता करैं श्रवण सुहात न शोर ५॥

टीकापृथीराजराजाकी॥ मारवारदेशवीकानेरकोनरेशवडोपृथीराजनामभक्तिराजकविराजहै। सेवाअनुरागअरुविषयवैराग्य ऐसोरानीपरिहिंचानीनाहिंमानोदेखीआजहै॥ गयोहोविदेशतहांमानसीप्रवेशकियोह्वियोनहीं छवैकैसेसरैमनकाजहै। वीतेदिनतीनिप्रभुमंदिरनदीठि

१ इस पै अक्षरको लघुकरके पढ़ने से पद बनता है॥

परैपाछेहरिदेखिभयोसुखकोसमाजहै ५३५ लिखिकै पठायोदेशसुंदरसँदेशयह मंदिरनदेखेहरिरीतेदिनतीन हैं। लिख्योआयोसांचुवांचिअतिहीप्रसन्नभयेलगेराज बैठप्रभुवाहरप्रवीनहैं॥ सुनोऔरएककथोप्रतिज्ञाकरीहि येघरोमथुराशरीरत्यागकैरसलीनहैं। पृथ्वीपतिजानि कैमुहीमदईकाविलकी बलअधिकाईनहींकालकेअधीन हैं ५३६ जीवनअवधिरहेनिपटअलपदिनकलपसमान नीतिपलनविहातहै। आगमजनाइदियेवाहीइन्हैंसांचो कियो लियोभक्तिभावजाकेछायोगातगातहै॥ चल्योच ढिसांड़िनीपैलईमधुपुरीआनिकरिकैसनानप्रानतजेसुनी बातहै। जयजयधुनिभईव्यापिगईचहूंओरभूपतिचकोर यशचंददिनरातहै ५३७ मूल॥ द्वारिकादेखिपालंटती अचढ़िसीवकीधीअटल॥ असुरअजीतअनीतिआगिनि मैंहरिपुरकीधौं। सांगनसुतनैसादगाइरलऔरैंदीधौं॥ धराधामधनकाजमरणबीजाहूमांडौं। कमधुजकुटकेहु वौचौकचतुरभुजचांड़ौ॥ वादेतवाढ़िकीवीलकपांद नासचाड़सबल। द्वारिकादेखिपालंटतीअचढ़िसीवकीधी अटल १४१॥

विषय वैराग्य॥ कवित्त॥ हांसी में विषाद बसै विद्या में वि वाद बसै भोगमाहिं रोग पुनि सेवामाहिं दीनता। आदरमें मान घसै शुचिमें गिलान बसै आवन में जानवले रूप माहिं हीनता॥ योगमें अभोग औसँयोगमेंबियोग बसै पुण्य माहिं बंधनऔलोभ मेंअधीनता। निपट नवीन ये प्रवीननि लुवीनलीन हरिहूंसोंप्रीति सवहीसों उदासीनता ६ सांचसाचि तो राजाने बाहर क्यों न देखे बाहरकी भावना नहीं प्रतिज्ञादेशकी भक्तनिको उपेक्षानहींहै २।

टीका ॥ कावापतिसींवांलुतसांगनकोप्यारोहरिद्वारा व्रतिहुँशयोपुकारेरक्षाकीजिये ॥ सदाभगवानआपभक्तप्र तिपालकरैंकरौप्रतिपालमेरोतुनिसतिभीजिये ॥ तुरकअ जीतनामग्रामकोलयाईआगि लईबागपोरकीओगेहटूक कीजिये । दुष्टसबमारेप्रभुकहूतेउबारेनिजप्राणवारिडारे कहूनयोरसपीजिये ५३८ ॥

करौ प्रतिपाल मेरो ॥ दोहा ॥ करैनकरावैआपही नाम न अपनो लेहि ॥ साईंहाथ बढ़ाइयों जिहिभावै तिहि देहि१ ॥ भक्त भूप बड़े बड़े राजा सर्वदिशानको जीतैं पै इंद्रिय न जीतिजाहिं ॥

मूल ॥ श्रीपृथ्वीराजनृपकुलवधूभक्तभूपरतनावती ॥ कथाकीरतनप्रीतिभीरभक्तनिकीभावै । महाप्रहोत्सोमुदित नित्यनँदलाललड़ावै ॥ मुकुंदचरणचिंतवन भक्तमहिमा ध्वजधारी । पतिपरलोभनकियोटेकअपनीनहिंटारी ॥ भ क्तपनसबैविशेषहीआमेरसदनसुनखाजती । श्रीपृथ्वीरा जनृपकुलवधूभक्तभूपरतनावती १४२ ॥ टीका रतनाव तीजीकी ॥ मानसिंहराजाताकोछोटोभाईभाधोसिंहताकी जानोंतियाताकीबातलैबखानिये । ढिगजोखवासिनिसो इयालनिभरतनाम रटतिजटितप्रेमरानीउरआनिये ॥ न वलकिशोरकभूनंदको किशोरकभूंवृन्दावनचंदकहिआंखें भरिपानिये । सुनतविकलभईसुनिवेकीचाहभईरीतियह नईकछुप्रीतिपहिचानिये ५३९ ॥

भक्ति न होइ इन अबलाने इंद्रियजीतिकै भक्तिकरी याते भ- क्तिभूपकह्यो १ कथा कीर्तन सांझ ॥ आहपावैं न निवाह कसी- दा असीनिसीराहल्लां । इश्क दिलादे देना लेना लेमहिं बूदीग- ल्लां ॥ साहजुलफछल्लों निसछल्ले असीतिली तरसल्लां । वल्लभ

रसिकरूमाललालपर भूल हमेसा झल्लां १ चाहभई ॥ कवित्त ॥ जादिनते श्रवण परयो है कान्ह तादिनते लग्योई रहत रसनासें आठोयाम है। चोवाचीर पानीपान चंदन चमेली हार मांगतही मुख निकसत घनश्याम है ॥ शोचिके सकोचनि रुसोचनि सकल दुख सुखको दिनेश जियको सो निजधाम है। प्रीतिरीति तंत्र जग जीतिवेको यंत्र मन मोहनी को मंत्र मनमोहन को नाम है २ जाको जामें मनलग्यो सोई ताको राम। रोमरोम में रम रह्यो नहीं आनसों काम ॥ मूलिवेनी ॥

बारबारकहैंकहाकहैउरगहैमेरो वहैठगनीरहोशरीर सुधिगईहै। पूछोमतिबातसुखकरौदिनरातयह सहैनि जगातरागीसाधुकृपाभईहै ॥ अतिउतकंठादेखिकहैसो विशेषसदरशिकननरेशनकीबालीकहिदईहै। टहलछुटाई औरिसानेसैबैठाईवाहि गुरुबुधिआईयहजानो रीतिन ईहै ५८० ॥

बारबार ॥ कवित्त ॥ कदहुके अंग अंगराइ रोंपि डारत है अलिन भोराई क्योंहू कल न परतिहै। उत्तर सहेली लाई तिनके संदेश सुनि करत प्रसिद्ध कवि ऐसेही अरति है ॥ कैसे कैसे गई कहु कैसी कैसी बातें भई कहां हैं ललन सुनि धीर न धरति है। एक बेर पूँछि फेरि पूँछि फेरि फेरि पूँछि वेर वेर वेई बातें पूँछिबो करति है १ पूँछो मति ॥ हेरत बारहि बार उतै अजू बावरी बाल कहाधों करगी। जो कवहूं रसखानि लखै फिरि क्योंहुन वीररी धीर धरेगी ॥ मानिहैं काहूकी कानि नहीं जब रूप ठगी हरि रंग ढरेगी। याते कहूं शिखमानि भटू यह हेरनि तेरेई पैंड़े परैगी २ दोहा ॥ प्रीति कि रीति अनीतिहै प्रीति करौ जिनि कोइ ॥ सुख दीपक कैसेबरै बिरह नाग जहँ होइ ३ त्रिया आदर लक्षिणी और ज्ञान गणागर्ने ॥ प्रेमपौरि पगधरतही गये ततक्षन

सर्व ४ नेहनेह सब कोउ कहै नेहकरो मतिकोइ ॥ मिले दुखी बिछुरे दुखी नेही सुखी न होइ ५ नेहस्वर्गते उतस्यो भूपर कीनों गौन ॥ गलीगली ढूंढ़न फिरे बिन शिर को घरकौन ६ जरेजरे तो जरिबुझे बुझर जरे हूनाहिं ॥ अहमद दाझेप्रेम के बुझि बुझि कै सुलगाहिं ७ प्रेम कठिन संसार में नाकीजे जगदीश ॥ जो कीजे तो दीजिये तन मन धन अरु शीश ८ ॥

निशिदिनसुन्योकरैदेखिबेकोअरबरै देखेकैसेजातजू लगातह्नभरे हैं। कछुकउपाइकीजैमोहनदिखाइदीजै तबहीतौजोजैबेतौआनिडरभरेहैं ॥ दरशनदूरिराजछोडैलोटेधूरि पैनपावैकछिदूरिएकप्रेमबशकरेहैं । करोहरि सेवाभरिभावधरिलेवा एकश्यामरसखानदैवखानमनधरेहैं ५४१ इंद्रनीलमणिकृष्णरूपकियो लियोवहैभाव सों सुभावमिलिचलीहै । नानाविधिरागभोगलाड़कोप्रयोगयामैंयामिनीसुदनभोगभईरंगरलीहै ॥ करतशिंगार छबिसागररतनपारावाररतनिहारियाहीमाधुरीसोंपलीहै । कोटिकउपाइकरिपेयोगयज्ञपारपरै ऐपैनहींपावैयहदूरिप्रेमगलीहै ५४२ ॥

सुपन ॥ दोहा ॥ सोयेढिंग बातेंकरे जगे उठत गेहधाट ॥ कित है आवत जातकित पौरीलगे कपाट १ नख शिख रूपभरे खरे तऊ चहत मुसुकानि ॥ लोचन लोभी रूपके तजैनलोभीबानि २॥

देख्योईचहततबकहतउपाइकहा अहाचाहबातक हौंकौनकोसुनाइये । कहीजूनबावोढिगमहलकेठौरएक चौकीलैबैठायोचहुंओरमभुझाइये ॥ आवैंहरिप्यारेतिन्हैं आवेंबेलिवाइकहांरहेतेछुवाइपाँइरुचिउपजाइये । नाना

विधिपाकमासांआगेआनिधरेआपडारिचिकदेख्योश्याम दृगनलखाइये ५४३ ॥

चाहबात ॥ चौपाई ॥ कुँवरि कहै सखिको विस रहै । जहँ वह सांवरो प्रीतमरहै ॥ सो दिश हाथसों सखिनि बताई । सो दिश जीवनमूर सिमाई ॥ कमलपत्र लै पक्ष बनावै । उड्योचहै सो क्यों उड़ि आवै ॥ मनसों कहै कुटिल तू आइ । इकलोई उठि पियपै जाइ ॥ नेक तौ नैननिहूँ सँगलैरे । मोहन मुखको देखन दैरे ३ ॥

आवैंहरिप्यारेसाधुसेवाकरिटारेदिनकिहूंपावँधारे जिन्हैंव्रजभूमिप्यारिये । युगलकिशोरगावैंनैननिवहावैंनीर ह्वैगईअधीररूपदृगनिनिहारिये ॥ पूँछीवाखवासिनिसों रानीकौनअंगजाकेइतनीअटकसंगभंगसुखभारिये । चलीउठिहाथगह्योरह्योनहींजातअहो सहौदुखलाजबड़ीतनकविचारिये ५४४ ॥

आवैं ॥ पद ॥ चलिसन ढूँढ़न जैये सतगुरुके छौना । शिर के साटें पाइये ये राम खिलौना ॥ प्रेम जँजीर जरायके गहि राखो भाई । इन सन्तनिके मोहते मिलिहैं रघुराई ॥ कृष्णकृष्ण नित पढ़तहैं शुचिते चित लागे । पाइँ टिके नहिं पाप के दुख सबही भागे ॥ कहि मलूक सब छांड़िके गहिलै यह हाला । जोइ जोइ मूरति सन्तकी सोइ देखि गुपाला १ ॥ युगल ॥ कवित्त ॥ वृन्दावन वासआस बढ़त हुलास रास विविध विलास सदा सुख हरिदासके । भाल पै तिलक श्याम बन्दनी औ कंठ माल तुलसी रचत गुंज छापे दै प्रकास के ॥ युगलकिशोर हिये सुखमें भकोर नामनीर बोर भूमिकै सुसूचक विलास के । सदा सतसंग विनै अंग अंग पगे पुनि जगे जग माहिं नीके लागे आस पास के ॥

देख्योभेविचारिहरिरूपरससागनाको कीजियेअहार
लाजकानिनीकेटारिये । रोकतउतरिआईजहांसंतसुख
दाईआनिलपटाईपाइँविनतीलैधारिये ॥ संतनजिलाइवे
कीनिजकरअभिलाख लाखलाखभांतिनसोंकैसेकैउचारि
ये । आज्ञाजोईदीजैसोईकीजैसुखपाईअंजुप्रीतिअवगा
हीकरोलागीअतिप्यारिवे ५४५ प्रेममेंननेमहेमथारलैउ
मँगिचलीचलीहगधारसोपरोसिकैजिमायेहैं । भीजिगयो
साधुनेहसागरअगाधदेखि नैननिमेषतजीभयेसलमा
येहैं ॥ चंदनलगाइआनिबीरीहूखवाइस्यामचरचाचला
इरूपरूपरसछायेहैं । भूपदीगाँवभूमिआयेसबदेखिवे
कोदेखिदरपासलिखिसानुसपठायेहैं ५४६ ह्वैकरिनिशं
करानीसंकगतिलईनई दईटजिलाजवैठीमोड़नकीभीर
में । लिख्योलैदिवाननरआयेलैबखानकियो वांचिसुनि
आंचलागीनृपकेशरीरमें ॥ प्रेमसिंहसुतनाहिकालसोर
सालआयोभालपैतिलकभालकंठीकंठतीरमें । भूपकोस
लामकियोनरनजताइदियो बोल्योआवमोड़ीकेरेपक्षोम
नधीरमें ५४८ ॥

टारिये ॥ मेरी कुल पूजि तूही सांची ठकुरानी करि तूही
नित आंखिन में हिये में धरतिहौं । तेरेई संतोष देत दक्षिणा
रसोले गुन मन मानि आलिनकी रीझ निदरतिहौं ॥ आनि
बन्यो योग अब मेरे बड़ भागिनतें ताहीते अधीनता लै दीनता
करतिहौं । देखन दे नेक प्राणप्रीतम कुंआरसिंह हाथ लाज आजु
तेरे पाइँन परतिहौं ३ ॥ प्रेमसिंह ॥ कवित्त ॥ सदा साधु सेवा
रंग नितही प्रसन्न सुनि भीजि जाइ हियो आन्दो प्रीतको स्व-
रूप है । प्रेमसिंह नागताको अर्थ अभिराम सुनो सिंहसम भक्ति

वस हिये श्याम रूप है ॥ दोऊ मिलि नाम मानों जानों नरसिंह दत रतिकी बड़ाई याते भयो भक्त भूप है। हरिदेव इष्ट मिष्ट लागी जन्त सेवा याको शिष्ट गुण देख लखु कीरति अनूप है १॥ प्रेम सेन मोरमुकुट पै प्रियदास गोविंद संग रहें दरसान ते वाद प्रफ मोहनभोग प्रमान करि लैगई पाटो दांतुन नहीं फरी यह क्यों न खावो लकड़ी भलो २॥

कोऊभीररजागयोभीतरलेशोचभयो पात्रेपूंछिलियेः कह्योनरसिंहदासनिकै। तबतोविचारीअहोमोड़ीहूंहैमारी जातिभयेसुखगातभक्तिभावडरआनिकै ॥ लिख्योपत्र माजीकोतूप्रीतिहियेसाजोजोपै शीशधरिआजीआइराखो तजिम्रानिकै। सभामध्यभूपकहीमोड़ीको विरूपभयोरहो अबमोड़ीकहीभलोमतिजानिकै ५४८ लिख्योदैपठायो वेगिलालुसलैआयेजहां रानीभक्तिसानीहाथदईपातीवां चिये। आयोचाहिरंगवांचिनुसरोप्रसंग नारमीजेजेकुलै लहूरिल्पिप्रेमसांचिये ॥ आगेसिवापाकगिरिमहलकहं तजाइलाईवांहीठौरप्रभुनीकेगाइनाचिये। अमनदत्तागि दियोलिखिपत्रपुत्रदियो भाईमोड़ीआजुलगहितकरियां चिये ५४९॥

तजिम्रानिको ॥ दोहा ॥ धनदै नीके राखिनन तनदै राखो लाज ॥ लाज प्राण तजि दीजिये एक प्रेम के काज १ नह करैते बावरे करि तूरैं ते कूर ॥ धुर निरबाहैं जे दोऊ तेई प्रेमी शूर २॥ प्रेम कि चौपरि है सही तासें बाजी शीश ॥ कायरताको जे गहें तो पावें वह खीश ३ ॥ दूरिदिये ॥ जबलगि शिर पर शिर हुता तब लगि फूलन हार ॥ नाहिं सँभारो जात है शिर उतरे को भार ४ ॥ अन्न तृप त्यागि दियो ॥ पात्रे ॥ प्रार्थयेदैष्णवस्यान्नंप्र

तेन विचक्षणः॥ सर्वपापविशुद्ध्यर्थंतस्मात्तेजलंपिवेत्५ मार्कण्डे-
ये॥ अवैष्णवगृहेभुक्त्वापीत्वावाज्ञानतोयदि॥ शुद्धिश्चान्द्रायणे
प्रोक्ताऋषिभिस्तत्त्वदर्शिभिः६॥ शुद्धंभागवतस्यान्नंशुद्धंभागीरथी
जलम्॥ शुद्धंविष्णुपरिचित्तंशुद्धमेकादशीव्रतम् ७॥

गयेनरपत्रदियोशीशसोंलगाइलियो बांचिकैमगन
हियेरीझबहुदईहै। नौवतिबजाईद्वारबांटतबधाईकाहूनृ
पतिसुनाई कहीकहारीतिनईहै॥ पूछैंभूपलोककह्योमिटे
सबशोकभयेलोडीके जुयोगस्वांगक्रियोबनगईहै। भूपति
सुनतबातअतिदुखभयोगात लयोवैरभावचढ्योत्यारीई
घरमईहै ५५० नृपसमुभाइराख्योदेशमेंचवावह्वैहै बुधि
वंतजनआइसुतसोंजनाईहै। वोल्यौत्रिपैलागिकोटिकोटि
तनखोयेएकु भक्तिपरकामआवैयहैमनआईहै॥ पाइँपरि
मांगिलईदईजूप्रसन्नतुम राजानिशिचल्योजाइकरोजिय
भाईहै। आयोनिजपुरढिगधरिनरसिलेआनिकह्योसोव
खानिसबचिंताउपजाईहै ५५१ भवनप्रवेशकियोमंत्रीजो
बुलाइलियो दियोकहिकटीनाकलोहूनिरवारिये। मारि
बोकलंककूनआवोयोंसुनाईभूप काहूबुधिवंतनविचारिले
उचारिये॥ नाहरजूपींजरामेंदीजैछोड़िलीजैमारि पाछैतें
पकरिवहबातदाबिडारिये। सबनिसुहाईजाइकरीमनभाई
आयोदेखोवाखदासिकहीसिंहजूनिहारिये ५५२ करिह
रिसेवाभरिरंगअनुरागदृग सुनीयहबातनेकुनैनउतटारे
हैं। भावहीसोंजानैउठिअतिसनमानैअहो अजूमेरेभाग
श्रीनृसिंहजूपधारेहैं॥ भावनासचाईवहीशोभालैदिखाई
फूलमालपहराईरचटीकोलागेप्यारेहैं। भौनतेनिकासिधा

ये मानोंखम्भफारिआये विमुखसमूहततकालमारिडारे हैं ५५३॥

नृसिंहजू पधारे हैं॥ तब पूछहू लाई क्योंकि सूदम अलंकार १॥ श्लोक॥ कान्तमायान्तमालोक्यगत्वागुरुजनांतिकम्॥ करे कलितमम्भोजंसंकोचयतिसुन्दरी २॥ कवित्त॥ वांसुरी के बीच एक भौंर डारि लाई सखी मूंद्यो वहु यत्न चले वुधि वल भारी सों। भनत पुराण यामें आपही सों धुनि होति कान देके सुनो कह्यो धरि सुकुमारी सों॥ रीझिरिझिवार अति मन में मगन भई आप तनचाह सुख ढांक्यो श्याम सारीसा। अंचलसें गांठि दे विहँसि उठि चली सखी प्यारी हँसि कह्यो आजु वसिये हमारी सों ३॥

भूपकोखबरिभईरानीजूकीसुधिलई सुनीनीकीभांति आपनब्हेकेआयेहैं। भूमिपरिम्मासटांगकरिहरीमतिभई दयाआपआइवाकेवचनसुनायेहैं॥ करतप्रणामराजारो लीअजूलालजूको नेकफिरिदेखोएकठोरपैलगायेहैं। बोल्योन्टपराजधनसबहीतिहारोचारोपतिपैनलोभकहीक रौलुखभायेहैं ५५४ राजामानसिंहमायौसिंहउभेभाईच ढेनावपरकहूंतहांबूड़िवेकोभईहै। बोल्योवड़ोभ्राताअव कीजियेयतनकौन भौनतियाभक्तकहीओटसुधिदईहै॥ ने कुध्यानकियोतवै आनिकैकिनारोलियो हियोहुलसायो जेठचाहनईलईहै। कह्योआनिदरशनदिनैकरिगयोरा जाअनिहीअनूपकथाहियेव्यापिगईहै ५५५ मूल॥ पा रीखप्रसिधकुलकांथड्याजगन्नाथसीवाचरम॥ रामानुज कीरीतिप्रीतिपनहिरदहिधाय्यो। संसकारसमतत्त्वहंस ज्योंवुद्धिविचाय्यो॥ सदाचारमुनिवृत्तिइंदिरापधतिउजा

गर । रामदासमुतसंतअनन्यदशधाकोआगर ॥ पुरुषो त्तमकेपरसादतें उभैअंगपहिरयोतरस । पारीखप्रसिद्धकु लकाँथइच्चाजगन्नाथसीवाधरस ॥ १८३ ॥

मुनिवृत्ति ॥ राजधानी न लेहिं भारते ॥ एक ब्राह्मण गि- लौकरें ॥ तासों अज्ञानी ने कही हमारे राजा पै जाउ तौ बहुत द्रव्य मिले तब रोइउठ्यो कृष्ण सों कही तेऊ रोइ उठे युधि- ष्ठिर सों कही तेऊ रोइ उठे कृष्णसों पूछी याको हेत कहा तब कही ब्राह्मण याते रोयो ऐसी निषिद्ध धान्य बतायो कलियुग में मांगेहू न मिलैगो उभै अंग कवच पहिरयो प्रकट अंग सं तो लोह को राजा के शोनित याते यह हीरे के अंगमें ज्ञानको पवन बाण काहूको न लगे ? ॥

कीरतनकरतकरस्वपनेहूमथुरादासनमंडियो ॥ सदा चारसंतोषमुहृदसुठिशीलसुभासे । हस्तकदीपकउदय मेटितमवस्तुप्रकासे ॥ हरिकोहियविश्वासनंदनंदनबल भारी । कृष्णकलससोंनेमजगतजानैशिरधारी ॥ श्रीव र्द्धमानगुरुबचनरतिसोसंग्रहनहिंछंडियो । कीरतनकर तकरस्वपनेहूमथुरादासनमंडियो १८४ टीका ॥ वासकै तिजारेमांझभक्तिरसराशिकरीएकबाततताकोप्रकटदि खाईहै । आयोवेषधारीकोऊकरैशालिग्रामसेवाडोलैसो सिंहासनपैआनिभीरछाईहै ॥ स्वामीकेजुशिष्यभयेतिन हूंकोभावदेखिवाहीकोप्रभावकह्योआपहियेमाईहै । नेकु आनचलोवहरीतिकोविलोकियेजू बड़ेसरवज्ञकही हूपेन हिंजाईहै ५५६ पाईँपरिगयोऐकैजाइढिगठाढ़ेभये चाह. तफिरायोपैनफिरैशोचपत्योहै । जानिगयेआपकछूयाही कोप्रतापऔपैमारोकरिजाइयोंविचारमनधत्योहै ॥ मूठि

लैचलाईभक्तिलेजआगेपाईनाहिं वाईलपटाईभयोऐसो मानोमख्योहै। द्वैकरिदयालजाजिवायांसमझायोप्रीतिपं थदरशायोहियभयोशिष्यकख्योहै ५५७॥

स्वपनेहू॥ स्वपने में कौन मांगै है प्रकटही मांगै है दृष्टान्त कलावत को अरु ब्राह्मण को विश्वास एगल अरु बनिये को दृष्टान्त १ द्वै करि दयाल॥ हरिजन हंस दिशानि यों डोलै। मुक्ता फल बिन चोंच न खोलै॥ मौन गहै कै हरि यश बोलै। असद अलाप न कबहूं लोलै॥ मानसरोवर तट के वासी। हरि सेवा रति और उदासी॥ नीर क्षीर को करै निबेरा। कहै कबीर सोई गुरु मेरा २ याहि यह उपदेश करयो चौरेही में ठाकुर को बैठावनो ऐसी क्रिया न कीजै ३॥

मूल॥नवल्नकनरायणदासकोप्रेमपुंजआगेबढ़ो॥प दलीनोपरसिद्ध गीतिजासेंहढ़नानो। अक्षरतनमयभयोम दनमोहनरँगरातो॥ नाचतसबकोउआइकाहिपैंयहबनि आवे। चित्रलिखतलोरह्योत्रिभँगदेशीजुदिखावै॥ हँडि यासराइदेखतकुनीःपिपुरपनथीतोनढ़ो। नवल्नकनराय णदासकोप्रेमपुंजआगेबढ़ो १४५ टीका॥हरिहीकेआगेनृ त्यकरैहियेधरैयहीढरैदेशदेशनमेंजहांभक्तभीरहै। हंड़िया सराइमध्यजाइकैनिवासलियो लियेसुनिनामलोमलेच्छ जानिपीरहै॥ बोलिकैपठायेमहाजनहरिजनसबैआयो है सदनगुनीलावोचाहपीरहै। आनिकैसुनाईभईअतिकठि नाईअबकीजैजोईभावैवहनिपटअधीरहै ५५८॥

दृढ़ नातो पद॥ सांचो एक प्रीति को नातो। कै जानै राधि-का नागरी मदन मोहन रँग रातो॥ यह शृंखला अधिक बल-वंती बांध्यो मन गजमातो। मीराप्रभु गिरिधर सँग हिलि

मिलि सदा निकुंज घसातो १ ॥ दोहा ॥ हितचित चाहन चतुरई बोल न आवत गात ॥ राधा मोहन प्रेमकी कहत बनै नहिं बात २ आइ कलाइक जगत हित जानि सुदेश विदेश ॥ पर उपकारी साधु ये नहिं अधरम को लेश ३ त्रिभंग देशी ॥ सूधी जो कुछ उर गड़ै सो निकसे दुख होइ ॥ कुवर त्रिभंगी जहँ गड़ै सो दुख जानै सोइ ४ पण्डित कविता ढाढ़िया कहिवेहीलों दौर ॥ कहि कान्हा जूझै नहीं जूझनवारे और ५ हँड़िया सराइ प्रागसे छः कोस ६ ॥ हरिहीके आगे ॥ दोहा ॥ मनमँजूष गुण रतन हैं चुप कढ़ि दे हठतार ॥ पारखि आगे खोलिये कुंजी वचन रसाल ७ तापै दृष्टांत अकबरशाहको तानसेनको हरिही के आगे गावै ८ ॥

किनाप्रभुआगेनृत्यकरियेननेमयहै सेन्हावाकेआगेकहौकैसेविसतारिये । कियोयोंविचारऊंचेसिंहासनमालाधारितुलसीनिहारिहरिगानकस्योभारिये ॥ एकओरबैठोमीरनिरखैननैनकोरमगनकिशोररूपसुधिलैविसारिये । चाहैंकछुवास्योपरेऔचकहीप्राणहाथ रीझिसनमानकियोसीचलागीप्यारिये ५५९ मूल ॥ गुणगणनविशदगोपालकेयेतेजनभयेभूरिदा ॥ बोहितरामगुपालकुंवरगोविंदेमांडिल । क्षीतस्वामिजसवंतगदाधरअनँतानँदभल ॥ हरिरामूमिश्रदीनूदासवच्छपालूकन्हरगायन । गोसुरासद्दामनार्दश्यामपुनिहरिनारायन ॥ श्रीकृष्णजिवनभगवानजनश्यामूदासूविहारीअमृतिदा । गुणगणनविशदगोपालकेयेतेजनभयेभूरिदा १४६ निर्वर्त्तभयेसंसारतेतेरेजिजमानसब । उधवरामरेणुपरशुगँगाधूखेतनिवासी । अच्युतकुलकृष्णदासशेषसाहीकेवासी ॥ किंकर

१ त्रिभपदमें गुरुउच्चारणनकरनेसे दोइ मात्रायें गिनी जावैंगी तो पद ठीकहो ॥

कुंडाकृष्णदासखेमसोंठगुपानँद । जयधौराघवविदुरदयालमोहनपरमानँद ॥ रघुनाथदमोदरचतुरनगनकुंजऔकजेवन्तअन । निर्वर्त्तभयेसंसारतेतेमेरेजिजमानसब १४७ ॥

भूरिदा ॥ दशमे ॥ तवकथामृतंतप्तजीवनंकविभिरीडितंकल्मपापहम् ॥ श्रवणमङ्गलं श्रीमदाततंभुविगृणन्तितेभूरिदाजनाः १ ॥ संत जन बड़े दाता भक्ति संपत्ति के देनहारे जन तो सामान्य मनुष्यनको कहे हैं सो नहीं ॥ श्लोक ॥ सालोक्यसार्ष्टिसामीप्यसारूप्यैकत्वमप्युत ॥ दीयमानंनगृह्णन्तिविनामत्सेवनंजनाः २ जे ऐसे जन तौ नहीं टुटकी टूक मांगत डोलैं ॥ दोहा ॥ राम अमल माते फिरै पीवै प्रेम निशंक ॥ आठ गांठि कोपीनमें कहै इन्द्र सों रंक ३ ॥

टीका ॥ श्रीथंडैढिगहीमेंजैतारनविदुरभयोभयोहरिभक्तसाधुसेवामानिपागीहै । वरषानभईसवखेतीसूखिगईचिंतानईप्रभुआज्ञादईवड़ोवड़भागीहै ॥ खेतकोकटावोआगहावोलैउड़ावोपावो दोइजारमनअन्नसुनीप्रीतिजागीहै । करीवहरीतिलोगदेखैनप्रतीतिहोतिगायेहरिमीतराशिलागीअनुरागीहै ५६० मूल ॥ श्रीस्वामीचतुरोनगनमगनरैनिदिनभजनहित ॥ सदायुक्तअनुरक्तभक्तमंडलकोपोषत । पुरमथुराव्रजभूमिरमतसबहीकोतोषत ॥ परमधरमदृढ़करनदेवश्रीगुरुआराध्यो । मधुरवैनसुनिठौरठौरहरिजनसुखसाध्यो ॥ सबसंतमहंतअनंतजनयशविस्तारेजासुनित । श्रीस्वामीचतुरोनगनमगनरैनिदिनभजनहित १४८ आवैंगुरुगेहयोंसनेहसोंलैसेवाकरैधरैहियेसांचभावअतिमतिभीजिये । टहललगाइदईनईरू

पवतीतियादियावासोंकहिस्वामीकहेंसोइकीजिये ॥ सेवा कैरिझावेयातेप्रेमडरानितनयोद्वोघरघरवधूकृपाकरिली जिये । धानपघराइसुखपाइकैप्रणामकरि धरीव्रजभूमिउ रवसेरसपीजिये ५६१ ॥

खेती सूखिगई ॥ वेषहरयो भयो बहुत चढ़िगयो भगवान् वेष बढ़ायो चाहे तो अकाल परे सो परयो नव विचारी कहूं उठि जाइय १ मगन रैनि दिन सतोगुणवृत्तिते रजोगुण तमकी निवृत्ति अरुमंडल को पोषत द्वारपै रमत ॥ सवैया ॥ डोलत हैं इकलीरथ एकनि धार हजार पुराण रटे हैं । एकलगे जपमें तप में पच लिधि समाधिनमें अटके हैं ॥ बूझि जो देखतहौं रसखानिजु मूढ़महा सिगरे भटके हैं । सांचे हैं वे जिन आपनपो इहि सांवर ग्वालपै वारिदिये हैं २ ॥ टहल लगाई लाहौर से कान्हा फकीर तुलसी खत्रानी सेवाकरे ३ ॥

श्रीगुर्विंदचंदजूकोभोरहीदर्शकरि केशवशृँगारराज भोगनंदग्रामभें । गोवर्द्धनराधाकुंडह्वैकेआवेवृन्दावनमन मेंहुलासनितकरैचारिग्राममें ॥ रहेपुनिपावनपैभूखदिन तीनिवीतेआयेदूधलैप्रवीणएकऊरगेइयामममें । मांग्योनेकु पानीलाऐफेरिवहपानीकहां दुखमतिसानीनिशिकह्यो कियोकाममें ५६२ ॥

मांग्यो नेकुपानी ॥ दोहा ॥ तबलों बुरोजु मांगिबो मांगत निकसे जीव ॥ पानिप चाहें आपनी मांगि न पानी पीव १ मांगन तापै जाइये जाके मुखमें लाज ॥ मांगते जु प्रसन्न ह्वै पूजै मनके काज २ आवत देखे साधके पुलाकि उठै सब अंग ॥ तुलसी ताके जाइये कीजै तासों संग ३ ॥

पानीसोंनकाजवजभूमिमें विराजदूधपियोघरघरग्वा

ङ्गाप्रभुजूनेदईहै । येतौव्रजवासीसदाचीरकेउपासीकैसे मोकोलनदेहैंकहीदेहैंसुनीनईहै ॥ डोलेधामश्यामक्ह्योजो ईमानिलियोसोईदियोलैपरचौंकृसतीतितवभईहै । जहां जांछिपायैंपात्रवेगिढूंढि आनलावैं अतिसुखपावैंकीनीली लारसमईहै ५६३ मूल ॥ मधुकरीमांगिसेवैभगततिनप रहौंवलिहारकियो ॥ गोपालरमप्रधानद्वारकामथुराखोरा । कालखमांगानेरभलौभगवानकोजोरा ॥ वीठलटोडेखेमपै डागूंनौरेगाजै । श्यामसेनकेवंशचिघरथीपारविराजै ॥ श्री जैतारनगोपालकोकेवलकूबैमोलनियो । मधुकरीमांगि सेवैभगततिनपरहौंवलिहारकियो १५५ ॥

क्षीरके उपासी ॥ माता यशोदाने तुमको डारि दूध उफना- तो राख्यो ॥ सवैया ॥ यज्ञ सुदान सुमौनकरें बहुरूपरु वापी तड़ाग बनावैं । करें व्रत नेम सुइंद्रियनिग्रह उग्रह योग समाधि लगावैं ॥ है रसखानि हदे जिनके कबहूं नहिं सो सुपने में न आवैं । ताहि अहीरकी छोहरियां छछिया भरि छांछिको नाच नचावैं ४ लखमीती जहां मालिनि डोलै वंदनवारें बांधति पूजा पै दृष्टान्त रुक्मिणीजी के वेटाको ६ ॥

टीका ॥ कहतकुम्हारजगकुलनिसतारकियो केवल सुनामसाधुसेवाअभिरामहै । आवैंवहुसंतप्रीतिकरीलैअ नंतजाकोअंतकोनपावैऐसीधोनहींग्रामहै ॥ बड़ीपैगर जचलेकरजनिकासिवेको बनियानदेतकुवांखोदौकीजो कामहै । कियोवोलिकहीतोलिलियोनीकेरोलिकरिहित सोंजिमायेजिन्हैंप्यारोएकश्यामहै ५६४ गयेकुवांखोदि

---

१ लियो और कियो पदों में यो, को लघुकर पढ़ने या उनके स्थानमें यकार करने से पद ठीक बनता है ॥

वेकोसुवाऱ्योंउचारैनाम हुआकामत्रानैजानीभयोसुखभा रीहै। आईरेतभूमिभूमिभूमिमाटीदाबिरहेकतकछुजारन्न नहोनकैसेन्यारीहै॥ शोककरिआयेधामदासमनामधुनिकाहू कानपरीवीत्योमामकहीवातप्यारीहै चलेवाहीठौरतुरसु निप्रीतिभौरपरेरीतिकछुऔरमुधिबुधिअतिटारीहै५६५॥

करज॥ एकादशे॥ मद्भक्तपूजाभ्यधिका॥ वैष्णवस्वन्धसत्क त्या १ सत्वन्दीको उधारयो लाइके जब कोई नरजार करैहै यह धर्म्म साधु सेवा धर्म्म २ आदिपुराणे॥ येमेभक्तजनःपार्थ ३ न्यारीहै॥ कूवा जो माटी में रहै जैसे निआरो महरावमेंपे एक हाथ ऊँचो जल प्रसाद पहुंचै माटी क्योंन दूरिकरी सिधाई लगै यातें तो महराव क्योंन ऊँची राखी। कूवा देखिके यह बात यादिरहै जैसे सिद्धको गुफामें बैठारे सिद्धाई को रंगदार खान पान पहुंचे ऐसे हरिने करी ४॥

माटीदूरिकरीसबपहुँचेनिकटतब वोलिकैसुनायोहरे नामीलागीप्यारिये। दरशनभयोजाइधाइपाइँलपटाइ रहेमहरावसीहैकूवहूँनिहारिये॥ धस्योजलपात्रएकदे खिबड़ेपात्रजाने आनिनिजगेहपूजालागीअतिप्यारिये। भईभीरद्वारनरउमड़िअपारआये महिमाअपारबहुसंप तिलैवारिये ५६६ सुंदरस्वरूपध्यानलायेपत्रगाइवेकोसा धुनिजधामआइकूवाजूकेलसेहैं। रूपकोनिहारिमनमैंवि चारकियोआप करैंकृपामोपैप्रभुअचलह्वैवसेहैं॥ करतउ पाइसंतटरतननेकुकहूं कहीजुअनंतहरिरीझेस्वामीअसे हैं। धस्योजानराइनामजानिलईहियेबात अंगलैनमात सदासेवासुखरसेहैं ५६७ चलेद्वारावतिछापलावैयहम तिभईआज्ञाप्रभुदईफिरिघरहीकोआयेहैं। करौसाधुसे

वाधरौभावहियेदृढ़मांझ टरौजिनिकहूंकीजैजेजेमनभाये हैं ॥ गेहहीमेंशङ्खचक्रआदिनिजदेहभये नयेनयेकौतुक प्रकटजगगायेहैं । गोमतीसोंसागरकोसंगमहोरह्योसुन्यो सुमिरनीपठाइकै दोऊलैमिलाये हैं ५६८ भयेशिष्य शाखाअभिलापासाधुसेवहीकी महिमाअगाधजगप्रकट देखाई है । आयेघरसन्ततियाकरतिरसोईकोई आयोवाकोभाईताकोखीरलै बनाईहै ॥ कूवाजूनिहारिजानीवाको हितसादरसोंकीजियेविचारएकसुमतिउपाईहै । कहीम रिलावोजलगईडरकलपैन लईतसमईसबभक्तनिजिमाईहै ५६९ ॥

कबहूँ निहारिये ॥ महीनाभरि भूमि में दवेरहे सो कूवाभयो रघुपति ने रक्षाकियो सो प्रसंग गोमती सों सागर को संगम रह्यो सुमिरनीदै पठाई ॥ संगम भयो सो प्रसंग १ भयेशिष्यशाखादै प्रकारके फरसाफूंकी कानफूंका २ ॥

वेगिजललाईदेखिआगिसीवराईहिये भाकेमुखभई दुखसागरबुड़ाईहै । विमुखविचारितियाकूवाजूनिकारिदईगईपतिकियेऔरऐसीमनआईहै ॥ पर्योअकालबेटा वेटीसोनपालिसकै तकेकोऊठौरमतिअतिअकुलाईहै । लियेसंगकर्योजोईपुत्रपतिभूखभोई आइपरीझींथवामें स्वामीकोसुनाईहै ५७० ॥

विमुख ॥ पद ॥ जिनके प्रिय न रामवैदेही । सो त्यागिये कोटि वैरीसों यद्यपि परम सनेही ॥ तज्यो पिता प्रह्लाद विभीपण वन्धु भरत महतारी । बलिगुरु व्रजयुवतिन पति त्याग्यो जगभये मङ्गलकारी । नातौ नेह रामसों सांचो हदें सुशील जहां लौं । अंजन कहा आंखि जो फूटै बहुतीकहौं कहांलौं ॥ तुलसी

सोइ हित बन्धु सुप्रीतम पूजि प्राणते प्यारो। जासँगबाढ़ै नेह राम सों सोइ निजहितू हमारो १ ॥ दोहा ॥ साधाआयाअन-मनी भाया आयासूरि। केवल कृपा कहैं तू निकसि वाहरीपूरि ॥ पहिले तौ मूर्ख को संगहोइ पाछेते सत्संग सो ज्ञान पाइके त्याग करै ॥ भर्त्तहरिः ॥ यांचिन्तयामिसततंमयिसाविरक्तासाप्यन्यमि च्छतिजनंसजनोन्यसक्तः ॥ अस्मत्कृतेतुपरितुष्यतिकाचिदन्या धिक्ताञ्चतञ्च मदनञ्चइमाञ्चमाञ्च ॥

नानाविधिपाकह्वोतआवैसन्तजैसेसोतसुखअधिकाई रीतिकैसेजातगाईहै। सुनतवचनवाकेदीनदुखलीनमहा निपटप्रवीनमनमांझदयाआईहै ॥ देखिपतिमेरोओर तेरोपतिदेखियाहिकैसेकैनिवाहिसकैपरीकठिनाईहै। र ह्योद्वारभ्यारौकरौपहुंचैअहारतुम्हैं महिमानिहारिदृगधार लैबहाईहै ५७१ कियोप्रतिपालतियापूरीकोअकालमा स भयोजबसमैबिदाकीनीउठिगईहै। अतिपछितातिव हबातअबपावैकहां जहांसाधुसंगरंगसभारसमईहै ॥ करैं जाकोशिष्यसन्तसेयाहीव्रताबैंकरौजोअनन्तरूपगुणचाह मनभईहै। नाभाजूबखानकियोमोकोइनमोललियोदियो दरशाइअतिलीलानितनई है ५७२ ॥

दया आई है ॥ साधवोदीनवत्सलाः ३ ॥ दोहा ॥ कबीरा ॥ साधु मिलै तौ हरिमिलै अन्तररही न रेख ॥ रामदुहाई सतकहा साधूआय अलेख ४ हरिते अरु हरिजननिते रचक अन्तरनाहिं ॥ येईतोहिं पावनकरैं चितवतही क्षणमाहिं ५ ॥

मूल ॥ श्रीअग्रअनुग्रहतेभयेशिष्यसबैधर्मकिधुजा ॥ जङ्गीप्रसिधप्रयागविनोदीपूरनबनवारी। भगवनसिंहभ गवानदिवाकरदृढ़व्रतधारी ॥ कोमलहृदयकिशोरजगत

जगनाथसुलघौ । औरौअनुगउदारखेमखीचीलघुऊ
घौ ॥ तेत्रिविधतापमोचनसवै सौरभप्रभुजिनशिरभुजा।
श्रीअग्रअनुग्रहतेभयेशिष्यसवैधर्मकिधुजा १५२ भारत
खण्डभूधरसुमेरटीलाकीपद्धतिप्रकट ॥ अङ्गदपरमानन्द
दासयोगीजगजागे । खरतरखेमउदारध्यानकेशवअनु
रागे॥अस्फुटत्योलाशब्दलोहकरवंशउजागर। हरीदास
कविप्रेमसवैनवधाकेआगर ॥ श्रीअच्युतकुलसेवैंसदाद्वा
निसंतदशधाअघट । भरतखण्डभूधरसुमेरटीलाकीपद्ध
तिप्रगट १५३ मधुपुरीमहोत्सौमैंगलरूपकान्हरकेसेकोका
रै ॥ चारिवरणआश्रमहुरंकराजाअँनपावै। भक्तनिकोवहु
मानविमुखकोऊनहिंजावै ॥ वीरीचन्दनवसनकृष्णकीरंत
नवरषै। प्रभुकभूषणदेइ महामनअतिशयहरषै ॥ श्रीवी
ठलसुतविमल्योफिरैदासचरणरजशिरधरै। मधुपुरीमहो
त्सौमैंगलरूपकान्हरकेसोकोकरै १५४ हरिभक्तनिको
कलियुगभलैनिवहीनिंबाखेतसे॥आवहिंदासअनेकउठि
वआदरहरिलीजै । चरणधोइदण्डौतसदनमेंडेरादीजै ॥
ठौरठौरकरिकथाहृदैअतिहरिजनभावै । मधुरवचनमहु
लाइविविधभांतिनिजुलड़ावै ॥ सावधानसेवाकरैनिर्दू
पणरतिचेतसे । हरिभक्तनिकोकलियुगभलै निवहीनिं
वाखेतसे १५५ ॥

त्रिविध ॥ तृतीये ॥ शारीरामानुषादिव्या वैहासेयेचमानुषाः ॥
भौतिकाश्चकथंक्लेशा बाधन्तेहरिसंश्रयान् १ कोऊ कहै दूरि कैसे
होइँगे शरीर सो लगेहैं सत्संगते आत्मज्ञान आत्मज्ञानते मिटै २॥
अच्युतः। दोहा ॥ पिंड सुपीड़ा परशुराम् हितकारी कोउएक ॥

और नगरकी शोभता आवैं जाहिं अनेक २ आवैं जाहिं सुकौतुकी पूछे मनकी बात ॥ परसाप्रीतम बाहरी को पूछे कुशलात ३ ॥

ज्योंवसनबढ़ेकुंतीवधूत्योंतूँवरभगवानके ॥ यहअचरजभयोएकखांड़घृतमैदावरषै । रजतरुक्मकीरेलसृष्टिसवहीमनहरषै ॥ भोजनरासविलासकृष्णकीरंतनकीनों । भक्तनिकोवहुमानदानसवहीकोदीनों ॥ कीरतिकीनीभीमसुतसुनिभूपमनोरथआनके । ज्योंवसनबढ़ेकुन्तीवधूत्यों तूँवरभगवानके १५६ ॥ टीका ॥ बीततवरषमासआवैमधुपुरीनेमप्रेमसोंमहोच्छोराशिहेमहीलुटाइये । संतनिजिमाइनानापटपहराइपाछे द्विजनिवुलाइकछूपूजेपैनभाइये ॥ आयोकोऊकालधनमालजाविहाजभयेचाहेपनपाल्यो आयेअलपकराइये । रहेविप्रदूखसुनिभयोसुखभूखवढ़ी आयोयोसमाजकरौवारीमनआइये ५७३ ॥

वसन बढ़े ॥ कवित्त ॥ ऐसी भीर परेपर पीरको हरनहार गिरिको धरनहार सोई धीर धरिहै । दीननिको बांधव विरद ताको सदा रह्यो दावानल पानकियो सोई पीर हरिहै ॥ पंडुनिकी पतनी कहत ठाढ़ी पंचनिमें लपट्यो है चीर सोतौ कैसेकै निवारिहै । खचो क्यों न आनि यो दुशासन से दश और मोर पक्ष धरिहै सो मोर पक्ष करि है १ पांडवकी रानी गहि रावरसों आनी शिरोमणि बिलखानी बिललानी पै न चेत हैं । घटत घटाये पट न घटत ऐंचे पट दुशासन वार वार ढेर कैकै लेतहैं ॥ पांचतन छित आंच तनक न लागी तन लखिकै विपति यदुपति कीनो हेतहैं । गोपिन के चीरि चोरि राखे पट कोरि कोरि तेई मानो जोरि जोरि द्रौपदीको देतहैं २ आनि कुरुवंशको अकरम उदय होत बाढ़यो छल दुहुँओर बन्धुनके गेहमें । पंडवनको तौ मानखंडन

सभाके बीच द्रौपदी पुकारि कह्यो गोविंद सनेहमें ॥ अम्बर के ह्वैगये अटम्बर आकाश लगि खैंचि खैंचि हारो खल पावत न छेह में। भक्तनिके कान ब्रजराज लाज राखन को आप ह्वै बजाज बैठे द्रौपदीकी देहमें ३ ॥ होमही ॥ कवित्त ॥ जिन जिन करनाई तिन तिन करआई करनहीं नाई तिन करनहीं आई है। कागज लिखाई जिन कागदै लिखाई पाई धरामें धराई तिन धरा धूरि खाई है ॥ दैदै लवराई जिन लई है पराई अब ताहूपास नेकहू न रहति रहाई हे। जिनजिन खाई जिन उदर समाती खाई जिन न खवाई तिन खाई बहुताई है १ ॥ दोहा ॥ बांस चढ़ी नाटिनी कहे मति कोउ नाटिनी होइ ॥ में नटके नाटिनी भई नटै सुनाटिनी होइ २ दीया जगत अनूपहै दिया करौ सब कोइ ॥ धरको धर्यो न पाइये जो कर दिया न होइ ३ नारदते बर पाइकै प्रथम सु-न्दरी होइ ॥ पति बरते सोरीभई सुत बरते पुनिसोइ ४ तापै नारदजीको अरु ब्राह्मणको दृष्टान्त ॥

अतिसनमानकियोलायेजोईसौंपदियो लियोगांठि बांधितबविनतीसुनाइये। संतनिजिमावोभावैरासलैकरा वोभावैजेंवोसुखपावोकीजैबातमनभाइये ॥ सीधोलाइको ढेरधर्योरोकहांसोथोलीभर्यो द्विजनिबुलाइदेतक्योंहूंनि घटाइये। जितनोनिकासैंतातेसौगुनोबढ़तऔरएकएक ठौरबीसगुनोदैपठाइये ५७४ ॥

निघटाइये ॥ दोहा ॥ बुरो निचारैं दुष्ट जन चाहैं कियो बि-गार ॥ जिनको काम न बीगरै रक्षक नन्दकुमार १ जैमाल इनको बड़ो भइया सा बड़ो भक्तहो ॥ सोरठा ॥ बेटा बापत नेह जोपै बीलहे चालनी ॥ जननी काहि जनेह भांड़े सुख भोंड़ो तनहिं २ ॥

मूल॥जसवन्तभक्तिजैमालकीरूडाराखोराठवड़॥भक्त नसोंअतिभावनिरन्तरअन्तरनाहीं। करजोरेंइकपाइमु

दितमनआज्ञामाहीं ॥ वृन्दावनदृढ़वासकुंजक्रीड़ारुचि भावै । राधावल्लभलालनित्यप्रतिताहिलड़ावै ॥ परप रमधरमनवधाप्रधान्सदनसांचनिधिप्रेमजड़ । जसवन्त भक्तिजैमालकीरूडाराखोराठवड़ १५७ हुयेहरीदासभ क्तनहितैवनिजननीएकैजन्यो ॥ अमितमहागुनगोप्य सारचितसोईजानै । देखतकैतुलाधारदूरिआसैउनमा नै ॥ देइदमान्योपैजविदितवृन्दावनपायो । राधावल्लभ भजनप्रकटपरतारदिखायो ॥ परमधरमसाधनसुदृढ़क लिकामधेनुमेंगन्यो ॥ हुयेहरीदासभक्तनिहितैधनिजन नीएकैजन्यो १५८ ॥ टीका ॥ हरीदासवनिकसोकाशी ढिगवासजाको ताकोयहपनतनत्यागोव्रजभूमिहीं । भ योजुरनारीछीन छोड़िगये वैदतीन बोल्योयोंप्रवीनवृन्दा वनरसभूमिहीं ॥ वेटीचारिसन्तनिकोदईअङ्गीकारकरौध रौडोलीमांझमोकोध्यानदृढ़भूमिहीं । चलेसावधानराधा वल्लभकोगानकरैंकरैंअचरजलोगपरोगामधूमिहीं ५४५ आवतहींमगमांझछूटिगयोतनपनसांचोकियो श्यामवन प्रगटदिखायोहै । आइदरशनकियोइष्टगुरुप्रेमभरिपरयो भावपूरोजाइचीरघाटन्हायोहै ॥ पाछेआयेलोगशोगकर तभरतनैन वैनसबकहीकहीतादिनहीआयोहै । भक्तिको प्रभावयामेंभावऔरआनौंजिनि विनहरिकृपायहु वैसेजा तपायोहै ५७६ ॥

श्रीवृन्दावन वृढ़वास ॥ अरिल्ल ॥ चिन्तामणिकी राशि विपिन तजि पाइये । अन्त मिले हरि आपु तऊ नहिं जाइये ॥ वृन्दा-

१ हुये की येकार को लघु करके पढ़ना॥

धनकी धूरि सुधूसर तन रहै। यह आशा रहै चित्त कहूँ को ना चहै ३ राठवड़॥ दोहा॥ साध न भेंटे भरि भुजा पदरज धरी न शीश॥ वड़ी वड़ी करनी करी सो सब ह्वै गइ खीश ४ बांधे सो बांधा मिले कबहूं छोड़े नाहिं॥ मिलै आनि निर्वर्त्त सो छूटेजु पलके माहिं ५ येमेभक्तजनाःपार्थ नमेभक्तास्तुतेजनाः ६॥

मूल॥ भुविभक्तभारजूड़ैयुगलधर्मधुरंधरजगविदित॥ बावोलीगोपालगणनिगंभीरगुनारट। दक्षिणदिशविष्णुदासगांवकासीरभजनभट॥ भक्तनिसोंयहभांवभजेगुरुगोविंदजैसे। तिलकदासआधीनसुवरसंतनिप्रतिजैसे॥ इनअच्युतकुलपनएकरमनिबह्योज्योंश्रीमुखगदित। भुविभक्तभारजूड़ैयुगलधर्मधुरंधरजगविदित १५९ टीका॥ रहैगुरुभाईदोऊभाई साधुसेवाहियेऐसेसुखदाईनईरीति लैषलाईहै। जाइजामहोछमेंबुलायेहुलसायेअंगसंगगाड़ीसामासोभँडारीदैमिलाईहै॥ याकोतातपर्यसन्तघट तीनसहीजातिबातवेनजानैंसुखमानैंमनभाईहै॥ बड़ेगुरुसिद्धजनमहिमाप्रसिद्धबोले बिनैकैउचारीसोईकहिकै सुनाईहै ५७७॥

जूड़ैयुगल॥ दोहा॥ हरदी तौ जरदी तजै चूना तजै सुपेत॥ प्रीतिजु ऐसी चाहिये दोउ मिलि एकै हेत १ दोऊ एकमन ह्वै भक्तिको बोझ उठावै तौ उठतौ गुरुगोबिन्द वैष्णव सब एकरूप हैं १ भक्त भक्ति भगवंत गुरु चतुर नाम वपु एक २॥

चाहतमहोछौ कियेहुलसतहियेनितलियेसुनिबोले करौवेगिदैतियारिये। चहूंदिशिडाख्योनीरकसौन्योंतौऐसेधीरआवैबहुभीरसेतठौरनिसवारिये॥ आयेहरिप्यारे चारौंसंटतेनिहारेनैन जायपगधारेशीशविनैलैउचारिये।

भोजनकराइदिनपांचलगिछायरह्यो पटपहराइसुखदियो अतिभारिये ५७८ आज्ञागुरुदईभोरआवोफिरिआसपा समहासुखराशिनामदेवजूनिहारिये। उज्ज्वलवसनतनए कलेप्रसन्नमनचलेजातवेगिशीशपाइनिमेंधारिये । वेईदे वताईश्रीकबीरअतिधीरसाधु चलेदोऊभाईपरदक्षिणावि चारिये । प्रथमनिरखिनामहरषिलपटिपगलगिरहेओड़ तनवोलेसुनौधारिये ५७९ साधअपराधजहांहोततहां आवतनहोइसनमानसवसंततहींआइये । देखीसोप्रती तिहमनिपटप्रसन्नभयेलयेउरलाइजावोश्रीकबीरपाइये॥ आगेजोनिहारैभक्तराजदृगधारै चलीवोलेहँसिआपकोई मिल्योसुखदाइये । कह्योहांजूमानिदईभईकृपापूरणयों सेवाकोप्रतापकहो कहांलगिगाइये ५८० ॥

विनैलै उचारिये॥ महाराज संततो वहुत आये सामा कहां येती॥ गुरुवोले मनमानों जितौ देतजावो घटैगी नहीं देनहारो समर्थ है १ आस पास प्रदक्षिणा अश्वमेधी यज्ञोंके फलको भोग के फेरि जन्मधरै दंडोतसों जन्म कटैगो २॥

सूल॥ श्रीकील्हकृपाकीरतिविशदपरमपारषदशिषि प्रगट॥ आशकरनऋषिराजरूपभगवानभक्तगुरु।चतुर दासजगअभयछापछीतरजुचतुरवर॥ लाखाअद्भुतरा इखेममनसाक्रमवाचा । रसिकराइमलगौंडदेवदामोदर राचा॥ येसबैसुमङ्गलदासदृढ़धर्मधुरन्धरभजनभट । श्रीकील्हकृपाकीरतिविशदपरमपारषदशिषिप्रगट १६० रसराशिउपासकभक्तराजनाथभट्टनिर्मलवयन । आगम निगमपुराणसकलशास्त्रनजुविचाऱ्यो । ज्योंपारोदैपुटहि

सवहिकोसारउधारयो ॥ रूपसनातनजीवभट्टनारायण भाख्यो । सोसर्व्वसुउरसांचयतनकरिनीकेराख्यो ॥ छत्र फनीवंशगोपालसुवशगाअनुगाकोअयन । रसराशिउपा सकभक्तराज़नाथभट्टनिर्मलवयन १६१ ॥

रसराशि उपासक ॥ रसराशि शिंगार ताके उपासिक नाथ भट्ट हैं शिंगार रस में चारों रस हैं शांत मन की लगन नि- र्बल्य दास्य स्वामी के आधीन सख्यमित्रता समता विश्वास स्वभाव विपर्य्यय न होइ ॥ वात्सल्य पुत्रवत् लड़ावे ॥ शिंगार कां- तकांता समप्रीति आसक्ति सो अवाक्तिमें चारौ रसरहैं जैसे पृथ्वी को गुण सुगन्ध अरु तत्त्व में न मिलै चारों तत्त्व पृथिवीमें मिलैं जल तेज वायु आकाश ऐसेहो रसराशि शिंगार रस कहावै १ ॥ भागवते ॥ मन्येसुरान् भागवतानधीशे संरंभमार्गाभिनिविष्ट- चित्तान् ।येसंयुगेचक्षततार्क्ष्यपुत्रस्यांसेसुनाभायुधमापतंत२फ- नीवंशगोपाल दासके पुत्रनारायणदास ऊंचेगांववालेके पुत्र २ ॥

कड़कठिनकालकलियुगमेंकरमैतीनिकलँकरही ॥ न श्वरपतिरतित्यागिकृष्णपदसोंरतिजोरी । सबैजगतकी फांसतरकितिनुकाज्योंतोरी ॥ निर्मलकुलकांथडाधन्य परसाजिहिजाई । विदितवृंदावनवाससंतमुखकरतव ड़ाई ॥ संसारस्वादसुखवांतकरिफेरिनहींतिनतनचही । कड़कठिनकालकलियुगमेंकरमैतीनिकलँकरही १६२ ॥

कठिनकाल ॥ अग्नीचून को दियो है बाहर तौ रहे श्वानखा- वे ॥ भीतर रहै तौ मसोखावै अग्नी की भलीकथा कथा कहो हो याकठिन कालमें करमैतीही निष्कलंक रही सतयुगमें विषय में ब्रह्मा महादेव तपस्वी ऋषीश्वर इंद्रिचाल होतभये बड़े राजा दिशाजीति पै इंद्री न जीतीजाहिं या अबलाने सब इंद्री जीतिके मन वशकरि वैराग्य कियो १ ॥

टीका ॥ सेखावतनृपकेपुरोहितकीबेटीजानौं बासहौं खड़ेलाकरमैतीसोबखानिये। बस्योउरश्यामअभिरामको टिकामहूंते भूलैधामकामसेवामानसीपिछानिये ॥ बीति जातियामतनवामअनुकूलभयो फूलअंगगतिमानोमति छविसानिये। आयोपतिगौनोलैनभायोपितुमातहियेलि येचितचावपटआभरणआनिये ५८१ ॥

बस्योउरश्याम ॥ संत न ध्यान श्याम कैसे बस्यो ॥ भागवते ॥ यःस्यात्सर्वत्र सर्वदा ॥ ज्ञान वैराग्य भक्ति सर्वत्र सब देशमें हैं सब के हृदयमें हैं घटिबढ़ि क्यों गिन्यो है सो सुनों श्रीभगवान्‌को नाम वासुदेवहै शुद्ध हृदय में झलकै है दर्पणमें मोरचाहोइ तौ न झलकै मँज्योहोइ तौ आइ झलकैसो हृदय दर्पण विषयवासना मोरचे सो करमैती को हृदयउज्ज्वल हरि आइ झलके सतसंग बिना हृदय कैसे उज्ज्वलभयो कही पूर्वजन्मकी भक्ति अजरही शो उदयभई ॥ ऐसे अंधेरी कोठरीमें वस्तु धरिकै विदेशकोगयो ॥ आवतही तुरत उठाइ लीनी ऐसे पछिले जन्मकी भक्ति सिद्धकरी जानौ तौ संगकी उपेक्षा नहीं १ सानिये ॥ कवित्त ॥ अवहीं गई खरिक गाइके दुहाइवेको बावरीह्वैआई डारिदोहनी औपानिकी। कोऊकहै छरीकोऊ भौनपरी डरीकहै कोऊकहै मरीगति हरीअनयानिकी ॥ सासुव्रतठानै नंदबोजाति सयानैधाइ दौरि दौरि आनै मानौ खोरि दैवतानिकी। सखी सबहूंसै मुरझानि पहिचानी कहूँ देखी मुसिकानि या रँगीले रसखानिकी २ ॥

परयोशोचभारीकहाकीजिये विचारीहाड़चामसोंसँवारीदेहरतिकेनकामकी। तातैंदेवोत्यागिमनसोवैजिनिजागिअरेमिटैउरदागएकसांचीप्रीतिश्यामकी ॥ लाजकोन काज जोपैचाहैब्रजराजसुत बड़ोहैअकाज जोपैकरै सुधिधा

मकी। जानीभोरगौनोहोतसानीअनुरागरंगसंगएकवही चलीभीजोमसिवामकी ५८२ ॥

हाड़ चाम सों सानो मांसग्रंथी देह तौ मलीन ॥ सवैया ॥ यौवनजोर मली ललिता सब देखि थकी यह अगम अथाहै। घात चलै चहुँओरहुते सुयहै मनमें अतिशोच महाहै ॥ खेवनहार पुकारकरै अलि मांझ की धारलखी परहाहै। बेहकीनावकुदावपरी मनमेरे मलाह सलाह कहाहै १ जोवनकीसरितागहिरीअरुनैननिनीरनदी उमही है। पीतमको पतिया जु लिख्यो विन खेवटियाकहुँ पारभईहै ॥ मानको राजमहा झकझोरत प्रेमकीडोरि सो लागिरही है। मनमेरे मलाह मिलै तो वचो नहिं वोरि अथाह सलाह यही है २ सोवेजिनि ॥ कुंडलिया ॥ अगर आलकस जिनिकरो दुर्लभ मानुषदेह। अशा अंधेरी छाड़िदै हरिभजि लाहोलेह ॥ हरिभजि लाहोलेह देह जिनि राचीवेरी। नातर यमकेद्वार मूढ़ पैठे जु पवेरी ॥ ना दुपटै अति चेतचाले जो भाई। भूलेयमपुरजाइ समझि ध्रुवलोक वसाई ३ ॥ अगर अजाके स्वादतै तृपित न देख्यो कोइ। जो दिन जाहि अनंद में जीवन को फलसोइ ॥ जीवनको फलसोइ नंदनंदन उरधारै। मंत्रीज्ञान विवेक असुर अज्ञान निवारै ॥ पदम पत्र ज्यों रहै काल सम विषै पिछानै। जग प्रपंच ते दूरि सत्य सीता पति जानै ४ ॥ अगर श्याम उपकार निधि भज्यो नहीं गोपाल। पानी को धननी कह्यो उरन भयो गुवाल ॥ उरन भयो गुवाल प्रभुहि मानुष तनदीयो। भक्ति सुधारस छांड़ि जहर विषयारसपीयो ॥ श्रवण घ्रान मुख प्रान चरण दृग उसँगी आपी। तिनको दीनी पीठि निलज्ज कृतघ्नी पापी ॥

आधीनिशिनिकसीयोंवसीहियेमूरतिसोपूरतसनेहतनसुधिविसराईहै। भोरभयेशोरपस्योपितामातशोचंक

स्योकरिकैयतनठौरठौरढूंढिआईहै ॥ चारोंओरदौरेनर आयेढिगटरिजानीऊंटकेकरंकमध्यदेहजादुराईहै । जग दुरगंधकोऊऐसीवुरीलागीजामें वहुदुरगंधसोसुगंधलो सराईहै ५८३ ॥

लुपि विलराई है ॥ कवित्त ॥ वैदनि वुलाइ लावो स्यानिनि अनेक भांति पर्चति यतन रूप लागति है नेरेमें। योगी यती जे इसी उपासक देव भेरोंके कानरू के वासी पचि मीडो हाथ हेरे में ॥ लोटि लोटि जाइ वीर वोलै न अजान खाइ पनियांकोनिकसी आजु अधिक अँधेरे में। वावरी अनाहक ये भूतन वधाये फिरे आई व्रजवाल नंदलालजूके फेरे में १ ॥ चारों ओर धातरस ठोर ठोर ढूंढिआयेहें। कुयोगिनिको आत्मा अप्राप्त तैसे न मिली जगदुर्गंध कोउ ऐसी बुरी लागी जगत बुगधंहू तें डरी॥ ऊंटको करंक की सुगन्धमानी जगदुर्वासना करंकहूंसे वड़ीमानी २ ॥

वीतेदिनतीनिनाकरंकहीमेंशंकनहीं वंकप्रीतिरीतियह कैसेकरिगाइये । आयोकोऊसंगताहीसंगगंगातीरआई तहांसोअन्हाईवेभूपणवनआइये ॥ ढूंढ़तपरसरामपिता मधुपुरीआये पतेलैवताये जाइमाथुरमिलाइये । सघनवि पिनब्रह्मकुंडपरवरएकचढिकरिदेखी भूमिश्रँसुवाभिजा इये ५८४ उतरिकैआइरोइपाईलपटाइगयो कटीमेरी नाकजगसुखनदिखाइये । चलौगृहवेगिसवलोकउपहा सुमिटैसासुघरजाओमतिसेवाचितलाइये॥ कोऊसिंहव्या घ्रअजुरपुकोविनाशकरैत्रासमेरेहोइ फिरिमृतकजिआइ ये । वोलीकहीसांचविनभक्तनऐसोजानौजोपैजियोचा होकरौप्रीतियहगाइये ५८५ ॥

वेभूषणवनआई है ॥ रजोगुणीको थानो करिकै वृन्दावन कहाजाहि। जैसे विदुरजी दुर्योधन की पौरिपे धनक धरिकै निकसे श्रीधरजीने लिख्योहै डरै नहीं ॥ चक्रवर्ती लिख्यो वधिक को वानो तीर्थयात्रा में कहा करैं यह श्रीवृन्दावन धामहै वैकुंटहूते सर्वोपरिहै १ घरपर चढ़िकरि देखो शरीरमें पिंडोलमाटी लगाये हैं २ मृतक जिवाइये तुम सांची कही भक्ति बिना तो प्रानी मृतकही तुल्यजानों३ नागलोक स्वर्गलोकमेंहू भक्तिनहीं ॥

कहीतुमकटीनाककटै जोपैहोइकहूं नाकएकभक्तिना कलोकमेंनपाइये । वरषपचासलगिविषैहीमेंवासकियो तऊनउदासभयेचनेकोचवाइये ॥ देखेसवभोगमैंनदेखेए कइयामतातेकामतजिधामतनसेवामेंलगाइये । रातितें ज्योंप्रातहोतऐसेतमजातभयो दयोलैसरूपप्रभुगयोहिये आइये ५८६ ॥

क्योंकि चारि कौड़ी कीभांगसों बावरो ह्वै जाइ है ॥ तापैपोस्तीको दृष्टांत अरु भंगीको जहां रागरंग अमृत भोगकैसे न बावरो होइ तातें विद्या धन राज्य पाइकै मत्तहोइहै जैसे चोखावन को पाइकै बावरो भयो ॥ आपुको आपही धिरकार है १ वरष पचास ॥ सप्तमे ॥ मतिर्नकृष्णेपरतःस्वतोवा मिथोभिपद्येतगृहव्रतानाम्॥अदांतगोभिर्विशतांतमोंधं पुनःपुनश्चर्वितचर्वणानाम् २ ॥ कवित्त ॥ धनदियो धामदियो भामसुत नामदिये दियोजग यश ताकै तू चल्यो न रुखमें । नरदेहो दीनी सब सुराति सुपूरी कीनी कामिनी नवोनो नहीं जानदीनों दुखमें ॥ दामनको रोवै निशिवासर जनम खोवै हरि जो बिसारे गोदी ऐसे तैंने सुखमें। धूरिपरी कुलमें बड़ाई में अँगारपरे भारपर बुद्धि क्षार परी तेरे मुखमें ३ पुत्रकलत्र सों चौरासी सों छूटैगो सो नहीं ४ ॥कुण्डलिया ॥ अगर उचारै रामपद कैं सन्तनिकी वाह । हाहा करे न

छूटिहै वैरी वश परिजाइ ॥ वैरी वश परिजाइ काल यमके संग हैगो। तात मात सुत वाम धीर कोउ नाहिं धरैगो॥ दान पुण्य औषधी तिनहूँते काज न सरही। होनहार सो वनी उलट घट को अनुसरही ५॥ अगर आलकस जिनकरौ हरिभजिवे केहेत। वहुत गई थोरीरही थोरीहूमें चेत ॥ थोरीहूमें चेत अमल घट थोरै थोरै। मारग विषै विसार गीशदै सियपति औरै॥ द्वै घटिका में अंग भूप गोविंद पदपायो। दुर्म्मति तजिकै पिंगला श्यामहठ सेज वसायो ६ ॥ दयोलै सरूप॥ पंचम॥ कर्म करन उपजनि पुनि नाश। सुख दुख शोक मोह नित त्राश ॥ इनके हेत दियो हरिने तन। ताहि अन्यथाकरै कौन जन ७ जासु वेद वानी वड़दाम। दृढ़ गलवँधा कर्म गुणनाम॥ तामें वँधे हरिहि हम ऐसे। वहत हैं वैल धनी को जैसे ८ गुण कर्म्मनकरि दुख सुख जो जो। देतहैं हरि हमलेतहैं सो सो॥ ताही के वशरहत हैं ऐसे। अन्ध सआंखिकेवश जैसे ६ मुक्तहु निजतन धारैतौलौं। गर्वत्यागि प्रारब्धहै जौलों॥ और देह पुनि धरै न ऐसे। स्वप्नको तन जाग्यो जन जैसे १० अहिवनहूमें भयहै याते। संगहैंछहइंद्री रिपुजाते॥ आत्माराम जितेन्द्री महा। ता वुधको यह दूषण कहा ११ पहले छह इन्द्री वैरीजे। घरमें रहि ऐसे जीतिते॥ ज्यों गढ़में रहि रिपुनि जीतजन। फिर तहँ रहै जहां मानै मन १२॥ श्रीशुकउवाच॥ त्रिभुवन गुरुकी यह आज्ञा सुनि। अपनी है हलिकई जदिय पुनि॥ अति भागवत तऊ प्रियव्रत जो। आदर सों शिरनाय लई सो १३ विधिहू मनुकी पूजाले पुनि। लखित-नमान प्रियव्रत नारद मुनि॥ मन वाणी व्यवहार अगोचर। ता व्रह्महि सुमिरत गमने घर १४ पाय मनोरथ विधिते मनु जो। नारदको सम्मत लैकै सो॥ सुतहि राजदे अपु त्यागो घर। अतिही विषम विषै विषको शर १५ यों निर्म्मल मानद प्रियव्रतजो। हरि इच्छाते पाय राज्य सो॥ जिहि प्रभाव जग वंधन हरै। तिह हरिपद में नित चित धरै १६॥

आयेनिशिघरहरिसेवापधराय अतिमनकोलगायवही टहलसुहाईहै। कहूंजातआवतनभावतमिलापकहूं आय नृपपूछैद्विजकहांसुधिआईहै॥ वोल्येकोऊतनधामश्याम संगपागेसुनि अतिअनुरागेवेगिखवरमँगाईहै। कहोतुम जायईशाईहांईअशीशकरो कहीभूपआयोहियचाहउप जाईहै ५८७ देखीनृपप्रीतिरीतिपूंछीसववातकही नेन अश्रुपातवहरंगीश्यामरंगमें। वरजतआयोभूपजायकै लिवायल्याऊं पाऊंजोपैभागमेरेवहीचाहअंगमें॥ कालि तीकेतीरठाढ़ीभीरहगभूपलखी रूपकछुऔरैकहाकहैंवेउ मंगमें। कियोमनैलाखवेरआयेअभिलेपराजा कीनीकुटी आयेदेशभीजेसोप्रसंगमें ५८८॥

भूपआयो॥ वनवारीदास मुंसी अरु दारासिकोह शाहजादो ताको प्रसंग राजाको आशीर्वाद न कियो तापै फकीर अरु वाद शाहको प्रसंगपायँ फइलाइदिये १॥दोहा॥ जवलग योगी जगत गुरु तवलग आश निरास॥ तुलसी आशा करतही जगगुरु योगी दास २॥ कवित्त॥ दुरितविदारिनी सकल जगतारिनी हो नित प्रतिपारिनी हो प्यारी व्रजनाहकी। वृन्दावन रसकेलिकारिनीहो हारिनीहो सवनिके नीकी भांति तनमन दाहकी॥ सूरति सुकवि रविनंदिनी कृपाकै दीजे लाड़िली औ लालकी सुभक्ति उतसाह की। और जितीकामनाते सवैपरवाहदेहु रहेपरवाह एकतेरेपरवा-हकी ३॥ छप्पै॥ प्राणजाहु तो जाहु जाहु यश सकल वड़ाई। होहु धर्मको नाश क्रमहि मन गहो जड़ाई॥ आधिव्याधिके दुख करें जे तनको जीरन। करी नहीं उपचारको हो नाना पीरन॥ वहुविध वचन कठोर कहि सवै निरादर करो किन। श्रीवृन्दा-वनको छांड़िये आवो मन भूलि जिन ४॥

मूल॥ गोविंदचंदगुणग्रथनकोखड्गसेनवाणीविस

द ॥ गोपिग्वालपितुमातुनामनिर्णयकियभारी । दानके लिदीपकोप्रचुरअतिबुद्धिउचारी ॥ सखासखीगोपालकालीलामेंवितयो।कायथकुलउद्धारभक्तदढ़अनतनचितयो ॥ गौतमीतंत्रउरध्यानधरतनत्यागोमंडलरसद । गोविंदचंदगुणग्रथनकोखड्गसेनवाणीविसद १६३ ॥ टीका ॥ ग्वालियरवाससदारासकोसमाजकरैशरदउज्यारीअतिरंगवढ़योभारीहै । भायकीवढ़निटगरूपकीचढ़नितत्ताथेईकीरढ़निजोरीसुंदर निहारीहै ॥ खेलतमेंजायमिलेत्यागितनभावनासों झेलतअपारसुखरीझिदेहवारीहै । प्रेमकीमचाईताकीरीतिलै दिखाईभई भावकनिसरसाई वातलागीप्यारीहै ५८९ ॥

वाणीविशद ॥ पद ॥ द्वै गोपिन बिचविच नँदलाला । श्याम मेघके दुहूंओर राजत नव दामिनिवाला ॥ करतनृत्य संगीत भेद गति गरजत मोर मराला । फहरत अञ्चल चञ्चल कुण्डल थहररहे उर माला ॥ मध्यमिली मुरली मोहनधुनि गान वितान छयो तिहिंकाला । चलिये झमकि झँकझँकारि वलयमिलि नूपुर किंकिणि जाला ॥ देव विमाननि कौतुक मोहे लखि भयो मदन विहाला । खड्गसेन प्रभु रैनि शरदकी वाढ्यो रंगरसाला१ पदपदगावत गावतही प्राण त्यागे देहवारी है । देह छोड़िकै ताहीभावको प्राप्तभयो । सनेहकी द्वै जाति एक विछुरनि पूरे सनेही तन मिलनिहूँ में छोड़े विछुरनहूं में छोड़े २ ॥ दोहा ॥ चढ़िकै मैन तुरग पर चलिवो पावक माहिं ॥ प्रेमपन्थ ऐसो कठिन सब कोउ निवहत नाहिं ३ ॥

मूल ॥ शुभसखाश्याममनभावतोगंगग्वालगंभीरमति ॥ श्यामाजूकीसखीनामआगमविधपायो । ग्वालगा

दैंव्रजगाँवपृथकनीकेकरिगायो॥ कृष्णकेलिमुखझेलिअव टउरअंतरधरई। तारसमेंनितगमनअसदआलापनकर ई॥ व्रजवासआसव्रजनाथगुरुभक्तचरणरजअनन्यग ति। शुभसखाश्यामसनभावतोगंगग्वालगंभीरमति १६४ टीका॥ पृथ्वीपतिआयोवृंदावनमनचाहभई सारं गसुनावैकोऊजोरावरिल्यायेहैं। बल्लभहूसंगस्वरभरत हीछायोरंग अतिहीरिझायोदृगअँसुवावहायेहैं॥ ठाढ़ो करजोरियिनैकरीपैनधरीहिये जियेव्रजगरिहीसोंवचन सुनायेहैं। कैदकरिसाथलियेदिल्लीतेछुटायदिये हरीदास तौवरनैंआगेप्राणपायेहैं ५९० ॥

व्रजवास आस॥ झूलना॥ निकुञ्ज को चन्द अरविन्द रस सिन्धु को लाड़िली कुंवरि मोहिं यहै दीजै। आनन्द को धाम अभिराम या विपिन को जनम पर जनम कोऊ जीव कीजै॥ रहूं अति भूरि धूसर सदा प्रेम मय सुनत वर पानी कल केलि जीजै। नवल नव कुञ्ज में फिरौं अलवेली दिनं निरखि घन रूप भरि दृगन पीजै १ परे जे पतोवा सूख भूख में पीयूख जैसे खाऊँ रुख रुख तरे ऐसी मोको जीवका। प्यास ते वढ़ेजु पीर तरनितनैया तीर अंजुलि को भरि धीर छीर नीर पीवका॥ केलि कल जोहत विमोहत सुहै है कवि वृन्दावन कुञ्ज पुञ्ज अमर अमीवका। आनन्द सें रूमि घूमि वसोंगा विलास भूमि आरती को दूमि जैसे सुख पावे हीवका २ व्रज भूमि को लाल जूने स्वाद अपने मुखसों लियो ब्रह्मांडघाटपै १ दृग अँसुवा॥ दोहा॥ रूप चोजकी वात पुनि औंर कटीली तान॥ रसिक प्र- वीननके हदै छेदन करे वे वान १ वतरस नीर गँभीर अतिकोउन पावत थाह॥ मीन लीन रस रासिक जो सोई पावत ताह २॥

मूल॥ सोतीशलाध्यसतानिसभाद्युतियदिवाकरजा।

नियो ॥ परमभक्तिप्रतापधर्मध्रुजनेजाधारी । सीतापति कोसुयशवदनशोभितअतिभारी ॥ जानकिजीवनचरण शरणथातीथिरपाई । नरहरिगुरूप्रसादपूतपोतेंचलिआ ई ॥ श्रीरामउपासकछापदृढ़औरनकछुउरआनियो । तोतीशलाध्यसंतनिसभा द्वुतियादिवाकरजानियो १६५ जगजीवतयशपुनिपरमपदलालदासदोनों लही ॥ हिरदै हरिगुणखानिसदासतसँगअनुरागी । पद्मपत्रज्योंरह्यो लोभकीलहरनलागी ॥ विष्णुरातसमरीतिबधेरैंसोतन त्याग्यो । भक्तवरातीवृन्दमध्यदूलहज्योंराज्यो ॥ खुबखरी भक्तिहरिषांपुरैंगुरुप्रतापगाढ़ीगही । जगजीवतयशपुनि परमपदलालदासदोनोंलही १६६ ॥

सुयश वदन शोभित ॥ दोहा ॥ तुलसी रसना जो भली निशि दिन सुमिरै राम ॥ नहीं तो खैंचि निकारियै मुखमें भले न चाम १ ॥ छापदृढ़ ॥ सवैया ॥ आगम वेद पुराण बखानत कोटिक निर्गुण जाहि न जाने । जे मुनिते पुनि आपहि आपको ईश कहावत सिद्ध सयाने ॥ धर्म सबै कलिकाल ग्रसे जप योग वैराग लै जीव पराने । को करि शोक मरै तुलसी हम जानकी नाथ के हाथ बिकाने १ ॥ जीवत यश ॥ कुंडलिया ॥ अगर उ-भयताकी बनै है सन्तनि के साथ । यक द्वैद्वै अरु चौपरी पुनि लाई दुहुँ हाथ ॥ पुनि लाई दुहुँ हाथ कथा हरिजन मिलिगावे । जीवत यश जगमाहिं बहुरि सदगति को पावै ॥ देव पितरविधि अबाधि कोऊ बाधा नहिं करई । अनन्य भजन गुरु गदित नित्य गोविंद अनुसरई १ सो० । काय कसोके बन बसो हँसो रहो गहि मोन ॥ तुलसी मन जीते विना मिटै नहीं दुख जोन ॥ विष्णु राते वधेरेमें परायण करवाई जब पूरीभई तब शरीर त्यागि दियो १ ॥

इतभक्तनहितभगवानरचिदेहीमाधोग्वालकी ॥निशि

दिनयहैविषारदासजिहिविधिसुखपावैं। तिलकदाम
प्रीतिहृदैअतिहरिजनभावैं॥ परमारथसोंकाजहियेस्वार
थनहिंजानैं।दशधामत्तमरालसदालीलागुनगानैं॥ अति
आरतहरिगुणशीलसमप्रीतिरीतिप्रतिपालकी। इतभक्त
नहितभगवानरचिदेहीमाधवग्वालकी १६७॥ श्रीअग
रसुगुरुपरतापतेपूरीपरीप्रयागकी॥ मानसवाचकाय
रामचरणनचितदीनों। भक्तनसोंअतिप्रेमभावनाकरि
शिरलीनों॥ रासमध्यनिर्याणदेहद्युतिवशादिखाई आ
ड़ौचलियोअंकमहोछौंपूरीपाई॥ क्यारेकलशाऔलीध्व
जाविदुषश्लाघाभागकी। श्रीअगरसुगुरुपरतापतेपूरी
परीप्रयागकी १६८ पृथिप्रकटअमितगुणप्रेमनिधिधन्य
विप्रनामहिधर्यो॥ सुंदरशीलसुभावमधुरबाणीमंगलक
रु। भक्तनकोसुखदैनफल्योबहुधादशधातरु॥ सदन
वसतनिर्वेदसारभुक्जगतअसंगी। सदाचारऊदारनेम
हरिदासप्रसंगी॥ द्रुतदयादृष्टिवशआगरेकथालोकपाव
नकर्यो।पृथिप्रकटअमितगुणप्रेमनिधिधन्यविप्रनामहि
धर्यो १६९॥

दयादृष्टि करिकै जगत्को पारउतारे। यातै वृन्दावन निकट ताहि छोड़िकै आगरे रहे कथा तो सबही कहैं॥ पै क्रियावान् जनकी सुनिकै पारलगैं॥ कवित्त॥ जैसे शशि निशिको अकाश में प्रकाश पावै अमी वरसावै औ सिरावै ताप तनकी। तैसे रसिकाई औ अननताई भाई अति घातमुख शोभितहै क्रियावा नजनकी॥ जैसे धनधामभामश्यामजूके लागेकाम होत अभिराम दुखग्राम नाशैमनकी। ऐसेहरिगुण कोऊ पुण्य न बखानकरैनो पैकान प्राणहरै सुनिगुणगनकी १ आगरे॥दो०॥वृन्दावनकेघाटको

जल आवत इहबाट ॥ ताते यह है आगरो और गांवसबघाट १॥

टीका ॥ प्रेमनिधिनामकरैसेवाअभिरामश्यामआगरो ग्रामरनिशिशेशजलल्याइये । वरषासुऋतुजिततिन अतिकीचभई भईचितचिंताकैसेअपरसआइये ॥ जोपै अंधकारहीमेंचल्योतौबिगारहोत चलेयोंबिचारिनीचछु वैनसुहाइये । निकसतद्वारजबदेख्योशुकवारएकहाथमें मसालयाकेपाछेचलेजाइये ५९१ जानीयहैबातपहुंचाये कहूंजातयहअवहींबिलातभलेचैनकोऊधरीहै । यमुनालौं आयोअचरजसोंलगायोमन तनअन्हवायोमतिवाही रूपहरीहै ॥ घटभरिधरयोशीशपटवहआयगयो आयग योघरनहींदेखकहाकरीहै । लागीचटपटीअटपटीनसम झिपरैगटगटिभईनईनैननीरझरीहै ॥ ५९२ ॥

तुकुवार ॥ एकमसालमें कूपीते तेलडारिविकी शोभाहो न्यारी ॥ कवित्त ॥ लाल चहुचहीं पागवांधी अनुरागहीसों तापै झुकि रह्योतुरौ अनिही विशालहै । झँगाघेरदार फेंटा वांध्यो अतिचातुरीसों गरेगुंजमाल शोभादेत प्रेमजाल है ॥ वाहुउंचोके चहाय चूड़ाचमकायअति औचकही आये जिस हाथ में मसाल है । आगेआगे चल्योजाय मनको लगाय लियो सुधि विसराय चित करत निहाल है १ सोरठा ॥ जामुखसों जो नाम निकसत सो प्रगटतभयो । बहुरंगी वह श्याम है सरूप अँखियन लख्यो २ दोहा ॥ पुतरी कारी आंखिकी रूप श्यामको मानि ॥ तासों सब जगदेखिये वाविन अंधोजानि ३ कारीदृगकी पूतरी कारो हरि कोअग ॥ जिनसों सब जगदेखिये जिन विनरूप न रंग ४ प्रेम कि निधि अति प्रेमनिधि भरयो प्रेमउरजाल । सोई सूरतिधारके प्रगटभयो तिहिकाल ॥ प्रेमप्यारेमें अंतरनहीं १ प्रेम प्रीतिमें अंतरयंतो । श्रीमीतीन साठहूं तेतो २ कहाकरी है और तौ अंधेरे

केचोर। याने मसालवरायके चितचुरायो भजन भूलिगयो मसा-
लहीको ध्यानरहै ६ ॥

कथाऐसीकहैंजासेगहैंमनभावभरे करैंकृपादृष्टिदुहुज
नदुखपायोहै। जायकैसिखायोबादशाहउरदाहभयोकही
तियाभलीकोसमूहघरछायोहै॥ आयेचोबदारकहेचलौय
हीबारबार भारीधर्योप्रभुआगेचाहैशोरलायोहै। चले
तवसंगगयेपूछैंनृपरंगकहा तियनिप्रसंगकरौकहिकैसुना
योहै ५९३ काहूभगवानहीकीबातलोवखानकहौंआनिवै
ठैनारीनरलागीकथाप्यारीहै। काहूकोबिडारैझिझकारैने
कुटारैविषे दृष्टिकैनिहारैताकोलागैदोपभारीहै॥ कहीतुम
भलीतेरीगलीहीकेलोगमोको आनिकैजताईवहबातक
छूप्यारीहै। बोल्योयाकोराख्योसबकरौनिरधारनीकेचले
चोपदारलैकैरोकैप्रभुधारीहै ५९४ सोयोबादशाहनिशि
आयकैसुपनदियो कियोवाकोइष्टभेपकहीप्यासलागीहै।
पीवोजलकहाआबखानेलेववानेतब अतिहीरिसानेको
पिवावैकोडरागीहै॥ फिरिमारीलातअरेसुनीनहींबातमे
रीआयफुरमावोजोईप्यावैवड़भागीहै। सोतौतैंलैकैद
कर्योमुनिअरबर्याडर्यो भर्योहियेभावमतिसोवततैंजा
गीहै ५९५ बोरेनरताहीसमैवेगिदेलिवायल्याये देखत
पटायेपायनृपढ़िगभीजेहैं। साहिबतिसायेजायअबहींपि
वावोनीरऔरपैनपावैंएकतुमहींपैरीझे हैं॥ लेवोदेशगावँ
सदापावँहीसोंलग्योरहौं गहोनहींनेकुधनपायबहुछीजे
हैं। संगदैमसालताहीकालमैंपठायेयों कपाटजालखुले
लालप्यायोजलधीजे हैं ५९६ ॥

कथा ऐसी कहै॥ दोहा॥ नातो नेह रस रंग भरि कहैं कथा निर्वेद॥ जैसे चिठी विदेशकी बांचनही में भेद १ गहो नहीं नेकु॥ दोहा॥ जबलगि भक्ति सकामता तबलगि कची सेव॥ कहि कबीर वे क्यों मिलैं निहकामी निजदेव २॥

मूल॥ दूबरोजाहिदुनियाकहैभक्तभजनमोटोमहत॥ सदाचारगुरुशिष्यत्यागिविधिप्रकटदिखाई। बाहरभीतरविमदलगीनहिंकलियुगकाई॥ राघवरुचिरसुभावअसदआलापनभावैं। कथाकीरतननेममिलैसंतनिगुणगावैं॥ तापनोलिपूरेनिषकज्यों घनअहरनहीरोसहत। दूबरोजाहिदुनियाकहैभक्तभजनमोटोमहत १७० दृढ़दासनिकेदासत्वकोचौकसचौकीयेमँड़ी॥ हरिनारायननृपतिपदमबोरछैविराजे। गावँहुशंगावादअटलऊधोमलछाजे॥ भेलैतुलसीदासभटख्यावृदेवकल्याने। बोहिथविगरामदामसुहेलैपरमसुजाने॥ औलीपरमानँदकेधुजासवलधर्मकोमहिगँड़ी। दृढ़दासनिकेदासत्वकोचौकसचौकीइनमँड़ी १७१ अवलाशरीरसाधनसवलयेबाईहरिभजनवल। उमाप्रकटदुनिरामबाइबीराहीरामनि। लालीनारालक्षियुगलपार्वतीजगतधनि॥ खीचनिकेसीधनागोमतीभक्तउपासिनि। बादररानीविदितगँगायमुनारैदासिनि॥ श्रीजेवाहरषाजोपसिनिकुँवररायकीरतिअमल। अवलाशरीरसाधनसवलयेबाईहरिभजनवल १७२ श्रीकन्हरदाससंतनिकृपाहरिहृदयालम्बोलह्यो॥ श्रीगुरुशरनैआयभक्तिमारगसतजान्यो। संसारीधमछांड़िभूँठिअरुसांचपिछान्यो॥ ज्योंशाखाद्रुमचंदजगततेइहित्रि

थिन्यारो। सर्वभूतसमदृष्टिगुणनगंभिरअतिभारो॥ भ निभक्तभलाईवदननितकुवचनकबहूंनाहिंकह्यो। श्रीकृ न्हरदाससंतनिकृपाहरिहृदयालम्बोलह्यो १७३॥

भजनवल॥ हरिके भजन सों कलियुग में साधन सबल किये॥ छप्पै॥ महि महाकठिन कलिकाल में कहो लाज कैसे रहै॥ जनम करम नित नेम प्रेमसों हरिगुण गावै। ताहि कहत पाखंड काहि तू जग भरमावै॥ लावर लौंड लबार ताहि आदर करिलीजै। शीलवन्त गुणवन्त साधु गहि धक्का दीजै॥ नित चतुरदास इक आशहरि स्वइ व्रतपन नाहिंन गहै। महि महा कठिन० १ सहनशील संतोष सत्य मनमें नहिं लावै। निष्प्रेही हरिशरण प्रेमसों हरिगुण गावै॥ राग द्वेष सों रहित रुचिर सत संगति कीजै। हरि गुरु साधुप्रसाद सोई हिरदै धरिलीजै॥ नित चतुरदास राधारवन निशि वासर इहिविधि कहै। महि महा कठिन कलिकालमें० २॥कवित्त॥ आज कलिकाल ऐसो आयो है कराल अति राखै जो गुपाल टेक तौतो वृन्दजीजिये। बो- लिये न चालिये जु बैठि पिंड पालिये जु आंखि कान मूंदबोय मौनव्रत लीजिये। देखी अनदेखी जानि सुनी अनसुनी मानि माला गहि पानि हानि लाभ चित दीजिये। कीजिये न रोष जो पै कहै कोऊ बीस सोप लीजै धरि शीश जगदीश साखि की- जिये ३ यह भक्ति को स्वरुप है लम्बो लह्यो एक तौ देखत को बड़ो एक गुणमें बड़ो जैसे गोरखकी डीबी सो इनको हृदय गुण सें बड़ो दश अंगुल को तापै दशहजार गारी समाय जाहिं क्षमा सों १ सबही ते धरा बड़ी जापै नवखंड बसैं ताते बड़े सिन्धु तापै टापू दिखरातहै। ताते बड़े कुम्भजते तीनहीं चुलू में किये ऐसेहू अकाशे में अलेखे जोइ जात है॥ दीरघ गगन अनी पूरन पवन भयो नाय ब्रहमांड गयो वामनको गातहै। होतो तुम बड़े तुमहूं ते बड़े संत जाके हृदयमें जगन्नाथ जूमसि समातहै १॥

दोहा ॥ सबही घट में हरि बसे ज्यों गिरिसुत में ज्योति ॥ ज्ञान गुरू चकमक बिना कैसे परगट होति २ झूठि अरु सांचि सो संत सो ज्ञान होय जब पिछाने जैसे गुमास्ते के संग सों साहूकारके बेटे ने झूंठो जवाहर पिछान्यों तब फोरि डारथो ॥ ऐसे सत्संग सो ज्ञान है जब संसार झूंठो जानै तब छोंड़ि दे १ कुबचन कबहूं ॥ दोहा ॥ संतन निंदा अति बुरी भूलिकरो जिनकोय ॥ किये सुकृत सब जनम के क्षण में डारै खोय २ ॥

लखिलक्ष्योलटेराआनिविधि परमधरमअतिपीनतन ॥ कहिनीरहिनीएकएकप्रभुपदअनुरागी । यशवितानजगतन्योसंतसंमतबड़भागी ॥ तैसोपूतसपूतनूतफलजैसोपरसा । हरिहरिदासनिटहलकवितरचनापुनिसरसा ॥ सुरसुरानंदसँप्रदायदृढ़केशवअधिकउदारमन। लखिलक्ष्योलटेराआनिविधिपरमधरमअतिपीनतन १७४ श्रीकेंवलरामकलियुगकेपतितजीवपावनकिया ॥ भगतभागवतविमुखजगतगुरुनामनजाने । ऐसेलोगअनेकऐंचिसनमारगआने ॥ निरमलरतिनिष्कामअजातैंसदाउदासी । तत्त्वदरशीतमहरणशीलकरुणाकीरासी ॥ तसतिलकदाननवधारतनकृष्णकृपाकरिदृढ़दिया। श्रीकेंवलरामकलियुगकेपतितजीवपावनकिया १७५ टीका ॥ घरघरजायकहैंयहैदानदीजैमोको कृष्णसेवाकीजैनामलीजैचितलायकै । देखेवेषधारीदशबीसकहुअनाचारी दियेप्रभुसेवनकेरीतिहिंसिखायकै ॥ करुणानिधानकोऊसुनैनहींकानकहूं बैलकेलगायोसांटोलोटदयाआयकै । उपज्योप्रकटतनमनकीसचाईअहो भयेतदाकारकहोकैसेसमुझायकै ५९७ ॥

लखिलख्यो लटेरा ॥ दोहा ॥ कबिरा हरिके भावतो दूरिहि ते दीखंत ॥ तन छीने मन उन मने जग रूठड़े फिरंत१ ॥ सोरठा ॥ कहा चीकने गात रस पूछत खिसले परें ॥ सरस न आवे बात राख उड़े रूखे हिये २ और अनुमान करे जैसे मुजावर त्यों काजी ने लँगरी भेड़ को अनुमान कियो तत्त्वदर्शी तापै दृष्टांत बादशाह अरु सुथरा को घर घर जाय कहे क्योंकि करुणासिंधु हैं ॥ जैसे कोऊ वैरी हथकरीवाले को जाय कै छुटावे क्योंकि वह तो आपसके नहीं। आपनहीं जायके छुटावे ॥ साधवो दीनवत्सलाः॥ जैसे चंद्रा सुथरा ने घर बैठेही बादशाह को तत्त्व दरशायो रीति दिखायके भोग लगायके खायो ३ ॥

मूल ॥ श्रीमोहनमिश्रितपदकमलआशकरनयशवि स्तर्यो ॥ धर्मशीलगुणसींवमहाभागवतराजऋषि । पृथीराजकुलदीपभीमसुतविदितकीलहशिषि ॥ सदाचार अतिचतुरविमलवाणीरचनापद । शूरधीरऊदारबिनय भलपनभक्तनिहद ॥ सीतापतिपदराधासुवरभजननेमकू रमधर्यो । श्रीमोहनमिश्रितपदकमल आशकरनयश विस्तर्यो १७६ ॥ टीका ॥ नरवरपुरताकोराजानरवर जानोंमोहनजूधरिहियेसेवानीकीकरी है। घरीदशमंदिर मेंरहेरहैचौकद्वारपावतनजानकोऊऐसीमतिहरीहै ॥ प र्योकोऊकामआयअबहींलिवायल्यावो कहेपृथ्वीपतितो शकानमेंनधरीहै। आईफौजभारीसुधिदीजियेहमारीसुनि वहूबातटारीअतिपरीखरभरीहै ५९८ कहिकैपठाईकहो कीजियेलराईसुनिरुचिउपजाईचलिपृथ्वीपतिआयोहै । पर्योशोचभारी तबबातयोंबिचारी कहीआय एकजावो गयोअचरजपायोहै ॥ सेवाकरिसिद्धिसासटांगहैकैभू मिपरेदेखिबड़ीबेरिपावँखड़गलगायोहै। कहिगईऐड़ीपेपें

टेढ़ीहूनभौंहक्रकरीकरि गितनेमरीतिधीरजदिखायोहै५९९ उठिचिकडारितवपाछेसोनिहारिकियोमुजराविचारि वा दशाहअतिरीझेहैं । हितकीसचाईयहहैनेकुनकचाईहोत चरचाचलाईभावसुनिसुनिभीजेहैं ॥ बीतेदिनकोऊनृप भक्तसोसमायोपृथ्वीपतिदुखपायोसुनीभोगहारिछीजेहैं । करैविप्रसेवातिन्हैंगाँवलिखिन्यारेदिये प्राणप्यारेखाइक रीकरौकहिधीजेहैं ६०० ॥

पावन न जानकोऊ खटकेमें मन चटजाय १ क्षणमें प्रवीण क्षणमायामें २ पैअठालो मन न रहै मनलगाइये बांसकी गांठिकी नाईं साधनकरिये मनवश करिबेको जैसे ठाटी हरीने साधन कियो सो उलीचोही धीरज फकीर शाहजादे को दृष्टान्त ३ ॥

मूल ॥ निहकिंचनभक्तनभलभजै हरिप्रतीतिहरिवं शके ॥ कथाकीरतनप्रीतिसंतसेवाअनुरागी । खरियाखु रपारीतिताहिज्योंसर्वसुत्यागी ॥ संतोषीसुठिशीलअसद आलापनभावै । कालवृथानहिंजायनिरंतरगोविंदगावै॥ सुशिष्यसपूतश्रीरंगकोउदितपारपदअंशके । निहकिंच नभक्तनभलभजैहरिप्रतीतिहरिवंशके १७७ ॥

खरियाखुरपारीति ॥ भारत को इतिहास खरिया खुरपा सर्व-सुदान दीये। सो वदरिया वाही के शिरपर रही । बड़े बड़े राज-नने बड़ो बड़ो दान दियो पै खरिया खुरपा की बरोबर न भयो सर्वसु दियो ॥

हरिभक्तभलाईगुणगंभीरबांटेपरीकल्यानके ॥ नवल किशोरदृढ़इअनन्यमारगइकधारा । मधुरवचनमन हरणसुखदजानतसंसारा ॥ परउपकारविचारिसदाकरु णाकीरासी । मनवचसर्वसुरूपभक्तपदरेणुउपासी ॥ ध

भैदाससुतशीलसुठिमनमान्योकृष्णसुजानके । हरिभक्त भलाईगुणगंभीरबांटेपरीकल्यानके १७८ बीठलोदासह रिभक्तकोदुहूंहाथलाडूलिया ॥ आदिअंतनिरवाहभक्तप दरजव्रतधारी । रह्योजगतसोंऐंड्तुच्छजानैसंसारी ॥ प्र भुतापतिकीपधतिप्रकटकुलदीपप्रकासी । महतसभामें मानजगतजानैरैदासी ॥ पदपढतभईपरलोकगतिगुरु गोविंदयुगफलदिया।बीठलोदासहरिभक्तकोदुहूंहाथला डूलिया १७९ ॥

हरि भक्त भलाई ॥ छप्पै ॥ गुरुभक्ता गुणवन्त ज्ञान विज्ञान विचारै । पर उपकारी पिण्डप्रान परद्रोह निवारै ॥ परधन को परित्याग रहै परनारि उदासा । सर्वात्मा सर्वज्ञ सर्व उर में निन वासा ॥ तत्त्ववेत्ता तीनिहुँ लोक में ऐसी धरनी जो धरै । सुवई को सरसै आपनै पुरुष पुरातन उद्धरै १ तुच्छ जाने ॥ दोहा ॥ चाख्यो चाहै प्रेमरस राख्यो चाहै मान ॥ इक द्वै द्वै अरुचोपरी देत सुनो नहिं कान २ ॥

भगवन्तरचेभारीभगतभक्तनके सनमानको ॥ काह वश्रीरँगसुमतिसदानँदसर्वसुत्यागी । श्यामदासलघुवा लअनन्यलापाअनुरागी ॥ मारुमुदितकल्याणपरसवंशी नारायन । चेतागवालगुपाल शँकरलीलापारायन ॥ सन्द सन्तसेयकारजकियातोषतश्यामसुजानको । भगवन्तरचे भारीभगत भक्तनकेसनमानको १८० तिहूँतिलकद्म परकामकोहरीदासहरिनिर्मयो ॥ शरणागतकोसिवरदान दधीचिटेकवलि । परमधरमप्रहलादशीशजगदेवदेनक लि ॥ वीकाव्रतवानैतभक्तिपनधर्मधुरन्धर । नृवरकुलके दीपसंतसेवानितअनुसर ॥ पारशपीटाअचरजकवनम

कुलजगतमेंयशलयो। तिहुँतिलकदामपरकामकोहरीदा सहरिनिर्भयो १८१ नितटेकएकबंशीतनीजनगोबिन्द कीनिर्बही॥ युगुलचन्दकिरपालतासुकोदासकहावे॥बाद शाहसोंपैजहुकुमनहिंवेनुबजावै ॥ बीकावतवानैतभक्तवँ शपांडवतारी । कपिज्योंबीरालियोशीशअंबरकेझारी ॥ पढ़िपीठपरीचितसारकासभाशापअन्तनकही । नितटेक एकबंशीतनीजनगोबिन्दकीनिर्बही १८२ ॥ टीका ॥ प्र ह्लादआदिभक्तआगेगुणभागवतसर्वइकठौरे आयदेखे हरिदासमें । रीझजगदेवसोंयोंकहिकेबखानकियो जान तनकोऊतुनोंकरैलैप्रकासमें ॥ रहैएकनटीशक्तिरूपगुण जटीगावै लागेपटपटीमोहयाचैमृदुहासमें । राजारिझवा यकेदेवेको बिचारिदैनपात्रैसारकाट्योशीशराख्योतेरेपा सलें ६०१ दियोकरदाहनोंमेंयासोंनहींयाच्योकाहूसुनि एकराजाभेदभावसोंतुलाईहै । नृत्यकरिगाईरीझलेबोक ही आयदेऊओड्योबायोंहाथरिसभरिकेसुनाईहै ॥ येतो अपमानपानदक्षिणलैदियोयेहोनृपजगदेवजूको ऐसेक हांपाईहै ॥ तासोंदशगुणीलीजेमोकोसोदिखाइदीजैदईन हींजायकाहूमोहींकोसुहाईहै ६०२ ॥

लोपत श्याम ॥ श्लोक ॥ भक्तेतुष्टे हरिस्तुष्टो हरौतुष्टे च देव ताः । भवन्तितस्याःशाखाश्चतरोर्मूलनिषेचने ॥ रहै एकनटीतो कालीको अवतार रहै । सो वह नटीरूप गुणगान । राई त्रिदोप- ता में आयकेको न मरे सो जगदेव पँवार मोह्यो सो मरयोहीहै १॥

कितोसमुझावैलयावोकहै यहैजकलागीगईमनभागी पालवस्तुमेरादीजिये । काटिदियोशीशतनरहेइशशक्ति

लखोल्याईबकशीशथारढांपिदेखिलीजिये ॥ खोलिकैदि खायोनृपभूरछागिरायोतनधनकीनवातअवयाको कहाकी जिये । मैंजुदीनोहाथजानिआनिग्रीवजोरिदईलईवही रीझपदतानसुनिलीजिये ६०३ सुनीजगदेवरीतिप्रीति नृपराजसुतापितासोंवखानिकहीव्याहीकोलैदीजिये। तब तो बुलायेसमुझाये वहुभांति खोलिवचनसुनाये अजूवे टीमेरी लीजिये। नट्योसतवारजब कहीडारोमारि वेलै मारिवेकोवोलीवहमरोमतिभींजिये । दृष्टिसोनदेखेकही ल्यावोकाटि मूड़ल्याये चहैंशीशआंखिनिकोगयोफिरि रीझिये ६०४ ॥

रीझपद ॥ कवित्त ॥ नृत्यगान अभिनय रूपरीझि रचिकरि विधिहू को शोच पर्यो नेही कैसे वचेंगे। लाख लाख लोगन के घाट घर कैसे कहूं पांच सात घनिआये तेऊ यामें पचैंगे ॥ करत विचार शोच सागर न वारापार वेई करतार कछु बुद्धिवल रचें गे। हियेही में आय कही मति पछिताहि तव वाहि वाहि रोयवो वनाय और सचेंगे ॥ सोरठा ॥ नेहीअक्षर दोय येतौ विधना ना रचे ॥ को पावेगो ओय नेह पंथ नेही विना १ प्रीति नृपराजसुता कै भई वाके रूप पै रीझि बादशाह की बेटी जाति पांति न वि- चारी ॥ दोहा ॥ नृप विद्या अरु वेलि तिय ये न गनै कुल जाति॥ जो इनके नियरे वसै ताही को लपटाति २ याको कहा कीजिये रीझके पचायवेको वाह वाड़कार है ३ शाहजहां को दृष्टान्त ४॥

निष्टारिझवाररीतिकीनीविसताग्यह सुनोसाधुसेवा हरीदासजूनेकरीहै । परदानसंतसोहैदेतहैंअनन्तसुख ह्योसुखजानिभक्तसुताचितधरीहै ॥ दोऊमिलिसोवैंऋतु ग्रीषमकीछातपर गातपरगातमांयेसुधिनहींपरीहै । दा

तनकेकरवेकोचढ़ोनिशिशेषआप चादरउठायनीचेश्रायै ध्यानहरीहै ६०५ जागिपरेदोऊअरबरदेखिचादरकोपे खिपहिंचानिसुतापिताहीकीजानीहै।सन्तहगनयेचलेबैठे मगपगलयेगयेवेएकांतमें योंविनतीबखानीहै॥ नेकुसाव धानहैकैकीजियेनिशंककाज दुष्टराजछिद्रपाय कहैकटुबा नीहै। तुमकोजुनाबधरैजरेसुनिहियोमेरोडरै निंदाआप लीनहोतसुखदानीहै ६०६ इतनीजतावनीमेंभक्तिकोक लंकलगेऐपैशंकरहीसाधुघटतीनभाइये । भईलाजभारी विषैवासघोयडारीनीके जीतेदुखराशिचहैकहूंउठिजाइ ये॥ निपटमगनकियेनानाविधिसुखदियेदियेपनजानिमि लिलालनिलड़ाइये। गोविंदअनुजजाकेबांसुरीकोसांचो पनमनमेंनल्यायोनृपइहिविधिगाइये ६०७॥

बांसुरी को सांचोपन॥ दोहा॥ गोविन्दा गादी गही हुकुम किया बादशाह॥ के मुरली की टेरदे अंबर चपुपेवाह १ अंबर चपुपे बाहसीः मुरली बाजे नाह॥ मुरली बाजै नाहदेह एकसाधव के माह २॥

मूल॥ श्रीनंदकुवँरकृष्णदासको निजपदतेनूपुरदि यो॥ तानमानसुरतालसुलयसुंदरसुठिसोहै। सुधाश्रंगभ्रू भंगगानउपमाकोकोहै॥ रत्नाकरसंगीतरागमालारँगरा सी। रीझेराधालालभक्तपदरेनुउपासी॥ सततस्वर्णकारख डगूसुवनभक्तभजनपनदृढ़लियो। श्रीनंदकुवँरकृष्णदास कोनिजपदतेनूपुरदियो १८३ टीका॥ कृष्णदासयेसुनार राधाकृष्णसुखसार लियोसेवापाछेनृत्यगानविसतारिये।

---

१ कृष्ण पदमें गुरु घाज्ञा न करने से पद भङ्गता है॥

कैकरिसगनकाहूदिनतनसुधिभूली एकपगनूपुरसोंगि
रयोनसँभारिये॥ लालअतिरंगभरेजानियतभंगभईपायँ
निजखोलिआपबांध्योसुखभारिये। फेरसुधिआईदेखिघा
रलैबहाईनैनकीरतियोंछाईजगभक्तिलागीप्यारियेंंद्र०८
मूल॥ प्रभुपरमधरमप्रतिपोषिकैसंन्यासीयेमुकुटमनि॥
चितसुखटीकाकारभक्तिसर्वोपरिराखी। दामोदरतीरत्थ
रामअर्चनविधिभाखी॥ चन्द्रोदयहरिभक्तनरसिंहारनकी
नी। माधोमधुसूदनसरस्वती परमहंसकीरतिलीनी॥
परबोधनंदरामभद्रजगदानँदकलियुग्गधनि। प्रभुपरम
धरमप्रतिपोषिकैसंन्यासीयेमुकुटमनि १८४ प्रबोधानं
दसरस्वतीकीटीका॥ श्रीप्रबोधानंदबड़ेरसिकआनंदकंद
श्रीचैतन्यचंद्रजूकेपारषदप्यारेहैं। राधाकृष्णकुंजकेलि
निपटिनवेलि कहीझेलिरसरूपदोऊकियेदगतारेहैं॥ वृ
न्दाबनवासकाहुलासलैप्रकासकियो दियोसुखसिंधुकर्म
धर्मसबटारेहैं। ताहीमुनिमुनिकोटिकोटिजनरँगपायोकि
पिनसुहायोबसेतनमनवारेहैं ६०९॥ मूल॥ अष्टांगयो
गतनत्यागियोद्वारकादासजानेदुनी॥ सरिताकूकसगांव
सलिलमेंध्यानधरयोमन। रामचरणअनुरागसुदृढ़जाके
सांचोपन॥ सुतकलत्रधनधामताहिसोंसदाउदासी। क
ठिनमोहकोफंदतरकितोरीकुलफांसी॥ गुरुकीलहकृपाब
लभजनकैज्ञानखड़्गमायाहुनी। अष्टांगयोगतनत्यागि
योद्वारकादासजानेदुनी १८५॥

रागमाला॥ कवित्त॥ भैरव बिलावल मिलावत ललित
मांझ गूजरी देव गंधार प्रातही विभासरी। प्रथम मलार मेघ

रामकली आसावरी जैतिश्रिरी आदि ऐसे अमरधनासरी ॥ हिंडोल सारंग नट अड़ानो उपावें घटि कालिंगड़ी खंभायची सोहै चतुर्मासरी । शिरीरागसिंधु गौरी मालव बसंत टोड़ी सोरठ सदा सो रहत उदासरी १ दीपक सूहो कल्यान केदारो गान वखत विहागरे को गावत विलासरी । पंचम वड़े अपानो जंगली काफी सयानो माल गौड़ मालकोश रागको निवासरी ॥ कहत दयाल पै गुपाल के छतीसों राग ऐसी विधि मोहन वजाई बन वांसरी । सोई तो सुजान हरि केरे गुणगाय जाने बाकीको वकत ज्यों भुवंग लेत सांसरी २ रागज्ञान ॥ सुखिनिसुखनिवासो दुःखितानांविनोदः श्रवणहृदयहारीमन्मथस्याग्रदूतः ॥ रतिरभसविधाताबल्लभःकामिनीनां जगतिजयतिनादःपञ्चमश्चोपवेदः १ भैरवःपञ्चमोनाट्यो मल्लारोगौडमालवाः । ललितोगुर्जरीदेशी बराडीरामकृत्तथा ७ मतारागार्णवेरागाः एँचैतेपंचमाश्रिताः २ नटनारायणःपूर्वो गान्धारःसारँगस्तथा ॥ तद्वत्केदारकर्णाटौ एँचैते पंचमाश्रयाः ३ मेघोमल्लारकोमालकोशकःप्रतिमंजरी ॥ आसावरीचएँचैते रागामल्लारसंश्रयाः ४ हिंडोलश्रीगुलाधारी गौरीकोलाहलस्तथा ॥ पंचैतेगौरनामानं रागमाश्रित्यसंस्थिताः ५ भूपालोहरिपालश्च कानोदावोरणीस्तथा ॥ वेलावलीचपंचेते रागादेशाह्वयाश्रिताः ६ अन्ये च वहवोरागा जातादेशविशेषतः ॥ मारूप्रभृतयो लोकेपंचभद्रासिकास्स्मृताः७ सस्वरंसरसंचैव सरागंमधुराक्षरम्॥ सालंकारप्रमाणंचषड्विधंगीतलक्षणम् ८ स्वरेणपदसंयुक्तं छंदसा चसुसंपुतम्॥ स्वेनाङ्कितंस्वतालंच स्वगीतंतेनभण्यते ९ वृन्दावन वासको हुलास ॥ कवित्त ॥ परे जे पतौवा सूख भूखमें पियूख जैसे खाऊं रूख रूख तरे ऐसी तोको जीवका । प्यासते वढ़े जु चार तरन तनैया तीर अंजलीको भरि भरि धीर नीर पीवका ॥ केलि कल जोहत सो है है कवि वृन्दावन कुंज पुंज भ्रमर यों अमर अमीवका । आनँदमें भूमि घूमि वसौंगो विलास भूमि आरतको द्रुम जैसे सुखपावे हीवका २ ॥ छप्पै ॥ प्राण जाहु तो

जाहु होहि यश सकल बड़ाई। होहु धर्मको नाश भरम मन गेहे जड़ाई॥ आधि व्याधिके दुःख करैं जे तनको जीरन। करौं नहीं उपचार कोटि हो नाना पीरन॥ भगवान इहि बिधि बचन कठोर कहि सबै निरादर करौ किन। श्रीवृन्दावनको छाँड़िये यह आवो मनमाहिं जिन ४॥

पूरणप्रकटमहिमाअनंतकरि हैकौनवखानको॥ उदय अस्तपरवतगहरुमधिसरिताभारी। योगयुगतिविश्वास तहांदृढ़आसनधारी॥ व्याघ्रसिंहगूँजेहुखरेकछुशंकन माने। अर्द्धनजातेपवनउलटऊरधकोआने॥ सुठिशाखिशब्दनिर्मलमहाकथियापदनिर्वानको। पूरणप्रकटमहिमाअनंतकरि हैकौनवखानको १८६ श्रीरामानुजपद्धतिप्रतापभट्टलक्ष्मणअनुसऱ्यो॥ सदाचारमुनिवृत्तिभजन भागवतउजागर। भक्तनसोंअतिप्रीतिभक्तिदशधाको आगर॥ संतोषीसुठिशीलहृदयस्वारथनहिंलेशी। परमधरमप्रतिपालसंतमारगउपदेशी। श्रीमद्भागवतवखानिकैनीरक्षीरविवरणकऱ्यो। श्रीरामानुजपद्धतिप्रताप भट्टलक्ष्मणअनुसऱ्यो १८७ दधीचिपाछेदूसरकरीकृष्णदासकलिजीतिहै॥ कृष्णदासकलिजीतिन्योतिनाहरपलदीयो। अतिथिधरमप्रतिपालप्रकटयशजगमेंलीयो॥ उदासीनताअवधिकनककामिनिनहिंरात्यो। रामचरणमकरंदरहतनिशिदिनमदमात्यो॥ गाहिगलितैगालितअमितगुणसदाचारसुठिनीतिहै। दधीचिपाछेदूसरकरी कृष्णदासकलिजीतिहै १८८ टीका॥ वैठेहोगुफामेंदेखे सिंहद्वारआयगयो लयोयोंबिचारहोअतिथिआजुआयो है। दईजांघकाटिडारिकीजियेअहारअजूमहिमाअपार

धर्मकठिनवतायोहै ॥ दियोदरशनआयसांचमेंरह्योनजा यनिपटसचाईदुखजान्योनबिलायोहै । अन्नजलदेवेहीको झींखतजगतनरकरिकौनसकैजनमनभरमायोहै ६१० ॥

योगयुक्ति विश्वास ॥ कवित्त ॥ एंड़ी बायें पांवकी लगावै सीवनी के बीच वाही जौनठौर ताहि नीके करिजानिये । तैसेही युगतिकरि विधिसों प्रकार मेट मेटहूके ऊपर दक्षिण पावँ आनिये ॥ सरलशरीर दृढ़ इंद्रियसँयम करि अचल उरधदृष्टि भ्रूके मध्य ठानिये । मोक्षके कपाट को उघारत अवश्यमेव सुन्दर कहत सिद्ध आसन बखानिये १ ॥ छन्द ॥ दक्षिण ऊरू उपर प्रथम बामहिंपगआनहिं । बायें ऊरू उपर तबहिं दक्षिण पगठानहिं ॥ दोऊ करि पुनि फेर दृष्टि पीछेकर आवय । दृढ़के गहे अँगुष्ठ चिबुक वक्षस्थल लावय ॥ इहिभांति दृष्टि उनमेष करि अग्रनासिका राखिये । सब व्याधि हरण योगीनकी पद्मासन माहि भाखिये २ प्रथम अंग यम कहो दूसरो नेम बताऊं । त्रिविध सुआसन भेद तुतो अब तोहिं सुनाऊं ॥ चतुरथ प्राणायाम पंचमो प्रत्याहारं । षष्ठंसुनो धारणाध्यान सप्तंविस्तारं ॥ पुनि अष्टअंग सामाधिके सो सबतोहिं सुनाइहौं । सुठि सावधानह्वै शिष्य सुनि भिन्नभिन्न समुझाइहौं ३ प्रथम अहिंसा सत्य जानि पुनि चोरी त्यागे । ब्रह्मचर्य दृढ़गहे क्षमा धृति सो अनुरागे ॥ दया बड़ो गुण होय ओय जब हिरदय आनै । प्रत्याहार पुनिकरै शोच नीके विधि जानै ॥ ये दश प्रकारके यम कहे हठप्रदीपिकाग्रंथ में । जो पहिले इनको गहै सो चलत योगके पंथमें ॥ तप संतोषो गहै बुद्धि आस्तिक सो आनै । दान समभि करि देय मानि पूजा न बखानै ॥ बचन सिधांत सु सुनो लाज मति दृढ़ करि राखै । जायक मुख सों अजप असद आलाप न भाखै ॥ पुनि होशकरै इहिविधि जहां तैसीविधि सतगुरु कहै । ये दश प्रकारके यमकहे ज्ञान विना कैसे लहै ४ ॥

मूल ॥ भुविभलीभांतिनिबहीभगति सदागदाधर

दासकी ॥ लालबिहारीजपतरहतनितबासरफूल्यो । सेवासहजसनेहसदाआनँदरसभूल्यो ॥ भक्तनिसोंअति प्रीतिरीतिसबहीमनभाई । ऐसीअधिकउदाररसमहरि कीरतिगाई ॥ हरिविश्वासहियआनिकै सपनेहुआनन आशकी । भुविभलीभांतिनिवहीभगति सदागदाधर दासकी १८६ टीका ॥ बुरहानपुरढिगबागतामेंबैठेआय करिअनुरागगृहत्यागपागेश्यामसों । गावँमेंनजातलोग कितेहाहाखातसुखमानलियो गातनहीं कामअरुकाम सों ॥ पत्योअतिमेहदेहबसनभिजायडारे तबहरिप्यारे बोलेस्वरअभिरामसों । रहेएकशाहभक्तकहीजायल्यावो उन्हें मन्दिरकरावोतेरोभयोघरदामसों ६११ नीठिनीठि ल्यायेहरिबचनसुनायेजबतब करवायोऊंचोमन्दिरसँवा रिकै । प्रभुपधरायेनामलालऔबिहारीश्याम अतिअभि रामरूपरहतनिहारिकै ॥ करैसाधुसेवाजामें निपटप्र... होतबासीनरहतअन्नसोवैपात्रझारिकै । करतरसोईसोई राखीहीछिपायसामांआये घरसंतकहीआयज्यांयेप्यारि कै ६१२ बोल्योप्रभुभूखेरहैंताकेलियेराख्योकछूभाख्यो तबआपकाढ़ोभोरऔरआवैगो । करिकैप्रसाददियोलियो सुखपायोतब सेवारीतिदेखिकहीजगयशगावैगो ॥ प्रात भयेभूखेहरिगयेतीनयामटरिरहेक्रोधभरिकहै कबधौंलुटा वैगो । आयोकोऊताहीसमैहैशतरुपैयाधरे बोलेगुरुशी शलैकैमारोकितौपावैगो ६१३ ॥

भलीभांति निवही ॥ नवातहै इनको निर्वाहभयो ॥ निष्काम भक्ति सरूपकी है सहजक मनकी वृत्तिलगै १ सोवै पात्र झारि ॥

दोहा ॥ सबतत्त्वनिको तत्त्वहै शोच प्रकट संसार ॥ लगै न अहिं डोचोरको ज्यों माटीतत्त्व कुम्हार ॥ सबको सार भजन २॥

डस्योवहशाहमतिमोपैकत्रुकोपकियो कियोसमाधान सबबातसमुझाई है । तबतोप्रसन्नभयोअन्नलगैजितोदे बसेबासुखलेतशाहहुचितउपजाईहै ॥ रहेकोऊदिनपुनि प्रभुपुरीबासलियोपियो ब्रजरसलीलाअतिसुखदाईहै । लालहैलडायेसंतनीकेभुगतायेगुण जानेजितेगायेमति सुंदरलगाईहै ६१४॥ मूल ॥ हरिभजनसींवस्वामीसर सश्रीनारायणदासअति ॥ भक्तियोगयुतसुदृढ़देहनिज बलकरिराखी । हियेस्वरूपानंदलालयशरसनाभाखी ॥ परचयप्रचुरप्रतापजानमनरहसिसहायक । श्रीनाराय णप्रकटमनोलोगनसुखदायक ॥ नितसेवतसंतनिसहित हितदाताउत्तरदेशगति । हरिभजनसींवस्वामीसरस श्रीनारायणदासअति १६० टीका ॥ आयेवद्रीनाथजू तेमथुरानिहारिनैनचैनभयो रहैजहांकेशौजूकोद्वार है । आवैंदरशनलोगजूतिनकोशोगहिये रूपकोनभोगहोत कियोयोंविचारहै ॥ करैरखवारीसुखपावतेहैं भारीकोऊ जानैनप्रभावउरभाव सोअपारहै । आयोएकदुष्टपोटपुष्ट सोतोशीशदई लईचलेमगऐसोधीरजहीसारहै ६१५ ॥

रहेकोऊ दिन ॥ सवैया ॥ काल कराल गयो सु गयो अजहूं सुनि जो छिनहीं छिन छीजे । श्रीमथुरा यमुनातट बासकै जीवत जीवन को फललीजै ॥ नाथनिरंतर केशव सुंदर लाल को भागवतामृत पीजे । छांड़ि सबै नतिया आँखिया भरिके सबको मुख देखिबो कीजे १ जूतिनको शोग ॥ दोहा ॥ हरिके मंदिर जात हैं हरिदर्शन की आश ॥ औंधोहोय पायँनिपरे चितवन्हे

यनपास २ ले चले ॥ दोहा ॥ कायाकोठी लोहकी पिय पारषद हलाह ॥ रजवंतन सुखसों मढ़े कंचन होती नाह ३ ॥

कोऊबड़ोनरदेखिमगपहिंचानिलियोकियोपरनामभूमिपरिभूरिनेहको । जानिकैप्रभावलियेपावमहादुष्टहूनेकष्टअतिपायोक्रूट्योअभिमानदेहको ॥ बोलेआपचिंताजिनकरोतेरोकामहोतनेननीरसोतमुखदेखोनहींगेहको । भयोउपदेशभक्तिदेशऊनजान्यो साधशक्तकोविशेषयहीजान्योभावमहको ६१६ ॥ मूल ॥ भगवानदासश्रीसहितनितसुहृदशीलसज्जनसरस ॥ भजनभावआरूढ़गूढ़गुणबलितललितयस । श्रोताश्रीभागवतरहसिज्ञाताअक्षररस ॥ मथुरापुरीनिवासआशपदसंतनिइकचित । श्रीयुतखोजीश्यामधामसुखकरिअनुचरहित ॥ अतिगंभीरसुधीरमतिहुलसतमनजाकेदरस । भगवानदासश्रीसहितनितसुहृदशीलसज्जनसरस १६१ ॥

धीरज को सारहै । विचारयो हरिहीने यह पोटि धरी है यह कौनहै ॥ श्रुतौ ॥ सर्वं खल्विदं ब्रह्म ॥ ऐसो ज्ञान आवे तब सुखी होय नहीं तौ दुखपावै जैसे चल्यो जाय काहू कही बैल मारैगो ॥ कही ब्रह्म सब मैं है ॥ बैलने मारयो कहनेवालो भी तो ब्रह्म है । अवश्यमेवभोक्तव्यंकृतंकर्म शुभाशुभम् ॥ हरिकी सेवामें कहा लाभहै जो कर्मभोगै ॥ कर्मक्षीण होय है सेवाते १ भाव नेह को ॥ पद ॥ मुंडमुड़ाये की लाज निबहियो । माला तिलक स्वांगधरि हरिको मारिगारि सबही की सहियो ॥ विधि ब्योहार जारलों कलियुग हरिभरतार गाढ़ोकरि गहियो । अनन्य व्रत धरि सन जिन छांड़ो विमद संतकी संगति गहियो ॥ अगिन खाहि विषको ले पीनो त्रिपयनिको सुखभूलि न चहियो । व्यास

आशकरि राधापति की वृन्दावन को वेगि उमहियो २॥

टीका॥ जानिबेकोपनपृथ्वीपतिमनआई यों दुहाईलै दिवाईमालातिलकनधारिये। मानिआनिप्राणलोभकेति कनित्यागिदिये छिपेनहींजातजानिवेगिमारिडारिये॥ भगवानदासउरभक्तिसुखराशिभस्यो कस्योलैसुदेशवेप शीतिलागीप्यारिये। रीझ्योनृपदेखिरीझिमथुरानिवास पायोमन्दिरकरायोहरिदेवसोनिहारिये ६१७॥ मूल॥ भरिभक्तपक्षउद्दारतायहनिवहीकल्यानकी॥ जगन्नाथको दासनिपुणअतिप्रभुमनभायो। परमपारषद्समझिजा निप्रियनिकटबुलायो॥ प्राणपयानोकरतनेहरघुपतिसों जोस्यो। सुतदाराधनधाममोहतिनकाज्योंतोस्यो॥ कोध्र नीध्यानउरमेंवस्यो रामनाममुखजानकी। भरिभक्तपक्ष उद्दारतायहनिवहीकल्यानकी १६२॥

जानिवे को पतिसो भगवान्दासके संग सो रसखानि मीर माधव आदिभक्त वहुत होतभये रसखानि के कंठ में हैसै का माला रहै तिनसों जहांगीर कही कंठीमाला सव कोऊ पहिरै तुमपती क्यों पहिरी तव रसखानि वोले॥ दोहा॥ तनपाहन जल अगम को तनक काठ करैपार॥ वड़ेकाठ ऊपरतरैं जवतन पाहिन भार १ अरु मीरमाधव कृष्णनाम प्रेमसों जु लेय सुनिवेको कैसे रामलोग फिस्यो करै तिनसों वादशाह कही नाम तो सव कोऊलेहै तिहारेही पाछे क्यों फिस्यो करैहै तव मीरमाधवकही॥ दोहा॥ मधुर वचन सुनि सुवा के काहु न अचरज होय॥ वोलनि कागाकी कठिन सुनि धावै सवकोय २ तवपन देखिवेको दुहाई फिराई॥ मालाकंठी न धारै करयोलै सुदेश वेश॥ श्लोक॥ यदिवातादिदोपेणमद्भक्तोमांचविस्मरेत्॥ तर्हिस्मराम्यहंभक्तंसया निपरमांगतिम् ३ हरिको काहे को निहोरा कीजिये कंठीमाल पै

शरीरछोड़िये ॥ दोहा ॥ कंठीमाला सुमिरणी पहिरत सबसंसार॥ पनधीरो कोउ एकहै और कियो श्रृंगार ४ ॥

जेसोदरशोभूरामकेसुनोसंततिनकीकथा ॥ संतदास सद्व्रत्तजराछोईकरिडास्यो । महिमामहाप्रबीणभक्तिवितधर्मविचास्यो ॥ बहुरोमाधवदासभजनबलपरचोदीनो । करियोगिनिसोंवादबसनपावकप्रतिलीनो ॥ नितपरम धर्मविस्तारिहितप्रकटभयेनाहिंनतथा । जेसोदरशोभूरामकेसुनोसंततिनकीकथा १९३ बूड़ियेगिदितकन्हरकृपालआत्मरामआगमदरसि ॥ कृष्णभक्तिकोथंभब्रह्मकुल परमउजागर । चमाशीलगंभीरसर्वलचणकोआगर ॥ सर्बसुहरिजनिजानिहृदयअनुरागप्रकाशै । अशनबसन सनमानकरतअतिउज्ज्वलआशै ॥ श्रीशोभूरामप्रसादते कृपादृष्टिसबपरबरसि । बूड़ियेविदितकन्हरकृपालआत्मरामआगमदरसि १९४ ॥

योगीबोले तुमतो मालाकंठी अंगनसें धरो हमश्रृंगी मुद्रा माधवदास बोले अचला कोपीन धरैंगे ॥ दोहा ॥ कंठी माला सुमिरणी पहिरत सब संसार ॥ पनधारी कोउ एकहै और न कियो श्रृंगार १ शोभूमाला शोभकी पनकी माला नाहिं॥एँडेको सोतड़गडो पाल रह्यो गजमाहिं २ ॥ अचला कोपीन बचगये ॥ श्रृंगी मुद्राजलगये पारथके क्षमाशील ॥ दोहा ॥ क्षमा बड़ेनको चाहिये ओछेनको उतपात ॥ कहा विष्णुको घटिगयो जो भृगु मारी लात ३ ऐसे क्षमावान् हैं सो नारायणही हैं शील गंभीर स्वभाव गंभीर समुद्र सो घटै बढ़ै नहीं सर्वलक्षणको आगर सो भगवान् दास पारायण उज्ज्वल आशय निष्कपट विषय वासनाकी चाहै सो समान नाहींकरै है यह उज्ज्वलआशय ४ ॥

रचिभक्तरत्नमालासुधनगोविंदकंठविकाशकिय ॥ रुचिरशीलघननीललीलरुचिसुमतिसरितपति । विविध भक्तअनुरक्तव्यक्तबहुचरितचतुरअति॥लघुदीरघसुरशुद्धवचनअविरुद्धउचारन । विस्वाबीसविश्वासदासपरधैविस्तारन ॥ जानजगतहितसबगुणनिसुसमनरायण दासदिय । रचिभक्तरत्नमालासुधनगोविंदकंठविकाश किय १९५भक्तेशभक्तभवतोपकरिसंतनृपतिबासोकुँवर॥ श्रीयुतनृपमणिजगतसिंहदृढ़भक्तिपरायण । परमप्रीति कियसुबसशीललक्ष्मीनारायण ॥ जासुसुयशसहजहहि कुटिलकलिकल्पजुधायक । अज्ञाअटलसुप्रकटसुभटक टकनिसुखदायक ॥ अतिहीप्रचंडमार्तंडसमतमखंडनदो र्दंडबर । भक्तेशभक्तभवतोषकरिसंतनृपतिबासोकुँवर १९६ टीका ॥ जगताकोपनमनसेवाश्रीनारायणजूभयो ऐसोपारायणरहैडोलासंगही । लरबेकोचलैआगेआगेस दापाछेरहैल्यावैजलश्रीशईशभयोहियेरंगही ॥ सुनियश वंतजयसिंहकेहुलासभयोदेख्योदिल्ली सांझनीरल्याव तअभंगही । भूमिपरिबिनैकरीधरीदेहतुमहींनेजातेपायो नेहभीजिगयोयौंप्रसंगही ६१८ ॥

विविधभक्त अनुरक्त पंचरसकी भक्ति सबहीमें अनुराग कोऊ दास्य कोऊ शृंगार के उपासक १ ॥ धरीदेह ॥ कवित्त ॥ जिन हरि गाढ़िगाढ़ि एतक बनायो ताहि तुलसीको दल काहेते चढ़ायो नाहिं। खान परधान सब रचे तेरे भावते पै ऐसो मन भावतो जु तेरे मन भायो नाहिं ॥ गाढ़ी करि गह्यो व्रत प्रभुको न मान्यो कृत प्रभुने रिझायो और प्रभुतें रिझायोनाहिं। लक्षजगजीवनिके नेहबिन देहधरी जावो जग माहिं ऐसे मेरेजानि जायोनाहिं २॥

नृपजयसिंहजूसोंबोल्योकहानेहमेरे तेरीजुवाहिनता कीगंधकोनपाऊँमैं । नामदीपकुँवरिसोबड़ीभक्तिमानजा तवहुरसखानिऐपैकछुकुलड़ाऊँमैं ॥ सुनिसुखभयोभारी हुतीरिसवासोंटारीलिखेगाँवकाढ़िफेरि दियेहरिध्याऊँमैं । लिखिकैपठाईवाईकरैसोईकर्नदीजे लीजेसाधुसेवाकरि निशिदिनगाऊँमैं ६३९ ॥ मूल ॥ गिरिधरनग्वालगोपा लकोलखासांचलोसंगको ॥ प्रेमीभक्तप्रसिद्धगानअति गद्गदवानी । अंतरप्रभुसोंप्रीतिप्रकटरहैनाहिनछानी ॥ नृत्यकरतआमोदविपिनतनवसनबिसारै । हाटकपटहि लदानरीझिततकालउतारै ॥ मधिमालपुरैसंगलकरनरा सरच्योरसरंगको । गिरिधरनग्वालगोपालकोलखासांच लोसंगको १६७॥ टीका ॥ गिरिधरनग्वालसाधुसेवहीसों ख्यालजाके देखियोनिहालहोतप्रीतिसांचीपाईहै । सं ततनछूटेहूलेलेतचरणामृतजो औरअवरीतिकहौकापै जातिगाईहै ॥ भयेद्विजपंचइकठौरेसोऊपंचमानोआन्यो सभामांझकईछांड़ोनसुहाईहै । जाकेहोअभावमतिलैवी मेंप्रभावजान्योमृतकयोंबुद्धिताकोवाशोसुनिभाईहै६२०॥

गद्गद ॥ एकादशे ॥ वाग्गद्गदाद्रवतेयस्यचित्तं हसत्यभीक्ष्णं रुदितिकचिच्च । विलज्जउद्गायतिनृत्यतेच मद्भक्तियुक्तोभुवनं पुनाति ॥ विश्वासःसततानित्यं सख्यत्वंभावउच्यते ॥ द्वै मित्रन को दृष्टान्त ॥ ऐसे विश्वास होय तो हरि सदा संगही रहैं जैसे पाण्डवनके ॥ दोहा ॥ समता शिष्य सुमित्रना किये सुदृढ़ वि- श्वास ॥ पांडव द्रौपदि गज समय प्रकट भये अनियास ॥ सुई हाथीनको दृष्टांत ॥ या वचनसों सत्यव्रत राजाको सन्देह भयो बाजीगर को दृष्टांत ३ ॥

मूल॥गोपालीहरिजनपोषकोजगतयशोदाअवतरी॥

प्रकटअंगमेंप्रेमनेमसोंमोहनसेवा।कलियुगकलुषनलग्यो दासतेकबहुंनछेवा ॥ वाणीशीतलसुखदसहजगोविंदधुनिलागी।लक्षणकलागँभीरधीरसंतनअनुरागी॥ अतिअंतरशुद्धमदारहैरसिकभक्तिनिजउरधरी । गोपालीहरिजनपोपकोजगतयशोदाअवतरी १९८ श्रीरामदासरसरीतिसोंभलीभांतिसेवतभगत॥ शीतलपरमसुशीलवचन कोमलमुखनिकसै । भक्तउदितरविदेखिउदौबारिजजिमिविगसै॥अतिआनँदमनउमँगिसंतपरिचर्य्याकरई।चरणधोयदंडवतविविधभोजनविस्तरई ॥ बछवननिवासविश्वासहरियुगलचरणउरजगमगत । श्रीरामदासरसरीतिसोंभलीभांतिसेवतभगत १९९ ॥ टीका ॥ मुनिएकसाधुआयो भक्तिभावदेखिवेको बैठेरामदासपूछेरामदासकौनहैं । उठेआपधोयेपांवआवे रामदासअवरामदासकहांमेरेचाहिऔरगौनहैं॥ चलौजूप्रसादलीजैदोजैरामदासआनियहीरामदासपगधारोनिजमौनहैं । लपटानोपायँनसोंचायनिसमातनाहिं भायनिसोंभखोहियोआईयशजौनहैं ६२१॥

जनपोषको ॥ मल्लिङ्गमद्भक्तजनदर्शनस्पर्शनार्चनम् ॥ परिचर्य्यास्तुतिप्रह्वागुणकर्मानुकीर्त्तनम्॥ सो भगवान्को यशोदाजीने लड़ायो साधनीके लड़ाइवेकी मनमें अभिलाष रहीही गोपालीरूप धरिके पूरणकरी १ भलीभांति॥एकादशे॥ मद्भक्तपूजाभ्यधिका० १ चाहै अभिमान तो जातहूरहै पै जाति अभिमान न जाय जन्मते मरणताई रहै चितामें धस्यो तऊ कहै ब्राह्मण हाथलगावै और न लगावै यह सनौढिया ब्राह्मण साधु इष्ट माने बड़ो आश्चर्य है॥

बेटीकोविवाहघरवड़ोउतसाहभयो कियोपकवानसब कोठेमांझधरे हैं। कौंरखबारीसुतनातीदियेतारोरहैंऔर हीलगाइतारीखोल्दोनहींडरेहैं ॥ आयेग्रहसंततिन्हैंपोट

निवँधायदईपायोयोंअनंतसुखऐसेभावभरे हैं। सेवाश्री
विहारीलालगाईदाकस्वच्छताईमेरे मनभाईसवसाधुउर
हरेहैं ६२२ ॥ मूल ॥ बरविप्रसारसुतघरजनमरामराय
हरिरतिकरी ॥ भक्तिज्ञानवैरागयोगअंतरगतिपाग्यो।
कामक्रोधमदमोहलोभमत्सरसबत्याग्यो ॥ कथाकीरतन
मगनसदाआनँदरसझूल्यो। संतनिरखिमनमुदितउदि
तरविपंकजफूल्यो ॥ बढ़िबैरभावजिनद्रोहकियतासुपाग
खसिभूपरी। बरविप्रसारसुतघरजनमरामरायहरिरति
करी २०० भगवंतमुदितउदारयशरसरसनाआस्वाद
किय ॥ कुंजविहारीकेलिसदाअभ्यंतरभासै। दंपतिसह
जसनेहप्रीतिपरमितपरकासै॥ अनन्यभजनरसरीतिपुष्ट
मारगकरदेखी॥विधिनिषेधबलत्यागिपागिरतिहृदयविशे
खी॥श्रीमाधवसुतसम्मतरसिकतिलकदामधरसेवलिय।
भगवंतमुदितउदारयशरसरसनाआस्वादकिय २०१ ॥

रामराय ॥ भगवान्दासजी के गुरु रहैं ॥ गोकुलस्थ गोसाईं
जीको अरु भगवान्दासजी को प्रसंग ॥ दोहा ॥ सुतहित सुधि
ता हंस मैं ताके अचरज नाहिं ॥ कामदेह को हंसकरि त्यांहि दे
खन सब जाहिं १ ऐराकी निजगति चले ताको अचरज नाहिं॥
पुनिखर ताकी गतिचले त्यहि देखन सब जाहिं २ तब गोसाईं
जी सुनिकै बहुत प्रसन्नभये ॥ साधुन के ये लक्षणहैं क्यों न आदर
होय १ वैरभाव ॥ दोहा ॥ कमलहृदै कोमलमिल्यो नंदनकाटत
ताहि ॥ काठ कठोर हृदैमिल्यो मधुकर काटतजाहि २ ॥

टीका ॥ सूजाकेदिवानभगवंतरसवंतभयेवृन्दावनवा
सिनकीसेवाऐसीकरीहै। विप्रकेगुसाईसाधुकोऊब्रजया
सीजाहुदेतबहुधनएकप्रीतिमतिहरीहै ॥ सुनिगुरुदेवअ
धिकारीश्रीगोविंददेवनामहरिदासजायदेखैचितधरीहै ।

योगताईसीवाप्रभुदूधभातमांगिलियो कियोउतसाहत ऊपेषैंअरवरीहै ६२३ सुनीगुरुआवतअमावतनकिहूं अंगरंगभरितियासोयोकहीवहाकीजिये। वोलीघरवारप टसंपतिभँडारसव भेटकरिदीजैएकथेतीधारिलीजिये॥ रीझिसुनिगानीसांचीभक्तितेरीजानीमेरे अतिमनमानीक हिआंखेजलभीजिये। यहीवातपरीकानश्रीगुसाईंलईजा निआयेफिरिवृन्दावनपनमतिधीजिये ६२४ रह्योउतसा हउदाहकोनपारावार कियोलैविचारआज्ञामांगिवनआ येहैं। रहेसुखलहैनानापदरचिकहैएक रसनिरवहैव्रजवा सीजाछुटायेहैं॥कीनी रचोरीतऊनेकुनासामोरीनाहिंवो रीमतिरंगलालप्यारीहगछायेहैं। वड़ेवड़भागीअनुरागी रतिजागीजगनाथदरसिकवातसुनौपितापायेहैं ६२५॥

नेकुनासा मोरी नाहिं॥ कवित्त॥ धनलेहु जनलेहु सरवंगी हरिलेहु साँगैतेन देहूँ जोपै उदभटगामी हैं। सुतहू को मारौ तन टूकटूक करिडारौ दूसहूको न निवारौ वड़े मति ठामी हैं॥ ऐसे व्रजवासी ताकी जगकरै उपहासी मेरेतो अभासी येतौ सुकृत सुभासी हैं। पुनिहोतौ ज्ञानौ भगवंत इष्ट करिमानौ इनमें जो दोषआनौ वड़ी जियखामीहैं १॥ दोहा॥ वांदर कांटेडीमदुख व्रजवासी अरु चोर॥ पटकलेश या कुंजमें आशा युगल किशोर २॥

आयोअंतकालजानिवेसुधिपिछानिसवआगेरेतलैकेच लेवृन्दावनजाइये।आगेआधीदूरिसुधिआईबोलेचूरहैके कहांलियेजातकूरकहींजोईध्याइये॥कह्योऐरोतनवनजा यगेकोपात्रनहींजरैवासआवैगियापियकोनभाइये। जान हारोहोइसोजायगोयुगलपास ऐसेभावराशिचलिताही ठौरआइये६२६॥ मूल॥ दिहदुर्लभमानुषदेहकोलालम तीलाहोलियो॥ गौरश्यामसोंप्रीतिप्रीतियमुनाकुंजनसों।

बंशीवटसोंप्रीतिप्रीतिब्रजरजपुंजनिसों ॥ गोकुलगुरुजन प्रीतिप्रीतिघनबारहबनसों। पुरमथुरासोंप्रीतिप्रीतिगिरि गोवर्द्धनसों॥बसवासअटलवृन्दाविपिनदृढ़करिसोनगरी कियो।दिहदुर्लभमानुषदेहकोलालमतीलाहोलियो २०२

दुर्लभ ॥ दोहा ॥ कहूं कटनकट प्रेमकी सीखोलाल विवेक॥ जैसे नौलख कामरू पैदरवाजो एक १ एकादशे ॥ दुर्लभोमानुषोदेहोदेहिनांक्षणभंगुरः २ गौरश्यामसों॥ तस्माज्ज्योतिरभूद्द्वेधा राधामाधवरूपकम्॥ तस्मादिदंमहादेविगोपालेनैवभाषितम् २ रस ब्रह्महासुरापीचस्वर्णस्तेयीचपञ्चमः ॥ एतैर्दोषैर्विलप्येततेजोभेदान्महेश्वरि ३ सो लाड़िलीलाल लड़ाये जातेनहीं लाहो लह्यो ४ यमुना ॥ कवित्त ॥ सांवल बरण गात न्हातजाको करै गौर आप जलरूप वाको करै कलिरूप है। आपनो प्रवाह थाहि करै थिर वृन्दावनआपघटैबढ़े वह एकही स्वरूपहै ॥ आप रज राखे वाके खोवै रज तमतीनों कीनों और ठाट यह कौतुक अनूपहै। कृष्ण पटरानी ऐसी यमुना वखानी कहिसकत न बानी नीके जानैभक्त भूप है ५ वास अटल॥ दोहा॥ छांड़िस्वाद सुख देहके और जगत की लाज ॥ मनहिं न मारत हारिकै वृन्दावन में गाज ६ ॥

कविजनकरतविचारबड़ोकोउताहिभनीजे । कोउक हैअवनीबड़ीजगतआधारफनीजे॥ सोधारीशिरशेषशेष शिवभूषणकीनो। शिवआसनकैलासभुजनभरिरावणलीनो॥रावणजीत्योबालिबालीराघवइकशायकगड़े। श्रीअगरकहैत्रैलोकमेंहरिउरधारेतेबड़े २०३ हरिसुयशप्रीति हरिदासकेत्योंभावैहरिदासयश ॥ नेहपरस्परअघटनिब हिचारौयुगआयो । अनुचरकोउत्कर्षश्यामअपनेमुखगायो ॥ ओतप्रोतअनुरागप्रीतिवोहीजगजानै। पुरप्रवेश रघुबीरभृत्यकीरतिजुवखानै॥ श्रीअगरअनुगगुणबरणते

सीतापतितिनहोयवश । हरिसुयशप्रीतिहरिदासकेत्यों भावैहरिदासयश २०४॥

विचार करिकही॥ भवनि वड़ी जैसे नारायण भृगु आदिक यज्ञ करके कहे॥ समर्चनकोनको करै जो वड़ो होय सो भृगु ने नारायणके परीक्षा करी सो क्षमाकरिकै नारायणही वड़॥ ऐसे क्षमामें पृथ्वी वड़ी १ हरि उरधारै॥ कवित्त॥ सवहीते वड़ीक्षिति क्षितिहूंते सिंधुवड़े सिंधुहूंते वड़े मुनि वारिध अँचैरहे। तिनहूंतेवड़े नभ तामें मुनिसे अनेक जाके वीच तारागण चारों ओर छैरहे॥ नभहूंते वड़े पगवावन वढ़ाये जव तिनकी उँचाईदेख तीनोंलोकनै रहे। तिनहूंते वड़े संत साहिव अगमगति ऐसेहरि वड़जाके हदे घर कै रहे १ भागवते॥ निरपेक्षंमुनिंशान्तंनिर्वैरंसमदर्शनम् १ जिनके चरणकी रज हरिने चाही याते वही वड़े ३ हरिसुयशनव मे॥ साधवोहृदयंमह्यं साधूनांहृदयंत्वहम्॥ मदन्यंतेनजानन्तिना हंतेभ्योमनागपि॥ मनुष्य पागपलटै हरिने हृदयपलटे हरिसाधन के गुण कहे अरु सुनै जैसे साधु हरिके गुण कहै अरु सुनै पुरप्रवेश करतकहे तो भरतमों हनुमान् आदिकके सुने नारद जी सा पांडव- निके सन्तहू अनन्यहैं जैसे प्रह्लाद ऐसेही हरि अनन्यहैं ५॥

उत्कर्षसुनतसन्तनहँकोअचरजकोऊजनिकरौ॥ दुर्वासाप्रतिश्यामदासवसताहरिभाखी। ध्रुवगजपुनिप्रह्लाद रामशवरीफलसाखी॥ राजसूययदुनाथचरणधोवैजूंठ उठाई॥ पांडवविपतिनिवारिदियोविषविषयापाई॥ कलि युगविशेषपरचौप्रकटआस्तिकह्लैकैचितधरौ। उत्कर्षसु नतसंतनहुँकोकोऊअचरजजनिकरौ २०५॥ फलश्रुति सार॥ दोहा॥ पादपपेड़हिसींचतेपावैंअंगअँगपोप॥ पूरवजाज्योंवरनतेसवमानियोसँतोप २०६ भक्तजितेभू लोकमेंकथेकौनपेजाय॥ समुद्रपानश्रद्धाकहांचिरियापेट समाय २०७ श्रीमूरतिवैष्णवलवुदीरघगणनअगा

ध ॥ आगेपाछेवेरेतैंजिनमानोअपराध २०८ फलकोशो भाळाभतरुतरुशोभाफलहोय ॥ गुरुशिष्यकीकीर्त्तिमें अचरजनाहींकोय २०९ चारियुगनमेंजेभगतातिनकपग कीधूरि ॥ सर्वसुशिरधरिराखिहौंमेरीजीवनमूरि २१० ॥

कर्मानन्द चारनकी छरी प्रभु लायदई यह हम न मानेंगे दुर्वासा प्रति हरिने वस्तुनः कही ॥ नवमे ॥ अहंभक्तपराधीनो ह्यस्वतन्त्रइवद्विजः १ ॥ पृथ्वीराजको प्रभुने द्वारकासों आयके दरशनदीनो हम न मानेंगे ध्रुवंमधोर्वने दिदृक्षयागतः कौंधीप्रेम-निधिका प्रभु मसालल्कैके आये यह हम न मानेंग जैसे गजको प्रतिमाकूं नामदेवने दूध पिवायो वा इनके बोलतें हरि आयगये यह हम न मानेंगे जैस प्रह्लाद कर्मांके खीचरीखाते से त्रिलोचनके घरमें चौदह महीना प्रसादपायो सो हम न मानेंगे जैसे शवरी सनको स्वरूप धरिकै राजाके तेल लगायो यह हम न मानेंगे जैसे राजसूययज्ञमें कबीरका जागे जागे रक्षा प्रभुनेकरीसोहम न मानें-गे जैसे वहुपाण्डव विपत्तिनिवार अंगदकोवहिनने विपदियो और प्रभाव न भयो मीराको विष ननँदने दियो सो प्रभाव न भयो सो हम न मानेंगे जैसे चन्द्रहास के अक्षर ऐसे प्रभाव १ कलि विशेष तीनियुगनसें तो परचे होयहीहै पर कलियुगमें विशष आस्तिकपै दृष्टांत महापुरुपको अरु ऊंटको २ ॥

जगकीरतिमंगलउदयतीनोंतापनशाय ॥ हरिजनको गुणवरणतेहरिहृदअटलवसाय २११ हरिजनकोगुणवर णतेजोजनकरैअसूय ॥ इहांउदरवाढैव्यथाअरुपरलोक नसूय२१२*जोहरिप्राप्तिकीआशहैतौहरिकोयशगाय ॥ नतरुसुकृतभुजेबीजज्योंजनमजनमपछिताय २१३ ॥

जगकीरति ॥ एकादशे ॥ मल्लिङ्गमद्भक्तजनदर्शनस्पर्शनार्चनम् ॥ परिचर्यास्तुतिप्रह्वागुणकर्मानुकीर्तनम् १ मेरो अरुमेरे भक्त को गुण सामान्य है भक्त भगवन्त में भेद नहीं ॥ वैष्णवो ममदे

---

* इस जो को लघुफरके पढ़ना ॥

हस्तु नस्मात्पूज्योमहामुने ॥ अन्यथात्वं परित्यज्य वैष्णवान्भजशाश्वतम् १ तृतीयेमैत्रेयवाक्यम् ॥ शारीरामानसादिव्या वैहासेयेच मानुषाः॥ भौतिकाश्चकथंक्लेशाबाधन्तेहरिसंश्रयम् २ हरिजनको मार्कंडेयवाक्यम् ॥ योहिभागवतांल्लोके उपहासंदृढिजोत्तम ॥ करोतितस्यनश्यन्ति धर्मार्थयुयशःसुताः ३ निन्दांकुर्वन्तियेमूढा वैष्णवनांमहात्मनाम् ॥ पतन्तिपितृभिस्सार्धं महारौरवसंज्ञके ४ आदिपुराणे ॥ ममभक्तजनान्दृष्ट्वा निन्दांकुर्वन्तियेनराः ॥ तेषां सर्वाणिनश्यन्ति सत्यंसत्यंधनंजय ५ दशने भगवद्वाक्यम्॥ राजसा घोरसंकल्पाःकामुकाअहिमन्यवः ॥ दांभिकामानिनःप्रायो विहसंत्यच्युतप्रियान् ६ असूया पद ॥ श्रीपति दुखित भक्तअपराधे । संतनद्वेष द्रोहता करि नित आरति सहित मोहिं आराधे ॥ सत्रे सुनो वैकुंठ के वासी सत्य कहत मानो जिन खेदे । तिनपर कृपा कैसेके करिहों पूजत पाउँ कंठको छेदे ॥ संतन द्रोह प्रीतिमोहू सों मेरोनाम निरंतर लैहै । अग्रदास भागवत बदनहै मोहिं भजत पर यमपुर जैहै १ इहां उदर बाढ़े वृथा जालन्धरका रोग॥ होय अथवा अनेक योनिकी व्यथा होय १ ॥

भक्तदाससंग्रहकरैकथनश्रवणअनुमोद॥ प्रभुकोप्यारो पुत्रसोबैठेहरिकेगोद १४ अच्युतकुलयशगैरयकजाकीमतिअनुराग ॥ भक्तभजनकेसुकृतकोनिश्चयहोयविभागि १५ भक्तदामजिनजिनकथीतिनकीजूंठनपाय॥सोमतिसारहैअक्षरकीन्होंसिलौविनाय १६ काहूकेबलयोगयज्ञकुलकरनीकीआस॥भक्तनाममालाउरबसोनरायणदास १७

इति श्रीभक्तमालमूलश्रीनारायणदासजीकृतंसमाप्तम् ॥

टीकाकर्ताकेइष्टगुरुदेववर्णनं ॥ कवित्त ॥ रसिकाई कविताईजाहिदीनीतिनपाईभईसरसाई हियेनवनवचाईहै । उररंगभवनमेंराधिकारवनबसेलसेज्योंमुकुरमध्य प्रतिबिंबभाईहै ॥ रसिकसमाजमेंविराजरसराजकहैंचहैं

मुखसवैफूलेसुखसमुदाईहै। जनमनहरिलालमनोहरना मपायोउनहूंकोमनहरिलीनोयातेराईहै ६२७॥

भक्तिदाससंग्रहकरे॥नारदगीतायाम्॥ तिष्ठतेवैष्णवशास्त्रंलिखितंयस्यमन्दिरे॥तत्रनारायणोदेवःस्वयंवसतिनारद १ इंभागो॥ एक बापके चारिपुत्र कोऊ वरषको कोऊ पांचवरषको कोऊ छह वरषको कोऊ आजको बांटो बरोबरि पावैं॥माला॥दोहा॥श्रीनाभानभ उदित शशि भक्तमालसो जान॥ रसिक अनन्य चकोर तुम पान करौ रसखान १ आगम निगम अरु स्मृति सब पुराण मतसार॥ भक्तमाल में राखधरि संतभये भवपार २॥

इनहींकेदासदासदास प्रियादासजानोतिनलैबखानो मानोटीकासुखदाईहै। गोवर्द्धननाथजूकेहाथमनपर्यो जाकोकर्योवासवृंदावनलीलामिलिगाईहै॥ मतिअनुसारकह्योलह्योसुखसंतनके अंतकोनपावैजोईगावैहियआईहै। घटवढ़िजानिअपराधमेरोक्षमाकीजैसाधुगुणग्राहीयहमानिकैसुनाईहै ६२८ कीनोभक्तमालसुरसाल नाभास्वामीजीनेतरेजीवजालजगजनमनपोहनी। भक्तरसबोधनीसुटीकामतशोधनीहै बाँचतकहतअर्थलागैअतिसोहनी॥ जोपैप्रेमलक्षनाकीचाहअवगाहियाहि मिटै उरदाहनेकुनैननहूजोहनी। टीकाअरुमूलनामभूलिजायसुनैजवरसिकअनन्यमुखहोतविश्वमोहनी ६२९॥

वृन्दावन॥कवित्त॥लागी अति प्यारीभूमि जहांप्रियाप्रीतम ज प्रीति मुविहारकरैं तेईगुणगाइवो। रसिक अनन्यनिके लालिय मुखारविंद गुणन निहारियेरु जिय हुलसाइवो॥मधुर रसाल कथा लाल अभिराम नाम यही आठोयाम निज श्रवण सुनाइवो। वृन्दावन रसवस ह्वैके सब छांड़ीमैंतो गहीएक एंड़ताजि पैड़हू न जाइवो १ विश्वमोहनी॥ कवित्त॥ घरहू छुड़ाये कास

पूरेनपरनपाये मन हुलसाये रूपमति अतिलालकी । असन वस-
न भूले लोचन सरोज फूले मनरसभूले सुनिवाणी सुरसालकी॥
लोककुलधर्मटारे धीरज विदारिडारे रंग भरिभरि शोभा अध्वर
विशालकी । प्रेमसुखजालरही काहूना सँभालरही किधौंभक्त
माल किधौं वांसुरी गोपालकी १ राधारमणकी गुसांइन कथामें
उतावली चली घरमें दहवी मूंददई एक स्त्री उतावली चली
पाइजेवगिरी एकस्त्रीने अपने हाथकी चूरीवैष्णवको फोरदीनी १

नाभाजूकोअभिलाषपूरणलैकियेमैंतौ ताकीसाखी
प्रथमसुनाईनीकेगाइकै । भक्तिविशदासजाकेताहीकोप्र
काशकीजैभीजैरंगहियोलीजैसंतनलड़ाइकै ॥ संवतप्र
सिद्धदशसातसौउन्हत्तरये फालगुनमासवदीसप्तमीवि
ताइकै । नारायणदाससुखराशिभक्तमाललैकै प्रियादास
दासउरवसौरहौछाइकै ६३० ॥

भक्तिविश्वास जाके होय ताहीकोसुनाइये अविश्वासीको न
सुनावै क्योंकि नामापराध होयहै ॥ प्रमाण नामापराधका श्लो
क ॥ सतांनिन्दानाम्नः परममपराधंवितनुते यतः ख्यातिंयातंकथ
मपिहिनिन्दांविषहते ॥शिवस्यश्रीविष्णोर्यइहगुणनामादिसकलं
धियाभिन्नंपश्येत्सखलुहरिनामाहितकरः ॥ गुरोरवज्ञाश्रुतिशास्त्र
निन्दनंयथार्थवादोहरिनामकल्पनम् । नाम्नोबलाद्यस्यहिपापबु
द्धिर्नविद्यतेतस्ययमैर्हिंशुद्धिः ॥ श्रुत्वापिनाममाहात्म्यंयःप्रीतिर
हितोनरः। अहंममादिपरमोनाम्निसोप्यपराधकृत्॥कवित्त॥ वेद
हूकी निंदा और साधुन की निंदाकरै गुरुकी अवज्ञा विष्णु शिव
भेदमानिये । नामहीके आसरे सों करै वहुपापओ अश्रद्धावानहीं
सों उपदेशलै वखानिये ॥ एक अर्थवाद अरु वारवार कुतरककरै
सुनि महिमाको हिये नहिं आनिये । नामकी समान और धर्म
सब कर्मफल मानत ये अपराध दशजिय जानिये १ ॥ पंचाध्या-
यी ॥ हीन अश्रद्धा नास्तिकहूहरिधर्मवहिर्मुख । तिनसों कवहुं

न कहै कहै तो नहीं लहै सुख ॥ भक्तजननसों कहै सदा भागवतधर्मबल। ज्योंयमुनाकी मीन लीनदिनरहत यमुन जल ॥ यथा॥सप्तनिधि भिद भेदनी यमुना निगमबखानई । त्योंतहीं धारिधारारमत छवितनहीं जलआनई १ गीतायाम्॥ श्रद्धावानन सूयश्चशृणुयादपियोनरः ॥ सोपिमुक्तःशुभाँल्लोकान्प्राप्नुयात् पुण्यकर्मणा ९ श्रद्धावान् श्रोता सुन्योकरै चिंता नहीं १ ॥

अगिनिजरावोलैकैजलमेंबुड़ावोभावै शूलीपैचढ़ावो घोरिगरलपिवायवी । वीछूकटवावोकोटिसांपलपटावो हाथीआगेडरवावोईतिभीतिउपजायवी ॥ सिंहपैखवावो चाहौ भूमिगड़वावोतीखी अनीविधवावोमोहिंदुःखनहीं पायवी । व्रजजनप्राणकान्हवातयहकानकरो भक्तसोंविमुखताको मुखनदिखायवी ६३१

इति श्रीभक्तमालटीकाभक्तिरसबोधनीसमाप्तं ॥

अगिनिजरावो ॥ पद ॥ जो दुखहोय विमुख घरआये। ज्यों नारो कारीलागै निशि कोटिक वीछूखाये ॥ दुपहरि जेठ परत भारू में घायनि लोनलगाये । कांटनमांझफिरै विन पनहीं मूड़ पटोलाखाये ॥ टूटत चाबुक कोटिपीठिपर तरवर बांधिउठाये । दुख होय अगिनिके दाहे सर्वसु धनहिं हेराये ॥ ज्योंबांझहि बहोत सौति के सुंदर बेटाजाये। देखतही सुखहोत जितो वह सरत नहिं विसराये ॥ भटकत फिरत निलज वरजतही कूकर ज्यों हहराये । गारीदेत विलग नहिं मानत फूलत दमरीपाये ॥ औदुख दुष्ट जगत लें जेते नेकु न मेरेभाये । वाके दरश परश मिलवतही कहत व्यास यों न्याये ॥ दोहा ॥ दाग जु लाग्यो नीलको सौ मन साबुन धोय । कोटिन यतन प्रबोधिये कौवा हंस न होय १ संगति भई तो कहभयो हिरदो भयो कठोर। नौनेजे पानीचढ़ो तऊ न भीजीकोर ॥ ऐसे शठ कथामें क्यों आवै हैं ॥ श्लोक ॥ देवोजातुक्षमावान्यो गन्धर्वोमधुरस्वरः। मानुषोमतिवा

तुर्य्यःपिशाचोमतिनिर्गुणः ॥पक्षोदस्यभयंनास्तिराक्षसश्चोव्रता तःखरश्चवाणीविभ्रष्टोग्न्शनतिकातरः॥मर्कटोमतिचाएडाल सर्वभक्षीचवायसः। एवंजा॥तर्मनुष्येपुदशधासम्यगुच्यत करवे को आवैहैं तर्क कहा वक्ता कहै प्रह्लादकी अगिनिते र करी विमुख बोल्यो वक्ताहूको डारिदेहु बचेतो सांचोसांचो न झूंठो वक्ताकहै रामनाम सों पाथरतरै विमुखकहै अब तरावोत सांच नहीं तो झूंठ वक्ता कहै गंगाजलसों स्नानकरावो विमुख कहै मतिकरावो पादोदकी है वक्ता कहै सूर्य्यको यमुनाजलसे जलदानकरै विमुख कहै मतिकरो पुत्री है पुत्री को जल कैसे लेवै वक्ता कहै तुलसीचरणामृत प्रसाद लेहु विमुख कहै मति लेहु उदर में बिगरै याते इनसों न कहिये २ ॥ व्रजजनप्राण। सवैया॥ चंदन घोरिये बिंदलगाइकै कुंजनते निकरयो मुसक्या तो। राजति है घनमाल गरे अरु मोरपखा शिरपै फहरातो॥ जबते रसखानि बिलोकतही तबते कछु और न मोहिंसुहातो प्रीतिकि रीति में लाज कहा कछुहै सो बड़ो यह नेहको नातो१ एक समै वनसोधुनि गै रसखानि लियो कहनाम हमारो॥ ताछ्र णतेयह बैरिन सासु कितोकियो झांकन देति न द्वारो। होतचवा इ वलायसोंआलिरीजोभरि अंकसेंजीजतप्यारो। बाटचलेतवह ठटकी हियरे अटक्यो पियरेपटवारो २ ॥ यालकुटीअरुकामरिएं पर राज्य तिहूंपुरको तजिडारों। आठहुसिद्धि नवोनिधिको सु नंद कि गाय चराय बिसारों॥ कोटिक ये कलधौतके धाम करीं रके कुंजन ऊपरवारों। रसखानिकहैं इन नैननसों व्रजके ॥वनेऊ तड़ाग निहारों ३ अहोभाग्य १ स्कंदपुराणको इतिहास कृष्णजी पास एईगई वे न आये १ सोरठा॥ जिन भक्तनकीमाधुरपद्धरा। निशि दिनसदा॥ तेईरसिक रसाल बसोतो वृन्दाविपिनमित २

इति श्रीभक्तमालाख्यग्रन्थःसटीकःसंपूर्णः॥

इश्तहार
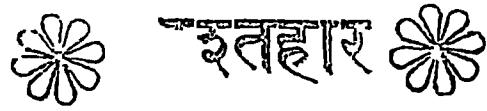
देवीभागवतभाषा ॥

इसका उल्था पण्डित महेशदत्तसुकुलने कियाहै–इसमें मुख्य करके जी के पाठ आदिक का विस्तार और सर्वप्रकार की शक्तियोका कथ उनके अवतार, मन्त्र, तन्त्र, यन्त्र, कवच, कीलक, अर्गला, पूजा, माहात्म्य, सदाचार, प्रातःकृत्य, रुद्राक्षमहिमा, गायत्री और देवियो के पु रण का वर्णन, सन्ध्योपासन, ब्रह्मयज्ञादि असंख्य तन्त्रमन्त्ररूप विषय हैं ऐसी स्पष्ट हैं कि साधारण लोग भी समझसके हैं ॥

लिङ्गपुराण ॥

इसका उल्था छापेखाने के बहुत खर्च से जयपुरनिवा पण्डित दु सादजीने भाषा मे किया है–जिसमे अनेकप्रका के इतिह र्यवंश, वशका वर्णन, ग्रह, नक्षत्र, भूगोल और खगोलव कथन देव दानव, गंध यक्ष, राक्षस और नागादि की उत्पत्ति इत्यादि बहुतसी कथायें हैं ॥

भक्तमाल ॥

राजा प्रतापसिंहकृत–इसमे संसारभरके वैष्णव भक्तो की कथा रचित

श्रीवाराहपुराण पूर्वार्द्ध व उत्तरार्द्ध ॥

जिसका जयपुरनिवासि पण्डित माधवप्रसादजीने मुंशी नवलकिशोर व्ययसे संस्कृतसे देवनागरीमें भाषा कियाहै और पण्डित दुर्गाप्रसाद पण्डित सरयूप्रसादजीने शुद्ध किया है इसमे श्रीभगवान् वाराहनारायणने धर से चौबीसहजार श्लोकों में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष सिद्ध होने के लि इतिहास संयुक्त कथायें वर्णन की हैं ॥

मैनेजर नवलकिशोर प्रेस

हजरतगंज–लखनऊ